

सुधारेखी पंचम आवृत्ति : विं सं २०१५

मूल्य ५-२५

प्रकाशक :

पद्मनाभ कवठीकर

पूज्य संकलन परिषद

पंजीरली अमरावती

छाप

महाराष्ट्र प्रोसेसिंग कंपनी

बकल टाईम प्रेस

दीपा बाही, अमरावती



स्व मातृभी ज्ञोतमसाई

संस्थानो तरफनी खेमनी निर्म्याब कर्ममनिष्ठानो

बदलो कोई पण रीते बाळी न ब शक्यय

एवा पूज्य

तीर्थरूप स्व सातुथ्रीने

—सेवक बेचरवास

प्रस्तावना

प्राकृतमार्गोपैठिकानी आम तो आ पांचमी आहूति गण्य परंतु बीबी कम श्रीबी आहूतिमा पुस्तुद्रण सिवाम बीबी कोइ विद्युपता न हवीं सवी आ सत्करणने बोधी आहूतिरूप गणतुं सहुक्ति केनाव अन्वार सुधीमा संस्करणो करती आ संस्करणमा एक आ विद्युपता छे आमा प्राकृतभाषाने सगता बे च नियमा बतावेछ छे ते नियमो आचार्य हेमचंद्रन्य प्राकृतम्याकरणन्त आठमा अध्यायना कया पाठना कया सूत्र साये सर्वथ राखे छ ए हकीकत सर्वत्र यथास्थान टिप्पणमा सूत्रांको आधीने चणारेही छ आ यवनो अध्यायी आ अगे च कोइ विषय बापवा हन्छ तेन मते ए सूत्रन उपयोगी यो ए एहि ए अंको आपेछा छे आ संस्करणना बे विभाग पाइछा छ म्याकरणविभाग अने पाठशाळाविभाग म्याकरणविभागमा बर्गविज्ञान, शब्दविभाग शब्दरचना ए प्रग मुद्र्य विभाग छ शब्दरचन्यमा १ स्वरना सामान्य फेरफार २ स्वरन्य विहाय फेरफार ३ अन्धम्यजन असंयुक्त म्यजन अथवा व स्वरोनी बन्ध आवेछा म्यजनन्य सामान्य फेरफार ४ संयुक्तम्यजनन्य सामान्य फेरफार ५ संयुक्तम्यजनन्य विहाय फेरफार बतावेछा छ आम अम रामीन शब्दरचनाने सरलताबी समशाबकाली याचना करेछी छ आ फरी शब्दोमा विहाय फेरफार भास भास शब्दोना संयुक्तम्यजनन्यमा बन्ध—अंतु—स्वरोनी वृदि शब्दोनी आतिर्यवी फेरफार सर्वत्र पद्य समग्र आपछी छ आ अने भातुं बीतुं पना शब्दरचनाना पेट्यामा च बतावेतु छे

જા પદ્યે સવિ બંને સમજુતી જાપેઠ છે અને જા વિનાગ્ને બંને સનાસ બંને સવિસ્તર સમગ્રણ જાપણાં સમ્પાદનું પ્રયોજન ઠવા રેરેક સમાસનાં ડરુદ્ધરણાં જાપેઠ છે

જાત્તા પુસ્તકમાં ટુલનામી ઠરિપ્ સસ્કૃત રૂપો સર્વેજ જાપેઠ છે જે સામાન્ય કોરા જાપેઠ છે તે પળ ક્ષિપ્રમાને જાપેઠ છે ઠટકે પહેલાં મરજાલિના રામ્દો પછી મારીજાલિના રામ્દો અને છેલ્લે મન્યતર જાલિના રામ્દો જામ યોજજાથી રામ્દોની જાલિ બંને જાગજાની વિવાર્થી-બેને સુગમઠા રહે

જા ઠપરાંત વિરાળ જોરા, સંજ્ઞાજાથી રામ્દોનો કોરા જામ્યમ કોરા જાલુકોરા ઠવા જાલિ પ્રમામ દેસ્ય રામ્દોનો કોરા પળ જાપેઠ છે.

જાદી જાંકજામો બંને ઠક સૂચન જ્યાનમાં ઠલ્લવાનું છે કે જે જામ્દો જાંકજા છે તે જપજાદરૂપ નિયમોમા સૂચક છે ૫ ૧૬ થી ૭૧ સુધીમાં જે જે નિયમો જાગ્ગાજેઠ છે તે જવા જપજાદરૂપ છે જાતાં જ્યાં જામ્દોથી જાંકજાને જાકે જાલ્લજોજ જાંકજા મૂજ્જા ઠવાજા છે ઠવા ૫ ૧ થી ૧૭ સુધીમાં જે નિયમો જાપેઠ છે તે સામાન્ય નિયમો છે તેમ જાતાં તેમાં જુજાઠટી જાંકજા જાપેઠ છે જાટી રીઠે જ્યાં પળ જાલ્લ-જોજ જાંકજા રાજા જોરેપ, વિવાર્થી માર્જોમે તે તે નિયમો ઠપરત્ત સુજ્જ સુજ્જ મજાલ્લ જાંકજાને જા મૂજ્જે સુધારી જેવા મોરજામી જાકરો ૫ ૧ માં જાંકજોની સમજળ બંને જે સૂચના જાપેઠ છે તે પ્રમાને સર્વેજ સુગ્રણ જર્જ રામ્દો નજી ૦ મારે પળ સમાજક ઠવા પ્રકજાજક વિવાર્થી માર્જોનેથી જામા માર્ગી છે છે

क्यों नियम सामान्य छे बने कया नियम विशय छे तेनो निर्णय ते ते नियमो उपरना मयाद्वयभोबी ब भई बदा तेबी आंकडा बोनी गूबरजमा पडवानी जरूर नदी.

प्राकृतमापाना सामान्य के विशय नियमो म्यां ग्यां आपन्न छे त्यां त्यां साथे ब पात्री, दौरेसेनी, मागपी, पेशाची बने अपभ्रंशमापाना तेबा ब प्रकृरना नियमो उदाहरणो साथे आपेडा छ ते क्यो विद्यार्थी-भोतुं प्यान खोरीए छीए.

भासा छ के प्राकृतमापाना बम्यासी माइबहेनेन भा पुस्तक मद्रगार नीबडे बने बम्यासी माइबहेनेना बम्यास अगेना उस्ताहमा बपारो याय

११/४ भरती विरुध छेकम्ही

अमदावाद-१

११-१-५९

देवरदास

सा ब १-सुपररोष जे होब छे सुदछेने चपता किलि छे उपरदा म्यांमे करे बज्जधिनः होग छुं तेभो बरबर बज्जधो छनी बस्य नदी भदी सुपररोष बज्जधो पूरुलो संभव छ

देवरदास

अनुक्रम

व्याख्यान विमाय

धारासंख्ये पृ	विषय
१	कर्मविज्ञान
६	शास्त्रविभाग
७	शब्दरत्नमय
९	स्वर्गा सामान्य फेरफार
१५	स्वर्गा विशेष फेरफार
२९	व्यंजनना फेरफार
३९	व्यंजनना विशेष फेरफार
५	संयुक्त व्यंजनना सामान्य फेरफार
६६	संयुक्त व्यंजनना विशेष फेरफार
७२	द्विर्भाव
७३	शब्दोर्मा विशेष फेरफार
७४	शब्दोर्मा सर्वना फेरफार
७५	संयुक्त व्यंजनोन्नी बन्ने स्वर्गी वृत्ति
७६	अनुस्वारना बधरो
७७	व्यंजनयो बधरो

- २१५ न्यरीणाति—आकारांत हकारांत ईकारांत उकारांत
तथा ऊकारांत नामो
- २२७ मेरकभेद—वर्तमान मृत अने भविष्य बगैरे
- २३६ माये प्रयोग अने कर्मणि प्रयोग
- २३८ " " वर्तमानकाल
आज्ञार्थ, विष्यर्थ
मृतकाल अने
भविष्यकाल बगैरे
- २४ मेरक माये अने कर्मणिप्रयोग—वर्तमानकाल, आज्ञार्थ
विष्यर्थ, मृतकाल अने भविष्यकाल बगैरे
- २४४ जीर्णोत्थी सर्वादि
- २४९ व्यञ्जनांत ह्यो
- २५४ कष्टकाल तद्विहित प्रथमोत्थी समय
- २६० नाम वातुमां
- २६१ हेत्वर्थ ह्यंत—मेरक हेत्वर्थ ह्यंत अनियमित
हेत्वर्थ ह्यंत
- २६४ संवत्सक मृतह्यंत—मेरक संवत्सकमृत ह्यंत अनिय-
मित संवत्सकमृत ह्यंत
- २६८ विष्यर्थ ह्यंत—अनियमित विष्यर्थ ह्यंत
- २७ वर्तमान ह्यंत—मेरक वर्तमान ह्यंत तथा सातुं
अने मेरक माये तथा कर्मणि वर्तमान ह्यंत बगैरे

- २७१ संख्यावाचक शब्दो, तैनां रूपो तथा तैनो शब्दसंज्ञः
 २८२ भूतवृत्त—मन्यमित भूतवृत्त
 २८४ भविष्यवृत्त
 २८५ कर्तृवर्षक वृत्त—मन्यमित कर्तृवर्षक वृत्त
 २८६ क्रेतुर्वाक अन्वयो

शब्दकोष पृ० १ वी ४९

- १ नाम—नरवाति
 १२ " नारीवाति
 १७ " मान्यतरवाति
 २३ विशेषण
 २९ संख्यावाचक शब्दो
 ३३ अन्वय
 ३६ वातु
 ४५ देस्य शब्दो—नरवाति
 ४७ " नारीवाति
 ४८ " मान्यतरवाति
 ५० अर्धमागधी प्राकृतनुं साहित्य

। पितरौ कम्पे ।

प्राकृतमार्गोपदेशिका

(अक्षरपरिवर्तन—व्याकरणविभाग)

वर्णविज्ञान

१. प्राकृत भाषामां वपरण्य रररौनी अने अरररौनी माहिती का प्रमाणे हे-

स्वर		उच्चारण स्थान
इत्स	दीर्घ	
क	भा	कड-गळु
इ	ई	तडु-तडुवु
इ	ए	बोड-बेड
ए१	ए	कड तथा तडु
ओ	ओ	कड तथा बोप

१. प्राकृत भाषामां स्वरीण्य पडुत उच्चारण वपरण्य कवी.
कड तथा कडु स्वरमा प्रवीय कवी

१. प्रस्तुत पुस्तकम्यं प्राकृत, पार्श्व धीरसैत्री माक्की वैद्याची तथा बुकिण्य-वैद्याची अन अनमरुड माषाव्य व्याकरणनो कमाकड करेण्ये हे तवी प्राकृत माषा एडक 'उकड कवी माषाभी' एम सधज्जालु' क

२. एड तेण्ये वगेरे सध्दौनी 'ए' इत्स हे अने छोट छोट वगरे सध्दौनी ओ' इत्स हे

३. अनमरुड प्राकृतम्यं 'कड' स्वरमा उच्चीय वाव क एम इत्स वगेरे.

३. १६ तथा ३० स्वरसो वन प्रयोग करो.

आत्मो

उच्चारण स्थान

कू कू कु कु कू	(क वर्ण)
खू खू खु खु खू	(ख वर्ण)
गू गू गु गु गू	(ग वर्ण)
घू घू घु घु घू	(घ वर्ण)
चू चू चु चु चू	(च वर्ण)

कंठ
तालु
मूर्ध-नाडु
दंत-दोष
कोष्ठ

अल्प- वर्णसा	}	कू	कंठ
		खू	मूर्ध
		गू	दंत
		घू	दंत-कोष्ठ
		चू	दंत
		हू	कंठ
		खू	नाडिका-नाड

४. प्रकृत आधारां छोड़ कर अलग स्वर आधारी-कू खू गू घू चू हू ऐसे अक्षरों बनाओ करो. ये आत्मो हूँ ठहरो वर्णसा के अथवा एक मात्र आधारी के ऐसी स्वर बनानो वन संतुष्ट रीति बनाने से आना बलान वकल वखल वदल-लल-पुल-कल-खल-गल-घल-चल-हल आना आधारी-अक्षर, अक्षर-अक्षर मिलन करो.

१. वचन अथ अक्षरों बनाने के ये बनाने से ये ऐसे बनावना बनना छोड़ कर महीना है प्र. आ. ११११११

२. आधारी अक्षर अक्षरों प्रयोग करने आधारी अक्षरों बनाओ आधारी अक्षरों है.

३. अक्षर (आध) अक्षर अक्षर अक्षरों अक्षरों बनाने से

१. क्षेत्र पत्र प्रयोगकर्ता एकाच मस्तर क व्यवस्था देवको ठक बपरास्ये न नवी

२. गामासंस्कृतिं वर त्र पत्र वर रर आ माहला विभातीय संतुषत संस्कृती प्राकृत माभासां वपरास्य नवी अप्वाद तरीके क्षेत्रमाक विभातीय संतुषत संस्कृती प्राकृत अप्वाद पामि अने मावपी माभासां वपरास्य छ ते अंग ठराहरन साबेनी भिरंस व्यञ्जनविश्वरना प्रकरणां वास्तये.

३. स तथा व नी अने विचर्यनी प्रयोग प्राकृत भाषासां सुरत नवी.
८. स संस्कृतो प्रयोग पामि भाषासां तथा पद्यानी भाषासां प्रवर्तित छ

१. एकाचक्य वना संतुषत महरने वरके प्राकृतसां वना असाए सापारन शिसे वसाय छ तेनी ठराहरना साबेनी वापी आ प्रमाथ छ :

(१) ए, ए वन अ, ई ए, वर अन वन ते वरके सापानी अहर छ वपरास्य छे अन एकरनी भाषिमां 'क' वपरास्य छ। अकच्छा-अकच्छा सुकत-सुक वानन-वड वड-वड ए-ए, अ-अ-अहा विचरन विचर पन-पन वरविध-वर्धन वरवति वरवति.

(२) ए वन छ ए वन ए, ए ए व-वरापर न तथा वन अप्प्रवित-उक्कवित आसवान-वक्याप. एव-एव वन-वन वरि वरि उवित-उवित मरु-मरु सुव-सुव आसवति अकपवड एव-एव एवित-वति एवव-

१ अही आसवासां आवापी आ वपी वापीसां क वर वन ए वकोरे वे वेवडी अवर वासवानो वरेको छे तेनी एपनीय वरानी अवर वरानी छे अन वे एकरडी अवर वापरवानी वरेक छ तेनी एपनीय वरानी भाषिमां कवानी छे.

एकल लोमनि-लाम् दुग्-दुग्ध.

- (२) इ म्, ए, म म् म् म् म्, व ल्, बराबर म् ल्वा क
 क्तु-काम्, इम् इम्, कववा क्तुम्, हृद्-दुग्ध, म्-कम्, दुग्-
 दुग्ध, वीम्-दुग्ध, म्-कम्, मान्-कम् क्कते क्कते, र्म्
 कम्, कम्-कम्.
- (४) ए, म् म् क-बराबर म् ल्वा क् क्काम्-कम्कम्.
 मिन्-मिन्, क्काम्-कम्, म्-कम्, क्क-कम्.
- (५) क्, क्, क् ल् बराबर क् ल्वा क् क्कम्-कम्कम्, क्क-
 क्क, क्-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, ल्वा-कम्
 क्कते-कम्
- (६) क्, क्, क् ल् बराबर क् ल्वा क् क्कम्-कम्कम्, क्क-
 क्क, क्-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, ल्वा-कम्, क्क-
 कम्, क्क-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, क्क-कम्.
- (७) म्, म्, म् ल् बराबर म् ल्वा क् क्कम्-कम्कम्, क्क-
 क्क, क्-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, ल्वा-कम्, क्क-
 कम्, क्क-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, क्क-कम्.
- (८) क्, क्, क् ल् बराबर क् ल्वा क् क्कम्-कम्कम्, क्क-
 क्क, क्-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, ल्वा-कम्, क्क-
 कम्, क्क-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, क्क-कम्.
- (९) क्, क्, क् ल् बराबर क् ल्वा क् क्कम्-कम्कम्, क्क-
 क्क, क्-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, ल्वा-कम्, क्क-
 कम्, क्क-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, क्क-कम्.
- (१०) क्, क्, क् ल् बराबर क् ल्वा क् क्कम्-कम्कम्, क्क-
 क्क, क्-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, ल्वा-कम्, क्क-
 कम्, क्क-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, क्क-कम्.
- (११) क्, क्, क् ल् बराबर क् ल्वा क् क्कम्-कम्कम्, क्क-
 क्क, क्-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, ल्वा-कम्, क्क-
 कम्, क्क-कम्, मिन्-मिन्, क्क-कम्, क्क-कम्.

सुपरीलीये रहिए रीहियाठ भाया साथे के माह्य भाया साथे सरघारी
 राधन एसा न होय ते देव छम्पी पवार आ देव छम्पी बना
 रूप से बने देरो बगरे प्राचीन छम्पीमा तथा छम्पी भाषाना पीछीमा
 बने साहित्यमा मारोकार बपराकेसा छे देव छम्पीमा केरमाक बनाय
 राधो छे सम इतिहासाभागा एव छम्पी छे आचार्य देवचन्द्रे आसा
 मध्येमे एक सुख् करेमे छ अन छे देवीछम्पसम्पद (देवीछम्पसम्पद) एतु
 नाम आर्याने एतु एक लानर बोध करेमे छे आ बोधनी टीका एव
 देवचन्द्रे केर ब कवी छ

संस्कृतमाय प्राकृत छम्पीमा के बात छे केरमाक एतन सरवा
 अने केरमाक बोधा सरवा

सहन सरवा नामरूप दाधो:

माह्य	सहय
सवार	सवार
राइ	राइ
दाधामम	दाधामम
मीर	मीर
संभाइ	संभाइ
बुन	बुन
बमीर	समीर कोटे

सहन मरवा क्रियापदो:

मेरति	मेरति
हनति	हनति
बति	बति

घोडा सरवा नामरूप शब्दो

ग्राह्य	वक्तव्य
कर्म	कर्म
ब्रह्म	} सुखं
दुःख	
विद्या	वित्त
क	क
स्त्री	स्त्री
सत्य	सत्य
वापारणी	वापारणी

घोडा सरवा विधापद्दो

कृति	कृत्यति (कृतिव कृत्य एवम्)
कर्मति	कर्मति
कृच्छति	कृच्छति
कीर्ति	किर्तुति
कर्मति	कर्मति
कृच्छति	} कृच्छत
कृच्छत	
कर्मिण्य	कर्मिण्य (कर्मिण्य मूलकृत्य)
कर्मि	} कर्म (कर्म कृत्य)
कर्मि	
कर्मिण्य	

देव	संसृष्ट	मुञ्जपत्नी
कर्मि		कर्मि
मृग	क	मृग
कीर्त्तणी		कीर्त्तणी
कर्मिण्य	कर्मिण्य (१)	कर्मिण्य-कर्मिण्य-कर्मिण्य कर्मि

પરબરી		પરબરણ
વપરી	વમ્પરી	વામ્પર
જાલી		જામ
જોવારી		જુવાર

કેવલ સંજોમાં હામિક-હમ્પુ અને બરલી-બરલી વગેરે અનેક માવાબોલા શબ્દો પણ રૂબરૂબ છે

રાખરખાના

પ્રાકૃત શબ્દોને સમઘટના થાકે જતા પ્રચીન જ્ઞાનાપી સહકૃત શબ્દોને માધ્યમ તરિકે રાખરખાની પરંપરા જાણી આવે છે. સહકૃત પ્રસ્તુતમાં તે એ પરંપરાને અનુસરવામાં આવેલ છે.

સ્વરૂપના સામાન્ય ફેરફાર

(સામાન્ય નિયમો ગુજરાતી અષ્ટો છાંદે આપેલા છે અને વિશેષ નિયમો અમેઝી અષ્ટો છાંદે. એ વિમાન પાલ્લવો રહે. હજા ફેરફારના એ નિયમો જાણે જાણે મધ્યાબોર્ણ નામો કર્ણને અપાયેલા છે તે નિયમો તે તે સુવર્ણને જાણે જાણે મધ્યાબો છાંદે લખાઈ રહેલ છે અને એ જણા નિયમો જાણે માધ્યાનુ નામ લેવાય નિલા અથવા પ્રાકૃત માધ્યાનુ નામ કર્ણને અપાયેલા છે તે જાણારણ રીતે બહી અપાયેલી હજામ માધ્યાબોર્ણ ન્યુ જાણ તે જણા આ નિયમો અનુ કર્ણને પરોલ્ય અપાયેલા નિયમો લખાઈ જણું પાલ જાણું ખરે.)

૧ **ફૂલ મો રીર્ષમાય**

મહુલ	મહુલ
જણા	જણા

૧ હેમચન્દ્ર-પ્રાકૃત જ્ઞાપરણ ૨૧૧ ૩.

પરિવર્તના નિવારણે અપજ્ઞા થાકે એ સુચવ્ય અંધ આપેલા છે. પ્રકૃતે હજામનાં એ વર્ણે અપાયેલો બહી વધી જાણ્યું તે વર્ણ તે તે સુજો ઓરને અપાયી અપાયું.

पत्र	पत्र
आवृत्ति	आवृत्ति
मिथ	मीथ
मिथ्या	मीथ्या
पुंस्त्व	पुंस्त्व
कर्म	कर्म
विद्या	वीद्या
हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
पुत्र	पुत्र
महत्त्व	महत्त्व
रत्न	रत्न
वर्ष	वर्षा
कर्तृ	कर्तृ
विद्या	वीद्या
विद्या	वीद्या
विद्यार्थ	वीद्यार्थ
कर्म	कर्म
उत्तर	उत्तर
विद्यार्थ	वीद्यार्थ
कर्म	कर्म
विद्या	वीद्या
विद्यार्थ	वीद्यार्थ
विद्यार्थ	वीद्यार्थ

(शक्ति महात्म्यं कर्म कथा केरकर काव्य के । परमार्थ-परमात्म
 श्रुती शक्ति प्रकाश पृ ११ टिप्पण)

विष्णु	वड, विड.
विष्णु	वेणु विणु
विष्णु	वेणु, विड.

आ वर्ध ब्रह्मरक्षीयां उच्यते तस्युच्यते ब्रह्मरक्षी पूर्णं भावेण च

(यदि भाषायां आ न स्थिते भाषे हे. पूर्णो वा प्र ह १-२-१)

५ उ बो को

ब्रह्मरक्षी	ब्रह्मर
ब्रह्मर	ब्रह्म
ब्रह्मरक्षी	ब्रह्मर
ब्रह्मरक्षी	ब्रह्मर

आ ब्रह्मरक्षीयां उच्यते तस्युच्यते ब्रह्मरक्षी पूर्णं भावेण च

६ उ बो को

ब्रह्मरक्षी	ब्रह्मर
ब्रह्मर	ब्रह्म
ब्रह्मरक्षी	ब्रह्मर
ब्रह्मरक्षी	ब्रह्मर

आ ब्रह्मरक्षीयां उच्यते तस्युच्यते ब्रह्मरक्षी पूर्णं भावेण च

(यदि भाषायां आ उच्यते उ बो को भाषे हे. पूर्णो वा प्र ह ५-१-१)

७

अ नो म१

इय-क्य

दुव-उव

इय-क्य

(यदि भाषायां अ नो अ वाच्यं च. सूत्रो वा प्र वृ १-अ-अ)

८

अ नो उ२

भित्पुण्यम्-भित्तम्

मातृपुण्यम्-मातृवत्

मातृपुत्रा-मातृभिरा

६

अ नो रि३

अदि-रिदि

अद्य-रिद्य

अद्य-रिद्य

अद्य-रिद्य

अद्य-रिद्य

अद्य रिद्य अद्य.

अद्य रिद्य, अद्य.

(यदि भाषायां अ नो रि वाच्यं च. सूत्रो वा प्र वृ ३ अ-रि-रिप्यन्ते)

उद्यत् स्तोत्रे अद्योपां र नो अद्य कर्मा पद्यो वे अद्य स्तोत्रादे उ
 लो रि अद्योपां वे

१ हे प्र व्या १११२५। २ हे प्र व्या २१११२५।

३ हे प्र व्या २११११ १ १ १२२।

संघाथी मापामा मणि (मरुड)के बरके सलिन कव नाम छ. ए म
 ज्जाथि माण्डि (धरुड)के बरके मलिन कम्पारिस (धरुड)के बरके
 ज्जाथीस कगेरे कये के छ हे ज्जा था ८।११ ।

१ लु लो इच्छि^१
 कल्ल पिडिअ
 कल्ल पिडिअ

११ वे लो पर
 कल छेअ
 कल्ल वेअण
 वेअण वेअण

(पलि माण्डि ये लो ए बाव छ कथा पा म पृ १-५२)

१२ बी लो मोर
 बीलाम्पी कोरथी
 बील बीलण
 बीलुम बीलुअ

(पलि माण्डि बी लो कं बाव छे कथे वा म पृ ५-बीम्पो)

एक कदमबध प्रहृष्टता करीको विरुधर कल्लिअ पित्त बाव छे
 एअके कर्माव क्क लो क बाव छे कर्माव हे लो ए बाव छे क लो क
 तथा का बाव छे क्क लो क हे तथा क बाव छे क्क लो क एअरहे छे
 क लो ए एव बाव छे ए लो इ तथा हे बाव छे कन लो लो लो
 बाव छे

१ हे ज्जा था ८।११ । १२ हे ज्जा था ११।१४।८।

३ हे ज्जा था ११।१५ । ४ हे ज्जा था ११।१५।१२ ।

जा नो ज-जाय कस्तु, कस्तु भवता कस्तु.
 ई नो ए-बीय केच, बीय बीय
 उ नो उ-तवा जा-बाहु वाह, वाहा बाहु
 ख नो ख ह, उ-पूड़ी पट्टि, पिट्टि, पुट्टि-
 तुन तुन तिन, तुन
 सुखत सुखित, सुखित सुखत
 ल नो ल इकि-कस्तम किस्तम किस्तम
 ए नो ह, ई-केखा } सिद्ध, कीह, केह
 रेखा }

बी नो बी-बीरी गेरि फरि

तवा नामने कोई पर निमति अम्मा फी लेनो अत्य तर हुल
 होव छी बीय वाव छे अने बीय होव ले हुल वाव छ :

अपक-बीक	(ज नो जा)	अवमा निमति
स्वामत-सामत		
बीर्य बीहा	(ब नो बा)	बीबी निमति
रेखा रे	(खा नो ख)	अवमा निमति
मखिअ मखिअ	(मा नो म)	" "



स्वयं विहोच—मापवादिह-केरफारो

1

अ मा केरफार

अ मों मा

अविवाति आदिवाह, अदिवाह.

एखिन एखिन एखिन.

अरोह पारोह परीह.

अपन पावन, पवन.

तुन तुपा, तुप
 तपुदि तपिदि तपिदि तपे.

(तपि तप्यायां अ ओ आ वाच ड तपो वा प्र वृ ५१-अन्त)

अ ओ इ^१

उत्तम इत्तम
 क्तम क्तव
 मत्तम मित्तम
 त्तम त्तित्तम
 इत्त रिक्त
 अत्ता इत्ता अत्ता.
 क्त त्त क्त.
 त्तत्ता त्तित्त, त्तित्त.

(तपि तप्यायां अ ओ इ वाच ड तपो वा प्र वृ ५१-अन्त)

अ ओ इ^१

इत् इत् इत्
 अत् अत्
 त्तत् त्तत्
 इत्त इत्त
 इत्त इत्त

(तपि तप्यायां अ ओ इ वाच ड तपो वा प्र वृ ५१-अन्त)

अ ओ इ^१

अत् अत्
 अत्ता अत्ता तपि-तप्या

१ हे प्र वा ५१। ६ ४ ४६ ४१। ७ हे अ वा
 ५१। ३ हे प्र वा ११७ ७ ४ ५, ६। ४ हे प्र
 वा ११७ ६ ५, ६।

बो बो
बुबु बुबु

(बहि भावमां अ नी ए वास उ पुनी वा प्र० दृ० ५१-कम्प)

अ मो ओ

मममम ममेमम
बबबब बरोबब
बब बोमम
बबबि बोबो बबो
ससिसि सोस सुस
बबि बबिबि बबिबि

अ मो अर

मिमम मिममम
मुमम मुममम

अ मो आ

पुन पुन पुने
न पुन न पुन न पुन

अ वा ओर

आर आर
आर आर आर

१. दे इ अ वा ०११५ ०२ ०३ ०४ १ दे इ अ वा

०११५ ०३ दे इ वा ०११५ ४ दे इ अ ०११५ ५

2

आ ना कैरफार

आ लो आ

स्वामाच	वामन
नहराभू	नरहू
ककन	ककन, ककन
कुमार	कुमर, कुमार
हाकिम	हकिम हाकिम
आहुत	पनर पानर
चामर	चमर चमर
वा	व वा
वना	वद, वदा
व्या	वद, वदा
बनवा	बहव, बहवा

(नाकि बाबामी आ लो व वान के कुनो पाकि ३० पृ ५९-बाबामी)

आ लो ह

बाबार्ब	बाइरिब, बावरिब
मिवाकर	मिठिबर मिठाकर

आ लो ई १

कनार	कानिब
उपल	उप
	वीब

१ हे० अ आ ०११६ १९९० ०११ २. ई अ आ०
०११०५,०११ २ ई अ आ ०११०५१

का का का

का क
काका कक
काका कक

का का का

का क
का कक का

का का का

का क
काका कक का
का क
काका काका काका
का क कक काका

काका का का काका का का का का

का का का

का कक का

का का काका

का का का

का क

का का का

का का का

का का का

का का का

का का का

द्विचिदि	द्विचिद	
चदिद	चद	
द्विचिद	द्विचिद	
द्विचिद	द्विचिद	द्विचिद
द्विचिद	द्विचिद	द्विचिद

(पदि मन्त्रो ह नो व वाव के कुयो पदि ३० ह ५१
स्व)

ह नो ह १

चिद	चिद	(नवोद्या माध्या दिव्या)
चिद	चिद	
चिद	चिद	चिद

ह नो ह २

चि	चि	
चि	चि	चि
चि	चि	चि
चिदिद	चिदिद	चिदिद
चिदिद	चिदिद	चिदिद
चिदिद	चिदिद	चिदिद

(पदि मन्त्रो ह नो व वाव के कुयो पदि ३० ह ५१
-२००) का ह ३१ दिव्य.

ह नो ह ३

चिद	चिद
-----	-----

१ ह ३ का १११२, १११ २.१ ह ३ का १११
११ १२ १११ १ ह ३ का १११ २० २१

ई ना ४१

वीन कुन विन

ई ना ४२

वीन एर विन
 वीन हन वीन
 विहीन विहून विहीन

ई नो ४३

विनीयक बदेवम
 वीर वेर वीर

5

इ ना फेरफार

इ नो ३

इहनी लोई
 इविनि बहुनि
 इहन मरन
 इपरि कपि, इपरि
 इरन इरुन इरुन

(सकै नाबार्ना इ नो ३ वाद डे इमो धनि ३ इ ५१-
 इरुन-इरुन-इरुन)

इ नो ४५

इरुन इरिष
 इरुनि मिउनि

१ इ अ ना १११३ ३ २ इ अ ना १११३ २ १ ना
 २ इ अ ना १११३ ५ २ १ ४ इ अ ना १११३
 ३ ४ १ ६ १ १ १ २ इ अ ना १११३ १११३

(शक्ति मातामां उ मो इ वायं ते सुभो शक्ति प्र० पृ ५४-३=४)

उ मो ई१

सुग जीम

उ मो ऊ१

सुगत सुगत

सुभव सुभव सुभव

उ मो ओ१

सुसुगत सुसुगत, सुसुगत

(शक्ति मातामां उ मो ओ वायं ते सुभो शक्ति प्र० पृ ५४-३=५)

6

ऊ ना फेरफार

ऊ मो म१

सुसुगत — सुसुगत, सुसुगत

(शक्ति मातामां ऊ मो म वायं ते शक्ति प्र० पृ ५५-३=६)

ऊ मो हु१

सुसुगत निज सुसुगत

ऊ मो ई२

सुसुगत सुसुगत, सुसुगत

ऊ मो उ०

हु हु

सुसुगत सुसुगत

१ हे प्र मा ११११११ २ हे प्र मा १११ ११२

११५ २ हे प्र मा १११११ ४ हे प्र मा १११

१११११११ ५ हे प्र मा ११११११ ६ हे प्र मा-

१११ ११ १ ७ हे प्र मा ११११११ ११२ ।

+कम्बुवा कम्बुवा
 कम्बुव कोम्बव कोम्बव
 कम्बुव कम्बुव कम्बुव

ऊ नो वा

कुर केर कुर

ऊ नो मो

कुरी कोम्ब (कम्बि-कम्ब)
 कुरी कोम्ब (कम्बि-कोम्बोनी)
 कुर केर, कुर
 कुर कोना कुर

(कम्बि वाक्यां ऊ नो नो वाव हे कुरी कम्बि म इ ५५-कम्बि)

7

क ना किरफर

क नो मार

कवा कवा कवा
 कुरव कुरव, कुरव

क नो इ

कुरव कुरि
 कुरि कुरि
 कुरि कुरि

(कम्बि वाक्यां क नो इ वाव हे कुरी कम्बि म इ ५६-कम्बि)

+ कम्बुव कम्बुव कम्बुव कम्बुवको हे १ हे म वा
 कम्बुवको २ हे म वा १११२४११२५ ३ हे म वा
 कम्बुवको ४ हे म वा १११२४११२५११ ४

ह्रस्व	विश्रव
ह्रस्व	विश्रव
ह्रस्व	विश्रव
ह्रस्व	विश्रव
ह्रस्व	विश्रव
ह्रस्व	विश्रव
ह्रस्व	विश्रव
ह्रस्व	विश्रव

वर्णमाला का अर्थ है कि यह वे वर्ण हैं जो कि अक्षरों के अक्षर-
द्वारा लिखे जा सकते हैं।

अक्षर माला

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	अक्षर	अक्षर
अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर
अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर
अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर
अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर

(अक्षर माला का अर्थ है कि यह वे अक्षर हैं जो कि अक्षरों के अक्षर-
द्वारा लिखे जा सकते हैं।)

अक्षर माला

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	अक्षर	अक्षर
अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर
अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर
अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर
अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर

(अक्षर माला का अर्थ है कि यह वे अक्षर हैं जो कि अक्षरों के अक्षर-
द्वारा लिखे जा सकते हैं।)

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

अ नो धी।

पय कोला हुग

इय वीर विर

अ नो अरिः

अ हरिः

कु नो द्विः

आय मादिः

8

ए मा परकार

ए नो इः

वेना विना

वेर विर

ए नो ऊः

लेन ए, वेन

(शक्ति वाच्यं श्रीं एतत्तं न नो नो वाच त इय-वीर सुभी
शक्ति ३० इ ११-१२०)

9

ए मा वेरकार

ए नो अयः

उरय उरय

वीर वीर

ए नो इः

हनेर लविः

१ हे अ या १११२९१२९। २ हे अ या ८१।
१२१। ३ हे अ या ८१११२१०। अरिः-अरिः-अरिः
(आय) वाच हनेर विरः होवे कोर (१)। ४ हे अ या ८१११२१।
५ हे अ या ८१११२१। ६ हे अ या १११२१। ७ हे अ
य ८१११२१११।

11

छे पव
छे यान पारि (नारी बाण्डे)

सो ना फेरफार

सो नो बडा

पैर	बडर
पील	पडव
पीरव	पडरव
पीड	पडव
पीरव	पडरव

सो सो ब्यार

पैर पडर बडरव

(पदि म्पार्या सो सो ना ब्यार छे सुयो पदि प्र ५-सो-पड)

(पदि म्पार्या सो सो पडर्या सो सो म पव ब्यार छे सुयो

पदि प्र ५ ५ रिपव)

सो नो उर

पीडोरमि	मुडोरमि
पीरमिड	मुपमिड
पीरमिड	मुपारिड
पीरवे	मुनेर
पीरव	मुपेव, सोपेव

(पदि म्पार्या सो सो उ ब्यार छे सुयो पदि प्र ५ ५

-सो-पड)

सो नो ब्यार

सो	मारा
सो	मारी

१ हे प्र म्पार्या ५११९११ २ हे प्र म्पार्या ५११९१११
 ३ हे प्र म्पार्या ५१११९ १९११ ४ हे प्र म्पार्या ५११९११

व्यंजनना फेरफार

अस्य व्यंजनम अर्सयुक्त व्यंजन अथवा वे स्वरोची वच्चे
छेछा व्यंजनना सामान्य फेरफार :

१ छोप

(क) छप्पना अन्त व्यंजनो छोप वई बाव १ छे:

छमप्	छम
छमव	छम
अन्तर्गत	अन्तर्गत
पुम्	पुम्
अन्तर्ग	अन्तर्ग

(पाकि भाषामा प्य सञ्चवा अन्त व्यंजनो छोप बाव छे विपुत्र
विन्दु, सुयो पाकि प्र पृ १ निवम ७)

(ख) वे स्वरोची वच्चे आयेमो क ग ख घ ङ ट ड, प, ब
व अने व छोप पामे छे २

खेक	खेक	मदन	मदन
नगर	नगर	रिपु	रिपु
बन्धी	बन्धी	विपुत्र	विपुत्र
पत्र	पत्र	विशेष	विशेष
रसावळ	रसावळ	वदवानळ	वदवानळ

प्यां छोप वत्तं अवनो प्रम ववलो सम्व अमे त्यां छोप न
अरवोः छुछुछु प्रभाव, सुगत सञ्चार व्यञ्ज, सुठार विपुत्र अवाप
अपचान देव दान्त वगेरे.

पकि, वीरसेवी मानपी वेलाची वृत्तिव्य पञ्चाची अने अपरमंख
अपचानोमां वा निवमना अन्वारी छे छे हवे पञ्ची ववात्वाल छुचवाले.

(क) ना अणुवादी

-ना खोपले विक्रम तथा ना उच्छ्रममा अणुवादी बने पदा र्थी
 एवम व प्पु होव एव थोडा सामान्य बने विधेव विक्रमो वैवाची
 आवाप्यं व्यप्य नवी १

वैवाची	अणुवा
वक्त्रवेद्य	वक्त्रवेद्य
उपपुत्रवक्त्र	उपपुत्रवक्त्र
विक्रमवेद्य	विक्रमवेद्य
वक्त्र	वक्त्र
वाप	वाप
आपुत्र	आपुत्र वमेरे

-वैवाचीनामा वै सरोची वक्त्रे र्थीना उ नो ६ वाप १७

व०	व०	व०
वक्त्र	वक्त्र	वक्त्र
उप	उप	उप
वक्त्र	वक्त्र	वक्त्र
वक्त्र	वक्त्र	वक्त्र

-वैवाचीनामा व खे खे विक्रमो वक्त्रवेद्य उ ते वक्त्र वक्त्र वक्त्र
 होव तदा वापवी वैवाची वक्त्रवेद्य-वैवाची बने अणुवादीनामा पत्र वक्त्रवेद्य १

(वाक्त्रे मातृनामा उ नो ६ वाप उ वक्त्रो वाक्त्रे उ० पू ११-उ-६)

-वापवी वापवी व नो ६ वाप उ ४

व	वा	व
वक्त्र	वक्त्र	वक्त्र

१ हे अ वा वा १२२४। २ हे अ वा वा १२२५।

३ हे अ वा वा १२२६। ४ हे अ वा वा १२२७। ५ हे अ वा वा १२२८।

आश्रयति	आश्रयि	आश्रय
पुत्रिष्ठ	पुत्रियि	पुत्रिय

(प्राक् आश्रयति अ नो व वाच छे कुभो प्राक् प्र पृ ५७-३००)

-पञ्चाक्षी म्पामां अने वृद्धि-पञ्चाक्षी भाषामां त अयम रहे छे अने व नो वन त वाच १ छः

स०	वृ वै	प्रा०
अम्वली	अम्वली	अम्वर्
मद्वन	मद्वन	मद्वव
कद्वप	कद्वप	कद्वप्य
दामोदर	दामोदर	दामोदर

(प्राक् आश्रयति व नो त वाच छे कुभो प्राक् प्र पृ १०-२००)

-वृद्धि-पञ्चाक्षी भाषामां व नो व वाच छे अ नो व वाच छे अने व नो व वाच १ छः

स०	वै	वृ प०	प्रा
विरिष्ठ	विरिष्ठ	विरिष्ठ	विरिष्ठ
नगर	नगर	नगर	नगर नगर
नाव	नाव	नाव	नाव नाव
धीमूत	धीमूत	धीमूत	धीमूत
बजर	बजर	बजर	बजर
राजा	राजा	राजा	राजा
वाल्क	वाल्क	वाल्क	वाल्क
बधर	बधर	बधर	बधर
वाग्ध	वाग्ध	वाग्ध	वाग्ध

१ हे प्र व्वा ८११२ ० १२ १ २ हे प्र व्वा ८१११२५

केन्द्रमन्त्र वेदाङ्गनी एव धार्ये ते के वृद्धिमा-वैशाखी मन्त्राणां
 आदिमां धार्येता व सो क वरते वरी, व सो व कटी वरी तैमर
 आदिमां धार्येता व सो प वरते वरी तथा 'बुध' वाहुता व सो ल
 व वरते वरी ?

सं	वे	वृ प	म	हैमवन्त्र वृ-ने
वति	वति	वति	व	वति
विरि	विरि	विरि	विरि	विरि
वीमू	वीमू	वीमू	वीमू	वीमू
वाङ्म	वाङ्म	वाङ्म	वाङ्म	वाङ्म
विश्वोक्ति	विश्वोक्ति	विश्वोक्ति	विश्वोक्ति	विश्वोक्ति

(पाठि पाठ्यमां व सो क तथा व सो प वाच्ये ते सुमी पाठि ३

४ ५६ क-क तथा क-क)

-व्यङ्ग्य मन्त्रमां सोक सोक मन्त्रमां क सो प वाच्ये ते:

सं	क-क	म
विश्वोक्ति	विश्वोक्ति	विश्वोक्ति

(पाठि मन्त्रमां क सो प वाच्ये ते सुमी पाठि ३-४ ५६-क-क)

अन्वयार्थमन्त्रो व

- २/ केन्द्रमन्त्र मन्त्रोमां मन्त्र मन्त्रोमां व वाच्ये ते
 वरते वरते मन्त्र मन्त्र (पाठि-मन्त्र)
- केन्द्रमा मन्त्रमन्त्रो व

३ केन्द्रो पूर्णमां व के वा आदिमां ते के मन्त्रोमां व व के वा
 आदिमां ते एता व व वरीवरी मन्त्रोमां वरी वरी वरी वरी वरी
 व वरी वरी वरी वरी वरी वरी वरी वरी वरी वरी वरी वरी

१ है० क वा १० १२५५ १ है० क वा १० १२५५

२ है० क वा १० १२५५ १ व सुमी मन्त्र (क) ५ है० क
 वा १० १२५५

निघ्नैर	निघ्नार	निघ्नार	निघ्नार
प्रतिष्ठा	वतिष्ठा	पतिष्ठा	पतिष्ठा
लक्षण	लक्षा	लक्षण	लक्षण
मन्त्र	मन्त्र	मन्त्र	मन्त्र
व्यवहार	व्यवहार	व्यवहार	व्यवहार
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र
पत्र	पत्र	पत्र	पत्र

(वाचि वाच्यं व नो प वाच के सुनो वाचि म इ १२ अन्व)

५ वै लोकोपी वचो व्यवेच्य र नो व वाचो के

वच वच। वचो वच। वच वच। वच वच।

(वाचि वाच्यं र नो व वाच के सुनो वाचि म इ १६ अन्व)

वेधाची वाच्यं इ नो इ वच वाचर के

व	रे	व	व
वच	वच	वच	वच
वच	वच	वच	वच
वच	वच	वच	वच

६ वे स्वरोमी वरुव आवैता उ मो उ बाव छेः

मउ मउ । कुवार कुवार । पउमि पउर ।

७ वे स्वरोमी वरुव आवैता उ मो उ बाव छे

एवाम एवाम । गउड यउम । मीउमि मीउर ।

(पामि मावामा उ मो उ बाव उ पुमी पामि प्र पू ४३ मउउ)

(पामि मावामा म मो न बाव उ पुमी पामि प्र पू ५८ मउम)

८ वे स्वरोमी वरुव आवैता न मो न बाव छे अने एउमी आवैता रहेता न मो न विउम्ये बाव छे

कउम कउम । वउन वउन । वउम वउम ।

नपी नई, नई । नर नर नर । नममि नेर, नेर ।

(पामि मावामा न मो न बाव उ पुमी पामि प्र पू ६१ मउम)

पेडापी मावामा न मो न बाव उ छे

पुन पुन पुन

पन पन पन

९ अ पी अउता आ पी एठी आवैता व मो व व बाव छे

कमि कमि । कउम कउम । एमि एम ।

एव एव । एव एव । एव एव ।

१० वे स्वरोमी वरुव आवैता व मो व बाव छे

१ हे प्र म्वा ८११११११ २ हे प्र म्वा ८११२ २१

३ हे प्र म्वा १११२ २१११ ४ हे प्र म्वा ८१११२ ११

५ हे प्र म्वा ८११ १० १ ६ मीव (ल) मो अउता उ

७ हे प्र म्वा ८११११११

कपट्ये कवत्तम् । उन्म्य उन्म्या । बोपठि बोपर ।
 प्रठीप प्रीर । महिपाळ महिपाळ ।

(नाकि भाषायां प नी व वाच्ये हेः सुभो पाठि प्र पृ ११ पन्ने)

कपट्ये मायायां प नी व पन् वाच्ये हेः
 कपट्ये कवत्तु कपट्ये कवत्तु ।

३१ भाष्ये कपट्ये मायायां वे लठीनी कप्ये वापिका प नी
 म कवत्ता ह वाच्ये हेः

रिड रिम, रिड । रिध रिवा रिवा । सुधयन् सुधयन् ।
 कपटी कपटी, कपटी । कपट्ये कपट्ये कपट्ये ।

३२ वे लठीनी कप्ये वापिका व नी व वाच्ये हेः

कपट्ये कपट्ये । कपट्ये कपट्ये (पाठि कपट्ये)

(नाकि भाषायां व नी व वाच्ये हेः सुभो पाठि प्र पृ ११ पन्ने)

कपट्ये भाषायां व वे कपट्ये वे वन् वीकपट्ये हेः :

कपट्ये	कपट्ये	कपट्ये	कपट्ये
कपट्ये	कपट्ये	कपट्ये	कपट्ये
कपट्ये	कपट्ये	कपट्ये	कपट्ये, कपट्ये
कपट्ये	कपट्ये	कपट्ये	कपट्ये, कपट्ये
कपट्ये	कपट्ये	कपट्ये	कपट्ये, कपट्ये

१ हेः प्र वा २१११११ २ हेः प्र वा २१११११
 वा २१११११ ३ हेः प्र वा २१११११ ४ हेः प्र
 वा २१११११ ।

१३. शब्दनी आदिना व ने बहते व बोलावणें छः

बह बह्य । बहसु बहो । बाति बाह । बम बम । बवा बहा ।

(शक्ति भाषायां व नी व वाव छे मयय वावज सुजो शक्ति प्र ११)

पापवी भाषायां व नी व न रहें छः

बाति	बादि	बाह
बवा	बवा	बया
बाव	बाव	बाव

भाषावी भाषायां र ने बहते ल वावरे छे :

हर	हल	हर
विहार	विहाल	विहार
नर	नल	नर

शुभिका पद्याधीमां र न बहते विहारी ल बोलावणें छे

हर	हल	हर	हर
----	----	----	----

पेदावी भाषायां ल ने बहते क बोलावणें छः

कमल	कमळ	कमल
कुल	कुळ	कुल
कील	कीळ	कील

बहिक भाषायां व ने बहते छ बोलावणें छः

“ अन्विमैत्रं पुरोहितम् ” अन्वरेणी शारद

(शक्ति भाषायां व न व वाव छे सुजो शक्ति प्र ११ व १२)

१ हे मा म्वा १११२४५ २ हे मा म्वा १११२५२१

३ हे मा म्वा १११२६६ ४ हे मा म्वा १११२६१

५ हे मा म्वा १११२७० ।

१४ वायवीय विद्युत्की प्रकृत भावनां स मे जने व मे वदते ।
वीज्याय छेः

कुम्भ ह्युत् । वज्र रज्ज । निवृत्ति-निवृत् । कम्ब हर् । धोम्य लीट
क्याव क्यव । वीज वीज । निवृत्त निवृत् । पम्ब संव । वीज वीज ।
निजेव निजेव । जेव जेव । निजेव वीजेव ।

वायवीय भावनां स मे जने व मे ज्वा स मे वदते इत्यने छे
वीज्याय छेः

धोम्य धोम्य वीज्य । कुम्भ ह्युत् ह्युत् । वारुत वारुत वारुत् ।
इव इव इव । कुम्भ कुम्भ कुम्भ ।

१५ वी इत्यार अतुस्तारवी पत्नी व्यक्तये होम टी ह्ये वदते व न
वीज्याय छेः

विद विद वीद । वीद वीद वीद ।

(वे निवृत्ती सामान्य प्राकृत्यं अन्वयेत्य छे ते तथा च निवृत्ती
वीज्याय वीज्याय, वीज्याय वीज्याय वीज्याय अने अन्वयेत्य भावनां स
वायु वी छे विद्युत् के वीज्याय न होम त्वां वीज्याय, १५वी
निवृत्त वीज्याय वीज्याय वीज्याय वीज्याय अने अन्वयेत्य
व्य अन्वये छे

शब्दनी मंडर रहेछा भसंयुक्त पवा व्यंजनना +विशेष
केरफारो

1 एक मा केरफार

क मो क कर्क कपर । कीक कीक । कीकक कीकम । कुक
कम । (कुक एके कुको)

क मो ग कमुक कमुय । कमुक कमुय । काकम कापरिस ।
काकार कागार । कपाक कवासय । एक एग ।
एकत एगत । कमुक केमुक । कीर्कट किचपर ।
हुकम हुकम । मरकक मरगक । मरकट मरम्य ।
काक कवास । कोक कोग ।

क मो क किराट किशम (किशम एके किम)

क मो म कीकर कीमट, कीबर ।

क मो म ककिर ककिमा ।

क मो क प्रकीड पकड, पडड ।

क मो ह किडर किडर । किच किच । ककिर ककिर ।
कीकर कीकर कीबर ।

(नाकि मावामा क मो क तथा क मो न वाच के कुको नाकि

म पृ ५५ ककक तथा ककक)

+यदा विद्वेष केरफार वाच के त्यां सामान्य केरफार न न वाच
एम ककी, ककके, कीर्कट-किचकर-किचपर । कोक कोक कोरे । कुको
सामान्य किचम १ (क) तथा ३ । १ हे मा क्वा १११९८१ १८२,

१ ३, १८४ १८५ १८६।

2

१अ ना केरफार

अ मो क

अकृष्ण संकल्प । अकृष्ण संकल्प ।

3

ग मा केरफार

ग मो म

माफिणी नामिणी । मुंवाय मुंवाय ।

ग मो छ

छाय छाय । छापी छपी ।

ग मो ब

बुनम बुरब, बुरब । बुनब बुरब बुरब ।

4

२अ ना केरफार

अ मो अ

अिवापी अिवापी अिवापी

अ मो उ

अकृष्ण अकृष्ण

अ मो इ

अिवाय अिवाय, अिवाय

अ मो ए

अकित अकित अकित

5

५अ ना केरफार

अ मो उ

अकित अकित, अकित

6

५अ ना केरफार

उ मो उ

अकित अकित । अकित अकित । अकित अकित ।

उ मो क

अकित अकित

अकित अकित, अकित

+आरवति अकित अकित

१ हे अ वा

११११ ११

२ हे अ वा

२११११

१११११२ । १ हे अ वा

११११२१ हे अ वा

२१११११२१ ११ । x सुमो क ना केरफार ।

+ आरी आर वरु

अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित

अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित

अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित अकित

(पाकि मासामां ठ नो क ल्वा ङ प्वा बायं ठे सुभो पाकि प्र पृ ५८ उ००० उ०००)

7 १ठ मा फेरफार
ठ नो लु मडोळ बडोळ
ङ नो ह पिळ पिहळ ङि र

8 १ण मा फेरफार
ण नो लु रेणु रेणु रेणु । विष्णुमा विष्णुमा

(पाकि मासामां ङ नो ङ बायं ठे सुभो पाकि प्र पृ ५८ क०००)

9 १त मा फेरफार
त नो ङ तुळ तुळ तुळ
त नो छ तुळ तुळ तुळ
त नो ट त्तर त्तर त्तर
त नो ट्तर त्तर त्तर

(पाकि मासामां त नो ट बायं ठे सुभो पाकि प्र पृ ५८००० ,

त नो ङ पठाळ पठाळा
प्रति पाठि (पाकि-पाठि)
प्रतिमा पाठिमा
प्रतिपत् पाठिपत्ता
प्रतिहार पाठिहार

१ हे ङा ङ्वा ८११२ २ ११ सुभो वि ६ उभो साधाम्ब
फेरफार. २. हे ङा ङ्वा ८११२ ३। ३ हे ङा ङ्वा ८११
२ ४२ ५२ ६२ ७२ २१ २११ २१२, २१३ २१४ १५६।
७- ठे सव्ते प्रति कलेभो हीव ते लाम्ब धम्मोमां जा निवम क्वात्तवो
प्रतिपति पठिपति कोरे ।

अपुत्रि वपुत्रि । अयुत वायुत । विप्रीतक वप्रीतक । वृत्त मव ।
 अयुत वायुत । अयुत वायुत । अयुत वायुत । अयुत वायुत । अयुत वायुत ।
 अयुत वायुत । अयुत वायुत । अयुत वायुत । अयुत वायुत । अयुत वायुत ।
 अयुत वायुत । अयुत वायुत । अयुत वायुत । अयुत वायुत । अयुत वायुत ।

त नो ष	अतिमुक्तक अतिउत्तम । पतिर पतिव ।		
त नो ट	अति अत		
त नो ड	अप्री अप्री । अप्री अत । अप्री अत । अप्री अत । अप्री अत । अप्री अत । अप्री अत ।		
त नो ध	आधीय	आधीय	आधीय
	प्रीय	प्रीय,	प्रीय
त नो इ	अतिरि अतिरि (अति अतिरि अति अति अ इ ११ अति)		
	अतिर	अतिर	अतिर
	अतिर	अतिर	अतिर
	अतिरि	अतिरि,	अतिरि
	अतिरि	अतिरि,	अतिर

10

१० ना अतिरि

अतिर अतिर । अतिर अतिर । अतिर अतिर ।
 अतिर अतिर अतिर । अतिर अतिर अतिर ।
 (अतिर अतिर अतिर अतिर अतिर अतिर अतिर अतिर)

अ नो ध अतिर अतिर, अतिर ।

11

१३ मा फेरफार

६ लो ड

द्वय्य द्यु । द्यु द्यु । द्युय द्युय द्युय ।
 द्युय द्युय द्युय । द्युय द्यु द्यु । द्युय द्युय
 द्युय । द्युय द्युय द्युय । द्युय द्यु द्यु द्युय ।

(पाणि भाष्यमां ६ लो ड बाध डे तुभो पाणि प्र ५ ५९ द्=ड)

दित लो ञ्

दुहित द्युय

६ लो घ

+दीर्घ दीर्घ दीर्घ

६ लो ङ

द्व्ययय द्युय । द्व्ययय द्युय ।
 द्व्यययय द्युय ।

द्व्ययय द्युय । द्व्यययय द्युय । द्व्यययय द्युय । द्व्यययय द्युय ।

६ लो ञ्

द्व्ययय द्युय । द्व्ययय द्युय ।
 द्व्ययय द्युय । द्व्ययय द्युय ।

(पाणि भाष्यमां ६ लो ञ् बाध डे तुभो पाणि प्र ५० (० द्=ड)

६ लो ष

द्व्ययय द्युय

६ लो ह

द्व्ययय द्युय

12

२४ मा फेरफार

७ लो ड

द्व्ययय द्युय । द्व्ययय द्युय ।

१ ई मा ञ् ६११२१६२१ १२ ५२११११११११११
 २२११२२१२२११२२१ +मा मिशालभाष्ये द्युयते वातुभो द्व्ययय
 ए वातुभोर्षे त्वय्य द्युयमां वा द्व्ययय द्युयते +द्व्ययय द्युयते
 द्व्यययय द्युय त्वय्य द्युयते द्व्ययय २ ई मा ञ् ६११
 २२१११ ।

13

१५ ना कैरफार

न मो इ	शक्ति	शक्ति	शक्ति
न मो छ	शक्ति	शक्ति	शक्ति

(शक्ति मासिक व मो ल बाव के सुभी शक्ति प्र० पु ११ पन्ना)

14

१५ ना कैरफार

प ना फ	कठ	कठ	कठ
	शक्ति (बाव)	शक्ति	शक्ति
	शक्ति	शक्ति	शक्ति
	शक्ति	शक्ति	शक्ति
	शक्ति	शक्ति	शक्ति
	शक्ति	शक्ति	शक्ति

(शक्ति मासिक व मो ल बाव के सुभी शक्ति प्र० पु ४ पन्ना)

प मो म	शक्ति	शक्ति	शक्ति
	शक्ति	शक्ति	शक्ति
प मो ब	शक्ति	शक्ति	शक्ति
प मो र	शक्ति	शक्ति	शक्ति

15

१५ ना कैरफार

ब मो म	शक्ति	शक्ति
--------	-------	-------

(शक्ति मासिक व मो म बाव के सुभी शक्ति प्र० पु १२ पन्ना)

ब मो म	शक्ति	शक्ति	शक्ति
--------	-------	-------	-------

१. हे० प्र० पु ११११ । २. हे० प्र० पु १११२, १११३, १११४ । ३. हे० प्र० पु १११५, १११६

16 १म भा बरगार

म मो ब ५५५ ५५५

17 १म भा बरगार

म मो ब	५५५	५५५	५५५
म मो ब	५५५	५५५	
	५५५	५५५	५५५
म मो ब	५५५	५५५	५५५
म भा अनुवागिह	५५५	५५५	
	५५५	५५५	
	५५५	५५५	
	५५५	५५५	

18 १म भा बरगार

म भा बरगार ५५५ ५५५

(५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५)

म भा ब	५५५	५५५	५५५
म भा ब	५५५	५५५	५५५
म भा ब	५५५	५५५	५५५
म भा ब	५५५	५५५	५५५
म भा ब	५५५	५५५	५५५

५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५

५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५

५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५ ५५५

य नो ळ	युम्ह	युम्ह
	युम्हरीष	युम्हरीष
	युम्हाएष	युम्हारिष

य नो र	लातु	वातु
--------	------	------

(पाकि भाषायां य नो र वाच्ये के सुबो पाकि प्र० पू ४ लातु-वातु)

य नो ङ	वाडि	वाडि
--------	------	------

(पाकि भाषायां य नो ङ वाच्ये के सुबो वाडि प्र० पू १२ कण्ठे)

य नो ञ	करीम	करम
--------	------	-----

(पाकि भाषायां य नो ञ वाच्ये के सुबो वाडि प्र० पू १२ कण्ठे)

य नो झ
 जना जना जाही एखे जमनी जाया-जमनी
 जने जना एखे जसनी जमनी जना जरीरनी बरि,

19

१८ ता फेरफार

र नो ङ	किरि	किरि	
	किर	किर	किर
	मेर	मेर	
र नो झ	पनीष	पनावाच	पनाष
र नो ष	करवीर	करवीर	
र नो छ	बजार	इपाच	
	पुन	पुन	
	पार	पार	
	परिष	परिष	
	परिष	परिष	

- 22 १४ ना फेरफार
 छ नो छ कधी कधी
 छ नो छ कान कान
 छिरा छिरा छिरा (ना कान पैदाकी
 मयामा पन बनान छे)
 (पकि माकमं क नो कान छ कुनो पकि म पु १३ क=क)
 छ नो ह एर रह एर एकरए एकारए एकारए,
 एकरए एकरए एकरए ।
- 23 १५ ना फेरफार
 क नो छ एर छ । एकरए कपन । एर छ ।
 प नो छ छुना छुना, छुना ।
 क नो ह पाएन बाएन पाएन । अरुन पन्नु, पन्नु ।
- 24 १६ ना फेरफार
 छ नो छ सफल कतिनयो । छुना छुना ।
 स नो ह विवह विवह, विवह, विवह ।
- 25 १७ ना फेरफार
 ह नो ए कपार कपार अकपार
- 26 १८ नर सहित ध्वजकोशो कोप
 (ना विवह पैदाकी माकमं पन लो छे)
 क लया का नो कोप आकरए बाएन बाएन ।
 अकरए पाए, पाए ।

१ हे म म्वा ८११२६५२११ । २ हे म म्वा
 ८११२६५२११ २११ तथा ८१२११ । ३ हे म म्वा १११
 २१५२११ । ४ हे म म्वा ८१११८१ ५ हे म म्वा ८११
 ११० ११० २११ २० २ १ ।

ग नो छोप—	आपठ	आम	आगम ।
अ नो सोप—	रुम रु	रुम ।	रुम्बर रुमर, रुमबर ।
	माकन माल	भावर ।	रामकुळ राठळ राकठळ ।
इ तु तथा	पारपीठ पावीठ पावरीठ ।	पारपल पावडन पावडन ।	
दे नो छोप	उडुम्बर उबर	उठबर ।	
	डुम्बरी डुम्बरी	डुम्गाएवी अन्धा डुम्बारी ।	
प नो छोप	किम्बर	किम्भ	किम्बर ।
	कम्बर	कम्भा	कम्बर ।
	हड	हिड	हिड ।
	उहड	उहिड	उहिड ।
ख नो सोप	खड	खड	खड ।
	खर्तमान	खर्तमाप	खर्तमाप ।
	एमेव	एमेव	एमेव ।
	टाप	टा	टा ।
	देवकुळ	देउळ	देवडळ ।
	प्रवारक	पारक	पारारक ।
	बाप	बा	बा ।
बि नो सोप	बीकित	बीक	बीकित ।

27

आदि ध्यंजनो सोप

अमनी पूर्वमां स्वर नवी एवा अर्थात् ध्यंजनी आदिमां रङ्गा
 ध्यंजनो पत्र कोई कोई सभ्यमां नवारेक सोप । नई अत्र ठे

ब अ ।

बिड इव ।

पुन बव उयी ।

संयुक्त व्यंजनोना सामान्य किरफारो

१ (पूर्ववर्ती व्यंजनको छोड़)

इ ए इ इ ए ए इ इ इ अने न् आ धंजनी छोड़े न
 संयुक्त व्यंजनां एतानां होव छी तन्मनो छोप बाब छे । अने जोप का
 लो नै मयम बाची रहे ते सो बादिमां न होव छे न एतने
 बी धम छे मम इम इम इमो अरु एव एव इ इ अ
 अने एइ होव छी तेने वरुके अलुअमे वत एइ, इ, ए अने
 ए ओकाव छे एता इमम इमो अरु ए एइ, इ, ए एता ए
 होव छी तेन वरुके अलुअमे ए एइ, ए, ए एता ए ओकाव छे ।
 क मुप मुा-मुा । मुक-मुा-मुा । एअ-एअ-एअ । मिव-मिव
 मिव-मिव ।

ग गुअ-गुअ-गुअ-गुअ । गुअ-गुअ-गुअ-गुअ ।

ङ ङरुअ-ङअ-ङअ । ङरुअ-ङअ-ङअ ।

ञ ञइ-ञअ-ञअ । ञइ-ञअ-ञअ ।

त तपअ-तअ-तपअ । तपार-तपअ-तपअ । बाती-बाती^१ ।

थ थरुअ-थअ-थअ । थरुअ-थअ-थअ ।

प पअ-पा-पा । पा-पा-पा ।

फ फिअ-फिअ-फिअ (शक्ति फिअ) । फअअ-फअअ ।

भ भोअ-भुअ । भभु-भभु ।

भ भिअ-भिअ-भिअ-भिअ । भुअ-भुअ-भुअ । क-क-क-क-क ।

ख खिअ-खिअ-खिअ । ख-ख । लोइ-लोइ । लअ-लअ ।

(शक्ति सामान्य च बी छ, क बी ल ए बी म, ए बी
 म त बी ल ए बी म इ बी इ, इ बी इ, ए बी ए, म बी

१ हे अ वा एअ १ हे अ वा एअ

१ हे अ वा एअ १ हे अ वा एअ

प्य स्व नो क्व स्व नो क्व स्व नो क्व, स्व नो य स्व नो स्व
 तथा स्म नो स्व वाय छे कुनो पाणि प्र पृ ४१ २४ (नि १)
 २५ (नि ११) ४१ ३ २१ स्मर्तु पस्तु २६ (नि १२) ३०
 (नि ४५) ३५ (नि ४८) ३० छुण्ड-छुण्ड ३६ ३० ३५ (नि
 ४८) २८ ३६ स्मन्-स्मन् लभ)

परवर्ती व्यञ्जनमो छोप

य न भवे य आ व्यञ्जना छोरे पत्र सपुत्र व्यञ्जना परवर्ती होय
 ती तेनो छोप, पाय छ भवे छोप कदा पठी के व्यञ्जन बाधी रहे ते
 को आदिमा न होव छे न क्वच पर्य आर छ

म पुम्-मुप-भुग । स्मर-सर । रमि-रमि-रसि । स्मेर-सेर ।
 म मम-मय-मम । मम-मप-मम । वृषम-वृषम-वृषम (जहाँ न
 क्वच बली गवी)

य कुप-कुप-कुप । व्याव-वाह । दामा-सामा । चय-चय चेरुं ।

(पाणि भाषामा न ना तथा न ना ज्येन मारे ज्यो पाणि प्र
 पृ ५ तथा पृ ४८ (नि १६) पृ २१ (नि २५)

पूर्ववर्ती तथा परवर्ती व्यञ्जनमो स्त्रोप

य य र ल तथा विद्यय आ व्यञ्जना छोरे पत्र सपुत्र व्यञ्जना
 पूर्ववर्ती होय के परवर्ती होव लो मौर पाय छ भवे लोप कदा पठी
 के व्यञ्जन बाधी रहे त को आदिमा न होव छे न क्वच क्वच वाय छे

पूर्ववर्ती व भय-भय-भय । लम्-लम्-लम् । लम्-लम्-लम्-लम् ।
 लम्-लम्-लम्-लम्-लम् ।

प्राज्ञा	वज्र	दण्ड
कपट	मनोम	मन्त्रेण
सङ्ग	संज्ञा	सत्ता
सर्वज्ञ	सम्पन्न	सम्पन्न

(प्राज्ञि मापाम्यं व मो व वाव छे वृषो वा प्र वृ २४
विषय प्रकृत-वज्र)

प्र वज्र—वज्र, वज्र । वृ २४, २४ । वज्र वज्र वज्र । मय मय,
मय । वृ २४, २४ । वृ २४, २४ । वृ २४, २४ । वृ २४, २४ ।

वज्रमय मापाम्यं वज्रमय वज्रमय पक्षीं रवेण 'र' मे वृषो
विषये वाव छे विष-विष वज्रमय विष । वज्रमय विष ।

(प्राज्ञि मापाम्यं वज्रं वावां वृषोरो मारे वृषो प्राज्ञि प्र वृ
२ २१ (मि २१ २) वृ २२, २३ (मि २ २१) वृ
२५ (मि ४२) वृ १ (मि १२) वृ १२ (मि १५, १६)
वृ १२ (मि १५)

२

व विधान

(वही मे मे विधान कराम्यं छे ते वामाम्यं एकरविया वज्रमय
विधान वदिसा एते वज्रमय वज्रमय कराम्यं वने वदिसा
वज्रमय विधान वदिसा वही एते वज्रमय वज्रमय कराम्यं ए
वज्रमय वज्रमय वज्रमय)

वृ २ मो व वृष-वृष एते वज्रमय वज्रमय मय । वृषा-वृषा (वृषा एते
वज्रमय-वज्रमय वज्रमय) । वृष-वृष : वृष-वृष ।
वृष-वृष । वृष-वृष । वृष-वृष ।

वृ मो व वृष-वृष । वृष-वृष । वृष-वृष । वृष-वृष ।

मागधी भाषामा क्ष ने बदले \asymp क आम जिह्वामूलीय१ 'क'
 बोलाय छे यक्ष य \asymp क प्रा० जक्त
 राक्षम ल \asymp क्ष ,, रक्तस

गृक् नो ख निष्क-निक्ख । पुष्कर-पोक्खर । पुष्करिणी-पोक्खरिणी ।
 शुष्क-सुक्क ।

स्क नो ख स्कन्द-ग्द । स्कन्ध-सध । स्कन्धावार-सधावार ।

स्क नो क्ख अवस्कन्द-अवक्खद । प्रस्कन्देत्-पक्खटे ।

उपस्कर उक्खर । उपसृत्त उक्खड । अवरकर-अवक्खर
 एट्टे ओरर

(पालि भाषामा ष्र नो क्ख, स्क नो ख तथा ऋय थाय छ जूओ
 पालि प्र० पृ० ३६, ३७)

ज्या ज्या मयुक्त प अथवा स आवे त्या तमाम शब्दोमां मागधी
 भाषामा अस बोलाय छे

संयुक्त प उप्पा-उस्मा प्रा० उप्पा । धनुष्वण्ड-धनुस्सण्ड प्रा० धणुक्खड ।
 कट-कट्ट ,, कट्ट । निष्कल-निस्कल ,, निष्कल ।
 विष्णु-विस्नु प्रा० विण्हु । शप्प-सस्स प्रा० सप्प ।
 शुष्क-सुस्क प्रा० सुष्क ।

संयुक्त स प्रस्सलति-पस्सलदि प्रा० पस्सलड । बृहस्पति बुहस्पदि
 प्रा० बुहप्पड । मस्करी-मस्कली प्रा० मस्सरी । विस्मय-
 विस्मय प्रा० विम्हय । हस्ती-हस्ती प्रा० हत्थी ।

(पालि भाषामां आ विधान माटे जूओ पा० प्र० पृ० ५१
 नि० ६८)

१ हे० प्रा० व्या० ८।४।२९६। २ हे० प्रा० व्या० ८।२।४। ३ हे०
 प्रा० व्या० ८।४।२८९।

३

ब विधाम

त्या नो ब त्वाय-वाय । त्वापो-वापौ । त्वदृष्टि-वदर ।
 त्व नो ब्य प्रयव-पयव । प्रयूय-पयूयु । व्य-व्य ।
 त्व नो ब क्त्वा-क्त्वा । क्त्वा-क्त्वा । क्त्वा-क्त्वा ।
 कुम्त्वा-कुम्त्वा । कुम्त्वा-कुम्त्वा । कुम्त्वा-कुम्त्वा ।

(पश्चि मासर्मा त्व नो ब ब क्त्वा त्व नो ब ब पाव डे
 ब्रुओ पा ३ पृ २० त्वा १० विष्णव)

४

क विधाम

स्त नो क्त् क्त-क्त द्युके उक्त । क्त-क्त । क्त्मा-क्त्मा (शुक्लौ)
 क्त-क्त । क्त-क्त ।
 स्त नो क्त क्त्वि-क्त्वि । क्त-क्त । क्त्वा-क्त्वा । क्त-क्त ।
 क्त-क्त । क्त-क्त ।

(पश्चि मासर्मा क्त नो क्त क्त क्त त्वा क्त नो क्त त्वा क्त, क्त
 क्त पाव क्त ब्रुओ पा ३ पृ १० क्त-क्त क्त क्त क्त त्वा
 क्त-क्त विष्णव पृ १६ वेमके, क्त क्त क्त क्त । क्त-क्त क्त ।
 क्त-क्त क्त पा ३ पृ १६)

क्त नो क्त-क्त-क्त-क्त ।
 क्त नो क्त-क्त-क्त-क्त । क्त-क्त । क्त-क्त । क्त-क्त । क्त-क्त-क्त-क्त ।
 क्त-क्त-क्त-क्त ।

क्त नो क्त-क्त-क्त-क्त । क्त-क्त । क्त-क्त । क्त-क्त-क्त-क्त ।
 क्त-क्त-क्त-क्त ।

१ हे मा व्या १२१३ त्वा १५ २ हे मा व्या
 ८२१३ ३ हे मा व्या १२१५ ४ हे मा व्या ८२१३ ३

त्स नो च्छ—उत्सव उच्छव । उत्साह उच्छाह । उत्सुक उत्सुअ ।
चिक्छिमाति चिच्छुच्छ । मत्सर मच्छर । सक्त्सर सक्च्छर ।

प्स नो च्छ—अप्सग अच्छग । जुप्सति जुप्सुच्छ । लिप्सति लिप्सुच्छ ।
जुप्सा जुप्सुच्छा । लिप्सा लिप्सा । इप्सति इच्छुच्छ ।

मागवी भाषामां ञ्ठ ने वदले 'श्च' बोलाय १ छे

गच्छ गश्च प्रा० गच्छ । पिच्छल पिश्चल प्रा० पिच्छल ।
पृच्छति पुश्चदि प्रा० पुच्छुच्छ । वत्सल-वच्छल-वश्चल प्रा० वच्छल ।
उच्छर्त्तति उश्चलदि प्रा० उच्छलुच्छ । तिर्यक् तिग्निच्छ तिरिश्चि प्रा० तिरिच्छि ।

(पालि भाषामा व्य नो च्छ, थ नो च्छ, त्स नो च्छ तथा प्स
नो च्छ धाय छे जूओ पा० प्र० पृ० २१, ३८, २९, ३८)

५. ज विधान

घर नो ज—द्युति जुज । द्यात जोअ ।

द्य नो ज्ज—मद्य मज्ज । अद्य अज्ज । अद्यय अवज्ज । वेद्य वेज्ज ।

य्य नो ज्ज—शय्या सेज्जा । जय्य जज्ज ।

र्य नो ज्ज—आर्य अज्ज । नार्य कज्ज । पर्याप्त पज्जत्त । भार्या भज्जा ।
मर्यादा मज्जाया आर्यपुत्र अज्जटत्त ।

गौरसेनी भाषामा य ने वदले य्य३ पण बोलाय छे

आर्यपुत्र अय्यटत्त, अज्जटत्त प्रा० अज्जटत्त । आर्य अय्य, अज्ज प्रा० अज्ज ।

कार्य कय्य कज्ज प्रा० कज्ज । सूर्य सुय्य सुज्ज, प्रा० सुज्ज ।

मागवी भाषामा य ने वदले विकल्पे य्य४ बोलाय छे

१ हे० प्रा० व्या० ८।४।२९५। २ हे० प्रा० व्या० ८।२।२४।
३ हे० प्रा० व्या० ८।४।२६६। ४ हे० प्रा० व्या० ८।४।२९२।

अप अप्य अ अग्र । अप अप्य अ अग्र । विधापर
विधापर अ विधापर ।

(शांति भाष्यार्थं अ नो अ अग्र एवा अ नो अग्र । अ नो अग्र
अ अ १८ अने १९ अ विधापर)

(शांति भाष्यार्थं अ नो अग्र अ अने अग्र एवा अ नो अग्र
अ १९, १९)

३ अ विधान

अप्य नो अ अग्र एवा । अग्र एवा ।

अप्य नो अग्र अग्र एवा अग्र एवा । अग्र एवा । अग्र एवा ।
अग्र एवा । अग्र एवा ।

अ नो अ अग्र एवा । अग्र एवा । अग्र एवा । अग्र एवा ।
अग्र एवा । अग्र एवा । अग्र एवा । अग्र एवा ।

अ नो अ अग्र एवा । अग्र एवा ।

अ नो अग्र एवा अग्र एवा ।

(शांति भाष्यार्थं अ नो अ अग्र एवा अ नो अ अ १९ अग्र एवा अग्र एवा)

(शांति भाष्यार्थं अ नो अ अग्र एवा अ नो अ अ १९ अग्र एवा)

४ अ विधान

अप्य नो अ—अग्र एवा । अग्र एवा । अग्र एवा । अग्र एवा । अग्र एवा ।

१ हे अ अग्र १९२९। २ हे अ अग्र २१२९९।

३ हे अ अग्र २१२९। ४ हे अ अग्र १९२९।

(केटलाक शब्दोमा र्त नो र् लोप पामो जाय छे आवर्तक आवत्तथ । मुहूर्त मुहुत्त । मूर्ति मुत्ति । धूर्त धुत्त । कीर्ति कित्ति । कार्तिक कत्तिथ । कर्नरी कत्तरी । इत्यादि)

(पालि भापामा त नो ट धाय छे जूओ पा० प्र० पृ० ५८)
घौरसेनी भापामा कोई कोई प्रयोगमा न्त नो न्द१ बोलाय छे

अन्त पुर अन्तेउर प्रा० अन्तेउर ।

निधिन्त निधिन्द प्रा० निधिन्त ।

महान—महन्त महन्द प्रा० महन्त ।

८ ठ विधान

ष्ट्र^२ नो ङ्—इष्ट-इदृष्ट । अणिष्ट-अणिदृष्ट । ऋष्ट-कदृष्ट । दष्ट-ददृष्ट ।
दृष्टि-दिदृष्टी । पुष्ट-पुदृष्ट । मुष्टि-मुदृष्टि । यष्टि-लदृष्टि । सुराष्ट्र-सुरदृष्ट ।
सृष्टि-सिदृष्टि ।

(अपवाद टथा इष्टा । उष्ट्र उदृष्ट । संदष्ट सदृष्ट)

मागधी भापामा ङ् तथा ष्ट ने वदळ स्टः बोलाय छे

ङ् नो स्ट—पङ् पस्ट प्रा० पङ् । भट्टारिका भस्टारिया प्रा० भट्टारिया ।
भट्टिनी भस्टिणी प्रा० भट्टिणी ।

ष्ट्र नो स्ट—कोष्टागार कोस्टागाल प्रा० कोदृष्टागार । सुष्टु-शुस्टु प्रा० सुदृष्टु ।
पञाची भापामा ष्ट ने वदळ सट्र बोलाय छे

कष्ट-कमट प्रा० कदृष्ट । दष्ट-दिसट-प्रा० दिदृष्ट ।

(पालि भापामा ष्ट्र नो ङ् धाय छे जूओ पा० प्र० पृ० २६ तथा ते पृष्ठनुं टिप्पण)

९ ण विधान

५६ नो ण—आजा आणा । जान णाण ।

१ हे० प्रा० व्या० ८।१।२६१। २ हे० प्रा० व्या० ८।२।३४।
३ हे० प्रा० व्या० ८।१।२९०। ४ हे० प्रा० व्या० ८।१।३१४।
५ हे० प्रा० व्या० ८।२।४२।

इ मो इय—विज्ञान विज्ञान । प्रका पन्ना । संज्ञा संज्ञा ।

मन मो मय—विद्युत् विद्युत् । प्रद्युम्न प्रद्युम्न ।

मागधी मागामी मय मय इ मने मय ए चार अहारे वरके मने मोमय छे तथा पैशाची मागामी मय मय मय मने इ ए मय अहारे वरके मय मोमय छे

मागधी पैशाची	}	मय मो इय	अमियन्तु	अमियन्तु	मय	अमियन्तु
			कमय	कमय	"	कमय
"		मय मो इय	दुमय	दुमय	"	दुमय
			दुमय	दुमय	"	दुमय
			दुमय	दुमय	"	दुमय
"		इ मो इय	पन्ना	पन्ना	"	पन्ना
			वर्ष	वर्ष	"	वर्ष
			वर्ष	वर्ष	"	वर्ष

मागधी इय इय—अमयि अमयि मय अमयि । कमय कम्पय मय वर्ष । अमय अमय मय वर्ष ।

(यदि मागधी इ मो व तथा म मो इ चार छे मने म य म य १४ दिवस तथा ४४)

(यदि मागामी इ मो मय म मो मय तथा म मो मय चार छे मने म य म य २१ २४)

इय मो इय मय मय । विद्युत् विद्युत् ।

मन मो मय मय मय । विद्युत् विद्युत् । अमय अमय ।

१ हे म य म य २१२२ । २ हे म य म य २१२ २ मने १ । ३ हे म य म य १२ । ५

स्त नो ण्ह स्नात ण्हाअ । ज्योत्स्ना जोण्हा । प्रस्तुत ण्हुअ ।
 ह्न नो ण्ह जह्नु जण्हु । वद्धि वाण्ह ।
 ह्ण नो ण्ह अपराअ अवरण्ह । पूर्वाह्ण पुव्वण्ह ।
 ह्ण नो ण्ह तीक्ष्ण तिण्ह । श्लक्ष्ण मण्ह ।
 ह्म नो ण्ह सूक्ष्म सण्ह ।

पंथाची भाषामा स्त ने वदळे सिन१ बोलाय छे

स्नात	सिनात	प्राकृत	ण्हाअ
स्तुया	सिनुसा	„	ण्हुसा
	सुनुसा		सुण्हा

(पालि भाषामा आ रूपातर माटे जूओ अनुक्रमे पा० प्र० पृ० ४६ (नियम ६३) तथा पृ० ४७ इन=ण्ह, ञ्ह तथा ण्ण=ण्ह तथा पृ० ४८ टिप्पण तीक्ष्ण तिण्ह निम्ब्र, तिक्खिण तथा पृ० ६९, टिप्पण पूर्वाह्ण पुव्वण्ह)

(पालि भाषामा स्नान सिनान । स्तुया सुणिसा, सुण्हा, हुसा आवा रूपो वाय छे जूओ पा० प्र० पृ० ४६ टिप्पण ६१)

१० थ विधान

रस्त नो थ स्तव थव, तव । स्तम्म थम । स्तम्भ थद्ध, ञ्ह ।
 स्तुति शुद्ध । स्तोक थोअ । स्तोत्र थोत्त । स्त्यान थोण ।

स्त नो त्थ अस्ति अत्थि । पयस्त पत्तय पत्तद्ध । प्रगस्त पसत्थ ।
 प्रस्तर पत्थर । स्वस्ति सत्थि । हस्त हत्थ ।
 (अपवाद समस्त समत्त, स्तम्भ तव)

पाप्मी भावामी र्भे मे वरुके तथा एव मे वरुके छा । वीक्षण केः
 र्भे नो स्त कवन्ति कस्तनरी । आ अरुवर्त् । धार्त्वाद् कस्तनम् ।
 आ एकात् ।
 एव नो स्त उपस्विता उपस्विन् प्र उपस्विन् । मुस्विता मुस्विन् प्र मुस्विन् ।
 (वाक्लि भावामी एव नो य तथा एव वाव के वृत्तो पा प्र पू १)

११ प विधान

एवम नो प कुम्भम् कुम्भम् ।
 कम् नो प्य कम् कम् । क्विप्वी क्विप्वी । क्वी क्वी क्वी ।
 १५ नो प्य निम्नाप निम्नाप ।
 निम्नुक्ता निम्नुक्ता ।
 निम्नाप निम्नाप ।
 निम्नाप निम्नाप ।
 एव नो प्य कस्तनम् कस्तनम् ।
 कस्तनम् कस्तनम् ।

(वाक्लि भावामी एव नो एवम् क्वे कम् नो कुम्भ वाव के वृत्तो
 वा म पू ४१ कुम्भम् कुम्भम् वा म पू ४२ क्विप्वी)

१२ फ विधान

एव नो फ् क्विप्वा क्विप्वा । क्विप्वा क्विप्वा । पुष्प पुष्प । क्विप्वा क्विप्वा ।
 एव नो फ् कस्तनम् कस्तनम् । कस्तनम् कस्तनम् । कस्तनम् कस्तनम् ।
 एव नो फ् प्रतिस्वनी प्रतिस्वनी । प्रतिस्वनी प्रतिस्वनी ।
 प्रतिस्वनी प्रतिस्वनी । कस्तनम् कस्तनम्, क्विप्वा ।
 क्विप्वा क्विप्वा ।
 कस्तनम् कस्तनम् । क्विप्वा क्विप्वा । क्विप्वा क्विप्वा ।

१ हे मा न्वा १४२५१ २ हे मा न्वा १२५२१
 ३ हे मा न्वा २४२५१ ४ हे मा न्वा २४२५१

(पालि भाषामा प्य नो फ्फ तथा स्स् नो फ्फ अने फ्फ थाय छे.

जूओ पा० प्र० पृ० ३९)

१३

म विधान

१द्ध नो म ह्वान भाण । ह्वयते भयए ।

ह्व नो व्म आह्वान अव्भाण । आह्वयते अव्मयते ।

जिह्वा जिह्वा, जीहा । विह्वल विह्वल, भिह्वल, विह्वल ।

(पालि भाषामा ह्व नो म थाय छे जूओ पा० प्र० पृ० ६८ तथा
गह्वर=गव्भर पृ० ३५, टिप्पण)

१४

म विधान

०ग्म नो म्म युग्म जुम्म, जुग्म । तिग्म तिम्म, तिग्म ।

न्म नो म्म जन्म जम्म । मन्मथ वम्मह । मन्मन मम्मण ।

(पालि भाषामा ग्म नो गुम थाय छे जूओ पा० प्र० पृ० ४९
तथा न्म नो म्म थाय छे जूओ पा० प्र० पृ० ४६ न्म=म्म)

क्ष्म नो म्ह पक्ष्म पम्ह । पक्ष्मठ पम्हल ।

श्म नो ,, कश्मीर कम्हार । कुश्मान कुम्हाण ।

प्प नो ,, उप्पा उम्हा । प्रीप्प गिम्ह ।

स्म नो ,, अस्मादय अम्हारिम । विस्मय विम्हय ।

ह्व नो ,, ब्रह्म बम्ह । ब्राह्मण वम्हण ।

ब्रह्मचर्य वम्हचेर, बभचेर । सुह्व सुम्ह ।

अपभ्रश भाषामा पूर्वदर्शित म्ह ने बदले म्म३ पण बोलाय छे

ग्रीप्प गिम्ह, गिम्म प्रा० गिम्ह

इलेप्प सिम्ह, गिम्म प्रा० सिम्ह

पक्ष्म पम्ह पम्म प्रा० पम्ह

पञ्चक पञ्चक पञ्चक प्र पञ्चक
 प्राञ्चक पञ्चक पञ्चक प्र पञ्चक

(पाणि भाष्यमां एम्=म्, एम्=म् एम्=म् वाच के ट्वा क्वा
 एम् नो ट्वा एम् नो एम् के स वाच के च्चो वा प्र इ ५)

१५ सूत्र विधान

१५ नो सूत्र—पञ्चक पञ्चक । पञ्चक पञ्चक ।

(पाणि भाष्यमां इ मे वरके द्विच बोधाव के इव-दिव्यर एम्
 वा प्र इ ११)

१६ कैटकाक संयुक्त व्यञ्जमोली वञ्जे स्वरबो वधारो

१६ नो स्पामे सिद्ध—काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् ।
 सिद्ध सिद्धि । सिद्ध सिद्धि । सिद्ध सिद्धि ।
 सिद्ध सिद्धि । सिद्ध ।

१७ नो स्पामे सिद्ध—काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् ।

१८ नो स्पामे सिद्ध—काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् ।

१९ नो स्पामे सिद्ध—काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् ।

२० नो स्पामे सिद्ध—काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् ।

काम्पति सिद्धम् । सिद्ध सिद्धि ।

२१ नो स्पामे सिद्ध—काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् ।

काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् ।
 काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् ।
 काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् ।
 काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् ।
 काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् । काम्पति सिद्धम् ।

आ घर्षां उदाहरणोमां 'रिय' पण समजी ट्ठेवानी तथा आ विधान
व्यापक नदी पण प्रयोगानुमारी छे जूओ ५ अ विधान पृ० ५७

पेशाची मापामां यं ने बदळे रिय१ पण बोलाय छे
मार्या मारिया, भज्जा प्रा० भज्जा ।

०क्ष ने स्थाने रिस-आदर्श आयगिस, आय स । दर्शन दरिसण बहण ।
मुदर्शन मुदरिसण, मुटमण ।

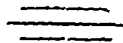
र्ष ने स्थाने रिस-वर्ष वरिस, वाम । वर्षागत वरिससय, वाससव ।
वर्षा वरिसा, वासा ।

ई ने स्थाने रिह्-अर्हति अरिहड । अर्ह अरिह । गर्हा गरिहा ।
वर्ह वरिह ।

३स्त्रीलिङ्गी पदना संयुक्त व्यंजनोनी वच्चे स्वरनो वधारो :

ष्ठी ने स्थाने घुवी	ल्ष्ठी	रुघुषी	रुहुषी ।
ष्ठी ने स्थाने धुवी	पृष्ठी	पुधुवी	पुहुवी ।
ष्ठी ने स्थाने दुवी	मृष्ठी	मिदुषी	मिदुषी ।
ष्ठी ने स्थाने गुवी	तन्ष्ठी	तनुवी	तणुवी ।
ष्ठी ने स्थाने रुवी	गुष्ठी	गुरुषी	
ष्ठी ने स्थाने ह्रुवी	बह्वी	बहुषी	

(पालि मापामां पण केंटलाक संयुक्त व्यंजनोनी वच्चे स्वर मो
वधारो थाय छे जूओ पा० प्र० पृ० ४६ (नि० ६२) पृ० ३९,
पृ० ११, पृ० २६२ स्त्री प्रत्यय)



संयुक्त सर्वज्ञानोदा विशेष क्लृप्ता

१ १४

क मो क—कृष सुख सुत । पच पच, पत ।

ल मो क—रुम इव रुम ।

त्य मो क—पुत्रा वाच, मातृपत ।

इ मो क—इव इव इव ।

हृत्—अथ यथा ये इति वापेयं के त्वां तां विद्यते विद्या
अथयु

(कृषो प ३ इ ४१ पच कृष । अस्तुय अस्तुय ।
(विपच) इव इव इ ४९ विपच)

२ १५ ३

इय मो क—टीव विपच विप कृषो क विपच विपच ८ इव मो क ।

(टीव विपच विप विपचन—कृषो प ३ इ ४८ विपच)

३ १६

स्त मो क—रुम रुम, वम ।

स्य मो क—रुम रुम इव इव रुम रुम इव इव रुम रुम ।

रु मो क—रुम रुम । रुम रुम ।

रुम रुम ।

४ १७

स्त मो क—रुम रुम रुम ।

१ इ क म्वा २२२ २ इ क म्वा २२२२ २
इ क म्वा ८२२ १। ४ इ क म्वा २२२२ २

५

१ङ्ग

इत् नो ङ्ग—शुल्क सुग, सुक्क । हिदी भाषामां 'अकृत'ना
अर्थ माटे 'सुग' शब्द वपगाय छे ते प्रस्तुत 'सु ग' साथे सरञ्चारी शक्याय
(शुल्क सुक जूओ पा० प्र० पृ० ३० टिप्पण)

६

२च्च

त्त नो च्च कृत्ति क्लिन्ची ।
थ्य नो च्च तव्य तच्च, तच्छ ।

७

३छ तथा च्छ

स्थ नो छ स्यागित छइअ, थइअ ।
स्प नो छ स्पृहा छिहा । स्पृहावत् छिहावत् ।
स्प नो च्छ निस्पृह निच्छिह; निस्पिह ।

८

४ज तथा ज्ञ

न्य नो ज्ञ, ज्ञ अभिमन्यु अहिमज्जु अहिमञ्जु, अहिमजु, अहिमन्जु ।
५मागधी—अभिमन्यु अहिमञ्जु ।
(अभिमन्यु अभिमञ्च जूओ पा० प्र० पृ० २३)

९

६ज्झा

न्व नो ज्झा इन्व इज्जाइ (तृतीय पुरुष एकवचन वतमान काल)
सम्+इन्व समिज्जाइ
वि+इन्व विज्जाइ

३०

७ञ्चु

श्चि नो ञ्चु वृथिक विञ्चुअ, विचुअ, विञ्चिअ ।
(वृथिक विञ्चिक्र जूओ पा० प्र० पृ० ३८)

१ हे० प्रा० व्या० ८।२।११। २ हे० प्रा० व्या० ८।२।१२, २५।
३ हे० प्रा० व्या० ८।१।७।२३। ४ हे० प्रा० व्या० ८।२।२५।
५ हे० प्रा० व्या० ८।१।२९३। ६ हे० प्रा० व्या० ८।२।२८। ७ हे०
प्रा० व्या० ८।२।१६।

११

१६

तु नो ह—एतन् एव । प्रतिष्ठा वसिष्ठा । एत-ए ।

ये नो ह—अर्चित आदिभ्य ।

स्तु नो ह—अर्चत आ ।

(अथो वा न ए ५८ ए-उ वृत्ति वृत्ति)

१२

१७, १८

स्तु नो ह—अस्मिन्ने उमिच्छन् वसिष्ठीय । एतन् उक्त्वा एते

मित्रान् वसिष्ठीय । इतो एतेनो अर्चयन् द्वितीयं

वाचयन् 'अर्च' इत्यत्र अस्ति हे । "सुराणां इतो

अथो अर्चते मित्राणो" सुराणां अर्चते इत्यत्र

अस्मिन् अर्च अर्च मित्राणां ।

अस्मिन् अर्च, अर्च । अर्चान् अर्च, वीच ।

एव नो ह—विशेषतः विवेकः ।

ये नो ह—अर्च अर्च, अर्च । अर्च एतेनो अर्च अर्च

एतेनो अर्च । अर्च अर्च, अर्च ।

एव नो ह—अर्च अर्च ।

(अथो वा न ए १ द्वितीय परिवर्तन परिवर्तन । अर्च

अर्च, अर्च अथो वा न ए १ द्वितीय परिवर्तन अर्च, अर्च अर्च

अथो वा न ए १८ ए-उ ए-उ (२१ ए-उ)

१३

१९

तं नो ह—एतन् एव । अर्च अर्च ।

१ हे अर्च अर्च १२५११५ १ हे अर्च अर्च १२५१५

१२५१५ १ हे अर्च अर्च १२५१५१५१५ १ १२

र्द नो ड्—कपर्द कवड् । छर्द् छड् क्रियापद । छर्दि छडि ।
मर्दित मडिअ । विर्तर्दि विअडि । गर्दम गड्ढ, गड्ढ ।

१४ १ठ, ड्ठ

र्ध नो ड्—मूर्ध मुठ, मुद्ध ।

र्ध नो ड्ठ—अर्ध अहूठ, अद ।

ग्ध नो ड्ठ—दग्ध दहूठ । विदग्ध विअहूठ ।

द्ध नो ड्ठ—ऋद्धि इह्दि, इद्धि । श्रद्ध सुद्ध, मिद्ध । वृद्धि बुद्धि ।
भद्रा सहूठा, सदा ।

भ्य नो ड्ठ—स्तब्ध ठहूठ ।

(जूओ पा० प्र० पृ० ४२ वृद्धि बुद्धि । वर्धमान वद्धमान । अर्ध
अहूठ । दग्ध दहूठ, भगेरे द्ध=ड्ठ, र्ध=हूठ, ग्ध=हूठ)

१५ २ण्ट, ण्ड, णण

न्त नो ण्ट—वृन्त वेण्ट अथत्रा वेंट । तालवृन्त तालवेण्ट ।

न्द् नो ण्ड—कन्दरिका कण्डलिया । मिन्दपाल मिण्डवाल ।

क्व नो णण—पञ्चदश पण्णरह । पञ्चाशत् पण्णासा ।

त्त नो णण—दत्त दिण्ण । (ज्यां 'ण्ण' न धाय त्या 'दत्त' पद
समजवु)

ह नो णण—मध्याहन मज्झण्ण, मज्झण्ह ।

(जूओ पा० प्र० पृ० ५८ वृन्त वण्ट नियम ८५)

१६ ३त्थ

त्स नो त्थ—उत्साह उत्थाह ।

१ हे० प्रा० व्या० ८।२।४१,४०,३९। २. हे० प्रा० व्या०
८।२।३।३८, ४३, ८४ तथा ८।१।४६। ३ हे० प्रा० व्या० ८।२।४८।

स्य सो ळ्य—बभाल्म बभाल्म बभाल्म ।

(बभौ वा प्र इ १ सिप्प्य छञ्जत् बभाल्म)

१७ १म्प

स्य सो ळ्य—बभाल्म बभाल्म बभाल्म ।

१८ २म्प

स्य सो ळ्य—बभाल्म बभाल्म ।

१९ ३म्प

स्य सो ळ्य—बभाल्म बभाल्म बभाल्म । बभाल्म बभाल्म बभाल्म । बभाल्म बभाल्म बभाल्म ।

२० ळ्य, ळ्य, फ

स्य सो ळ्य—बभाल्म बभाल्म, बभाल्म । बभाल्म बभाल्म बभाल्म ।

स्य सो ळ्य—बभाल्म बभाल्म बभाल्म ।

स्य सो ळ्य—बभाल्म बभाल्म ।

स्य सो फ—बभाल्म बभाल्म, बभाल्म । (बभाल्म बभाल्म बभाल्म)

(बभाल्म बभाल्म बभाल्म बभाल्म बभाल्म बभाल्म बभाल्म बभाल्म बभाल्म बभाल्म)

५ ळ्येया विष्णुया ळ्येया बभौ वा प्र इ १९ सिप्प्य

२१ ळ्य ळ्य ळ्य

स्य सो ळ्य—बभाल्म बभाल्म बभाल्म ।

स्य सो ळ्य—बभाल्म बभाल्म । बभाल्म बभाल्म ।

स्य सो ळ्य—बभाल्म बभाल्म, बभाल्म ।

स्य सो ळ्य—बभाल्म बभाल्म, बभाल्म । बभाल्म बभाल्म बभाल्म ।

(बभाल्म बभाल्म । बभाल्म बभाल्म । बभौ वा प्र इ १९ सिप्प्य १८)

१ हे ळ्य ळ्य ८ २१७३ २ हे ळ्य ळ्य ८ २१७४

१ हे ळ्य ळ्य १२१५ ४ हे ळ्य ळ्य ८ २१७५ ५४ ५४

५ हे ळ्य ळ्य १२१५ ५४ ६ ळ्य

૨૨

૧૨

ઘ નો ર—ઘાત્રી ઘારી

ઘ્ય નો ર—આઘ્ય અન્ઝેર । ત્ય તૂર । ઘ્ય ધીર ઘિજ્જ ।

પયન્ન પેરત, પજ્જત । વ્રદ્ધચય વમચેર । ઘૌળીર્ય
સૌંદીર । સૌન્દર્ય સુંદેર ।

ઘ્ઠ નો ર—દશાઠ્ઠ ઢસાર ।

(જૂઓ પા૦ પ્ર૦ પૃ૦ ૧૪ ઘાત્રી ઘાતી ટિપ્પણ પા૦ પ્ર૦ પૃ૦
૪ ટિપ્પણ ઠચ્છેર)

૨૩

૨લ, છ

ળ નો લ—કૂમાળ ઢોહલ, ઢોહલ । કૂમાળડો ઢોહલી, ઢોહડી ।

ળ્ય નો છ—પયસ્ત પલ્લટ્ટ, પલ્લથ । પર્યાળ પલ્લાળ । સૌકુમાર્ય
સોગમલ્લ, સોઝમલ્લ ।

(જૂઓ પા૦ પ્ર૦ પૃ૦ ૧૬ ટિપ્પણ પર્યાસ્તિકા પલ્લત્થિકા શ્યાદિ)

૨૪

૩સ્સ

સ્પ નો સ્સ—વૃહસ્પતિ વહસ્મઙ્, વહસ્પ્પઙ્ । ઘનસ્પતિ ઘણસ્સઙ્, ઘણસ્પ્પઙ્ ।

(જૂઓ પા૦ પ્ર૦ પૃ૦ ૩૯ ઘનસ્પતિ ઘનસ્પતિ નિયમ ૪૮)

૨૫

૪હ

ક્ષ નો હ્—દક્ષિણ દાહિણ, દક્ષિણ્ણ ।

ક્ષ્ઠ નો હ્—દુલ્લ દુહ, દુલ્લ્લ । દુલ્લિત્ત દુહિઝ, દુલ્લિસઝ ।

ક્ષ્પ નો હ્—વાષ્પ વાહ્ ણટેલે આંસુ અને વાષ્પ વ્ષ્પ્ ણટેલે વાષ્પ
ઘફારો-ગરમી ।

૧ હે૦ પ્રા૦ ષ્યા૦ ૮૧|૮૧, ૬૬, ૬૪, ૬૩, ૬૫, ૮૫

૨ હે૦ પ્રા૦ ષ્યા૦ ૮૨| ૭૩, ૬૮ ૩ હે૦ પ્રા૦ ષ્યા૦ ૮૨|૬૯

૪ હે૦ પ્રા૦ ષ્યા૦ ૮૨| ૭૦, ૭૩, ૯૧, ૭૧

ध्र जो ह—डुम्भाय डोरुह । डुम्भायी डोरुही ।

धै जो ह—ठीन ठीह, ठिय ।

धे जो ह—ठीन ठुह, ठिय ।

धो जो ह—धर्येन धर्याण ।

(धो ध ध ड ड डुम्भ डुम्भ)

२६

१ छिमाँव

केरुणक धर्येमाँ ररेयो र मने ह ठिवाकरी एकरही मँजल
 वेरुयो वई धान के वेरुयो वषाडु वरु छिमाँव से वायो छिमाँव
 केरुणक धर्येमाँ मिय धरयो वरु के मने केरुणक धर्येमाँ वरुणिक
 इके वरु वरु वरु मने न वरु वरु

धायमी छिमाँव कडु कडु । ठेक ठेक । प्रकृ प्रकृ । जेव पैम ।
 मयूक मंडुक । बीरन तुम्बन । त्रिभुज वेडु ।
 मने मिया वरी

२ छिमाँव-

एक एक एक, एन एन । धर्येन धर्येन, धर्येन ।
 डुम्भ डुम्भ, डुम्भ । विन विन विन ।
 वेन वेन वेन । तुम्भीक तुम्भीक, तुम्भीक ।
 रेन वरुन वरुन । वरु वरुन वरु ।
 मिहिय मिहिय, मिहिय । मीर रेडु मीर ।
 वरु वरु वरु । वीना वेना, वीना ।
 वरु वरु वरु । वरु वरु वरु ।
 वरु वरु वरु वरु

३ धामासिक धर्येमाँ केरु छिमाँव-

धामासिक धर्येमाँ केरु, धामासिक धर्येमाँ केरु ।
 धर्येमाँ केरु, धर्येमाँ केरु । धर्येमाँ केरु, धर्येमाँ केरु ।
 धर्येमाँ केरु, धर्येमाँ केरु । धर्येमाँ केरु, धर्येमाँ केरु ।

ले एकत्रहा व्यञ्जननी पूर्वगां दीर्घस्वर हांम अथवा अनुस्वार हांम से व्यञ्जन वेवढो थनो नथी अर्थात् तेनो द्विर्भाव पतो नथी :

क्षित शूढ नु छुद्ध न थाय

स्वस्य फास नु फस्स ”

अस्य तस नु तस्स ”

सध्या सज्ञा नु सज्जा ” वगैरे

(पालि भाषामां द्विर्भावनी प्रक्रिया छे जूओ पा० प्र० पृ० १०

नियम १२)

६७

शब्दोमां विदोष फेरफार

अयस्कार पकार । आश्चर्य अच्छवर, अच्छरिअ, अच्छरिज्ज, अच्छरीअ ।

(पालि-अच्छरिय, अच्छयिर जूओ पा० प्र० पृ० ४४ टिप्पण)
 सवृखल ओहल, उऊहल । उद्धखल ओधखल, उद्धहल । कदल केल, कयल । कदली केली, कयली । कर्णिकार कण्णोर, कणिआर, कणिआर ।
 चतुर्गुण चोगुण, चउरगुण । चतुर्थ चोत्थ, चउत्थ । चतुर्दश चोद्दस, चउद्दस ।
 चतुर्वार चोव्वार, चउव्वार । त्रयस्त्रिंशत् तेत्तीसा । त्रयोदश तेरह ।
 त्रयोविंशति तेवीसा । त्रिंशत् तीसा । नवनीत नोणीअ, लाणीअ ।
 भवफलिका नोहल्लिआ । नवमालिका नोमालिणा । निषण्ण गुमण्ण ।
 पूगफल पोप्फल । पूतर पोर । प्रावरण पशुरण, पाउरण, पावरण । मदर वोर ।
 मयूत्र मोह । रुदित रुण्ण । लवण लोण । विचक्रिल चेइल्ल ।
 विंशति वीसा । मुकुमार सोमाल । स्थविर थेर ।

(जूओ पा० प्र० पृ० ४४ नियम ५७ लवण लोण तथा पृ० ६२ लयन लेन । जूओ पा० प्र० पृ० २८ नि० ३४ स्थविर थेर)

१ हे० प्रा० स्या० ८।१।१६६, १६५, १६७, १६८, १७०, १७०, १७१, १७४, १७५, तथा ८।२।६६, ६७।

१अपभ्रश भाषामां अमुक अमुक शब्दोना खास फेरफार भा प्रमाणे छे

स०	प्रा०	अपभ्रश
अन्यादश	अघ्नारिम	अन्नाइस
अपरादश	अवरांस	अवराइस
ईदश	एरिस	अइस, एह
बीदश	केरिस	कइस, केह
तादश	तारिस	तइस, तेह
यादश	जारिस	जइस, जेह
वर्म	वट्ट	विच्च
विपण	विसण	घुन्न

(जूओ पालि प्र० पृ० ५६ नि० ७८ गृह घर । गृहिणो घरणी । प्र० १६ तिर्यक् तिरिय । पृ० ३४ टिप्पण पितृष्वमा पितुच्छा । पृ० २७ स्तोक थोक । पृ० ५१ श्मशान मसान, मुसान)

२८ अमुक खास खास-शब्दोना संयुक्त व्यजनोमां स्वरनो वधारो-
अत स्वरवृद्धि अथवा स्वरभङ्गित

२अ नो वधारो—अग्नि अगणि, अग्निग । अर्हन् अरहत । कृष्ण कसण;
कण्ह एट्टले काळो रग । क्षमा छमा । प्लक्ष पलक्ख ।
रत्न रतन, रयण । शार्ङ्ग सारग । श्लाघा सलाहा ।
स्निग्ध सणिद्ध । सूक्ष्म सुहम । स्नेह सणेह, नेह ।

३इ नो वधारो—अर्हत् अरिहत । कृत्स्न कांसण, कण्ह । क्रिया किरिया,

१ हे० प्रा० व्या० ८।१।११, ८।१।१०३।८।१।४०२। २ हे०
प्रा० व्या० ८।१।१०२। ८।२।१११। ८।२।११०। ८।२।१०१। ८।२।
१०३। ८।२।१०२। ८।२।१००। ८।२।१०१। ८।२।१०९। ८।२।१०१।
८।२।१०२। ३ हे० प्रा० व्या० ८।१।१११। ८।२।११०। ८।२।१०४।
८।२।१०७। ८।२।१०५। ८।२।१०४। ८।२।१०७। ८।२।१०५। ८।२।
१०४। ८।२।१०९। ८।२।१०७। ८।२।१०८। ८।२।१०४।

विद्या । वेद्य वेद्यम् । एतद् एतन्न । विद्या विद्यया ।
 कम् मन्त्रिन् मन्त्र । वत् वर वरम् । श्री शिरी ।
 विन्व विन्विन् विन् । एव् एवम् । एव्यार
 विन्वावम् । एव्य विन्विन्, विन्विन्, एव्यिन । ए
 विन्वा । ही शिरी ।

१६ श्री बघारो - ज्वा बीजा ।

१७ श्री बघारो - जह्व बर्हत् । ज्य बर्हत् । हार हुवार हुवार वर
 वरवार । ज्य ज्यम् पौम् । ह्य हुक्क्य हुक्क्य ।
 वा हुवै । ह्य हुक्क्य हुक्क्य हुक्क्य हुक्क्य । हुक्क्य
 हुक्क्य हुक्क्य हुक्क्य, हुक्क्य । हुक्क्य हुक्क्य । ए हुक्क्य ।

१९ १. ब्राह्मण धर्मोर्मा बहुरधारो बघारो

बहुरिच्य बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य ।
 बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य ।
 बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य ।
 बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य ।
 बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य ।
 बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य ।
 बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य ।
 बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य ।
 बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य । बहुरिच्य ।

२० १. ब्राह्मण धर्मोर्मा बहुरधारो बघारो

बहुरिच्य बहुरिच्य । बहुरिच्य बहुरिच्य । बहुरिच्य बहुरिच्य ।

१ हे म् म् १९११५ २ हे म् म् २१२
 १११ २१११५ २११११ । २११११ १२११११ ३ हे म्
 म् १९१२ हे म् म् २१११ । १२११११ २१२
 १११ १२११५ १९१२१ २११२१ २११११ २११११
 २१११२ ।

महाराष्ट्र मग्दट्ट । लघुक हल्लअ लहुअ । ललाट गढाल, गलाड ।
 बाराणसी वाणागसी । हगिताल हलिआर हरिआल । हूद प्रह हर ।

१ शौरसेनी भाषामा ण कारनो विश्लेषे घधारो

म	प्रा०	शौ०
युक्तम् इदम्	जुत्त इण	जुत्त णिम जुत्त इण ।
सदृशम् इदम्	सरिस इण	सरिस णिम, सरिस इण ।
किम् एतद्	किं एअ	किं णेद, किं एद ।
एवम् एतत्	एव एअ	एव णेद एव एद ।

२ अपभ्रशमां खास शब्दोमां कोई कोई प्रयोगमां स्वरनो अथवा
 व्यंजननो घधारो

सु०	प्रा०	अप०
उक्त	उत्त	घुत्त
परस्पर	परोप्पर	अपरोप्पर
म्यास	वा०	मास

३१ अमुक शब्दोनी जातिमां जे फेरफार थाय के ते
 आ प्रमाणे छे

जे शब्दने छेडे स होय अथवा न् होय एवा तमाम शब्दो नर
 जातिमां वपराय छे

यशस्	जसो ।	जन्मन्	जम्मो ।
पयस्	पयो ।	नर्मन्	नम्मो ।

१ हे० प्रा० व्या० ८।४।२७९। २ हे० प्रा० व्या० ८।४।४२९।
 ८।४।४०९। ८।४।३९९। ३ हे० प्रा० व्या० ८।५।३२०। ८।५।३१।
 ८।५।३३। ८।५।३४। ८।५।३५।

।	उमत्	उमो ।	यमत्	यमो ।
	रैमत्	रैमो ।	वमत्	वमो ।
	शम्	शो ।	षामत्	षामो ।

कनो कनेरे क्तोयं क्ते अे औघर ठे से उम्बु नरयतिष्ठ
सुचने से

अपराद् : कामर राम । अमर् अम्म । अमर् अम्म । शिरे
शिर । सुपम्सु सुपम ।

अरद् अरद् अने तरनि अम् नरयतिष्ठां कराम से :

अम् पाठो : अरद् अरमो । तरनि तरनी ।

नांश नवशका उवाच अम् नरयतिष्ठां निश्चये वावाच से :

	वर	वाग्वत्
वदि	वदनी	वदिष्ठ ।
वदि	वदनी	वदिष्ठ ।
वदु	वदु	वदुष्ठ ।
वदव	वदनी	वदव ।
वोचन	वोचनी	वोचन ।

श्रीवेद्य अम् नरयतिष्ठां निश्चये वराम से :

वचन	वचनी	वचन ।
विदुर्	विन्दुय	विन्दुर् (दुन्दुय विमदि)
कुप	कुपी	कुप ।
कम्	करो	कम् ।
वाहनम्	वाहनो	वाहन ।
हुम्	हुपी	हुम् ।
वाक्	वाक्नी	वाक् ।

नीचेना शब्दो नान्यतरजातिमा विकल्पे वपराय छे

गुण	गुण	गुणो ।
देव	देव	देवो ।
मिन्दु	मिन्दु	मिन्दू ।
खड्ग	खड्ग	खड्गो ।
मडलाम	मडलाम	मडलामो ।
करगुह	करगुह	करगुहो ।
रुक्म	रुक्म	रुक्मो ।

जे शब्दोने छेडे भाववाचो 'इमा' प्रत्यय होय ते शब्दो नारी-
जातिमा विकल्पे वपराय छे •

	नर०	ना०
गरिमन्	गरिमा	गरिमा ।
महिमन्	महिमा	महिमा ।
निलज्जिमन्	निलज्जिमा	निलज्जिमा ।
धूर्तिमन्	धूर्तिमा	धूर्तिमा ।

अञ्जलि वगैरे शब्दो नारीजातिमा विकल्पे वपराय छे

नारी०

अञ्जलि	अञ्जली	अञ्जली ।
पिठ	पिठ्ठी	पिठ्ठी ।
अक्षि	अच्छि	अच्छी ।
पण्ड	पण्डो	पण्डा ।
चौर्य	चोरिअ	चोरिआ ।
कुक्षि	कुच्छो	कुच्छी ।
बाल	बाली	बाली ।
निधि	निधी	निधी ।
रस्मि	रस्मी	रस्मी ।
विधि	रस्सी	रस्सा ।
ग्रन्थि	गठी	गठी ।

कुम्भ + अर = कुम्भार (कुम्भार-कुम्भकार)

चक्र + अक्ष = चक्राक्ष (चक्रवाक)

साल + आहण = सालाहण (शालिवाहन राजा)

० क्रियापदना छेदना स्वरनी कोई धीजा पदना स्वर साथे सधि भती नथी जेमके,

होइ + इह = होइ इह

३ इ ई के उ ऊ पछी कोई विजातीय स्वर आवे तो सधि भती नथी जेमके,

इ—जाइ + अंध = जाइअंध (जातिअंध-जात्यन्ध-जन्मांध)

ई—पुढवी + आउ = पुढवीआउ (पृथ्वी आप-पृथ्वी पाणी)

उ—वहु + अद्विय = बहुअद्विय (बहुअस्थिक-घणां हाडका-वाळु)

ऊ—बहु + अवगूढ = बहुअवगूढ (बहुअवगूढ)

४ ष के ओ पछी कोई पण स्वर आवे तो सधि भती नथी ३

ष—महावीरे + आगच्छइ । एगे + आया । एगे + एवं ।

ओ—अहो + अच्छरियं । गोयमो + आघवेइ ।

आलक्खिमो + इण्हि ।

५ वे पदमा पण व्यजन लोपाया पछी ज्या जे स्वर बाकी रहेलो होय त्या ते स्वरनी सधि भती नथी ४

निशाकर—निसा+अर=निसाअर । निसि+अर=निसिअर ।

रजनीकर—रयणी + अर = रयणीअर ।

रजनीचर—रयणी + अर = रयणीअर

निशाचर—निसा+अर=निसाअर । निसि+अर=निसिअर ।

गन्धपुटी—गध + उडी = गधउडी ।

१ अ के आ लो अ के आ जाने लो आ नरे बन के १

अ—जीव + अजीव = जीवाजीव ।

बिसम + मायब = बिसमायब (बिसम मायब)

जा—गीमा + अहिबर = गीमाहिबर ।

अठवा + माजपय = अठवाजपय (पमुना आवक्य)

२ इ के ई लो इ के ई जाने लो ई नरे बन के २

मुधि + इपर = मुधीपर

इहि + ईसर = इहीसर

पुहपी + ईस = पुहपीस ।

पुहपी + ईसि = पुहपीसि ।

८ उ के ऊ लो उ के ऊ जाने लो ऊ नरे बन के ३

बहु + उदग = बहुदग

साहु + उदय = साहुदय

बहु + ऊसास = बहुसास

बहु + उबमा = बहुबमा ।

बहु + ऊसास = बहुसास ।

५ एर लो एर जाने लो एरम एरनी बन नरे बन के ४

बर + ईसर — बरु + ईसर = नरीसर, नरेसर ।

तिवस + ईस — तिवसु + ईस = तिवसीस, तिवसेस ।

बीसास + ऊसास = बीसासु + ऊसास = बीसासुसास ।

रमामि + अई = रमामई । तम्मि + असर = तम्मसर ।

उबसमामि + अई = उबसमामई ।

देविद् + अमिबदिम = देविदमिबदिम ।

इदामि + अई = इदामई । अ + एय = ऐय ।

१ ज्यो के एर एये नरे जाईका हीन लो केउके लोके पाऊका एरनी पाईके एर लो पासी बन के ५

१ २ ३ हे स म्य १।२।३। ४ हे अ म्य

१।२। ५ हे अ म्य १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५।१६।१७।१८।१९।२०।

निबन के

फासे + अहियासए = फासे हियासए

वालो + अवरज्झइ = वालो वरज्झइ

पस्संति + अणतसो = पस्संति णंतसो

११ सर्व नामनो स्वर के अव्ययनो स्वर पासे पासे आवेला होय तो ते वेमाथी गमे ते एकनो स्वर लोप पामे छे १

तुम्मे + इत्थ = तुम्भित्थ

अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ

जे + इमे = जेमे

जे + एत्थ = जेत्थ

जइ + अह = जइह ।

जइ + इमा = जइमा ।

१२ कोई पण पदनी पछी अपि के अवि अव्यय आवेल होय तो तेनो अ विकल्पे लोप पामे छे २

किं + अपि = किं पि, किमवि

केण + अवि = केण वि, केणावि

कह + अपि = कहं पि, कहमवि

१३ कोई पण पद पछी इति अव्यय आवेल होय तो तेनो आदिनो इ लोप पामे छे ३

जं + इति = जं ति

दिट्ठ + इति = दिट्ठ ति

जुत्तं + इति = जुत्तं ति ।

१४ कोई पण पदना छेडाना स्वर पछी इति अव्यय आवेल होय तो तेना आदिना इ नो लोप करवो अने ति ने बदले त्ति करवो ४

तहा + इति = तहत्ति ५

पिओ + इति = पिओ त्ति

पुरिसो + इति = पुरिसो त्ति

१५ जुदा जुदा पदोमा अ के आ पछी इ के ई आवे तो ए धाय छे ६

न + इच्छति = नेच्छति

वास + इसि = वासेसि

दिण + ईस = दिणेस

जाया + ईस = जायेस ।

खट्टा + इह = खट्टेह

(खट्ट्वा + इह)

१६ जुदा जुदा पदोमा अ के आ पछी उ के ऊ आवे तो ओ धाय छे ७

१ हे० प्रा० व्या० ८।१।४०। २ हे० प्रा० व्या० ८।१।४१।

३ ४ हे० प्रा० व्या० ८।१।४२। ५ जूओ पानु ११ नियम २.

६ ७ हे० स० व्या० १।२।६।

सिहर+उपरि=सिहरोपरि
 एण + ऊच = एगोच
 पाम+ऊच=पामोच (पोरु)

गंगा + उपरि = गंगोपरि।
 बीसा + ऊच = बीसोच।

१० क्त्य डेवला मूचो अनुसार बाब ले५

उसम्—उस
 फसम्—फस
 मिरिम्—मिरि

उपचाद्—
 बयमि—बयमि
 बयमि

१ क्त्ये डेवे बाबेला मू पची तर बाबे ले केने निरुपे अनुसार बाब ले५

उसमम् + अजिर्म = उसमं अजिर्म, उसममजिर्म।
 नगरम् + भागच्छद् = नगरं भागच्छद्, नगरभागच्छद्।

११ केवलाड पन्वोला डेवला मज्जली अनुसार बी बाब ले५

सासाद्—सकन्
 पत्—पं
 तत्—त
 विज्जद्—वीरु

पुपह्—पिह
 सम्पह्—सम्म
 जपह्—इह
 जवजह्—इवप

१ क् म् न् क्त्ये र् पची बीरे एण मज्ज बाबे ले केने अनुसार बी बाब ले५

उहु—उहु—संज
 कम्पुह्—कम्पुम—कम्पुम

पप्पुह्—उप्पुह्—उप्पुह्।
 उण्णपा—संसा।

११ केवलाड पन्वोला अनुसारली डेप बी बाब ले५

१ हे प्र भा १११३। २ हे प्र भा २११२५।

३ हे प्र भा १११२५। ४ हे प्र भा २११२५।

५ हे प्र भा १११२५।

विंशति—वींसा,
 त्रिंशत्—तींसा
 संस्कृत—सङ्कृत
 संस्कार—सङ्कार
 मास—मांस, मंस
 मांसल—मासल, मंसल
 कांस्य—कास, कंस
 पाशु—पाशु, पशु
 कथम्—कथं-कह, कह

पचम्—पचं-पच, पचं
 नूनम्—नून-नूण, नूणं
 इदानीम्—इदानीं—
 इदानी, इदानी,
 दाणि, दाणि,
 किम्—किं—कि, किं
 संमुख—समुह, समुह
 किंशुक—केसुअ, किंसुअ
 सिंह—सीह, सिंघ

२२ अनुस्वार पढी वर्गनो कोइ पण अक्षर आवता अनुस्वारने बदले वर्गनो पांचमो अक्षर विकल्पे मुकाय छे १

पक—पङ्क, पक
 संस्र—सङ्घ, संस्र
 अंगण—अङ्गण, अंगण
 लंघण—लङ्घण, लंघण
 कंचुअ—कङ्चुअ, कंचुअ
 लछण—लङ्छण-लंछण
 अजन—अक्षण, अजण
 संज्ञा—सङ्ज्ञा, संज्ञा
 कंटअ—कण्टअ, कंटअ
 कठ—कण्ठ, कठ

कंड—कण्ड, कंड
 सढ—सण्ड, सढ
 अंतर—अन्तर, अंतर
 पंथ—पन्थ, पथ
 चद—चन्द, चंट
 वधु—वन्धु, वधु
 कंप—कम्प, कंप
 गुफ—गुम्फ, गुफ
 कलंब—कलम्ब, कलब
 आरंभ—आरम्भ, आरंभ

२३ केटलाक पदोमां वे पदनी वच्चे म् उमेराय छे:२

अन्न + अन्न = अन्नम्अन्न-अन्नमन्न ।

- पग + पग = पगम्पग-पगमेग ।

चित्त + आर्षद्विय = चित्तम् आर्षद्विय-चित्तमाषद्विय ।

ब्रह्म + इति = ब्रह्मम् इति-ब्रह्मामिति ।

इह + मागम = इहम् मागम-इहमागम ।

बहुतु + मर्षद्विय = बहुतुम् मर्षद्विय-बहुतुमर्षद्विय ।

अपेगर्षा + इह = अपेगर्षाम् इह-अपेगर्षामिति ।

शुष्यन् + अणुज्ज = शुष्यन्म् अणुज्ज शुष्यन्मणुज्ज ।

१४ केशवः कर्मो केवलो कश्च केवलो नवी पदं ते केश
लक्ष्मि कवी वाव के-१

किम् + इह = किमिह

बद् + अस्ति = बद्धस्ति

पुनर् + अपि = पुनरपि

विद् + अंतर = विदंतर

बुद् + अतिष्ठम् = बुद्ध

आद्यम् = बुद्धाद्यम्

१५ कवी कविता के के निम्नो कविविद्या के ते कवयो कवीय के नो
कव्ये क कवयो के कने कवी एक कवयं कवारे निम्नो कविविद्या
सम्बन्ध कवयत् त्वं कवीकेने कविवारे कने कवीयम् न वाव ए के
क कवि कवी २

समाप्तः

समाप्त पत्रके पत्रके कवारे कवने सूचना साह बोध कवी
कविविद्या केकेके नाम समाप्त के

कवयो कवी के कने कविविद्या के कविवारे कविविद्या के कविविद्या के
कविविद्या के कविविद्या के कविविद्या के कविविद्या के कविविद्या के
कविविद्या के कविविद्या के कविविद्या के कविविद्या के कविविद्या के

१ लक्ष्मि परम कविविद्या । कवा के-१ वा कवा २११११ -

१ । २ के-१ वा कवा १११११ १ के-१ वा कवा १११११ १ के-१ वा कवा १११११

ચોલચાલની લોકમાયામા આ શૈલીનો પ્રચાર ઓછો જણાય છે પરતુ લોકમાયા જ જ્યારે કેવલ માહિત્યની માયા બની જાય છે ત્યારે, તેમા આ સમામની શૈલીનો ઉપયોગ સારી રીતે થયેલો મઠે છે

‘ન્યાયનો અર્થાગ’ કહેવુ હોય તો સમાસ વગરની શૈલીમા ‘નાયસસ અર્થાસો’ કહેવાય અને સમાસવાળી શૈલીમા ‘નાયાર્થાસો’ કહેવાય અર્થાત્ જે અર્થને બતાવવા સારુ સમાસ વગરની શૈલીમાં છ અક્ષરોનો સ્વપ પડે છે તે જ અર્થને બતાવવા સમાસવાળી શૈલીમા કેવલ ચાર અક્ષરોથી જ ચાલે છે

૧૧ જ રીતે ‘જે દેશમા ઘણા વીરો છે તે દેશ’ કહેવુ હોય તો સમાસ વગરની શૈલીમા ‘જમ્મિ દેસે વહુવો વીરા સતિ સો દેસો’ એટલુ લાગુ કહેવુ પડે ત્યારે તે જ અર્થને બતાવવા સારુ સમાસવાળી શૈલીમા ‘વહુવીરો દેસો’ એટલુ ઓછુ કહેવાથી જ પુરુ કામ સરી જાય અર્થાત્ જે અર્થને બતાવવા માટે સમાસ વગરની શૈલીમાં ચૌદ અક્ષરોની જરૂર રહે છે તે જ અર્થને સમાસવાળી શૈલી કેવલ છ અક્ષરોથી સપૂર્ણપણે બતાવી શકે છે આ રીતે સમાસવાળી અને સમાસ વગરની શૈલીની આ એક મોટી વિશેષતા છે

આ ઉપરાત સમાસવાળી શૈલીની વીજી પળ અનેક વિશેષતાઓ છે જેમકે, ‘અહિણડલ’ (અહિનકુલમ્) એવો એકવચની દ્વન્દ્વ, તે વે વચ્ચેના એટલે સાપ અને નોઢીયા વચ્ચેના સ્વાભાવિક વર્તને બતાવે છે ત્યારે ‘દેવાસુર’ એવો એકવચની દ્વન્દ્વ, તે વે (એટલે દેવ અને અસુર) વચ્ચેના માત્ર વિરોધને સૂચવે છે

ઉપરાત જે સમાસમા કેટલીક વાર પૂર્વપદની વિભક્તિ લોપાતી નથી તે પળ વિશેષ અર્થને બતાવે છે ‘ગેહેસુરો’ સમાસ માણસની કાયરતાને સૂચિત કરે છે. ‘તિત્થે કાગો અત્થિ’ એવો સમાસ વગરની શૈલીવાલુ વાક્ય ગ્યાસ કોડે વિશેષતા બતાવતુ નથી ત્યારે ‘તિત્થકાગ’

(तीर्थयात्र) एही तवाचरणाची प्रथीतु नाम्ना तीर्थयात्री अनुष्ठी करि
 कृत वदये ते

केवळीक वार वषावषावतुं वषम वर व ओषाई वार ते कृत
 पयाव द्वारा ते ओषावेना वषम करनी वर्ष वरावर सुविष्ट वती रहे
 ऐ. येवळे कृतोवर वम् वषामनुष्ठ ते तेनी वर्ष वाचकाला
 वेरनी केतु केतु वेर व ते एके वार ते. नवी रिते जावी वष
 वषमना कृतोरोवर (वस-वाचतु, वर-वेर, वर-वेर) जावी वम्
 वरावी ओषा, तारे एते वरके केवळ कृतोवर वम् व उच
 वषने वृषवे वदये के. ए वा तवाचनी व एक वषावर ते वना
 वषावतु वषम वषमवषावनीची वषाव वरीवत ते वा विषाव वष
 वषावषावनी वषावी विषेवषा वषावना वषावनी (वषावषाव) केवा
 वेरि (केवळेवषि) अनुष्ठा (अनुष्ठा) वषावषाव (वषावषाव) वषेरे
 वषेरे वषावषावनी जावी वषम वरु वरु वरु वषावषावनी वषाव
 वषाव वा वषाव वषाव वरु ए विषे वषाव व वषावषाव वषावषाव
 वषावषाव वषावनी वषाव वषाव वषाव वषाव

वर्षी ए वषा वार वषाव वषाव के वषावषावनी ते वषा वषावषाव
 वषावषाव ते वेरी वषा वषा वषावषावषाव वा वषावषावषाव
 वषा वरु वषावषाव वा वषाव वषा वषावषावनी व वषा वषा वषावषाव
 वषा वषा वषा वषावषावषावषाव वषावषावषाव वषा वषा वषा
 वषावषाव ते वषा वषा वषा वषा वषा वषा वषा वषा वषा वषा
 वषावषाव वषावषाव वषावषाव वषावषाव वषावषाव वषावषाव

वषावषाव वषावषाव वषा वषाव वषा वषावषाव

१ वर (वषा) २ वषावषाव (वषावषाव) ३ वषावषाव
 (वषावषाव) ४ वषावषाव (वषावषाव)

(३ वषावषाव वषावषाव वषा वषा वषा वषा वषा वषा वषा वषा
 वषा वषा वषा वषा वषा वषा वषा वषा वषा वषा)

१ द्द समास

द्द एट्ठे जोड्ठु द्द समासना जोड्ठकामा वपराता घन्ने शब्दोमां चा वेथी पण ववारे शब्दोमा कोई, मुख्य के गौण नहीं होता अर्थात् द्द समासमा वपराता तमाम शब्दोनी समान मर्यादा छे जेमके 'भावाप' 'सगावहालां' ए वन्ने उदाहरणी द्द समासनां छे तेम पुण्णपावाइ, जीवाजीवा, सुहदुक्खाइ, सुरासुरा-वगेरे उदाहरणो पण द्द समासना छे, ए द्द समासनो विग्रह आ प्रमाणे छे

पुण्ण च पाव च पुण्णपावाइ

जीवा य अजीवा य जीवाजीवा

सुह च दुक्ख च सुहदुक्खाइ

सुरा य असुरा य सुरासुरा

द्द समास द्वारा तयार भयेछ पद घणु करीने बहुवचनमा वपराय छे ए ज गीते हत्यपाया (हस्तपादा) लाहालाहा (लामालामा) सारासार (सारासारम्) देवदानवगध्वा (देवदानवगान्धर्वा) वगेरे.

द्द समासना विग्रहमा 'य' 'अ' के 'च' वपराय छे

२ तप्पुरिस समास

जे समाननु पूर्वपद पोतानी विभक्तिना सर्वघथी उत्तरपद साथे एट्ठे पाछला पद साथे जोडायेछ होय ते तप्पुरिस समास आ समासनु पूर्वपद बीजी विभक्तिथी मांडीने सातमी विभक्ति सुधीनी विभक्तिवाळु होय छे जे जे विभक्तिवाळु ए पूर्वपद होय ते ते विभक्तिना नामवाळो तप्पुरिस समास कहेवाय जेमके,

बिडेयातप्पुरिस (द्वितीयातत्पुरुष) तईयातप्पुरिस (तृतीयातत्पुरुष) चउथीतप्पुरिस (चतुर्थीतत्पुरुष) पञ्चमीतप्पुरिस (पञ्चमीतत्पुरुष) छट्ठीतप्पुरिस (षष्ठीतत्पुरुष) अने सत्तमीतप्पुरिस (सप्तमीतत्पुरुष)

ते दरेकनां ऋमवार उदाहरणो आ प्रमाणे छे

विईया तप्पुरिस—

इंदियं क्तीतो—इंदियातीतो
सुई पत्तो—सुइपत्ता
दिंयं पत्तो—दिंयगतो

तईया तप्पुरिस—

ईसरेव कडे—ईसरकडे
(ईश्वरकृतः)

इयाप सुत्तो—इयासुत्तो
गुणेहिं संपद्यो—गुणसंपद्यो
रसेव पुण्यं—रसपुण्य

पअथी तप्पुरिस—

ओगाप हितो—ओगहितो
ओमस्म सुहो—ओगसुहो

पंचमी तप्पुरिस—

बंसवाओ मट्टे—बंसवमट्टे
बसावाओ मयं बसावमयं
ससापओ मीओ—संसार
मीओ

फ्नी तप्पुरिस—

इवस्म मंदिर्—इवमंदिर्
कच्चाप मुई—कच्चामुई
नरस्स इंदा—नरिंदो
इवस्स इंओ—इविंदो

बीरं नस्सिमो—बीरस्सिमो
(बीराधितः)

जण सुहा—जणसुहा

मायाप सरिंसी माजसरिंसी
कुळेण गुणेण सरिंसी—कुळ
गुणसरिंसी

बहुजणस्स हितो—बहुजण
हितो
पंमाप कट्टं—पंमकट्टं

बग्घामो मयं—बग्घमयं
रिणामो सुत्तो—रिणसुत्तो
(—सुष्ण)

डेहस्स सत्ता—डेहसत्ता
विज्जाप ठायं—विज्जाठायं
समाहिणो ठायं—समाहि-
ठायं

સત્તમી તપ્પુરિસ—

કલાસુ કુસલો—કલા-
કુસલો
વંભણેસુ ઉત્તમો—વંભણોત્તમો

જિણેસુ ઉત્તમો—જિણોત્તમો
દિણસુ ઉત્તિમે—દિઓત્તિમે
નરેસુ સેટ્ટો—નરસેટ્ટો

તપ્પુરિસ સમાસના પેટામાં ઉવવચ સમાસ (ટપ્પદ સમાસ)
આવી જાય છે ઉવવચ સમાસમા પાછલુ પદ કૃત્તસાધિત હોમ છે એ
ધ્યાનમા રાખવાનુ છે

ઉવવચ સમાસનાં કેટલાક ઉદાહરણો

કુમ્ભગાર—(કુમ્ભકાર)
સવ્વણ્ણુ—(સર્વેશ્વ)
પાયવ—(પાદપ)
કચ્છવ—(કચ્છપ)
અદિવ—(અધિવ)
ગિદ્દત્થ—(ગૃદ્ધસ્થ)
સુત્તગાર—(સૂત્રગાર)
વૃત્તિગાર—(વૃત્તિકાર)

ભાસગાર—(ભાષ્યકાર)
નિણયા—(નિમ્નગા)
નીચગા—નીચગા)
નમ્મયા—(નર્મદા)
સગડવ્મિ—(સ્વકૃતભિત્)
પાવણાસગ—(પાપનાશક)
વોરે

વિશેષણ અને વિશેષ્યનો સમાસ પણ તપ્પુરિસના પેટામાં આવી
જાય છે તેનુ વીજુ નામ 'કુમ્ભધારય' સમાસ છે તેના ઉદાહરણો

પીઝં ચ તેં વત્થં ચ—પીઝવત્થ
રત્તો ચ સો વહો ચ—રત્તવહો
ગોરો ચ સો વસમ્મો ચ—ગોરવસમ્મો
મહત્તો ચ સો વીરો ચ—મહાવીરો
વીરો ચ સો જિણો ચ—વીરજિણો
મહંત્તો ચ સો રાયો ચ—મહારાયો
કણ્ઠ્ઠો ચ સો પક્કલો ચ—કણ્ઠ્ઠપક્કલો

सुखी व सो पक्खी व—सुखपक्खी

कयी वा समास्यं कयी वार वच निवेकयो कल होव व
रक्षपीमं वत्थं—(रक्षपीठ वत्थम्)

सीउण्हं वत्थं—(सीउण्हं वत्थम्)

कयी वार पूर्वम् उक्त्वात्पक्क होव व

बंशो इव मुहं—बंशमुहं

घणो इव सामो—घणसामो

वग्ग इव देहो—वग्गदेहो (वग्गदेहा)

कयी वार पञ्चं पर उक्त्वात्पक्क होव व

मुहं वशो इव—मुहवशो । त्रिणो इहो इव—त्रिणोहो

कयी वार पूर्वम् केवल निधक्करीक होव व

संजमो एव वणं—संजमवणं

तथो विम वणं—तथोवणं

पुण्वं वेम पाहेउग्ग—पुण्वपाहेउग्ग

अम्भारव उक्त्वात्पक्क अम्भ वम्भ उक्त्वात्पक्क होव तौ त्तु नाम
विगु (विगु) उक्त्वात्पक्क होव व

नवण्हं उक्त्वात्पक्क समाहारो—नवण्हं

वउण्हं कसापारं समूहो—वउण्हकसापं

तिण्हं सोमाप समूहो—तिण्हं

तिण्हं सोमारं समूहो—तिण्हो

निवेकरीक 'न' क 'न'गी नाम ताने वे उक्त्वात्पक्क वाव त्तु
नाम वत्थपुरिष्ठ समास वत्थं

न भोगो—वउण्हो

न देहो—वउण्हो

न भाव्यारो—वउण्हारो

न इहं—वउण्हं

न विहं—वउण्हं

न इत्थी—वउण्हिणी

(જ્યાં નામની આદિમા સ્વર હોય ત્યાં જ 'અળ' વપરાય છે)

પ અહ અવ પરિ અને નિ વગેરે ઉપસર્ગોની સાથે પળ તપ્પુરિસ' સમાસ થાય છે આનુ નામ પાટિ તપ્પુરિસ કહેવાય છે

પગતો આયરિયો પાયરિયો
સગતો અત્યો સમત્યો
અહકતો પહ્લક અહપહ્લકો

ઉગ્ગઓ વેલ ઉવ્વેલો
નિગ્ગઓ કાસીણ નિવ્કાસિ

૧ જ રીતે પુળોપવુટ્ટો, અત઼મ્મૂઓ વગેરે પળ સમજવા

૩ વહુવ્વીહિ સમાસ—

આ સમાસમા વે કે તેથી વધારે પદોનો ઉપયોગ થાય છે 'વહુવ્વીહિ' ઇટ્થે વહુ છે વ્રીહિ (ડાગર) જેની પાસે ઇવો જે કોઈ હોય તે 'વહુવ્વીહિ' કહેવાય જેનો 'વહુવ્વીહિ' નો અર્થ છે તેવો જ આ સમાસ દ્વારા તૈયાર થયેલા તમામ શબ્દોનો અર્થ છે તાત્પર્ય ૧ કે આ સમાસમા પ્રથમ પદ ઘણું કરીને વિશેષણરૂપ હોય છે અથવા ઉપમાસૂચક હોય છે અને પ્રથમ પછીનું પદ વિશેષ્યરૂપ હોય છે અને સમાસ થયા પછી જે એક આશ્ચ વિશિષ્ટ નામ તૈયાર થાય છે તે પળ વીજા કોઈનું વિશેષણ હોય છે આ સમાસમા વપરાતાં નામો પ્રધાન નથી પરંતુ તેમનાથી જુદું અન્ય તત્ત્વ પ્રધાન હોય છે માટે જ આ સમાસને અન્યપદાર્થ પ્રધાન કહેલો છે ઊપર જણાવેલો 'વહુવ્વીહિ' પદનો અર્થ જ આ હકીકતને સ્પષ્ટ કરે છે

જ્યારે આ સમાસમા વપરાતા નામો સમાન વિભક્તિવાલા હોય છે ત્યારે આ સમાસને સમાનાધિવચરણ વહુવ્વીહિ કહેવામા આવે છે અને જ્યારે ૧ નામો જુદી જુદી વિભક્તિવાલા હોય છે ત્યારે આ સમાસને વહિકરણ (વ્યધિકરણ) વહુવ્વીહિ કહેવામા આવે છે

સમાનાધિકરણ વહુવ્વીહિનાં ઉદાહરણો:

- *२ आङ्गो वापरो वं ठक्कं सो आङ्गवापरये ठक्को (इसा)
- ३ जिम्बाणि इंदियाणि क्षेत्र सो जिम्बियो मुषी
जिम्बो कामो क्षेत्र सो जिम्बकामो म्हादौबो
जिम्मा परीसहा क्षेत्र सो जिम्परीसहो पोयमो
- ५ म्हुणे वायाये आम्बो सो म्हुयापारो अणो
बहुणे मोम्हो वाम्बो सो बहुमोहो साहु
- ६ घोरे बंमभेर अस्स सो घोरेबंमभेये अंभू
सम बररंस संहाय अस्स सो समबउपसउंअणो रामो
कम्भो अस्थो अस्स सो कम्पयो कम्हो
भासा बबर अंसि ते भासबय
सेयं भ्वर अंसि ते सेयंबय
मईठा बाहुणो अस्स सो महाबाहु
पंच बत्ताणि अस्स सो पंचबत्तो—सीहो
बत्तारि मुहाणि अस्स सो बउम्मुहो—बम्हा
पणो वंठो अस्स सो पणवंठा—गनेसा
- ७ बीरा मण अम्मि गाम सो गामो बीरपरो
सुत्तो सिणो आय सा सुत्तसिहा मुहा

बधिकरण बहुम्भीदि

बककं पाणिग्गि अस्स सो बककपायी
गम्भीर करे अस्स सो गम्भीरकरो अउम्भो
उपपाल अंता भ्वर वर ७ एवा बहुम्भीदिअं उपपरणा
सिगमपयभाह् एव नयवाणि आय सा सिगमपया
९ ५ अयाव अमअनकया पायाकया ईसकपया अरमुठी कमेरे

१ १ कोरे उक्कवा उमाउपयं व परउमैअं नादीने अलोम्भी ते
व विमपेणी उक्क व

‘न’ बहुव्रीहि—

न कारसूचक ‘अ’ के ‘अण’ साथे पण बहुव्रीहि समास थाय छे, ते आ प्रमाणे

न अत्थि भय जस्स सो अभयो
 न अत्थि पुत्तो जस्स सो अपुत्तो
 न अत्थि नाहो जस्स सो अणाहो
 न अत्थि पच्छिमो जस्स सो अपच्छिमो.
 न अत्थि उयरं जीण सा अणुयरा

‘स’ बहुव्रीहि

ए ज प्रमाणे ‘सह’सूचक ‘स’ अव्यय साथे पण बहुव्रीहि समास थाय छे

पुत्तेण सह सपुत्तो राया
 सीसेण सह ससीसो आयरिओ
 पुण्णेण सह सपुण्णो लोगो
 पावेण सह सपावो रक्खसो
 कम्मणा सह सकम्मो नरो

फलेण सह सफल.
 मूलेण सह समूल
 चेलेण सह सचेल ण्हाण
 कलत्तेण सह सकलत्तो नरो.

ए ज रीते प नि वि अत्र अद्द परि वगेरे उपसर्गो साथे बहुव्रीहि समास थाय छे अने तेनु नाम प्राट्टि बहुव्रीहि छे

प (पणिट्ठ) पुण्ण जस्स सो पपुण्णो जणो
 नि (निग्गया) लज्जा जस्स सो निह्वज्जो
 वि (विगतो) धवो जीण सा विधवा
 अत्र (अपगत) रूत्रं जस्स सो अवरूवो
 अद्द (अद्दक्कतो) मग्गो जेण सो अद्दमग्गो र्हो
 परि (परिगतं) जल जाण सा परिजला परिहा

४ अर्धमास समास—

ज्वारे बुद्ध एवमे लघौ वा द्वन्द्वे यथाश्वा चाम्भसाम्नी दिवा
 बारदार क्त्वन्वी होष ल्यारे वा समासयो उपवीर्ये हे मापाम्यं वपरत्त
 माराम्पाटी, सुवासुद्धी वनेरे वन्दो वा समासना प्वाव प्रस्तुत्मां कैवा
 कैमि इवादि वगैरे वन्दो हे वा समासयं के वे वाच्यो समास
 वाच्ये ते वन्दे वन्दो वन्द एव मरवां हेमां कोरेए ए प्वात्मां एव
 वाह्ये हे एवमे इत्य वन्दे वाच्ये कैवा सुवा सुवा वन्दोयो वा
 समास न वाच्ये

वा समास सम्भव सम्भव प्वात्मां हे

वा विभाव दीर्घ कैवर्त्यं वन्दो वाच्ये एव वा समास वाच्ये हे

वच—शुद्धणो समीधे वचशुद्ध.

वशु—भोषणस्त पञ्चम वशुभोषणं.

वधि—अप्यसि अती वजस्ये

अहा—सति वजस्येकमिक्रय अहासति

अहा—विधि वजस्येकमिक्रय अहाविधि

अहा—शुभाय वजस्येकमिक्रय अहादि

पह—पुरं पुरं पद् पद्पुरं

के वन्दो समासमां वाच्येना होव हे केवला ज्ञान वन्दो अतिम
 स्वर इत्य होष ते समासयं वन्दु वन्दोरे दीर्घ वन्दो वन्दे ए व वीते दीर्घ
 स्वर होव ते इत्य वन्दो ।

द्वन्द्वो दीर्घ—

सप्तर्षि—सप्तार्षेइ

सप्तविंशति—सप्तवींशति

वारिमती—वादिमती वारिमती

सुवपन्द—सुवार्पण, सुवर्षण

पतिगृह—पतिगृह, पतिगृह

वेपुवन—वेपुवन वेपुवन

दीर्घनो ह्रस्व—

यमुनातट—जँउणयड, जँउणायड

नदीस्रोतस्—नइसोत्त, नईसोत्त

गौरीगृह—गोरिहर, गोरीहर

वधूमुख—वहुमुह, वहूमुह

आ मिवाय आ समासना बीजा घणा प्रयोगो पडिताड भाषा सस्कृतमां मळे छे, पण ते वधानो अहीं विशेष उपयोग नथी माटे तेमने नोंब्या नथी.

आ रीते समासो विशे उपयोगितानी दृष्टिए उदाहरणो साये अहीं जोईए तेदली स्पष्टता थई गई छे एटले आथी अधिक लखवानी अपेक्षा नथी



(पाठमाला विभाग-वाक्यरचना विभाग)



बाह्यपरिवर्तन-व्याकरण-या विभागाच्या वर्षनिहाय, घट्टत्या विभाय
 ज्ये घट्टत्या फेरघट्टने कर्णी ज्याय ह्यीघ्ये तमजकेयी छे. घट्टत्या
 फेरघट्ट 'वाक्य माय्यां व्याकरणे कनीकरी माय स्वय्य फेरघट्ट
 ज्ये व्याकरण फेरघट्ट वा कथय्या जीये क्येयी छे वा क्यु छय
 क्यु घट्ट क्यय घटे ए फेरघट्टवाक्यी ह्यीघ्य क्यय्य अघट्ट्या
 क्यघट्टि ज्ये ज्ये क्यघट्टि ज्ये क्येयी छे ज्या क्यघट्ट्यां छे
 क्यी क्येयी छे तेयना क्यी क्यय क्यय क्येयी छे क्यी, तमया
 क्येक्यय क्यी क्यय ह्यय छे एकी एय ए क्ययना क्यी क्यी
 क्यय्या; तेयना क्ययना क्यी क्येयना क्यघट्ट्यां छे क्ययनाय क
 छ फेरघट्टवाक्य अघट्ट्यां क्यि ज्ये तमयनी ह्यीघ्य क्येक्यी
 ज्येयी छे ज्ये क्यघट्टि क्यघट्टी ते ह्यय एके क्यघट्टी क्येये
 क्यीय क्ययकेय छे

ह्ये वा माय्यां क्यय क्यय पायेयी क्यघट्ट्यां क्यी, क्येयी
 ह्यी ज्या क्येयीवा ज्ये क्येक्यी क्ये क्यघट्ट्यां छे ज्या क्यघट्ट्या
 क्यघट्ट क्यय्याय माये क्यघट्टी क्यघट्ट्यां क्यघट्टी ज्ये क्यघट्ट क्यघट्ट्यां
 क्यघट्टी एय क्यघट्टी क्ये ते घटे क्यघट्टी एय क्यघट्टी क्यघट्टी
 क्यघट्टी क्यघट्टी क्यघट्टी छे क्यघट्टी माये क्यघट्ट्यां क्यघट्टी क्यघट्टी
 क्यघट्टी क्यघट्टी क्यघट्टी एय क्यघट्टी पाठ क्येक्य छे एके ए माये छे
 क्यघट्टी क्ये क्यघट्टी क्यघट्टी छे क्यघट्टी क्यघट्टी क्यघट्टी क्यघट्टी
 क्यघट्टी क्यघट्टी क्यघट्टी क्यघट्टी क्यघट्टी क्यघट्टी क्यघट्टी क्यघट्टी



पाठ १ लो

वर्तमान काळ

एक वचनना पुरुषबोधक प्रत्ययो

१ पुरुष एट्टे (हु)	२ पुरुष एट्टे (तु)	३ पुरुष एट्टे (ते)
पुरुष	प्रत्यय	सस्कृत प्रत्यय
१	मि	(मि)
२	सि२	(सि)
३	ति२	(ति)
	इ	

धातुओ

हरिस् (हर्ष) हरखु
 चरिस् (चर्ष) चरखु
 करिस् (कर्ष) कर्षु-काढु-
 खेचु, खेडु

मरिस् (मर्ष) मिमासु-
 विचारुं
 धरिस् (धर्ष) धसुं-
 सामा थुं
 गरिह् (गर्ह) गरहु-
 निदुं

१ हे० प्रा० व्या० ८।३।१४३।१८०।३९। २ सस्कृतना 'से' प्रत्ययनी पेटे अहीं 'से' प्रत्यय पण वपराय छे तथा 'ते' प्रत्ययनी पेटे अहीं 'ते' अने 'ए' एम वे प्रत्यय पण वपराय छे अने धातुने छेडे ज्यारे 'अ' आवेले होय त्यारे ज 'ते' 'ए' अने 'से' प्रत्ययनो उपयोग करवानो छे हे० प्रा० व्या० ८।३।१४५। ३. जुओ पृ० ६५ नियम १६ ४ () आ निशानमा मूकेलां तमाम धातुओ के नामो वगरे सस्कृत छे अने केवल सरखामणी करवा माटे तेमने अहीं जणावेलां छे.

मरिच् (मर्च्) मरिचु-समा
टाकरी
घरिच् (घर्च्) घरिचु
तुरिच् (तूर्च्) तुरा करी-
उठावळ करी
मरिच् (मर्च्) मरिचु
पुरिच् (पूर्च्) पूरु-पूरु-
मरु

बैम् (बैम्) जम्बु
रैक्म् (रैक्) रैक्बु
पुष्म् (पूष्म्) पूष्बु
पू (पू) पू
कम् (कम्) कम्बु
बैम् (बैम्) बैम्बु
पम् (पम्) पम्बु

१ मि ति म्ति कोरे पुढावळक ज्ञबो क्मावळ खेळ सुळ बाहुनीने
जेरे निष्पत्त 'म' क्मेरामां बावे छे १ केम्के;

बद् + ति—बद् + म + ति = बद्दति

पुष्म् + ति—पुष्म् + म + ति = पुष्पति

२ ज्ञबय पुक्ता 'म'ची बद्द बद्द क्मेरामां पूरे क्मेराम 'म'चे
निष्पत्ते 'म' बाव छे २ केम्के;

बद् + म + मि = बद्दामि बद्दमि

पद् + म + मि = पद्दामि पद्दमि

३ पुक्तावळक ज्ञबो क्मावळ ज्वा बाहुन्य क्मेराम म को निष्पत्ते
प बाव छे ३ केम्के;

बद् + म + इ = बद्दै, बद्द

आप् + म + सि = आप्ति, आपसि

पुष्म् + म + मि = पुष्मि, पुष्पामि, पुष्पमि

१ हे म न्य [१११५] २. हे० म न्य [१११५]
११११५५ ३ हे म न्य [१११५६]

रूपाख्यान

१ पु०	देकस्त्रमि, टेक्त्रामि, टेक्खेमि
२ पु०	देक्खसि, टेक्खेसि १
३ पु०	देक्खइ, टेक्खेइ १

भाषांतर—वाक्यो

वाडु छु	घसु छु	(ते) जमे छे
वसुं छु	पडु छु	” विचारे छे
करु छु	पूछु छु	पूरे छे
(तु) वादे छे	(ते) घसे छे	(तुं) उतावळ
” जमे छे	” जाणे छे	करे छे
” हरये छे	” पढे छे	” निंदे छे
(ति) देखे छे	(तु) खंचे छे	” पूजे छे
” करे छे	” वरसे छे	(हुं) सहं छु
” सहे छे	” सहे छे	” करु छुं
		” पडुं छु

१वडामि	अरिहेइ	हरिससि
करिससे	पुच्छामि	मरिसामि
हरिसमि	घरिससि	गरिहसि
वरिसति	करते	जेमइ
देक्खसि	जाणेसि	घरिसेमि
गरिहामि	करिससि	मरिसामि
तुरियइ	पूरइ	तुरियेसि

१ जुओ पृ० ९९, टिप्पण २ २ प्रथम पुरुषना एकवचनमां
 'वडे' रूप पण वपराय छे • वन्द-अ+ए=वदे (स० वन्दे-हु वाडु छु)
 "उसभ अजिअ च वन्दे"

पाठ २ जो

कोशमालाक कोई नव माकर्म्यं द्विवचने कथयता माते काल
 कुरा प्रथमो ज्ञात्र नवी. २ प्रथमे कोशमालाक प्राङ्गमाधामां एव
 द्विवचला रसक कुरा प्रथमो ववी तेवी एवमनन पवी कथयता ए
 बहुवचनमा प्रथमो ज्ञान्माधं जाम्ना हे परंतु क्वारे द्विवचनी कर्ण
 एवमनो हीम त्वारे ज्ञान्माध के नाम धाने द्विवचनरसक 'द्वि' कर्म्यं
 बहुवचन्यं प्राङ्गमालेवी कथयता करतो पडे हे ते कर्तो वा प्रथमे हे

प्रथमा	}	१द्वोप्यि	द्वुप्यि (द्वीति ?)
तथ्य		द्वेषि	द्वेषि
द्वितीया		द्वो	(द्वौ)
		द्वेषे	(द्वे)
		द्वे	(द्वे)

प्रथोयः वे सिष्यामो—

कमे वे तीर्थीय छीर

वर्तमानकाल (चालु)

बहुवचनना पुरुषदोषक प्रत्ययो

५	अन्व	सकल प्रत्यय
१	मोः	{ मा }
२	हः	{ थ }
३	मिः	{ मिः }

१ 'द्व' कर्म्यं के कर्तो क्वारे ज्ञान्माध के तेववी धाने कथयता सकल
 माते एवां कर्ते मात्र नव कुरी कुरी कोशमालाक प्राङ्गमाध के कथयते—

वे वे	गूढराटी—वे	}	द्वीति	द्वेषि	मराठी—द्वी
द्वेषि	द्वेषि		कर्म्ये	द्वे	बंगाली—द्वे
द्वो	द्विती—		द्वो		

२ हे प्र वा १३।१४४। द्व कर्म्ये 'म' प्रथमो तथा सकलमा

'मो'वी पडे 'म' प्रथम नव कथयते वे कथयाम, वे कथाम वे कथाम् १

'मो' प्रथम नव कथयते वे वे कथयामा हे प्र वा १३।१४२। ४ 'द्वी'

कर्म्ये 'द्वे' प्रथमो नव कथयते वे कथयते कथिरे हे प्र वा १३।१४२।

धातुओ

गृन्म (क्षुभ्य१) घोभृ-
 घोभृ-क्षोभ थवो,
 गभराथु
 कुप् (कुप्य) कोपतुं
 सिन्व् (सिच्य) सीवतुं
 लव् (लप्) लवतु-लवारो
 करवो
 तथ (तप्) तपतुं-संताप
 थवो, तप करवो
 वेव् (वेप) वेपतु-ऋपवु
 सव् (शप्) शाप-शाप देवो

दीथ (दीप) दीपवु
 जव् (जप्) जपवु-जाप
 करवो
 गिन्व् (क्षिप्) गिन्वतु-
 खेपतु-फेरुतु
 खिन्प (क्षिप्य) खेपतु-
 गेवतु-फेरुतु
 लुट् (लुट्थ) लोट्थु-
 आळोट्थु
 टिन्प (टीप्य) टीपवु
 गच्छ (गच्छ) जवु
 वोल्त् (वृ) वोलवु

४ प्रथम पुरुषना 'म' र्था शरू यता बहुचनना प्रथयोनी पूर्वं धात्रेला
 'अ' ना विरुपे 'इ' याय३ छे जेमके,
 वोल्त्+अ+मो=वोल्हमो, वोल्हामो,४ वोल्हिमो, वोल्हेमो

रूपारुयान

- १ पु० वोल्हमो, वोल्हामो, वोल्हिमो, वोल्हेमो.
- २ पु० वोल्हह वोल्हेह५
- ३ पु० वोल्हति,६ वोल्हेति

१ जुओ पृ० ५१ नियम १ २ जुओ पृ० ३५ नियम ९
 ३ हे० प्रा० व्या० ८।३।१५५। ४ 'मो'नी पेट मु, म, अने म्द प्रथ-
 योनां रूपो पण आ रीते करवा जेमके, वोल्हमु, वोल्हामु, वोल्हिसु,
 वोल्हेसु, वोल्हम, वोल्हाम, वोल्हिम, वोल्हेम
 वोल्हम्ह, वोल्हाम्ह } वोल्हिस्म, वोल्हेस्म
 वोल्हम्ह

म्ह प्रथय रगादतां जुओ पृ० ११ नियम २ ५ वोल्ह्+अ+इत्वा=
 वोल्हिया अथवा वोल्हइथा जुओ पृ० ८२ नियम ९ ६ वोल्ह्+अ+न्त=
 वोल्हन्त वोल्ह्+अ+इर=वोल्हिर रूपो पण समजी देवां

वाक्य

अमे सीबिये छिये

" वादिये छिये

" भाळोदिये छिये

(तमे बे) बोसो छो

" सीचो छो

(अमे बे) पेंदिये छिये

" अंपिये छिये

(तमो बे) छाप दे के

बदि छे

" अये छे

(इ) आर हुं

(ते) सीये के

(तमे बे) बांदो छो

(तमे) अपो छे

" बोपो छो

गमपमो छो

(अमे बे) सीपिये छिये

(ते) सीये के

(इ) अयुं छु

(उ) पेंहुं छु

(उ) भाळोदे के

सीये के

, अये के

बंभामो

अबिरे

बंदह

बोळामो

सबेम

छुदह बुक्किय

बिप्पित्या बे

बुभिमत्या हो

कुन्पेह

बच्छम

बंरिते

गच्छति

अबिमो

बंरिम

बंरिते

बोळामु

छुदामि

कुन्पेह

बिप्पियि

बोळसि

बंरिति

पाठ ३ जो वर्तमानकाल (चालु)

सर्व पुढ्य } ज्ञ
सर्व वचन } जा

ज्ञ अने जा प्रत्ययो लागता तेमनी पूर्वे आवेली अगना अन्य 'य' नो 'ए' घायर छे

वद् + अ + ज्ञ = वदेज्ज्ञः

वद् + य + ज्ञा = वदेज्ज्ञा

स्वरांत—छेडे स्वरवाळा—धातुओ

दा (दा) देवु

वा (वा) वावु

पा (पा) पीवुं

गा (गा) गावुं

जा (जा) जावु-जवु

ठा (स्या) स्थिर रहेवुं-

ऊभा रहेवु के

वेसवुं

झा (ध्या) ध्यावु-ध्यान

करवुं

१ हे० प्रा० न्या० ८।३।१७७। २ हे० प्रा० न्या० ८।३।१५९।
पुढ्यसोषक प्रत्ययो अने स्वरांत धातुओनी वच्चे ज्ञ अने जा ए वेमाथी
गर्म ते एक प्रत्यय टमेरीन पण ह्यो यई शके छे

हो + इ = हो + ज्ञ + इ = होज्ज्ञइ अथवा होइ

हो + इ = हो + ज्ञा + इ = होज्ज्ञाइ अथवा होइ । हे० प्रा० न्या०
८।३।१७८।

विकरण लगाडया पछी—

हो + अ + इ = हो + अ + ज्ञ + इ = होएज्ज्ञइ, होअइ

हो + अ + इ = हो + अ + ज्ञा + इ = होएज्ज्ञाइ, होअइ

होज्ज्ञइ अथवा होएज्ज्ञइ साथे सरखावो होजे, यजे, करजे, चालजे,
देजे, छेजे वगैरे गुजराती भाषानां रूपो

घा (घाह्) घाहु-दोह्यु
 वा (वाह्) वाहु
 हा (हा) हीया ह्यु-वज्यु

हू (ह्) होह्यु
 हो (ह्) होह्यु-वहु
 ही } (ही) हीं ह्यु-
 हे } होह्यु

अभ्यर्तत विनासना स्वर्तत वाह्योमे हेने पुस्तनोवक प्रथम व्याख्या
 योर्वा विहरण मं विह्ये काने ले (हे म् वा 11124)

हो + ह् = होह् हो + म् + ह् = होमह्
 वा + ह् = वाह् वा + म् + ह् = वामह्
 घा + ह् = घाह् घा + म् + ह् = घामह्

(अभ्यर्तत वाह्ये हेने मं हे व वाहे विहरण 'म' कर्तार
 व्याख्यात्री कस् १वी.)

अकारांत पादु—

विहृच्छ (विहित्त) विहितता करणी—शंका करणी
 अथवा उपाय करणे.
 हृच्छ (हृच्छ) पूया करणी अथवा उपा करणी
 भमराय (भमराय) ऐवनी शैम उहेनु.
 विहृच्छर हृच्छर भमरायर्

रूपाख्याम
 विहरण विनानां

	एकक	द्विकक
१ पु०	होमि	होमो
२ पु	होमि	होह्
३ पु०	होर	होति इति

विकरणवाळां

१ पु०	होअमि होआमि होपमि	होअमो, होआमो होइमो होपमो
२ पु०	होअसि होएसि	होअह होपह
३ पु०	होअइ होपइ	होअति होपंति होइति

सर्व पुरुष } होज्ज, होज्जा
सर्व वचन } होपज्ज, होपज्जा (विकरणवाळु)

वाक्यो

गाइये छिये
दोडो छो
(तेओ) बोले छे
ते बे खाय छे
ऊभो रहु छु
तु दोरी जाय छे
अमे जईए छीए
तमे पीओ छो
तेओ गाय छे

अमे वे तजीए छीए
तेओ ठे छे
वाय छे
अमे दोरीए छीए
तेओ दोरे छे
तमो उपाय करो छो
हुं घृणा करं छुं
अमे देवनी जेम रहिये छिये

इति	धाइ	गाइ
होति	गाइ	झइ
अति	जासि	छारत्या
ब्रूमो	छामि	हामि
बिति	ब्रूम	वेति
वे ब्रामो	वेमि	पामो
श्रामो	वेति	बेमि २
वापसि	वायमो	

पाठ ४ यो

अम् विषयान् होषु

अम् वातुम् एव अस्मिन्मिथुं के अने ते वा प्रयात्वे के (दे अ
म्या १११२२११११११ ८)

	एकपथ	बहुपथ
१ पु०	अस्मि, मि, (अस्मि मि, असि अस्मि)	मो, २ मु (एम्)
२ पु	सि अस्मि (अस्मि) अस्मि	अस्मि थ (एम्) अस्मि
३ पु	अस्मि	अस्मि अस्मि (अस्मि)

१ इ + अ + स्मि = इ + ए + स्मि = वेति एवा बिति २,
इ + अ + सि = इ + ए + मि = वेमि ३ अ, मी अने मु अने
एव अस्मि के अस्मि—अस्मि का अर्ध पुरुष अने तर्ध अस्मि
अस्मि के

घातुओ

मज्ज् (मद्य) माचवुं-मद
करवो, खुश थवु
खिज्ज (खिद्य) खीजवुं-
खेद थवो
सं+पज्ज् (सं+पद्य) संप-
जवु-सापडवुं
नि+पज्ज् (नि+पद्य) नीपजवुं
विज्ज (विद्य) विद्यमान होवुं

जोत् } (घोत्) जोत्
जोम } थवी-प्रकाशवु-
जोवुं
सिज्ज (स्विद्य) सीजवु-
चीकणुं थवुं
दिव्व (दीव्य) रमवुं-शूत्
रमवुं

वाक्यो

(तेओ) थाय छे
(तुं) दे छे
(ते) थाय छे
गाह्य छीप
दोडो छो
(ते वे) खाय छे
ऊभो रहंछु
छो
जाय छे
खुश थाउं छु
खेद करे छे
नीपजे छे
संपजे छे
प्रकाशित थहए छीप

(तेओ) जपे छे
(अमे वे, ध्यान करीप छीप
पीओ छो
(तेओ वे) रमे छे
सीजे छे
छीप
विद्यमान छे
(तमे वे) छो
(तु) दीपे छे
तजीप छीप
जाउं छु
छु
पूरु छु

हुति	गारमि	जासि	मग्नेति
अति	ओतसि	डामि	म्ह
बुम	ओमाहु	मिह	सि
बाह	किग्नेह	मिप्यग्नेह	य
वे ग्राम	वेगिय संति	मसि	मसि
बी मो	घाह	नरिय	यमिह
मिप्यग्नेसे	बुमि	बो मग्नेह	बुमो
संति	संपत्तर	ओगिय	वे बापमु
सिग्नेति	गार	दिम्वामु	मग्नेसि

पाठ ५ मो

पुम्ह (पूर्व) पूर्व, एाई	} (बाह) वाहु
विम्ह (विषय) बीपहु	
मिम्ह (सुख) एह यहु- कसबाहु	
कुम्ह (कल्प) कोय करबो	
मिम्ह (सिष्य) सीसहु— सिह यहु	
मग्ह (नक्ष) मासहु-बापहु	
गुरह (गुरु) जूसहु-युह करहु	बाह } (बाह) वाहु
	यह (कप) करहु
	कुह (कृप) कोहहु-सहहु
	बाह (बाध) बापा करबी- महबाय करबी
	मिह (द्विष) हहहु
	कह (कर्म) केहु-मेहहहु
	सिक्काह (साध) सपहहु- बहायहु

१ बुओ ह ५ मि ५ ८ ह ५८ निम्य १ १ ह ११

चोह् (चोध) चोध थवो-
जाणवुं
चह (वध) वध करवो-
हणवु
सोह् (शोभ) सोहवुं—
शोभवु

सोह् (शोध) शोधवु-शुद्ध
करवु
सुज्ज (शुध्य) सोज्जवुं—
साफ करवुं
घाव् } (धाव) घोडवु-
घाय् } धावुं-दोडवुं

वाक्यो

वे ध्यान थरीण छीए
(ते) वीधे छे
ललचाइये छिये
वे मुंझायो छो
वे सडो छो
वींघीए छीए
शोभो छो
शोधो छो
सोझो छो
वे लखीण छीए
खंचो छो
मापडे छे
वे निद्रा करे छे
(तमे वे) दोडो छो
गाडं छु
शाप दे छे
प्रकाशे छे

छो
तेओ छे
छु
(तुं) छे
छीए
(ते) छे
यो छो
जाणे छे
माचुं छु
वे जाय छे
कंपो छो
वे वखाणे छे
वाय छे
थईए छीए
खेद करीए छीए
(ते) ऊभो रहे छे
सिद्ध थाउ छुं

कृहन्ति
 सिञ्चाति
 गिञ्चाम
 मि
 कहेमि
 नञ्हासि
 हार
 वे सोहामो
 मुञ्चिषु
 वेचि विञ्चति
 ह्यपह
 वे वाहह

शाम
 ह्येति
 बुचि बोहेति
 मुञ्चैम
 मि
 चिति
 सिहेग्र
 सिञ्चति
 हो चहेग्हा
 कुञ्चेति
 भीति

पाठुषो

१वीह (मी) बोहुं
 कञ् (कञ्) काञ्हुं-होमहुं
 वैह (वैह) वीह
 कह (कह) कहुं
 ठह (ठह) ठहुं
 चिह् (चिहु) चयहुं-चकहुं
 कहुं
 उह (उह) उहुं-वाहहुं-
 उञ् (उञ्) उञ्हुं-वाञ्हुं

नम् } (नम्) नम
 नह् }
 कर् (कृञ्) कञ्हुं-कञ्हुं
 चिह् (चिञ्) चित्तुं
 चिह् (चिञ्) चैत्तुं
 कह् (कह) काहत्तुं
 निह् } (निह्) नित्तुं
 निह् } निहा करी
 सुह् } २(शुञ्) शोपत्तुं-
 सुह् } सुकत्तुं
 सुह् } (शुञ्) सुहत्तुं-
 ह्य् } सामहत्तुं

१ सञ्चामो वीह कने नी - व + ह + ई 'ह' कने 'ह'
 मेवा पत्नी कृत्तं भू कने तेवा 'वै' कञ्चं नी २. ह्यो ह १ निह्य १

सुमर (स्मर) स्मरण करवु-
याद करवु
गच्छ (गच्छ) गति करवी-ज
नस्स } (नश्य) नाश
नास्स } थवो
गेण्ह (गृहणा) ग्रहण करवु

नच्च (नृत्य) नाचवु
कुण् (कृणु) करवु
रुस्स } (रुण्य) रुठवु-रोप
रुस्स } करवो
हण् (हन्) हणवुं-मारवु

साग अने प्रश्नो

एकवचन

१ पु० वदमि, वंढामि, वढेमि

० पु० वंदसि, वढेसि
वदसे, वढेसे

३ पु० वदइ, वदेइ,
वदण, वढेण
वदति, वढेति,
वदते, वढेते

सर्व पुरुष }
सर्व वचन } वदेज्ज, वदेज्जा

बहुवचन

वदमो, वदामो, वदिमो, वढेमो
वदमु, वदामु वदिमु, वढेमु
वदम, वदाम वदिम, वढेम
वदह, वढेह वदइत्था,
वढेइत्था वढित्था
वदति, वदेति, वदिति,
वदते, वढेते वदिते
वंदइणे, वदेइरे, वदिरे

स्वरांत धातुनां विकरण विनाना रूपो

१ पु० होमि
२ पु० होसि
३ पु० होइ, होति

होमो, होमु, होम
होह, होइत्था
होति, हुति
होन्ति, हुन्ति
होन्ते, हुते
होइरे

सर्व पुरुष, सर्व वचन—होज्ज, होज्जा

स्वरांत धातुनां विभरणपार्थ्यं रूपो

एकारण

बहुवचन

१ पु	होममि होमामि होष्यमि	होमामो, होशामो होमो होष्यमो होममु होमामु, होष्यु, होष्यमु होमम होमाम होम होष्यम
२ पु	होमसि होष्यसि होमसे होष्यसे	होमह होमह, होमस्य होष्यस्य
३ पु०	होमह होष्यह होमह होष्यह होमति, होष्यति	होमति होष्यति होमति होष्यति होष्यति होमति, होष्यति

सर्वं पुंस्य
सर्वं बहुवचन } होमन्तं होष्यन्तं

१ अङ्गुल भाष्यार्थं क्वा क्वा स्वरो क्वा क्वात्वात् । त्रि क्वा क्वात्वात्
तेजना बहुवचनं क्वा क्वा स्वरो क्वात्वात् । ते क्वात्वात्वात् क्वा
कम्बुवचनो.

२ क्वात्वात्वात् अङ्गुल क्वा क्वा क्वात्वात्

सूत्रिका ताम्बुव वीरुव वीरु वीरु
होमन्ती ताम्बु वीरुव गोष्ठी ताम्बु

३ क्वात्वात्वात् अङ्गुल क्वा क्वा क्वात्वात्

સમુદ્ધ વંક સાહ્યા પઢદ સાહુ હલદા
અગાલ સદ્. ચોદદ છદ્. ભાયળ

૪ નીચેના મયુક્ત વ્યજનોનો જે ફેરફાર યતો હોય તે ડદાહરણ સાથે જળાવો

ક્ષ ત્વ દ્ય પ્સ ષ્ટ

૫ નીચેના સયુક્ત વ્યજનવાલા શબ્દોના પ્રાકૃત રૂાંતર કરી વતાવો.

ગ્રોળ્મ સ્તમ્ભ પુળ્પ પ્રશ્ન મુષ્ટિ ધ્યાન
શૌળ્ઢીર્ય ઝર્ધ્વ તીર્થ નિમ્ન કર્તરી

૬ નીચેના શબ્દોની સઘિ છૂટી કરી વતાવો

વાસેસિ વ્દશમહ વહૂદગં પુહવીસો કાહી

૭ નીચેના શબ્દોના સમાસ સમજાવો

દેવદ્રાણવ્રગંધવ્ત્રા વીતરાગો, તિત્થયરો
નરિંદો મહાવીરો

૮ ઢીર્ઘનો હ્રસ્વ અને હ્રસ્વનો ઢીર્ઘ ક્યારે ક્યારે થાય છે તે ડદાહરણ સાથે સમજાવો

૯ સ્વરાંત ઘાતુ અને વ્યંજનાંત ઘાતુની રૂપસાધનામાં જે ભેદ છે તે સમજાવો

૧૦ પ્રાકૃત્તમા દ્વિવચન છે ? દ્વિવચનનો અથ કઈ રીતે વતાવાય છે ?

૧૧ પ્રાકૃત ભાષાનાં રૂપો સાથે આપળી ગુજરાતી ભાષાના રૂપોનો કેવો સ્વઘ જળાય છે ?

उपसर्ग (उपसर्ग)

इस उप बाहुली पूर्ण जाती चतुर्णो बाहुली गुरु कर्णो
 म्नाविष्ठा की विष्णो कर्ण-म्न कर्ण अ कर्ण कर्ण के लो कर्ण-
 कर्णो के एता उपसर्ग नीचे सुख्य के:

प (प्र) भागल प+आह=पत्राह=भागल जाय के
 प+ओतते=पओतते=विशेष प्रकारो के
 प+हरति=पहरति=पहार करे के

पर-सर्तु कर्तु पर+जिअह=परजिअह=परजय करे के
 पर+ओह=परओह=परमअ करे के-इरावे के.

ओ	} (अप) हल्लु रहित नीचे हूर.	ओ+सख=ओसख	} सखे के- कसे के
अव		अव+सख=अवसख	
अप		अप+सख=अपसख	

अप+अर्थकर=अवार्थकर=अपार्थक-अमयु-
 ओ+मास्यम्=ओमास्य=विमार्थ्य

सं (सम्) एकहु सावे सं + गच्छति = संगच्छति-साय
 जाय के.
 सं+विषय=संविषय-संजय करे
 के-एकहु करे के.

अणु	} (अनु) पाठल, सखु	अणु+आह=अणुआह-पाठल	} जाय के
अनु		अणु+करा=अणुकरा-अणुकरा	

करे के

ओ	} (अव) नीचे ओ+तख=ओतख	} अतरे के ऊतरे के- नीचे जाय के.
अव		

निर्	}	(निर्) निरंतर, सतत, रदित
नि		निर्+इषप्रह=निरिषप्रह-नीरखे छे-निरीक्षण
नी		करे छे
		नि+ञ्जरह=निञ्जरह-झर्यां करे छे
		नि+सरह=नीसरह-नीसरे छे-निरतर सरे छे.
		निर्+अंतर-निरतर-निरतर-सतत
		निर्+धन =निद्धणो-निर्धनियो-धन वगरनो
दु	}	(दुर्) दुष्टता दु+गच्छह=दुग्गच्छह-दुर्गतिप जाय छे
दृ		दो+गच्छ=दागच्छ-दोर्गत्य-दुर्गति
		दू+हवो=दूहवो-दुर्भग-कमनसीव
अभि	}	(अभि) सामे अभि+भासह=अभिभासह-सामे बोले छे.
अहि		अहि+सुह=अहिमुह=अभिमुप-सामु
वि—विशेष, नहि, विपरीत		वि + जाणह = विजाणह-विशेष
		जाणे छे
		वि + जुजह = विजुजह-वियोग
		करे छे
		वि + कुब्जह = विकुब्जह-विकृत
		करे छे
अधि	}	(अधि) अधिक अधि+गच्छति=अधिगच्छति-मेळवे
अहि		छे, जाणे छे, उपर
		जाय छे
		अधि+गमो=अहिगमो-अधिगम-ज्ञान
सु	}	(सु) सारु सु+भासप=सुभासप-सारं बोले छे
सू		सू + हवो = सूहवो-सुभग-भाग्यवान

१ 'दू' अने 'सू'नो उपयोग फक्त 'ह्य'-(भग) शब्दनी पूर्ण थाय छे जूओ पृ० २३ नियम ५

ड (डत्) डूँचे उ+गच्छने=डमाच्छते-डूँचे आप डे-डूँगे डे.
 म् } प्रतिशप इर बहार म्+सेइ=मइसेइ-प्रतिशप
 मति } इरे डे-इर बहार म्माये डे.
 प्रति+पच्छति=प्रतिगच्छति-
 इर बहार आप डे

मि { (मि) निरंतर, नीचे मि+पडइ=मिपडइ } निरंतर पडे डे
 मि { मि+पडइ=मिपडइ } नीचे पडे डे

पडि } प्रति-सामु, मरपु मिपरीत
 पति } पडि+मासप=पडिमासप-मासु बोडे डे.
 परि } पति+डुइ=पतिडुइ-प्रतिष्ठित पाप डे
 परि+डुइ=परिडुइ-प्रतिष्ठा
 पडि+मा=पडिमा-सरखी माडति
 पडि+डुम=पडिडुम-प्रतिडुम

परि } (परि) चारे बाहु परि+डुडो-परि+डुडो-परिडुठ-चारे
 पमि } बाहुपी बीटापडो-

पडि+डो=पडिडो-परिष मज

अपि } (अपि) ऊसुं, पत्र म्बि+हेइ=म्बिहेइ } हकि
 अपि } म्पि+हेइ=म्पिहेइ } डे
 पि } पि+हेइ=पिहेइ } कोई पत्र
 बि } डो+बि=डोबि }
 १२ } डो+इ=डोइ }

किम्+म्बि=किम्बि-कार पत्र
 डं+पि=डंपि-बि पत्र

१ परि २ पडि ३ मि निम्न उच्चारण डे ४ म्मे
 ५ मु उच्चारणस्य म्म बहुर्यु डे ६ म्मो ७ १ मि १ २ म्मो
 ८ १ निम्म १२ १ म्मो १५ १६ मि १ (क)

उ ओ उव	{	(उप) पासं उव=नाच्छड-उवगच्छड-पासं जाय छे	} उपाध्याय
		ऊ+ज्जायो=ऊज्जायो	
		ओ+ज्जायो=ओज्जायो	
		उव+ज्जायो=ऊवज्जायो	

आ—मर्यादा, ऊलट्ट आ + वसड = आवसड-अमुक मर्यादांमां रहे छे

आ+गच्छड=आगच्छड-आवे छे

उपसर्गना अर्थो नियत नथी कोटे उपसर्ग घातुना मूल अर्थ कर्ता विपरित अर्थ बतावे छे कोड ए मूल अर्थने अनुमरे छे, कोड एमां थोडो व्वागे देखांड छे अने कोड, मात्र शोमा माटे ज वपराय छे— घातुना अथमा क्यो फेफार बतावतो नथी 'अपि' उपसर्ग छे अने 'पण' अर्थमा अन्वय पण छे एयी 'अपि' साथेना उदाहरणोमा तेनो बन्ने जातनो उपयोग बनाथ्यो छे

घातु

पुण् (पुना) पयित्र करवुं
 युण् (स्तुनु) स्तुति करवी
 वच्च् (वज्ज) फरना रहेवु
 कुट्ट (कुट्ट) कूट्टवु
 अच्च् (अर्च) अर्चवु-पूजवुं
 वट्ट (वर्ध) वचवु

भम् (भ्रम) भमवु
 भम्भ (भ्राम्भ) भमवु
 मिद् (भिनद्) मेडवु-
 कटका करवा

छिद् (छिनद्) छेडवु
 सिच् (मिञ्च) सींचवुं
 मुच् (मुञ्च) मूकवु
 लुण् (लुना) लणवु-कापवु
 गट् (ग्रन्थ) गटवु-गुंयवुं
 गज् (गर्ज) गाजवुं
 मिला (म्ला) म्लान थवु-
 करमाडुं
 गिला (ग्ला) ग्लान थवुं
 गळवु-शीण थवुं

विहृष्ट (विहृष्म) विहृष्टमा
 करबी-तेगमो
 उपचार करषो
 अम् (आम्) मागर्षु

बीसद् (वि+स्मद्) बीसर्षु
 अम् (अम्) अम्षु
 इद् (इद्) रोद्
 तोद् (तोद्) तोद्षु

पाठ ५ मो

अक्षरांत नामनां रूपास्थानो (परब्रावि)

बीर

एवमन्

शुभमन्

१ बीर+भा=बीरा१ (बीरा)
 बीर+व=बीरे

बीर+भा=बीरा१ (बीरा)

२ बीर+म्=बीरम् (बीरम्)

बीर+भा=बीरा१ (बीरा१)
 बीर+र=बीरे१

३ बीर+वव=बीरेव (बीरेव)
 बीरेव

बीर+वहि बीरेहि (बीरेहि)
 बीरेहि बीरेहि (बीरे)

४ बीर+भाष=बीराष (बीराष)
 बीर+भाष=बीराष
 बीर+स्त=बीरस्त (बीरस्त)

बीर+व=बीराव (बीराव्यम्)
 बीराव

१ हे प्र भा ११२। एव ११२। एव ११२।
 हे प्र भा ११२। १ हे प्र भा ११२। ४ हे
 प्र भा ११२। ११२। ११२। २ हे प्र भा ११२।
 ११ ६ हे प्र भा ११२। ११२। ११२।
 ११ हे प्र भा ११२। ११२।

* वीर+आ=वीरा^१ (वीरात्)

वीर+ओ=वीराओ

वीर+उ=वीराउ

वीर+ओ=वीराओ^२

वीर+उ=वीराउ

वीर+द्वितो=वीराद्वितो,

वीरेद्वितो (वीरेभ्य)

वीर+सुतो=वीरासुतो

वीरेसुतो

३ वीर+स्स=वीरस्स^३ (वीरस्स) वीर+ण=वीराण^४ (वीराणाम्)

वीराण

७ वीर+ए=वीरे^५ (वीरे)

वीर+सु=वीरेसु^६ (वीरेषु)

वीरेसु

वीर+असि=वीरसि (वीरस्मिन् ?)

वीर+स्मि=वीरस्मि^५

सं० वीर ! (वीर !)

वीर+आ=वीरा^७ (वीरा !)

वीरा^७ !

वीरो !

वीरे !

मस्कृत अने प्राकृत रूपोना उच्चारणोमां नहि जेवो मेद छे ए
मेद, ए रूपो बोलता ज समजाय छे मात्र पाचमी विभक्तिमां वधारे
अनियमित रूपो छ

* पाचमी विभक्तिमां नीचेना वधारे रूपो पण थाय छे

एकवचन

वीर+तो=वीरातो

वीर+तु=वीरातु

वीर+हि=वीराहि

वीर+द्वितो=वीराद्वितो

वीर+त्तो=वीरत्तो

बहुवचन

वीरातो

वीरातु

{ वीराहि

{ वीरेहि

वीरत्तो

१ हे० प्रा० व्या० ८।३।८।८।३।१२। २ हे० प्रा० व्या० ८।
३।९। तथा १०।१५। ३ हे० प्रा० व्या० ८।३।१०। ४ हे० प्रा०
व्या० ८।३।६।१२। ८।१।२७। ५ हे० प्रा० व्या० ८।३।११। ६ हे०
प्रा० व्या० ८।३।१५। ८।१।२७। ७ हे० प्रा० व्या० ८।३।३।८। तथा
४।१२।

करो क्यङ्कटां नामद्वा मूठं शेषं क्वी प्रचरन्ते बंध-ए वाच ह्ययं
वादीने क्वादेवं छं क्वी चाये ए इपरवी चाकिं क्वी इरेक क्वी क्व
ह्युं ह्युं एचधितं छे एवी वा चापनप्यदि द्वारा च निदानीं क्यङ-
कं नामन्तं क्वीने क्वमी छेते

साधनपद्धतिनी समग्रय

१ प्रथमा द्वितीया तृतीया चतुर्थी क्वी छत्तवी निमच्छिना स्वरादि
प्रचरवी तथा पचवीनी एक मात्र वा प्रचर क्वी क्वमी क्वन्त
'क्व'ना क्वेय करवाती छे (क्वमी इ २ निमन् १)

केन्द्रे—

क्वीर + ओ = क्वीरो क्वीर + ए = क्वीरे

२ क्वीर + म् = क्वीरं (क्वये इ ४ निमन् १-१)
क्वीरम् + मये = क्वीरं मये क्वीरम्वि

३ तृतीया क्वी चतुर्थी निमच्छिना 'च' क्वर तथा छत्तवी निमच्छिना 'हु'
उपर क्वुल्लार निमन्ते वाच छे

क्वीर + पच = क्वीरेच क्वीरेचं
क्वीर + ष = क्वीराच क्वीराचं
क्वीर + सु = क्वीरेसु क्वीरेसुं

४ तृतीया क्वी छत्तवीना चतुर्थीना प्रचरवीनी पूरन्त क्वरकं क्वन्ता
क्वन्त क्वी ए वाच छे क्वी इक्वरांत क्वन्तो तथा क्वरकं
क्वन्तो क्वन्त 'इ' क्वी क्वी वाच छे

क्वीर+दि=क्वीरेदि		रिभि+दि=रिबीदि		मायु+दि=मायुदि
क्वीर+सु=क्वीरसु		रिभि+सु=रिबीसु		मायु+सु=मायुसु

५. पचमीना 'ओ' 'उ' 'हितो' प्रत्ययोनी पूर्वना स्वरात अगनो अत्य स्वर दीर्घ थाय छे तथा पचमीना बहुवचनना 'हि' 'हितो' अने 'सुतो' प्रत्ययोनी पूर्वना अकारांत अगना अत्य 'अ' नो 'ए' पण थाय छे

एकवचन

बहुवचन

वीर+ओ=वीराओ

वीर+उ=वीराउ

रिसि+ओ=रिसीओ

भाणु+ओ=भाणुओ

वीर+हि=वीराहि, वीरेहि

वीर+हितो=वीराहितो, वीरेहितो

वीर+सुतो=वीरासुंतो, वीरेसुंतो

रिसि+हि=रिसीहि

भाणु+हि=भाणुहि

रिसि+हितो=रिसीहितो

६. पष्ठीना बहुवचननो 'ण' लागता पूर्वना अगनो अत्य स्वर दीर्घ थाय छे वीर + ण = वीराण, वीराण
रिसि + ण = रिसीण

७. सवोधनना रूपोनी माधना प्रथमा प्रमाणे छे वधागमां मूळ अग पण जेप्रनु तेम वपराय छे वीर ! वीरो ! वीरा ! वीरे !

८. तृतीया विभक्तिनो 'हि' प्रत्यय माये अनुस्वार पण छे छे अने तेनो मानुनामिक उच्चार पण थाय छे आ रीते ते एक 'हि' ना पण त्रण रूपो थाय छे वीरेहि, वीरेहि वीरेहि

९. वीराए१ (च० ए०) वीरसि (स० ए०) रूपोनो व्यवहार विशेष करीने आर्षप्राकृतमा देखाय छे फेटलेक स्थळे चतुर्थीना एकवचनमां

‘बाहू’ प्रत्ययवाहकं रूपं एव गच्छेत् (हे अ वा ८।१।१३१)
 बहाइ (बहाय) बाह्य बाहू अने बाहू र प्रथम्यं काल कयी सिच
 मत्र गयी. ‘बाहू’ प्रत्ययवाहकं रूपं बहु प्रथमित्त गयी तेयी अ ते इत
 एतं इतीम्यं कथयन्तु गयी कैयकेण एतके बाहू ने बहूके बाते
 प्रथम एव बहुराद्यन्ते छे एयी बीराए‘भी पेटे बीराते’ एव एव बाहू
 प्रथम्यां बहुरास्य छे प्रथम मायामां बहुषीं विमथि बाहू सुयी
 गयी एव ते गयी विमथिमां एतत् बहूषी छे तेयी छे एव विमथिमां
 कयी एक शरदां बाहू छे

माम् [परब्राठि]

अभिहित (अहित)	बीराम् के	बाह (बाह)	बाह-बाह्य अभ्यहाय (अभ्याय)
हर (हर)	महादेव		पान-अपारक-गुण- बोधा
दुःख (दुःख)	दुःखेव		
माम् (माम्)	माम्-मारम्	आत्परिय (आत्मी)	उत्पात्
कच्छह (कच्छ)	कच्छ-कच्छी		केत दुःख-
हृष्य (हृत्)	हृष्य	सिद्ध (सिद्ध)	अदेही बीरत्वात्
पाय (पाह)	पाह-पाय, पायी	विष (विष)	द्वय-राज
मार (मार)	मार	दुःख (दुःख)	दुःखिमान्-कच्छी दुःख

१ अक्षिपाए (अक्षिपाय) महार (महीपाय) दुष्कार (दुष्कार)
 अनेरे बाए प्रत्ययवाहकं अने अक्षि (अक्षे) अक्षि (अक्षि)
 अक्षिपायि (अक्षिपाय) अक्षिपायि (अक्षिपाय) अनेरे अक्षि प्रत्ययवाहकं कयी
 बाह एतं आत्परिगिरिद्वयोर्वा गच्छेत् छे

पुरिस (पुरुष) पुरुष
 आइच्च (आदित्य) आदित्य-सूर्य
 इन्द्र (इन्द्र) इन्द्र
 चन्द्र (चन्द्र) चन्द्र
 मेह (मेघ) मेघ-बरसाट
 भारवह (भारवह) भार वह
 नार-मजूर

समुद्र } (समुद्र) समुद्र
 समुद्र }

नयण (नयन) नेण-आंख
 कण्ण (कर्ण) कान
 महावीर (महावीर) महावीर देव
 जिण (जिन) जय पामनार—
 वीतराग

मेव मार्गने सिंचे छे
 इन्द्र बुद्धदेवने नमे छे
 डाह्यो पुरुष बालकने पूछे छे
 आखवडे चन्द्रने जोउं छु
 समुद्रने कानवडे साभल्लु छु
 बालकना हाथमा चंद्र छे
 कलहने छेदो छो
 सूर्य तपे छे
 राजा मार्गने जाणे छे

सिद्धोने नमो
 मजूरु मार्गमा दोडे छे
 समुद्रमा चंद्रोने देखीए छीए
 बालको उपाध्यायने पूछे छे
 राजाना पगोमा पडु छुं
 वीतराग देव ! नमु छु
 वे बालक बोले छे
 समुद्रो गाजे छे
 राजा गोमे छे

१ नमो अरिहताण
 भारवहो हर बुद्ध
 महावीरो जिणो ध्यायइ
 कण्णेहिं सुणेमि
 नयणेहिं देखामु
 भारवहा भार चिणति
 नमो उवज्झयाणं
 समुदो खुव्वइ

मेहो समुद्रम्मि पडइ
 बाला हत्थे वरिसंति
 समुद्र तरह
 हत्थेण हर अच्चेमि
 नमो आयरियाय
 आयरियाण पाए नमाम
 बाला कुदति
 चन्दो वड्ढइ

१ नमो के नमो साथे वपरातु नाम छट्टी विभक्तिमां आवे छे

पाठ ६ द्वौ

अक्षरान्त नामनां रूपास्थानो [नान्यतर ज्ञाति]

एकारण	बहुवचन	
१ कमळ+म्-कमळं (कमळम्)	कमळ+पि=कमळापि कमळ+ई=कमळाई कमळ+इ=कमळाई	} (कमळापि) } (कमळाई)
	हे प्र था	
२ " " " (,)	, " "	()
सं० कमळ ! (कमळ !)	, " "	(!)
हे प्र था ॥१२२॥		

तृतीयावी सप्तमी सुपीनां रूपो

'बोर'नी सेवां जगसां

- १ पि ई ई अक्षीणी पूरय भंजना जय दूत सारणे
 ठेके बल ठे कमळ + पि = कमळापि
 बारि + ई = बारीई
 मह + ई = महीई

११ तृतीयाया एकारणनां नूठ संय च बराल ठेः कमळ !

माम [नान्यतर ज्ञाति]

बपय (बपन) बैव	बैर (बर) बैर-बैर
भरपय (बरल) मारु	बयय (बपन) बपन-बैव
बाय (बाल) बाल	बपय (बपन) बरल-मारु
बबय (बबल) बरलनु	
घाड के मारुई	

णगर	} (नगर) नगर-शहर
नगर	
णयर	
नयर	
मुह (मुख) मुख	
पित्त (पित्त) पित्त	
सिंग (शृङ्ग) शिंगडु	
फल (फल) फळ	
चण (वन) वन	
भायण	} (भाजन) भाजन-
भाण	

मगल (मङ्गल) मगल
पास (पार्श्व) पासु-पडखुं
हियय (हृदय) हृदय-हैयु
गल (गल) गळु
पुच्छ (पुच्छ) पूछहु-पूछ
पिच्छ (पिच्छ) पीछु
मंस (मांस) मांस
अजिण (अजिन) अजिन-चामडु
भय (भय) भय-भो
चम्म (चम) चामडु

नाम (नरजाति)

सीह	} (सिंह) सिंह
सिघ	
षग्ध (व्याघ्र) वाघ	
सिगाल	} (शृगाल) शियाळ
सिथाल	
सीआल (शीतकाल) शोआळो	
गय (गज) गज-दायी	
चसह (चूपम) चूपम-चळद	
ओट्ट (ओष्ठ) -होठ	

दत (दन्त) दांत
कुंभार (कुम्भकार) कुमार
चम्मार (चर्मकार) चमार
हव्ववाह (हव्यवाह) हव्यवाह-अभि
क्रोह (क्रोध) क्रोध
लोह (लोभ) लोभ
दोस (द्वेष) द्वेष
दोस (दोष) दोष
राग (राग) राग-आसक्ति

धातुओ

घड् (घट्) घडवु-चनाववु
जहा (जहा) छोडवु-त्याग
जागड् (जागर) जागवु

भक्ष (भक्ष) भक्षवु-खावु-
भरखवु
जाय् (जाय) जन्म थवो-
उत्पन्न थवु

कुमार जीआळामा पात्रो
 वढे ते
 वावने पीछा नथी होता
 अग्नि बनने बाले ते
 घानमा मगल छे
 महावीरने माथावडे वदन
 करु तुं
 राजाने कान नथी
 गिहमा हृदयमा भय नथी
 हाथी सुह वडे वनमां फळा
 ग्राय छे

चामडा माटे वावने हणे छे
 हाथीओ वळडोथी घोतानथी
 सिहनु पृच्छु लावु होय छे
 आंग्रमां फोवने जोड तुं
 मर्य के चद्र भमता नथी
 वळडो गिंगडाओ गोसे छे
 चमार चामडाने शुद्ध करे छे
 मृगवडे वचनो बोलु नु
 पुरुष नाना होठथी शोभे छे
 वग्माद नित्य पटे छे
 वरसाद पिना वनां मुकाय छे

अजिणाण वहति वग्धे
 फळाहं भायणस्मि साहति
 बुद्धा पुग्ग्मा हियये वरं
 न रक्कगति
 निचां वणेसु सिधे वा वग्धे
 वा हणद
 सिधो फल न ग्रायद
 चंदणस्स वणमि जामि
 कुमारो नगराओ आगच्छद
 चम्मारो अजिणाण नगर जाइ

निचस्स म-वयमि कमलाणि
 लज्जति
 मत्थण वदामि महावीरं
 वणे गण देकापद
 वग्ग्स्स वा सीरस्स वा
 सिंग नत्थि
 लोहाओ लोहो वट्ठद
 रागा दोमो जायद
 कोहण पिन्न कुपद

पाठ ७ मो नर बाति

१ घट (घट) घटो
 मट (मट) मट
 पट (पट) पटो-टोप
 मट (मट) मट-टोप
 मोट (मोट) मोट-टोप
 काय (काय) काय-काय-काय
 सट (सट) सट-टाट-काय
 हरिष (हरि) हरि-हरि
 रमट (मठ) मठी बठ धम्माठी-
 भीषु (भीषु)
 सट (सट)-सुषु
 कुषाट (कुषाट) कुषाठी
 पाट (पाट) पाटो-कायठी पाठो
 -पाट
 समण (समण) सुषु मने भम
 करण-कण पुषु
 मोषु (मोषु) मोषु-सुषुपरी

बैष (बैष) बैष-करो बैर बैर
 कास (कास) कास
 रतकाय (रतकाय) रतकाय
 गदस (गदस) गदस
 कार } (कार) कारी
 छार }
 लंघ (लंघ) लंघ-लंघ काय,
 भीषी बाट
 पोषकार (पोषकार) पोषकार
 सुष (सुष) सुष
 शोष (शोष) पाठी कायानी
 शोष कायानी
 पाष (पाष) पाष-शीष
 गंघ (गंघ) गंघ
 काय (काय) काय-काय-काय
 काय्याय (काय्याय) काय्याय-
 पीठे-काय

साम्यतर बाति

मल (मल) मल पाणी
 रयय (रयय) रयय-रयय
 गीम }
 गीत } गीत पीठ व्यय

मिल (मिल) मिल
 सुनन (सुनन) सुनन
 सुनन (सुनन) सुनन
 कारित (कारित) कारित-
 कारित

सीस (शीष) शीष-माथु
 गुत्त (गोत्र) गोत्र-वश
 गहण (ग्रहण) ग्रहण करवानु
 साधन
 पजर (पञ्जर) पाजर
 सील (शील) सदाचार
 लावण्य | (लावण्य) लावण्य-
 लायण्य | कांति
 रसायल (रसातल) रसातल-
 पाताल
 कुम्पल | (कुद्मल) कुपल-
 कुपल | फणगो
 रूप (रुक्म) रूपु
 जुम्म |
 जुग्ग | (युग्म) युग्म-जोडु
 कम्म (कम) काम-कार्य-सारी
 नरसी प्रवृत्ति

घाण (घ्राण) नाक-सु घवानु
 साधन
 सयढ (शकट) शकट-गाडु-
 छक्को
 पद् | (पद) पद-पगळु
 पय |
 जुग (युग) धौसरु
 खीर | (क्षीर) क्षीर-खीर-दूध
 छीर |
 लक्खण | (लक्षण) लक्खण-
 लच्छण | चिह्न
 छीअ (क्षुत) छींक
 खेत्त | (क्षेत्र) खेत्तर-छेत्तर
 छेत्त |
 सोअ | (श्रोत्र) श्रोत्र-कान-
 सोत्त | साभळवानु साधन
 वीरिय (वीर्य) वीर्य-बळ-शक्ति

विशेषण

मूढ (मूढ) मूढ-मोहवाळो-
 अभण-अज्ञानी
 पुट्ट (पुष्ट) पुष्ट
 सजय (सयत) सयमवाळो

पुट्ट (पृष्ट) पूछाएळु
 पडित | (पडित) पडित-भणेलो,
 पडिअ | पडयो, पोपट पडित
 दुल्लह (दुर्लभ) दुर्लभ-दुल्लभ-मुश्केल

अव्यय

नो (नो) नहि
 च }
 अ } (च) अने
 य }
 वहिआ | (बहिर) वहार
 चहिया |

जहासुत्त (यथासूत्रम्) सूत्रमा-
 शास्त्रमां-कथा प्रमाणे
 पुण } (पुन) पुन पुन
 पुणो }
 उण } -फरी वार

बाल्यभो (बाल्य) ब्यारपी-
ब्यार लख

तछो (ज्ज) लेपी
किं (किम्) छ, वा पावे

पातु

गवेस् (गवेस) बोवतुं
वस (वस) वसतु-रहेतु
वय (वय) वयतु-बीजतु
पिये (पिय) पीतु
मा+पिय } (मा+पिय) बीतुं
मा+पिय } पीतु-मर्वाइली
मा+पिय } पीतु-छामाने
दुम्मान न बाव ए
रहे वयतु

वय (वय) वयतुं
हर } (म) हंतु-मनु
मव }
वह (वह) वहतुं-मनु
सोव } (सोव) सोवतु-
सोव } विचारतु सोव बरपी
मव (मव) मवतु

महामां तळवतुं पापी छे
नहो होळ साधे माणोमां
बाधे छे
बाल्यको कतिबहे होमे छे
जियो शीटने बजाये छे
कुदाबाधे बयबने हेतु पुं
पयतुं जोई तळवामां
पडे छे
बाल्यको छीक करे छे
बेहज्यां बाव छे लेपी क
नपा बडी जाव छे
छप्योको कोश करं पुं

दुप्यापी कडह बाव छे
बने कडहपी दय
बाव छे
संपमी भमण तुकोपी
हरबातो नपी बने
दुप्योपी कोपतो नपी
बहो गीत बाव छे बने
नाधे छे
सिंहो बने बापी तळवतुं
पापी वीप छे
बाव बने सिंह पांजरामां
बोडे छे

कलहयी वर याय छे
 श्रमणो मटमा रहे छे
 थांजना पाडाते भूली जईए
 छीए
 खीर पीओ छे
 वळटो पाणीतो कोस
 खच छे
 राजाना भडारमा रूपु छे
 पंडित पुरुषो मोक्षने इच्छे छे

वळदना कांधमा घोसरु
 गोमे छे
 पडितो गीलने गोधे छे
 पण गोत्रने पूछता नथी
 गीलनो मार्ग दुर्लभ छे
 वाळको उपाध्याय पासेथी
 पाट भणे छे
 भड पुरुषो दु खयी गोक
 करता नथी

व्राणं गधस्म गहण वयति
 लोहा मोहो जायड
 दुक्खेसुतो वेया वि न
 रक्खति
 सोत्त सदस्स गहण वयति
 दुक्खेहिंति वोहंति पडिता ?
 काय फासस्म गहणं वयति
 सुक्खेसु मित्त सुमिरति
 समणे महावीरे जयति
 मूढो पुणो पुणो वज्ज देक्खइ
 पडिता ! खीरं पिवित्था

मूढा कामेसु मुज्जति
 चन्दणस्म रसमापिवति
 अप्पाणो अप्पाणस्स मित्तं
 किं वहिया मित्तमिच्छसि
 पुरिसे वीरिय पुण दुल्लह
 पुरिसस्स काये पुण दुल्लहे
 अप्पाण जिणामु सजया !
 पुट्ठो पडित्ठो जहासुत्त वदति
 पडिता पुट्ठा न होंति
 गीअस्स सह सुणह

पाकीनां नरञ्जाति-सम्प्र-प्रमाये

अ (यद्) नरञ्जाति

१ ओ ओ (य)	ओ (दे)
२ अ (यम्)	ओ आ (यान्)
३ ओष ओष (येन)	ओहि ओहि ओहि (येमि यः)
४ अस्स आसु (वत्स)	ओसि (येषाम्)
५ अम्हा (यस्माद्)	आप्, आत् (यानाम्)
नामो आड (यतः)	आमो आड (यतः)
	आहि, औहि
	आहितो, ओहितो (यिभ्यः)
	आधुतो ओधुतो

६ अतु १ विमळि प्रमाये

७ अमि अस्ति (यस्मिन्) ओसु ओसु (येषु)

अहि अस्मि

अत्थ (यत्)

आहे, आका १ अईमा

(यद्)

अ (नाम्यतर)

१ अ (यत्) आपि आइ आई (यामि)

" " "

पाकीनां नरञ्जाति-अ-प्रमाये

१ आ अमे इये वरा-अवारे -वा च नवना वसत ओ
दे अ पा १११५१

१त, ण, (तद्) नरजाति

- १ स, सो, से (स) ते, ने (ते)
- २ तं, ण (तम्) ते, ता (तान्)
णे, णा
- ३ तेण, तेण निणा (तेन)
णेण, णेण तेहि, तेहिं, तेहिं (तेभि, तें)
णेहि, णेहिं, णेहिं
- ४ तस्स, तास (तस्य) सि, तास, तेसि (तेषाम्)
ताण, ताण, (तानाम् ?)
णेसि, णाण, णाणं
- ५ तो, ताओ, ताउ (तत)
तम्हा (तस्मात्) ताओ, ताउ (ततः)
ताहि, तेहि
ताहिंतो, तेहिंतो (तेभ्य)
नासुतो, तेसुतो
णाओ, णाउ
णाहि, णेहि
णाहिंता, णेहिंतो
णासुतो, णेसुतो

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे

१ प्राकृत भाषामा 'त' अने 'ण' ए वने 'ते'ना अर्थमा वपराय छे हे० प्रा० व्या० ८।३।७०। माटे 'त'नी साथे 'ण'ना रूपो जणावी दीघा छे 'त' अने 'न'-'ण' लखवामां तद्न सरखा छे तेधी आ 'ण' लिपिदोषने लीघे प्रचलित थयो होय तो ना न कहेवाय, 'त्या'ने वदळे 'न्यां'नो प्रयोग गोहिलवाडमा प्रचलित ज छे

भाषीनां मरुजाति-सम्ब-प्रमाण

अ (पद्) मरुजाति

१ ओ जे (प)	जे (ये)	
२ ङ (पम्)	जे मा (पाद्)	
३ ऊज जेज (येज)	जेहि सेहि जेहि (येमि-ये)	
४ अस्स ज्ञान (पह्य)	जेसि (येपाम्)	
	जाप्, जाप्य (पानाम् १)	
५ अम्हा (पत्माद्)	जामो जाड (पत)	
नामा जाड (पत)	जाहि, जेहि	
	जाहितो, जेहितो (येम्य)	
	जासुतो, जेसुतो	
६ वतु १ विमण्डि प्रमाण		
७ अस्ति अस्ति (पस्मिन्) जेसु जेसु (येसु)		
अहि अस्मि		
अत्य (पञ्च)		
साहे, जाड १ अईमा		
(पत्रा)		

ब (पान्यतर)

१ अ (पद्)	जाभि जाद् जाई (पानि)
	" " " "

भाषीनां मरुजाति-अ-प्रमाण

१ जा अये स्तो वरा-इमारे -अ व अयमं वरम ते
 २ अ प्वा ११५५

१न, ण, (तद्) नग्जाति

- १ स, सो, से (स) ते, णे (ते)
- २ तं, ण (तम्) ने, ना (तान)
 णे, णा
- ३ तेण, तेण निणा (तेन) तेहि, तेहि, तेहिँ (तेभि, त)
 णेण, णेण णेहि, णेहिँ, णेहिँ
- ४ तस्म, ताम तस्य) मि ताम, नेमि (नेपाम्)
 ताण, ताण, (तानाम् ?)
 णेमि, णाण णाण
- ५ तो, ताओ, ताउ (तत) ताओ, ताउ (तत)
 तम्हा (तस्मान्) ताहि, तेहि
 ताहिँतो, तेहिँतो (तेभ्य)
 ताम्मुतो, तेमुतो
 णाओ, णाउ णाओ, णाउ
 णाहि, णेहि
 णाहिँता, णेहिँतो
 णाम्मुतो, णेमुतो

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे

१ प्राकृत भाषामा 'त' अन 'ण' ए अन 'ते'ना अर्थमां वपराय
छ द० प्रा० व्या० ८।२।७०। माट 'त'नी साथे 'ण'ना रूपो जणावो
ईवा छे 'त' अन 'न'-'ण' लक्षवामा तदन सरगना छे तेथी आ 'ण'
लिपिदोषनं छींचे प्रचलित थयो ह्यय ता ना न रुहेनाय, 'त्यां'ने वदछे
'न्या'नो प्रयोग गाहिलवाइमा प्रचलिन ज छे

७ ठसि ठसिं ठहिं ठेसु ठेसुं (ठेसु)
 ठम्मि (ठम्मिम्)
 ठत्थ (ठत्थ)
 ठाई, ठाळा १ठइया (ठहा) हे ण म्मा ८१३/५५
 थंसि, थसिं थहिं, थेसु, थेसु
 थम्मि थत्थ

त (ताण्यनट)

१ तं (तत्) ताचि ताई ताई (तानि)
 त्थ थचि थई थई
 २ " () " " " ()
 ताकीया नट्याति—त—य्याचे

१ को (का) के (के)
 २ कं (कम्) के, का (कान्)
 ३ केज केई किजा (केज) केहि, केहिं केहिं (केमि, कं)
 किजा
 ४ कस्त कास (कस्य) कास केसि (केयाम्)
 काय काये (कानाम् ?)
 ५ काहा (काम्मात्) कामो, काउ
 काहि केहि
 काहितो केहितो
 कासुतो केसुतो

६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे

७ कसि, कस्सि, कहिं केसु, केसु (केपु)

कम्मि (कस्मिन्)

कथ (कुत्र)

काहे, काला, १कइआ (कदा) हे० प्रा० व्या० ८।३।६५।

क (नान्यतर)

१-२ कि (किम्)

काणि, काइ, काई (कानि)

सर्वनाम

अण्ण } (अन्य) अन्य-बीजु
अन्न }
अण्णयर } (अन्यतर) अनेरु-
अन्नयर } बीजु काई
अंतर (अतर) अदरनु
अवर (अपर) अवर-बीजु
अहर (अघर) नीजु, बीजु
इम (इदम) आ
इयर (इतर) इतर-बीजु
उत्तर (उत्तर) उत्तरदिशा, उत्तरनु
एग }
इक्क } (एक) एक, बीजु
पक्क }

एअ } (एतद्) ए
एय }
तुम्ह (युष्मद्) तु
अम्ह (अस्मद्) हु
क्क (किम्) कोण
कइम } (क्तम) क्यो,
कतम } केटलाक
कयर (कतर) क्यो
अमु (अदस्) ए
ज (यद्) जे
त, ण (तद्) ते
दाहिण | (दक्षिण) दक्षिण,
दक्खिण | दक्षिणनु

पुरिमा (पुरा+इम) पुरेबाहु पूर्ण
 पुष्प (पु) पूर्ण पुत्रं
 बीस (सिच) सिच बहु
 स सुब (स) स-सेवे पोसायु

सम (सम) बहु
 सव्य (सव) सर्व-सव-बहु
 सिम (सिम) बहु

सामान्य शब्दो [मरशाति]

मूय (मू) मूल-मूल-धीर
 सीस (सिच) सिच सिचार्थी
 सिरस
 कसिबद्ध (कर्मक) केशवात्री-
 च्युत

साय (साय) साय साय-स्यस्ये
 बीमाज } प्राकृत) मद्य विधाने
 बद्रूप्य } समन्वार पुस
 माह्वय }

बोड (बोड) गोर-बोडो

बंध (मह) ब-उ-उरो

पास (पास) पास-पासो पासो
 -पासो

बंध (बन्ध) बन्ध-बन्ध
 पासाय (पासाय) पासाय-पासे
 डीच (डीच) डीच

दिव्यर (दिव्यर) दिव्यो दर
 बार-दूरण डीचो
 संसार (संसार) संसार-संसार

नान्तर

संगाय (संगाय) संगाय
 सीम (सीम) सीम उर
 रोम (रोम) रोम उर
 महाभय (महाभय) महाभय-
 मोरो मय
 कस्य (कस्य) कस्य कस्य-कस्य
 कट्ट (कट्ट) कट्ट कट्ट
 धडी-धडी

कम्मवीर्य (कर्मवीर्य) कर्मवीर्य-
 कर्म कस्य-कस्य उर
 भोपय (भोपय) भोपय-भोपय
 घण (घण) घण
 ताप (ताप) ताप उर मय
 घर (घर) घर
 भाडय (भाडय) भाडय डीचो

१ पूर पुमिच पुमिच ३ ४ १ धर्मवीर्यं सववा केरचार

विशेषण

पडुपन्न (प्रयुत्पन्न) वर्तमान-
तालु

प्रमत्त (प्रमत्त) प्रमत्त-प्रमादी

सम (सम) समान वृत्तिवाळु-
सरखु

वीयरग } (वीतराग) जेमा राग
वीयराय } नथी ते

सुजह (सु+हान) सहेलाइथी
तजी शकाय ते

जुन्न (जोर्ण) जीर्ण-जूनु-जळी-
जरी-गयेळु

प्रिय (प्रिय) प्रिय-वहाळु

आसत्त (आसक्त) आसक्त-मोही

हअ हत) हणायेळु-हणेळु

आगअ }
आगन } (आगत) आवेळु
आअ }

पिआउय (प्रियायुष्क) आयुष्यने
प्रिय समजनार

उत्तम | (उत्तम) उत्तम
उत्तिम |

वुद्ध (वुद्ध) बोध पामेल्-ज्ञानी
वद्ध (वद्ध) वद्ध-वाधेल्-वधायेल्

सीअ (शीत) शीत-ठडु

अधीर (अधीर) अधीर-धीरज
विनानु-नवळु

हतव्व (हन्तव्य) हणत्रा योग्य

अप्प (अल्प) अल्प-थोडु

अणाइअ (अनादिक) आदि विनानु

अव्यय

कत्तो }
कुत्तो } (कुत) क्याथी, शाथी,
कुओ } फई वाजुथी
कओ }

जहा } (यथा) जेम
जह }
एव } (एवम्) एम-ए रीते
पव }

सव्वत्तो } (सर्वत) सर्व प्रकारे-
सव्वतो } चारे वाजुथी
सव्वओ }

तहा | (तथा) तेम
तह |

अतो (अन्तर) अदर
खलु (खलु) निक्षय

बाहुभो

बाह् (बाह) बाहु
 प+मत् (प्र+मत्) मत्सु-
 बाह करो

कीद् (की) कीडा करी-
 कीड केसु

रम् (र) रम्सु

पम् (प) पम्सु
 नम् (न) नम्सु

बह् (ब) बह्-बह्-
 बह् बह्नु

सह् (स) सह्-सह्-
 सह् सह्नु

पाह् (प) पाह्-
 पाह् पाह्नु

परि-बह् (परि+बह् परि-बह्-
 बह्नु-परि-बह्नु)

मा+इकत् (मा+इकत्)

माहन्तु-प्येत्

बघाने सदा सुख मिय छे
 जेको शरीरमा भासक छे
 तेको मूड छे
 राग भने द्वेष संसारमा
 भनादिना छे
 मंग बघा मागोमा चारे
 बाहुप बरसे छे
 मने बे जेना रूपडा
 तीबीर छीप त राजा छे
 भद्रि जेम भाकडाने बाढे
 छे तेम बुद्ध पुढ्य योगमा
 योगमे बाढे छे.
 प्रमन पुढ्य मपकी रूपे छे.
 इतर प्रेममा शान छे भने
 रक्षितमा ताय छे
 पद पद मून हलवा योग
 बघी

बघा बाहको गाय छे
 बघा छेकुतो डाड भने ताय
 सहे छे
 जे कोई जीवने हलतो
 लकी तेने भने माझ
 छडीप छीप.
 कोष करीची भाषेको छे ।
 माबमो छरीरमा सम मारे
 तये छ
 पंडितो हर्षबडे पुत्र सहे छे
 सई छिप्यो मायाबडे
 भाचार्यमे नमे छे
 हु बघाकोर मारे बदन
 पसुं पु
 छे सेवाधी गवटाय छे छे
 मड बघी
 बह भने भासक पुढ्यो

कर्मवीजवडे संसारमां
फर्या करे छे

अमे वीजाओनु मगळ
इच्छीण छीज

ते पोताना दोपोने जुए छ
हाथीथी ह्णायेलो खेहुन

भयथी वुजे छे

तेना आगणामा वघा
वाळको रमे छे

जे मूढ शिष्यो, आचायने
वाचता नथी तेओ दु ख
सहे छे

वीतराग पुरुष सर्वमा उत्तम
ब्राह्मण छे

वीतराग सर्व भूतोने सरखां
जुए छे

जहा जुघ्नाइं कट्टाइ हव्व-
वाहो पमत्थति तद्वा
जुघ्ने दोसे समणो दहइ
जस्स मोहो हथो तस्स
न होइ दुक्ख

सव्वेसिं पाणाण भृआण
दुक्खं महब्भय^१ ति वेमि

‘सव्वे वि पाणा न हत-
व्वा’ एव जे पडुप्पन्ना
जिणा ते सव्वे ३वि
आइक्खति

जे पग जाणइ से सव्व
जाणइ

पमत्तस्स सव्वतो भय विज्जइ

१इअ महावीरो भासते

जस्स मोहो न होइ तस्स
दुक्खं हय

पगेसिं माणवाण आउय
अप्प खलु

अधीरेहिं पुरिसेहिं इमे कामा
न सुजहा

पुरिमाओ, दाहिणाओ, उ-
त्तराओ वा कत्तो आगओ

त्ति न जाणइ जीवो

जे सव्व जाणइ से पग
जाणइ

१ जूओ पृ० १९ नि० ३

तथा पृ० ८३ नि० १३-१४।

२ जूओ पृ० ८३ नि० १२

पातुप्रो

बान् (बाना) बानु
 प+मत् (प्र+मत्) मत्तु-
 गह करो
 कीत् (कीत्) कीत्तु-
 कीत्
 एम् (एम्) एम्तु
 षम् (षम्) षम्तु
 नम् (नम्) नम्तु

वह् (वह्) वानु-वह्-
 वत्तु गह
 सत् (सत्) सत्तु-सत्तु-
 पात् (पात्) पात्तु
 परि-वह् (परि+वत् परि-वत्तु-
 वत्तु वत्तु-वत्तु-
 मा+इत् (मा+इत्)
 मात्तु-वत्तु

बधनि सदा सुख मिय छे
 जेमो शरीरमा भासक छे
 तेमो मूढ छे
 राग भने हेर संसाध्या
 समाधिना छे
 मय बधा मागोमा चारे
 बाहुप बरसे छे
 ममे ये जेमा कपडा
 सीधीर छीप ते राजा छे
 मग्नि जेम साकडाने बान्छे
 छे तम बुद्ध पुढप पोताना
 योगी बान्छे छे.
 ममल पुढर मयधी रूपे छे.
 उतर पूर्वमा शोन छे भने
 दक्षिणमा नाप छे
 पक्ष पक्ष भूत हबबा योग्य
 बधी

बधा बाळको गाय छे
 बधा केहुतो डाह भने ताप
 सरे छे
 जे कोई जीवने हपतो
 मधी तेमै मने मग्नि
 करीर छीर
 कोष बर्गधी भावेको छे ।
 माणसो शरीरमा क्षेम माटे
 तपे छे
 पङ्गिनो हपबडे दुल सरे छे
 सर्व शिष्यो मायाबडे
 आचार्यमै मने छे
 हु बधाभोज माटे परम
 धर्तु सु
 छे तनाधी गमय छे ते
 मह बधी
 बह् मने भासक पुढयो

कर्मवीजवडे र्ससारमां
फर्या करे छे

अमे वीजाओनु मंगळ
इच्छीए छीए

ते पोताना दोपोने जुए छ
हाथीथी हणायेलो खेहुत
भयथी धुजे छे

तेना आगणामा वधा
वाळको रमे छे

जे मूढ शिष्यो, आचायने
वादता नथी तेओ दु ख
सहे छे

वीतराग पुरुष सर्वमां उत्तम
ब्राह्मण छे

वीतराग सर्व भूतोने सरखां
जुए छे

जहा जुआइं कट्टाइ हव्व-
वाहो पमत्थति तहा
जुने दोसे समणो दहइ
जस्स मोहो हओ तस्स
न होइ दुक्ख
सव्वेसिं पाणाण भूआण
दुक्ख महव्वमय^१ ति वेमि

‘सव्वे वि पाणा न हत-
व्वा’ एवं जे पडुप्पन्ना
जिणा ते सव्वे रवि
आइक्खति

जे एग जाणइ से सव्व
जाणइ

पमत्तस्स सव्वतो भय विज्जइ

१इअ महावीरो भासते

जस्स मोहो न होइ तस्स
दुक्खं हय

एगेसिं माणवाणं आउय
अप्प खलु

अधीरेहिं पुरिसेहिं इमे कामा
न सुजहा

पुरिमाओ, दाहिणाओ, उ-
त्तराओ वा कत्तो आगओ
त्ति न जाणइ जीवो

जे सव्व जाणइ से एग
जाणइ

१ जूओ पृ० १९ नि० ३ तथा पृ० ८३ नि० १३-१४।

२ जूओ पृ० ८३ नि० १२

समां य ओसमैश्च मूषु
 स बीमरापो
 वेदिं चो भीवो संसारे
 परिपहृत् ते रगा य
 दोसा य कम्मवीभं

वेप मोहो हनो व सो
 संसारे परिपहृत्
 सम्ये पापा विपादम
 सुहमिच्छति

पाठ ९ मो

'हुम्', 'भम्' 'श्म' अने 'एअं'नां स्फारुवानो
 हुम् (पुष्मद्) तु (चणे जाति)

एकपक्ष

द्वयपक्ष

१ ठं, हुम्, ठं (त्वम्)
 २ " " " हुमै हुप
 (त्वाम्)
 ३ ते तद्, (त्वया)

हुम्हे, हुम्मे (पुष्म्)
 " " (पुष्मात्)
 " चो (व)

हुम्हेहि, हुम्हेहि हुम्हेहि
 (पुष्मामि)

हुम्हेहि हुम्हेहि हुम्हेहि
 (पुष्मेति ?)

४ तुव तुम्ह तुव तुम
 तं तुव (तव ते)
 तुवं (तुभ्यम्)

तुमाव तुमाव (पुष्मावम्)

तुम्हाव तुम्हाव

तुम्हाव तुम्हाव

तुम्हाई

वी (व)

५ तुवतो तुवान्ने, तुवाव हुम्हतो तुम्हामो तुम्हाव
 (त्वत्) तुम्हादितो हुम्हेदितो
 तुमतो, तुमागो, तुमाव तुम्हासतो हुम्हेसुतो
 तुम्हतो तुम्हामो तुम्हाव (पुष्मात्)

तुहत्तो, तुहाओ, तुहाउ,	
तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ	
६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे	
७ तुवम्मि, तुवसि, तुवस्सि,	तुवेसु, तुवेसुं (बुष्मासु)
तुमम्मि, तुमंसि, तुमस्सि	तुमसु, तुमसुं
तुमे	तुमेसु, तुमेसु
तुम्हम्मि, तुम्हसि, तुम्हस्सि	तुमसु, तुमसु
तुम्मि, तद्, तप, (त्वयि)	तुद्देसु, तुद्देसुं
	तुहसु, तुहसु
	तुम्हेसु, तुम्हेसु
	तुम्हसु, तुम्हसु
	तुसु, तुसु

अम्ह (अस्मद्) हुं [व्रणे जाति]

१ अहं, अहं, अहयं (अहम्)	मो, अम्ह, अम्हे, अम्हो (वयम्)
२ म्मि, अम्मि, अम्ह, म,	" " " " "
(माम्)	(अस्मान्)
	णे (न)
३ मद्, मए (मया)	अम्हेहि, अम्हाहि, (अस्माभिः)
	अम्ह, कम्हे,
	णे
४ मम, मज्झ, मज्झं	मज्झ, अम्ह, अम्ह, अम्हे,
(मह्यम्, मम, मे)	अम्हो, अम्हाण, अम्हाण,
	णो (न) (अस्माकम्)

नान्यतरजाति

१ इण, १ इणमो, इद (इदम्) इमाणि, इमाइ, इमाहँ (इमानि)
 " " " " " " " " "
 धाकीना नरजाति प्रमाणे

२एअ (एतद्)-ए [नरजाति]

- १ पस, पसो, पसे (एप) प्प (पते)
 इणं, इणमो
- २ पअं (एतम्) पप, पआ, (एतान्)
- ३ पपण, पपण (पतेन) पपहि, पपहिं, (पतै-पतेभि ?)
 पइणा पपहिँ
- ४ से, पअस्स (एतस्य) सिं, पपसिं (पतेपाम्)
 पआण, पआणं
- ५ पत्तो, एत्ताहे, पअत्तो, पआओ, पआउ,
 पअत्तो, पआओ, पआउ, पआहि, पपहिं. (पतेभ्य)
 पआहि पआहितो, पआहितो, पपहितो,
 (एतस्मात्) पआसुंतो, पपसुंतो
- ६ चतुर्थी विभक्ति प्रमाणे
- ७ पत्थ, अयस्मि, ईअस्मि पपसु, पपसु, (पतेषु)
 पअंसि, पअस्सि, (एतस्मिन्)
 पअस्मि

प्रमाद (प्रमाद) प्रमाद-असाव-
धानता-आळस
मंग (सग) सग-सोयत
असमण (अश्रमण) धमण नहि ते
तेज (तेजस्) तेज
तस् (त्रस) त्रास पापी गति
करी शकं तेवा प्राणी
थावर (स्यावर) स्थिर रहेनार-
गति न करी शके ते प्राणी
-वनस्पाति वगेरे

पर्वय (पर्वत) पर्वत
तव (तपस्) तप-तपश्चर्या
नह (नस्) नस्
अय (अयस्) अयस्-जोडु
जायतेय (जाततेजस्) जेमां तेज
छे ते-अग्नि
पाय (पाद) पा-चोथो भाग
उट्ट (उट्ट) ऊँट

नान्यतरजाति

पाव (पाप) पाप
पावग (पापक) पाप
फंदण (स्पन्दन) फादचु-फरकचु
-बोडु बोडु हलचु
जुज्ज } (युद्ध) युद्ध-लडाई
जुद्ध }
कारण (कारण) कारण
पय (पद) पद-पगलु
सत्थ (शास्त्र) हणवाचु
हथीआर-तरवार वगेरे
महभय | (महामय) मोटो
महाभय | भय
रय (रजस्) रज-पाप, धूळ, मेल
अरविंद (अरविन्द) अरविंद-
उत्तम कमळ
दाण (दान) दान

अभयप्पयाण (अभयप्रदान)
अभयदान-प्राणीओ निर्मय
रहे-बने-तेवी प्रभृति
असाय | (असात) शाता नहि
असात | -सुख नहि ते
रज्ज (राज्य) राज्य-राज
सरण (शरण) शरण-आदारो
धीरत्त(धीरत्व) धीरत्व-धीरपण-भैर
पुप्फ (पुष्प) पुष्प-फूल
अत्थ (अस्त्र) अस्त्र-फेंकवाचु
हथीआर-बाण वगेरे
सत्थ (शास्त्र) शास्त्र
चेइअ (चित्त) चित्ता ऊपर
चणेलु स्मारक चिह्न-ओटळो,
छत्री, पगलां, वृक्ष, बुद्ध,
मूर्ति वगेरे.

मुत्त (मुत्त) मुत्तल
 सुत्त (सुत्त) वृत्त-मारी टक्ति-
 मुत्तापित

वद्धमाण (वर्धमान) वधतु
 गद्विय (गृह) अतिशय लालचु
 अहम (अधम) अधम-दल्लु-नीच
 जिहंदिय (जितेन्द्रिय) इन्द्रियो
 उपर जय भेळवनार

निरद्वय (निरर्धक) निरर्धक-नक्रांसु
 घीर (घीर) घीर-घीरजवाळु
 अणारिय (अनार्य) अनार्य-
 आय नहि ते-अनादी
 पिय (प्रिय) प्रिय-वहाळु

दुत्पूरिय (दुत्पूर्ण) मञ्जेनीयी
 पूराय-मराय तेतु
 सयल (सकल) सकल-मषलु
 कुसल (कुशल) कुशल-चतुर
 तुरतिक्रम (दुरतिक्रम) न मटे तेतु
 मड | (मृत) मृत-मरेलु
 मय | (मृग) मृग-रत्तम
 सेट्ट (श्रेष्ठ) धेष्ट-रत्तम
 दंत (दान्त) जेणे तृणाने दमी
 छे ते, दमेलु-घांत,
 पलोटायल

कड | (कृत) करेलु
 कय | (कृत) करेलु
 विविह (विप्रिध) विविध-जात
 जातनु

धातुओ

भास् (भाष्) भास्वु-भाषण करवुं
 प+मय् (प्र+माद्य) प्रमाद करवो
 जूर (जूर) जूरवु
 तिप् (तिप्) टपकवु-गळवुं
 पिट्ट् (पिट्ट) पीटवु-मारवु-पीटवु
 परि+तप् (परि+तप्य) परिताप
 पामवो-दुःखी यवु
 सम्+आ+यर् (सम्+आ+चर)
 आचरण करवुं

अणु+तप् (अनु+तप्य) अनुताप
 करवो-पक्षात्ताप करवो
 प+यय् (प्र+यत्) प्रयत्न करवो
 अभि+नि+कृत् (अभि+निष्+
 कम्) हमेशान माटे घरथी
 नीकळतु-सन्यास छेवो
 परि+हृद् (परि+हृद् परहरवु-तजवुं
 तळ् (तक्ष्) तासतु-छोटतु-
 पातळ करवु

कप् १ (कम्) कप्तुं—अहित होतु
 कश्च् (कश्) कश्चु—कोरतु
 कप् (कश्) कश्चु
 कश् (कश्) कश्चु कश्चु
 कश्+कश् (कश्+कश्) कश्चु—
 कश्चु—कश्चु कश्चु

कश्चि+कश्+कश् (कश्चि+कश्+कश्)
 कश्चिपत् (कश्चिपत्) कश्चिपत्
 कश्चि+कश्चु (कश्चि+कश्चु)
 कश्चिपत्—कश्चिपत्
 कश्चु (कश्) कश्चु—कश्चु
 परि+कश्चु (परि+कश्चु) परि
 कश्चु कश्चु

मायापों कुशाळ माटे विरंतर
 प्रपास करे हे
 संसाध्या पापमो मार बये हे
 जैम जैम बासना बये हे
 तेम तेम छोम बये हे
 पुढने पकते पैर्य दुर्लभ
 होय हे
 जमै विरचक बोळता कधी
 ममराभो पुढोमा बोडे हे
 झाडो पायी पीप हे जमै
 ताप सडे हे.
 नमिरात्र पुढने तडे हे
 कश्चिपो कश्चो जमै कश्चो
 बडे निर्दोष मनुष्यता माया
 कश्चु हे
 कश्चो कश्चो पुढकुळ्या
 रडु हे

तेजा बांगबासां सुखजु तेज
 हीपे हे
 तेमो तममे बारबार पाप
 करे हे
 जमै महेस्वी कश्चु हीप
 ममाध्या ते एक जितेविप
 पंडित हे
 तमै एके बारबार कश्चो जो
 एमो तमै जमै जमै कश्चु
 पीप हीप
 पायी कश्चु कश्चो कश्चो हे
 संसाध्या कश्चु कश्चु
 कश्चु कश्चु
 तमै कश्चु कश्चो जो तेपी
 प्रमादु कश्चु कश्चु

१ 'कश्चु कश्चु एका कश्चुमा कश्चु कश्चु हे जमै तेमो कश्चुमा—
 कश्चुमा कश्चुमा कश्चुमा कश्चुमा

પ્રમે, તમે અને તેઓ વધા,
 સસારના પાશને કાપીપ
 છીપ
 શ્રમણો પાણી વઢે વલ્લોને
 શુદ્ધ કરે છે
 કુશલ પુરુષો નિર્દોષ વચનને
 ઉત્તમ કહે છે
 તપોમા વ્રહ્મચર્ય શ્રેષ્ઠ છે
 ક્ષત્રિયોનું લક્ષણ ધૈર્ય અને
 વીર્ય છે
 જિતેન્દ્રિય પુરુષો વુદ્ધની અને
 મહાવીરની સેવા કરે છે
 વધા જીવો લોભથી પાપને
 માર્ગે ચાલે છે
 ધીર ક્ષત્રિયો મનુષ્યોનું
 કુશલ હુએ છે
 તમે ધૈર્ય વઢે લોભને
 જિતો છો
 ક્ષાહો વધે છે અને કરમાય
 છે તેથી તેમાં જીવ છે
 માચાર્યો જાગે છે અને ધ્યાન
 ધરે છે
 વ્રાહ્મણો અને શ્રમણો શાહ્નો
 વઢે લઢે છે
 ચંત્યમા મહાવીરના અને
 વુદ્ધનાં પગલા છે

મારો માર્ગે ટાઢથી ધૂજે છે.
 આ વ્રાહ્મણ પ લોકોને શાપ
 આપે છે
 આ સાગર સ્વલ્મલે છે
 તે અને હું લાકઢાં છોલીપ
 છીપ
 કેટલાકો નિરર્થક કોપે છે
 તમે, તેને, મને અને પને
 જિતો છો
 સાચા વ્રાહ્મણ વિના વીજું
 કોણ ઉત્તમ છે ?
 કોઈ વ્રાહ્મણ જન્મ વઢે
 વ્રાહ્મણ થતો નથી
 સસારમા વધાં વધાના
 ગરણરૂપ છે
 સંસારમાં ચારે વાજુ ઘસ
 અને સ્થાવર જીવો છે
 શ્રમણો પાપરૂપ કર્મોનો
 સ્યાગ કરે છે
 શ્રમણોમા વર્ધમાન શ્રેષ્ઠ છે
 દાનોમા અભયદાન શ્રેષ્ઠ છે
 પગથી અગ્નિને હળા છો
 પવેતને તમે નસોથી સ્વળો છો.
 પુણ્ણોમા અરવિંદ શ્રેષ્ઠ છે
 થોહુ પળ અસત્ય મહાભય-
 રૂપ છે

तप बडे बधता वर्षमात्र
 मनुष्योना हेम माटे संन्यास
 से छे
 बांछपी बडेदाने कामो छे.

मजुरो रुपया माटे पहाबडे
 कोरि छे
 बापका बोझामा पुत्र
 बाझोटे छे

एषो इ बन्धि मे को वि
 नाहमग्रस्त कस्त वि
 धीरो वा पडियो मुहुत्तमवि
 मो पमायय
 इमे लसा पाषा इमे पाबरा
 पाषा न इतथा इति सम्भे
 प्रापरिया भासंति
 अधिगविचे कस्तु बरं पुरिसे
 विविहेहि बुक्केहि पूर
 तमो से एमया वासेहि
 दिम्बई
 बाहेय मोहेय सोहेय वा
 चितं कूप्यर ततो मर्क
 तव एपहि
 मयं पुरिसं गडिय साया
 ऊरु तिप्पट पिहट
 परितभ्यर
 के कस्तुमयं सापति ते
 बहिया वि जापति
 बरं बाधस्त संरोय
 बीरयण मामो बुक्कुचते

बुजो कामे बहार
 पाबगेय कम्मोय पुयो बुजो
 कस्तुओ जापति
 म्भ पमायेय कुसकस्त
 पडियो म इरिसेह, म कूप्यर
 पाषाण मसाठ महामयं
 बुक्क
 तत्ति जीवस्त नासो ति
 मूदाबं ज्य्याये बुक्कुरिय
 मत्थि
 समबायं कवचिक्कपो मडा-
 होसो न कूप्यर
 तुमे सक्कं समयं तथा
 सक्कं मक्कं य गरिहर
 पुत्ता मे बयं मे
 मोपयं मे ति गडिय
 पुरिसे ठम्मर
 ते पुत्ता तव ताभाय नाथं
 तुमं वि तेसि सरथाय
 नाकं होसि

एस लोणे संसारसि गिञ्जइ
 त वयं वूम माहणं जो
 एगमवि पाण न हणेज्जा
 पुरिसा ! तुममेव तुमं मित्तं
 किं वहिया मित्तमिच्छसि ?
 जहा अंतो तथा वार्हि एवं
 पासंति पढिता
 कामा खलु दुरतिक्रमा
 असमणा सया सुत्ता, समणा
 सया जागरंति
 कडेहितो कम्मेहितो केसि-
 मवि न मोक्खो अत्थि
 मूढस्स पुरिसस्स सगेण अलं

लाभो त्ति न मज्जेज्जा,
 अलाभो त्ति न सोएज्जा
 सतत मूढे धम्म १नाभि-
 जाणति
 जिणा अलोमेण लोभ जयति-
 ससारे एगेसि माणवाण
 अप्प च खलु आउय
 जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो
 आवियइ रसं
 खत्तिया घम्मेणं जुञ्ज जुञ्जति-
 जहा लाहो तथा लोहो
 लाहा लोहो पवइइ
 समणा सव्वेसि पाणाणं
 सुहमिच्छंति२

१ जूओ सधि पृ० ८२ नियम ६ न+अभिजाणति=नाभिजाणति
 २ जुओ सधि पृ० ८४ नियम १८

पाठ १० मो

भूतकाळ-प्रत्ययो

स्वरपठ पातुभोवै उगाडयमा	}	एकक-बहुकक			
		१ पु०	सी	ही	हीम (सीए)
		२ पु	"	"	"
	३ पु	"	"	"	

'पा' पातुनां रूपो

सर्वे पुरुष सर्वे वचन	}	पासी (पा + सी), पावसी (पा + व + सी)
		पाही (पा + ही), पावही (पा + व + ही)
		पाहीम (पा + हीम), पावहीम (पा + व + हीम)

'हो' पातुनां रूपो

होसी (हो + सी)	होवसी (हो + व + सी)
होही (हो + ही)	होवही (हो + व + ही)
होहीम (हो + हीम)	होवहीम (हो + व + हीम)

१ प्राकृतानां वरुणो मूलध्वन्यो ही प्रत्यय वने वरुणान्ते वरुणो मूलध्वन्यो वीए प्रत्यय वने वरुण ह. वरावीए वरुणो वने वरुण वीयां वरुणो वीए (तुयेव पु एव) मूलध्वन्ये वरुणे ह प्राकृतानां ते वरुण वी वरुण वने वरुण वरुणे ह ही वने हीम ए वरुण वने वी वी वने व वरुण वने व

एकवचन - बहुवचन

व्यंजनांत धातुओने लगाडवाना	}	ईअ (ईत् १)
		१ पु० "
		२ पु० "
	३ पु० "	

वद्-वदीअ (वद् + ईअ)

हस्-हसीअ (हस् + ईअ)

कर-करीअ (कर + ईअ)

આસ કરીને આર્ષ પ્રાકૃતમા વપરાણા પ્રત્યયો

प्राय तृतीय पुरुष	}	त्था	(इष्ट०)
एक वचन		इत्था	
		इत्थ	

प्राय. तृतीय पुरुष-बहुवचन	}	इत्थ (इष्ट)
		इसु (इषु) ३
		असु

૧ 'ईअ' અને સસ્ટ્વનો ભૂતકાલ સૂચક 'ઈત્' વધે સમાન છે 'અમાણીત્' 'અયાદીત્' વગેરે સસ્ટ્વ ક્રિયાપદોમાં આવેલો 'ઈત્' (તૃ૦ પુ૦ એક૦) ભૂતકાલને દર્શાવે છે, પ્રાકૃતમાં તે સર્વ પુરુષ અને સર્વ વચનમાં આવે છે ૨ આ 'ઈત્ય' પ્રત્યય અને સસ્ટ્વનો 'ઈષ્ટ' પ્રત્યય વધ સમાન છે ઇષ્ટ-ઈષ્ટ-ઈત્ય, ત્યા અભવિષ્ટ, અજનિષ્ટ, વગેરે સસ્ટ્વ રૂપોમાં આવેલો 'ઈષ્ટ' (તૃતીય પુ૦ એક૦) ભૂતકાલનો સૂચક છે પ્રાકૃતમા પણ તે, પ્રાય તૃતીય પુરુષના એકવચનને સૂચવે છે ૩ આ 'इसु' અને 'असु' तथा સસ્ટ્વનો ભૂતકાલદર્શક 'इषु' ए वधा સમાન છે 'अवादिषु' 'अत्राजिषु' વગેરે સસ્ટ્વ ક્રિયાપદોમાં વપરાતો इषु (તૃતીય પુ૦ बहुव०) ભૂતકાલનો સૂચક છે અને તે પ્રાકૃતમા પણ પ્રાય. તે જ કાલ, પુરુષ અને વચનને સૂચવે છે

मातृ- स्थास्मान्

हो होस्या (हो + त्य)
 री रीहत्या (री + हत्या)

प+हाड	पहादित्वा पहादेत्या	} (पहाड + इत्य)
भुम्	भुम्भित्वा (भुम् + इत्या)	
वि+भट्ट	विभट्टित्वा (विभट्ट + इत्या)	
सेम्	सेम्भित्वा (सेम् + इत्या)	
गप्	गम्भित्वा (गप् + इत्या)	
पुष्	पुष्भित्वा (पुष् + इत्या)	
कट्	कट्भित्वा (कट् + इत्या)	
बप्	बभ्रुत् (बप् + इत्या)	
माह	माहत् (माह + इत्या)	

कृत्वाक अनियमित रूपे

बभ्रुत्

बभ्रुत् बभ्रुत् आसि (सर्वे पुंस्य सर्वे बभ्रुत्)
 आसिमो, आसिम् (आत्म) रूप प्रथम पुंस्यमा बहुवचनमाये
 आर्षे प्राहृतमा क्वचित् बभ्रुत् इति मते है

बभ्रुत् पातुं ' बभ्रुत् रूप बहु बोध्य है कर्ता आर्षे
 प्राहृतमा बभ्रुत् 'ने बभ्रुत् बभ्रुत् मते क्वासी ?
 रूपतो बभ्रुत् बभ्रुत् है अर्थात् उक्त 'सी' प्रत्यय स्वर्ग

घातुने लगाडवानो छे ते, आर्प प्राकृतमां फ्वचित् व्यजनांत
घातुने पण लागेलो छे, वद+सी=वदासी आर्प प्राकृत होवाने
कारणे 'वद'नुं 'वदा' थयु छे

कर

भूतकालमां 'कर'ने वदले 'का' पण थाय छे

कर + ईअ = करीअ

'कर'नो	}	का + सी = कासी
'का' थयो		का + ही = काहा
त्यारे		का + ही = काहीअ

आर्प प्राकृतमां वपराएलां षीजा केटलाक अनियमित

रूपो

कइ-अकरिस्सं	(अकार्पम्)	१ पु० एक०
कइ=इ-अकासी	(अकार्पीत्)	३ पु० "
वू-अव्ववी	(अव्रवीत्)	" "
वच-अवोच	(अवोचत्)	" "
अस्-आसी, आसि	(आसीत्)	" "
आसिमु	(आस्म)	१ पु० बहु०
वू-आह	(आह)	३ पु० एक०
" आहु	(आहु)	" "
दृश-अदक्षू	(अद्राक्षु)	" "

भू } अभू (अभूत् के अभुवन्) एक० तथा बहु०
इ } अह

उक्त आर्परूपो सस्कृत अने प्राकृत एम वे भिन्न भिन्न
भाषाना अस्तित्वनो स्पष्ट रीते निषेव करे छे ए षधा रूपो
मात्र उच्चाणमेदना नमूना छे

हेमंत (हेमन्त) हेमत ऋतु-
शियाळो

मूसळ } (मूपक मूपक-उदर
मूसय }

पल्हाअ } (प्रहाद) प्रहाद
पल्हाद } नामनो भक्त राजपुत्र

मोहणदास (मोहनदास) ए
नामनो वीरपुरुष-मोहनदास
गाधी

रट्टधम्म (राष्टधम) राष्ट्रनो

धर्म-समप्र देशनु हित कर-
नारी प्रवृत्ति

गाम (ग्राम) गाम

देविंद (देवेन्द्र) देवनो इन्द्र-
देवनो स्वामी

मोर } (मयूर) मोर
मयूर }

हरिणसवल (हरिकेशवल) मूळ
चडाळ कुठुमा जन्मेलो एक
जन मुनि

विच्छिअ (वृक्षिक) वीछी

नान्यतर

गमण (गमन) गमन-जवुं

पाणीय | (पानीय) पाणी,
पाणीअ | पीवानु

दुद्ध (दुग्ध) दूध

रायगिह (राजगृह) विहारमा
आवेळु हालनु राजगिर-मगध
देशनी राजधानी

कुसगपुर (कुशाग्रपुर) राज-
गृहनु व्रीजु नाम

विघ्नाण | (विज्ञान) विज्ञान
विघ्णाण |

भारहवास (भारतवष) भारत-
देश-हिंदुस्थान

महाविज्ञालय (महाविद्यालय)
मोट्ट विद्यालय-कोलेज

पाडलिपुत्त (पाटलिपुत्र) पाट-
लिपुत्र-पटना शहर

चडालिय (चाण्डालिक) चडा-
ळनो स्वभाव-क्रोध

नाण (ज्ञान) ज्ञान

पवहण (प्रवहण) वाहन, वहाण

अच्छेर (आश्चर्य) आश्चर्य-
अचरज

विशेष्य

महर्षिद्वय | (महर्षि) दोनो
 महर्षिद्वय | महर्षिद्वय बनारस
 बामायणद्वय (बामायणद्वय) व्याख्यत
 बनारस-विषय बनारस
 महामय (महामय) योषु
 साम्य (साम्य) लोषु
 कैरिस (कैरिस) केशु
 मधीच | (मधीच) कधील-
 मधीच | केशु
 मज्जिमयस्य | (मज्जिम) मज्जिम-
 मज्जिमयस्य | केशु
 सरस (सरस) सरस
 पच्य (पच्य) पच्य-रस्य
 विलय

कृष्णकृत (कृष्ण) कृष्णकृत
 कृत-कृत बनारस
 मण्ड | (मण्ड) मण्ड-कृत
 सुदुम | केशु कृत
 सुदुम |
 सहाय (सहाय) सहाय
 विद्वत् (विद्वत्) विद्वत्
 विद्वत् (विद्वत्) विद्वत् कृत
 बीडिय (बीडिय) बीडिय-कृत
 पुराण | (पुराण) पुराण
 पुराणकृत | केशु-पुराणकृत
 विद्वत् | (विद्वत्) विद्वत्-कृत
 विद्वत् | केशु-कृत

अभ्यय

तेज (तेज) त तस्य
 तेज (तेज) ते तस्य
 मज्जिम (मज्जिम) मज्जिम
 पच्य | (पच्य) पच्य-र कृत
 पच्य

सुदुम (सुदुम) सुदुम कृत
 सुदुम (सुदुम) सुदुम कृत
 विद्वत् (विद्वत्) विद्वत् कृत
 पच्य (पच्य) पच्य कृत
 इदम् (इदम्) इदम् कृत

१ कृतो ह १ विद्वत् २ 'केशु' ए मज्जिम कृतारण्य
 त केशु केशु १ मज्जिम— विद्वत् कृतो कृतो कृतो कृतो
 कृतारण्य—मज्जिम कृतो कृतो कृतो कृतो कृतो

असङ् (अमृत्) वाग्वा
 नामाणुगामं (प्रामानुप्रामम्)
 गामाणुगामं गामे गाम-दरेक
 गामटे

नमा { (१नम) नमस्कार
 णमो }
 पगे (प्रगे) प्रागडगाम्ये-प्रात'काटे
 मा (मा) मा-नहि

घातु

अच्च (अच) अचवु-पूजवु
 टव+दिम् (उप+दिश) टप
 टपनु -उपदेश करवो
 नच्च (नृत्य) नाचवु
 प+हार (प्र + धार) धारवु -
 सकर करवो
 ने } (नी) न्टे जवुं-दोगवु
 णे }
 आ+णे (आ+नी) आणवु -लाववुं

सेव (सेव) सेववु
 हस (हस) हसवु
 पट् (पठ) पाठ करवो-पठवु
 पुच्छ (पृच्छ) पूछवु
 मण् (मण) मणवु
 रीय् (रीय) नीकळवु
 वि+हर (वि+हर) विहरवु-फरवु
 अणु+भव् (अनु+भव) अनुभववु
 भोगवु

हु गाममा गयो अने माथे
 वकराने लड गयो
 आयें पुरुषोण महावीरने
 अनेकवार वाद्या
 मेघ वरस्थो अने मोरो
 नाच्या
 'महावीरनु शील केवु छे -
 णम ब्राह्मणोण पूछवु

तेमणे घणा मारा कामो
 कर्या अने जीवनने
 सफल कर्युं
 महावीर हेमत ऋतुमा
 नीकळया
 ज्यारे तेणे पूछ्यु त्यारे
 तमे खोटु वोल्या
 असे सत्यनो जाप कर्या

१ अकारनी पळी आवंला विसर्गने प्रदळे 'ओ' याय छे -

नम = नमो तम = तमो मन = मणो तत = ततो.

तमोप पापी पीयुं नने
 समोर नृप पीयुं
 पापी नीयुं नाप छे एम
 खेप नदी आम्तु ।
 काम बदे हुं खेपने नचश्य
 ह्युं हुं-
 तप्य हुए गिते संख्यय क्यो-
 मये बप सति पीठे सेवा
 करी
 मातनुं नृप मरम हनु
 नकार मने पही पच बाख्यो
 मांमखामां रखा
 अमका मायां बखोने अह
 कना मधी
 माकाप काम मादे पैडितीन
 पूज्या
 मम मायु वाय्या
 राजा भने ईश्र बितपपूर्वक
 बोस्या
 ट मने तु मराधिपाकपमां
 गया नने राष्ट्रबर्मेने
 मन्पा।

'बधा पापीयो इयथा अप्य
 छे' एम म्माप्योए क्यु-
 'खेई पच मापी इयथा बोप
 नधी' एम माप्योए क्यु-
 मोहनबास महापुरवे गाने
 गाम चिहार क्यो नने
 राष्ट्रबर्मेने उपरिदरो
 मयुधनो दिष्य पाठसिपुव
 गयो।
 दुकाखमां देशमां माचमोर
 दु-अ मोगधुं
 मीय छिप्यो इसता नधी
 तने छिप्योने पीम पूछ्युं
 खोदु बबन छा मादे बोस्यो ।
 पुठ्युं नायुं छे एम नधी
 नने मनुं खोदु छे एम
 पच नधी
 भापेने नमस्कार
 रिचनना भावछा भागमां
 म्यने पूज्यो।
 हिदुस्तानता माको खोदु
 अह बाप छे

बाबा चाबिसु
 मा प चौदहिये कासो।

तसि देससि दुकखामो हासी
 मिच्छा ते पचमाईसु

१ मछल्लु 'मा धर्मा' (अकल मूल नु० १) एम नने का
 'मा धर्मी का नच एव ताका छ

तवस्स चात्रायकर वयण
वयासी

इम पण्ह उदाहरित्था
गोयमो समणं महावीर
एवं वयासी

सीलं कह नायसुतस्स
आसी ?

नमिरायो देविंदमिणमव्ववी
अगणम्मि बाला मोरा य
नच्चिसु

ते पुत्ता जणय इण वयणं
कहिसु

वडमाणो जिणो अभू
सो दुद्ध पासी १

तुम छगलय गामं नेही
माणवा हसीअ २

जिणा एव कहिसु
आसी अम्हे महिइढिया
तेण कालेण तेण समयेणं
पाडलिपुत्ते नयरे होत्था

जेणेव समणे महावीरे तेणेव
गोयमो गच्छीअ

पुच्छिसु ण समणा माहणा य

सो पुरिसो पाडलिपुत्तं
नयर गमणाए पहारेत्थ

रायगिहे नयरे होत्था
अह् जिणा, अत्थि जिणा
सव्वे वि जिणा धम्मम्मि

सच्चमुत्तमं आहसु
ते पाणीय पाहीअ १

वालो हसीअ
तुम्हे तत्थ ठाहीअ
आसिसु वधवा दोवि

सो इम वयणमव्ववी
अत्थि इहेव भारहव्वसे

कुसग्गपुर नाम नयरं
सीसे विणयेणं आयरिये
सेवित्था

तंसि हेमते नायपुत्ते महा-
वीरे रीइत्था

जे आरिया ते एव वयासी
समणे महावीरे गामाणुगामं
विहरित्था

हरिणसव्वलो नाम जिइदिओ
समणो आसि ३

किं अम्हे असच्चं भासीअ २ ?

१ हे० प्रा० व्या० ८३१९२१ जूओ पानु १५६ मुं २ हे०
प्रा० व्या० ८३१९३१ जूओ पानु १५७ मुं ३ हे० प्रा० व्या०
८३१९४१ जूओ पानु १५८ मुं अस्-होवुं

पाठ ११ मो

हकारांत मन उच्चयंत (नरबाति)

एभ्यन्त

बहुवचन

१ रिचि = रिची (कृषि)
हे प्र या ५१।१५।

रिचि + षड् + रिचिउ
रिसि + ङमो = रिसमो

हे प्र या ५१।१६।
रिचि + ङबो = रिसपो
(कृष्या)

रिचि + ङो = रिचिषो
हे प्र या १।१२३।

रिचि = रिची

२ रिचि+म्=रिचिम (कृषिम्)
हे प्र या ५१।१५।

रिचि = रिची (कृषिम्)

रिसि + ङो = रिसिषो

३ रिचि+वा=रिचिवाह(कृषिवा)
हे प्र या १।१२५।

रिचि + द्वि = रिचीद्वि
रिचीद्वि

हे प्र या ५१।१५।
रिचीद्वि
(कृषिद्वि)

४ रिचि+मवे=रिचिमवे (कृषिमवे)
रिचि + इस् = रिचिइस्
रिचि + ङो = रिचिषो
हे प्र या ५१।१३।

रिसि + ङ = रिचीङ्
रिमीङ्
(कृषीङ्म्)

५ रिचि+ङो=रिचीङो(कृषिङो)
रिचि+ङ=रिचीङ्
रिचि + ङो = रिचिषो

रिचीङो

रिमीङ्

रिसि+द्वितो=रिचीद्वितो
(कृषिद्विम्)

रिसि + द्वितो = रिचीद्वितो

रिसि+ङुंगो=रिचीङुंगी

- ६ रिसि+स्स=रिसिस्स (ऋषे) रिसि+ण=रिमोण
 रिसि+णो=रिसिणो रिसीणं (ऋषीणाम्)
- ७ रिसि+°मि=रिसिमि रिसी+सु=रिसीसु, रिसीसु
 (ऋषिमिन् ? ऋषौ) (ऋषियु)
- रिसि+मि=रिसिमि
- सं० रिसि=रिसि ! (ऋषे ।) रिसि+अड=रिसड ! (ऋषय)
- रिसो=रिसी ! रिसि+अओ=रिसओ ! ,,
 रिसि+अयो=रिसयो ! ,,
 रिसि+णो+रिसिणो !
 रिसि=रिसी !

भाणु (भानु)

- १ भाणु = १भाणू (भानु) भाणु+अवो=भाणवो (भानव-)
 हे० प्रा० व्या० ८।३।२१।
 भाणु+अवे=भाणवे२ (,,)
 भाणु+अओ=भाणओ (,,)
 भाणु+अड=भाणड (,,)
 भाणु+णो=भाणुणो
 भाणु=भाणू
- २ भाणु+म्+भाणु (भानुम्) भाणु+णो=भाणुणो
 भाणु=भाणू (भानून्)
- ३ भाणु+णा=भाणुणा(भानुना) भाणु+हि=भाणूहि
 भाणूहि, भाणूहि
 (भानुसे-)

१ अहीं ऊपर जणावेलीं सूत्रो द्वारा उक्तागत नरजातिना पण रूपो सिद्ध करवाना उ २ प्रथमाना-बहुवचनना 'अवे' प्रययनो उपयोग आर्य प्राकृतमा ठीक ठीक थयेलो छे

- ४ माणु+प्रवे=मापवे(मात्रवे) माणु+व=माण्व (मान्नाम्)
 माणु+वा=माणुवो माण्वं
 माणु+स्त=माणुम्स
- ५ माणु+त्ता=माणुत्तो
 माणु+मा=माणुमो माण्वो
 माणु+इ=माणुइ माण्वइ
 (मानुना मानोः)
 माणु+धो=माणुधो माणु+हितो=माण्वहितो
 माणु+हितो=माण्वहितो (माण्व्या)
 माणु+सुता=माण्वसुतो
- ६ माणु+म्स=माणुम्स(मानोः) माणु+व=माण्व | (माण्वाम्)
 माणु+धो=माणुधो माण्वं
- ७ माणु+सि=माणुसि माणु+सु=माण्वसु (माणुसु)
 माणु+मि=माणुमि माण्वसु
 (मानुमिह् ? मानोः)
- सं० माणु=माणु (मानो ?) माणु+पयो=मापयो (मापय)
 माणु=माणु माणु+पयो=मापयो ()
 माणु+मइ=मापइ ()
 माणु+धो=माणुधो
 माणु=माणु

अकारान्त नामक कर्तवी नामधेयं के अन्वयो वभ्राएवा हे से
 ५ अन्वयो उभयुक्त कर्तवी नामकान्तं वभारे अन्वयं वभ्राएवा हे से
 न्त न्त कर्तवी न्तु बीवा त

१ अकारान्त नाम मधीकल्प एक तथा बहुवचनम् तथा द्वितीयान्त
 बहुवचनया अकारान्त धरे अकारान्त न्तु बीव इत्त हीन कर्तवी
 नामकान्तु हे — रिधि = रिती माणु=माण्व

२ प्रथमाना, सवोधनना अने चतुर्थीना स्वरादि प्रत्ययो लगाबी पूर्व स्वरनो एट्टे अगना अत्य 'इ' के 'उ'नो लोप क्वानो छे —

रिसि + अओ = रिस् + अओ = रिसओ

भाणु + अओ = भाण् + अओ = भाणओ

रिसि + अये = रिस् + अये = रिसये

भाणु + अवे = भाण् + अवे = भाणवे

३ नवा रूपोमा तृतीया एकवचन, 'णो' प्रत्ययवाळा वधा रूपो अने चतुर्थीनु एकवचन छे, परंतु ते वधांनी साधना ऊपर जणावेला विभाग उपरधी समजाय तेवी ज छे

मस्कृतमा 'इन्' छेडावाळा (दण्डिन्, मालिन्) नामोमा प्रथमा-द्वितीया बहुवचनमा अने पचमी-षष्ठी एकवचनमां दण्डिन, मालिन रूपो प्रसिद्ध छे ए रूपोनु प्राकृत रूपांतर दण्डिणो, मालिणो थाय नु आ जोतां अहीं जणावेलां रिमिणो, भाणुओ रूपोनी घटना सहजमा समझी शक्याय तेम छे वळो, ' इन् ' छेडावाळां नामोनां वधा रूपो लगभग इकारांत नामनी जेवा थाय छे

इकारात उकारांत नान्यतर

इकारात अने उकारांत नान्यतर अगनां, तृतीयाधी सप्तमी सुधीनां वधा रूपोनी साधना इकारात अने उकारात नरजातिवाळां अगना रूपोनी समान छे अने प्रथमा, द्वितीया तथा सवोधनना रूपोनी साधना, उकारांत नान्यतर अना रूपोनी जेवी छे —

वारि (वारि)

- १-२ वारि+म्=वारिं (वारिं) वारि+ञि=वारीञि
 वारि+ई=वारीइ } वारीणि
 वारि+ई=वारीई
- सं० वारि । (वारि) ()
 (सुभो माटे सुभो पाठ उक्ताभो धारंम)

महु (महु)

- १-२ महु+म्=महुं (महुं)...महु+ञि=महुञि
 महु+ई=महुइ } (महुणि)
 महु+ई=महुई
- सं० महु । (महु) " " ()
 (सुभो माटे सुभो पाठ उक्ताभो धारंम)
- पदार्थानि एष्यन्तानि वारिणे, वारिस्व महुने महुस्व को ल्य
 आलपं हे ल्य 'वारि' के 'महुने' को ल्यप्रवर्तना कवी.

इकारांत अने उकारांत नाम (नरजाति)

मुनि (मुनि) मुनि-कर्म कर वा-बीन राक्षसक सुत	भूवर (भूवि) भू इच्छे-ने पति-भूति-सुप्त-राज
सउचि (सउचि) सउचि-बही पद बही) पति-लामो-पति-	मयवर (मयवि) मयौचे रति -कनति
परवर (परवि) कयो पति- गणवर	ममुचि (ममुचि) मुनि मदि ठे -वडवड करवार
रिसि (रिसि) रति	कोइरसि (कोकरसि) कोचने येनार-कोची

दुःखदग्नि (दुःखदर्शिन) दुःखने

जोनाग-दुःख पापनाग

मोगि (मोगिन) मोगी-

मोष्टि | मागोने मोगवनाग

उदहि (उदवि) उद-पार्णी-ने

वाग्ण कर्नाग-मसुद

साद् (साधु) साधक-साधन

कर्नाग, साधु पुरुष,

मज्जन, शाहूकार

जंतु (जन्तु) जंतु-शार्णी

मिसु (मिशु) मिशु-वाळक

मच्छु (मच्छु) मोच-मच्छु-

मिच्छु | मोन-मरण

बिद् (बिन्दु) बिन्दु मीद्, टीपु

भाणु (मानु) मानु भाण-मृज

वाड (वायु) वायु-त्रा

वायु

विण्हु (विष्णु) विष्णु

दृत्थि (दृष्टिन) दृथी

कुलवड (कुलपति) कुलनो पति

-आचार्य

नरवड (नरपति) नरनी पति

नरपति-नरपति-गत्रा

इकागत अने उकारात (नान्यतर जाति)

अक्षि (अक्षि) आंम

अच्छि

अष्टि (अक्षि) दृष्टो-हाट्ट-हाट

भूमिवड (भूमिपति) भूमिनो

पति-गत्रा

उवाहि (उपावि) उपावि

सेष्टि (श्रेष्ठिन) श्रेष्टी-श्रेष्ट-चेष्टी

गडमडंसि (गडदर्शिन) गडने

जोनाग-जन्म घाग्ण कर्नाग

अभोगि (अभोगिन) अभोगी-

अभोष्टि | भोगोने नदि भोगवनाग

पन्ध्रि (पन्ध्रिन) पन्ध्री-पन्ध्र-

वाळुं

मोमिन्धि (मोमिन्धि) मुमिन्धिनां

पुत्र-लक्ष्मण

मिक्कटु (मिक्कु) मिक्कु

चक्रटु (चक्रुप्) चक्रु-आग

स्वयभु (स्वयभू) स्वय यनाग-

ब्रह्मा, ते नामनो मसुद

संसारहेट (समारहेटु) समारनो

हेटु-समार वधयानु काग्ण

गुरु (गुरु) गुरु-वडिल, माता

पिता वगेरे

तरु (तरु) तरु-ट्टम-डाड

वाहु (वाहु) बाहु-वाय-हाय

जड (जडु) जडु-लाग

वस्तु (वस्तु) वस्तु

दहि (दधि) दधि

पशु (पशु) पशु
 शानु (शानु) शान-शोषण-कुल
 बारि (बारि) बारि-घड़ी

महु (महु) महु
 बाहु (बाहु) बाहु-बाँधे-
 ६३

अकारांत (मर्यादा)

पसह (पसह) पसह-कर्म
 पौसिध (पौसिध, पौसिध)
 पौसिधो दर कपडा क-
 पौसिध लप
 बाहार (बाहार) बाहार-बाहार
 बाहिर (बाहिर) (लात-कित) मर्यादा
 नाहिर (नाहिर) नाहो-नाही-दुश्चल
 मम (मम) मम-मम-मम
 मार (मार) मार
 कुमारवर (कुमारवर) कुमार कुमार
 माहार (माहार) माहार
 मरह (मरह) मरह
 मर्यादास (मर्यादास) मर्यादास
 मरु-मरु (रेडु)

सम्बन्ध (सम्बन्ध) सम्बन्ध
 (सो सम्बन्ध-सम्बन्ध-सम्बन्ध)
 महामुख (महामुख) मोठे
 भाहार-घड़ी-घड़ी
 महामुखास (महामुखास) मोठे
 मर्यादास-कुल-कुल
 मास (मास) मास-महोमे
 पनक (पनक) पनक-पनक
 पनक-पनक कप-दर-दर
 केसाह (केसाह) केसाह काल
 केसासग (केसासग) केसासग
 केसासग कप-कप
 केसासग कप-कप
 कोरवर (कोरवर) कोरवर लक
 -कोरी-कोरी
 सोबान (सोबान) सोबान

अकारांत (नैन्वतर्याति)

आमरघ (आमरघ) आमरघ-बौध
 घर (घर) घर
 घर (घर) घर
 घर (घर) घर
 घर (घर) घर
 घर (घर) घर
 घर (घर) घर

घर (घर) घर
 घर (घर) घर-घर
 घर (घर) घर
 घर (घर) घर
 घर (घर) घर-घर
 घर (घर) घर-घर
 घर (घर) घर-घर

विशेषण

बुद्ध (बुद्ध) बोधवाळो-ज्ञानी
 हुत (हुत) होमेलु-हवन कराएलु
 सेट्टु (श्रेष्ठ १ श्रेष्ठ-सारं
 संभूज (सभूत) सभवेलो-धएलो
 चउत्थ | (चतुर्थ) चोथु
 चतुत्थ |
 तिण्ण (तीर्ण) तरी गएलु
 सुत्त (सुत्त) सुतेल्ल -आळसु

अप्पणिय (आत्मीय) आपणु
 पासग (दर्शक-पश्यक ?) द्रष्टा
 समजनारो-विचारक
 परिसोसिय | (परिशोषित)
 परिसोसिअ | परिशोषित-
 तद्दन सुकाएलु
 विइज्ज (द्वितीय) बीजु

अन्यय

ताव | (तावत्) तो, त्या सुधी
 ता |
 पगया (एकटा) एक वखत-
 एक वार
 सया (सदा) सदा-हमेशा

जाव | (यावत्) जो, ज्या सुधी
 जा |
 एत्थ (अत्र) अहीं
 चिर (चिरम्) चिर-लावा
 वाळ सुधी

धातुओ

अव+मन्न् (अप+मन्य) अप-
 मानवु-अपमान करवु
 आ+घा (आ+ख्या) आख्यान
 करवु-कहेवु
 जाय (याच) जाचवु-याचना
 करवी-मागवु
 प+वय् (प्र+वद) वदवु-कहेवु

पूज् | (पूज) पूजवु
 पूअ |
 चय् (त्यज) तजवु-छोडवु
 भण् (भण) भणवु-बोलवु, कहेवुं
 डस् (दश्) डसवु-डस मारवो
 रक्ख् (रक्ष) रक्षवु-राखवु-
 साचववु-रक्षण करवुं

१ उपयोग—जेमां श्रेष्ठ कहेवु होय ते नाम छट्टी अने सातमी
 विभक्तिमा आवे छे 'पाणीसु सेदठे माणवे' अथवा 'पाणीण सेदठे माणवे'
 एटठे प्राणीओमा मनुष्य श्रेष्ठ छे

वि+राज् | (वि+राज्) विरा
 वि+राज् | मु-वीम्भु
 उ+इही (उत्+ही) इह्यु
 नि+मत् (नि+मत्) निमत्
 क्तु -येज्जु

तामद् (ताम्) तामु
 ताम् | (ताम्) ताम् क्तु
 ताद् | -ताम्
 वि+वद् (वि+वद्) विवद्
 क्तु

एक बार साधुओं का हृदय में
 घरे क्या
 मिथुना उपाधिभोगे छोड़े
 है मने स्वर्गभूतुं ज्ञान
 करे है
 तपवी सुखयेया मुनिने
 ज्ञापों इसे है
 ब्राह्मणोप मिथुभोगुं थप
 मान कर्युं
 हे मुने! तु संसारने
 तरेसो है
 कर्म बडे उपाधि पाव है
 मार क्या भूतोमां मित्र
 पत्र है छोड़नी एक
 साथे पर नहीं
 भमुनिभा हमेशा सुतंज
 उ मने मुनिभो हमेशा
 साथ है
 धमत्र महावीरने कण्ठ
 दाहाह मर्ष हव्यो

कोई एक पुरुष कुकपतिना
 बख्शने मने मृगने
 हजतो नहीं
 बल्लो मने सुयो तप
 जाय है मने मुनिने
 पी पीय है
 महावीरना उपासक केडे
 बैशाक मासमां तप कर्णो-
 क्यां आमरणो मार है
 कुकपतिप धमत्र महावीरने
 कर्णो कुमारवर! नहीं
 उपाधिभोगो मर है
 सौमित्रि रामने धमे है
 मुनिभो साहार मारे क्यां
 कुष्येमां परे है
 वीर्यने वीरि मासे मने
 बोधे परे महावीर
 बुद्ध क्या

જે ક્રોધદર્શી છે તે ગર્ભ
દર્શી છે અને જે ગર્ભ
દર્શી છે તે દુઃખદર્શી છે
હે પહિતો ! દુઃખધા પ્રકારે
લોભને તહું છું.

ચંદ્રકૌશિક સર્પમા અને
દેવેન્દ્રમા મહાવીરે મિત્ર
પણું રાખ્યું
વાયુ વહે વૃક્ષો કંપ્યા અને
પાણીના ઘિંદુઓ ઉડ્યાં
શું ઘિચારકને ઉપાધિ
હોય છે ?

કૌશિક દેવેન્દ્રે શ્રમણ
મહાવીરને પૂજ્યા
સમુદ્રના હાથીના પાણી
પીધુ
લોભ સંસારનો હેતુ છે

સુપ્રસન્ન મુનિઓ ક્રોધદર્શી
હોતા નથી
૫ ભિક્ષુ શેઠના કુલનો
હતો
હે મિશ્ત્રો ! મારા ઘરમા
દુઃખ નથી, ઘી નથી પણ
પાણી છે
૫ ગૃહસ્થને બે વાલક હતાં
તેઓ પાજરાવડે પાજરાને
ફેંક્યું.

કોને આલો નથી ?
પક્ષી પાજરામા કપ્યું અને
હલ્યા કયું
શેઠ ગજાને નમ્યો અને
રાજા ગણપતિને નમ્યો
તમે પાણી ઇચ્છો છો ?
મુનિઓના પતિ મહાવીર
રાજગૃહમાં વિહર્યાં

મુનિનો સયા જાગરતિ
અમુનિનો સયા સુત્તા સતિ
' ઘય પિવામિંત્તિ સાહુસ્સ
નો ભવઈ ?
પન્હીસુ વા ઉત્તમે ગરુલે
વિરાજઈ

પગે ભિક્ષુનો ઉદ્ગેણ
મોક્ષ પવયતિ
સડળી પજરાસિ ઉહ્હેઈ
તે ઉવાસગા ભિક્ષુનું નિમત્ત-
યન્તિ
વહવે ગહવઈનો ભિક્ષુનું વદતે

मच्छु नरं वारं ह्यु संतुष्टाने
 गहर्षं मुचिषो बुद्धं दिग्ज
 मूर्ध्नां परर्षं य दोषि
 गुहं वंशति

महरिती । तं पूषधामु
 न मुणी रण्यवासेच किनु
 नार्थिष्य मुणी होर
 ममी मूमिर्ष्य कपाधि न
 कदासिच कसी

मिचन्नु धम्मं मारक्येउत्ता
 लोहेष्य अंतुषो बुक्कजाणि
 मापति

मिमुषो किं किं न छिदिरे ।
 अहा मयम् वदशीष्य सेइटे
 इमीष्य मइटे तह वदामाभे

मजे मुचिषो ह्यप्य मत्तं
 उदाहरति

मिचन्नु सम्भसीगे मडात्तरे
 परिजापीम

भोगिष्यो संसारे ममीत्र
 जमोगी चयद रपे
 हन्थेसु इराचयमाहु सेहुं
 पगया पाडिअपुत्तस्स वर
 र्धं वहाविम्यो होरया

महण्यसाया इमिषो इपति
 न ह्यु मुणी कोचवया इपति
 महांसवं संसारदेउ वपति
 बुद्धा

बुद्धो मयं मच्छुं च तपीम
 गणवद् इन्धिस्स पिठुं
 रक्खीत्र

पाठ १२ भा

मदिप्पकाट

प्रथमे

पठयन्

शुचयन्

पु १ १स्तामि (प्यामि)
 १हामि
 १दिमि
 स्तं

१स्तामो, (प्यामो)
 २हामो
 १दिमा

पु० २	स्ससि (ष्यसि) स्ससे (ष्यसे) स्सिसि स्सिसे		स्सह स्सथ स्सिया स्सिह	(ष्यथ) (ष्यध्वे)
पु० ३	स्सऽ स्सति स्सप स्सते	(ष्यति) (ष्यते)	स्सति स्सते	(ष्यन्ति) (ष्यन्ते)
	स्सि स्सिति स्सिप स्सिते		स्सिति, स्सिते स्सिपरे	
	सर्व पुरुष सर्व वचन	{ उज्ज, उजा१		

१ भविष्यकालना प्रथयो लयाटतां धातुना मूल अगना अथ 'अ' नो 'ए' अने 'इ' वाराकृती थाय छे २
भण्+अ=भण+स्सामि=भणेस्सामि, भणिस्सामि वगरे

रूपारख्यान

पु० १	भणिस्सामि, भणिहामि, भणिहिमि, भणिस्स,	भणेस्सामि भणेहामि भणेहिमि भणेस्सं	भणिस्सामो, भणिस्सामु, ^३ भणिस्साम, ^३ भणिहामो, भणिहामु, ^३ भणिहाम, ^३ भणिहिमो, भणिहिमु, ^३ भणिहिम ^३	भणेस्सामो भणेस्सामु भणेस्साम भणेहामो भणेहामु भणेहाम भणेहिमो भणेहिमु भणेहिम
-------	---	--	--	--

१ हे० प्रा० व्या० ८।३।१७७। २ हे० प्रा० व्या० ८।३।१५७।

३ ज्या धात्मा पाठमां भविष्यकाल-प्रथम पुरुषता बहुवचनता प्रथयो जणावेला छे त्यां स्सामा हामो अने हिमो एम व्रण प्रथयो जणावेला छे ते उपगत स्सामु, स्साम हामु हाम हिमु, हिम प्रथयो पण वपगत छे अने ते प्रथयोनाळां रूपो पण अही आपेला छे

मेहावि (मेषाविन्) मेषावाळो-
 बुद्धिमान
 वणफड् | (वनस्पति) वनस्पति
 वणस्नइ |
 करेणु (करेणु) करी-हाथी
 कुंयु (कुंयु) कथवा-एक नानी
 जीवडी
 विज्जत्थि (विद्यार्थिन्) विद्यानो
 अर्थी-विद्यार्थी
 विहु (विधु) चद्र

कमंडलु (कमण्डलु) कमडळ
 मंतु (मन्तु) अपराध, गोक
 तरु (तरु) तरु-द्रु-झाड
 जवु (जम्बु) जावु, जावुनु माड
 विडवि (विटोपन्) वीड झाड
 साणु (सानु) शिखर
 वधु (वन्धु) वधु-माड्ड-भाडे
 पीलु (पीळु) पीळु पीलुनु झाड
 ऊरु (ऊरु) चरु, सायळ
 पावासु (प्रवासिन्) प्रवासी

विशेषण

कयणु (कृतज्ञ) कृतज्ञ-कदरदान
 गुरु (गुरु) गुरु-भारे-मोट्ट
 लहु (लघु) लघु-हळवु नाउ
 मिड (मृदु) मृदु-कोमळ-नरम
 दुहि (दुःखिन्) दुःखी
 दुग्गधि (दुग्गन्धन) दुग्गन्धी चीज
 घाट (घाट साठ-सुन्दर
 सुहि (सुखिन्) सुखी

साड (साट्ट) साट्टु-साट्टवाळु
 दिग्घाड (दीर्घायुष्) दीर्घ
 आयुष्यवाळु
 सुइ (शुचि) शुचि-पवित्र
 सुगधि (सुगन्धिन्) सुगन्धी वस्तु
 वहु (बहु) बहु-घणु
 गामाणे (ग्रामणी) गामनी नेता

सामान्य शब्दो (नरजाति)

जर (ज्वर) ज्वर-ताव
 अघ (आघ) आवो
 केकिल | (कोकिल) कोयल
 पोइल |
 तिल (तिल) तल

लोहार (लोहकार) ल्हार ल्हार
 लोवण्णिय (सौवर्णिक) सोनी
 गंधिय (गान्धिक) गाधी गर
 वाळो वस्तुने वेचणार

बाधिराचार (बाधिर्यचार) बध
 चारो-बबब बभारो-बैभारो
 बाधिरिच (बाधिरिच) बध
 डीबो-बाधिरिचोबो बैब-
 नार बा बाधिरार
 मोधिच (मोधिच) मोधी-
 मोधि मोधिनार
 कुडुचि (कुडुचि) कुडुची
 कुडुचिच (कुडुचिच) कुडुची
 राबसु बधबध बभार
 साड (साड) साडो-साधी
 साडच (साडच) " "
 सोरहिच (सौरमिच) सौरी-
 सुरभि-सुर्वी-सेड सपेरेसे
 बैभार
 कस (कस) कसुड

सुचहार (सुचहार) सुच
 सेधिच (सेधिच) सेधी-सेधिनार
 माधिच (माधिच) माधी-माध
 बैभार
 दोधिच (दोधिच) दोधी-दुध
 -दुध-दुधिनार
 उरुहार (उरुहार) उरुधी
 सीमाच (सीमाच) सिमाच
 सेबोधिच (सैबोधिच) सेबी
 बड (बड) बड-बाडी-बभडी
 जोरुचिच (जोरुचिच) जेरी
 साडचि | (साडचि) साडनी
 साडचि | -साधी बभार
 यधिच (यधिच) यधिनार
 -यधिनो सामान बैभार

सामान्य शब्दो (नाम्यतराज्ञति)

सोड (सोड) सोडु
 बाधिराच (बाधिराच) बध-बैभार
 सुभ (सुभ) सुभ
 तबोड (तबोड) तबोड-तबार
 बैभार
 इ.दि.ग मभारी मभार बैभार
 सोपड (सोपड) सोपे बाधु बभार

बैभारकच (बैभारकच) बैभारच
 -बैभारी बैभार बभार-बैभार
 बैभार (बैभार) बैभार-बैभार
 बैभार (बैभार) बैभार-बैभार
 बैभार (बैभार) बैभार-बैभार
 पाम्यचार (पाम्यचार) पाम्यचार
 बैभार

पगरफ़ल (पदकरक्ष) पगरस्त्रां
-पगनु रक्षण करनार

वत्थ (वस्त्र) वस्त्र-वस्तर

पट्टोल (पट्टकूल) पट्टोल्ल

खेत्त } (क्षेत्र) क्षेत्र-खेतर
खित्त }

मिहिलानयर (मिथिलानगर)
मिथिला

घरचोल (गृहचोल) घरचोल्ल

पम्हपड (पक्षमपट) पक्षम-पांपण-
जेवु क्षीणु कापड-पांमडी

सामान्य शब्द (विशेषण)

घट्ट (घृष्ट) घसेल्ल-सुवाल्ल करेल्ल
वाटेल्ल

मट्ट (मृष्ट) माजेळ-शुद्ध

अतिअ (अन्तिक) पासे-नजीकमां

चंड (चण्ड) प्रचड-क्रोधी

लघुअ | (लघुक) लघु-हळवु
इलुअ | हळु नाउ

अव्यय

सच्चत्थ (सर्वत्र) सर्वत्र-यधे-स्थळे

मज्झे (मध्ये) मध्ये-वच्चे-महीं-मां

जं (यत्) जे-के

सकख (साक्षात्) सासात्-प्रत्यक्ष

सयय (सततम्) सतत-निरंतर

अह (अथ) अथ-हवे-प्रारभसूचक

चित्त } (वेत्र) नेतर-नेतरनी
वेत्त } सोटी-बेत

सुवण्ण (सुवण) सोनु

रयय (रजत) रजत-रूपु

रुप्प (रुक्म) रूपु

रुप्प (रौप्य) ,,

लोमपड } ((लोमपट) रुवाटानु वस्त्र
{ ((रोमपट) -लोमडी

पम्ह (पक्षमन्) पांपण

नेड्डु | (नीड) निलय-नीड-
णेड्डु | माळो

नाय (ज्ञात) जाणित्तु-प्रसिद्ध

अम्हारिस (अस्माद्दश) अमा
रीशुं-अमारा जेवु

सचेलय (सचेलक) चेल-
वस्त्र-वाल्ल-कपडावाल्ल

अचेलय | (अचेलक) ऐलक-
अपलय | कपडा विमानु

मणा | (मनाळ) मणा-थोड्डु-
मणयं | खामी दर्शक

सइ (सदा) सदा

अभिक्षणं (अभिक्षणम्) क्षणे
क्षणे-वारवार

अहुणा (अधुना) हमणा

वातुमो

ह्य् (हु) वीव्यु-वीव्यु-
 अवाव्यु-अवाव करणे
 सोव् [सोव] सोवु सोव्यु
 सिव्य् (सीव) सीव्यु
 हव् (हव) हव्यु
 मव्य् (मव) मव्यु
 भोव्य् (भवे) भावी भव्यु -
 भावी भवाव्यु-भाव्यु
 पवव्य् (पवव्य) पवाव करणे
 ववव्यिङ् (वव+विङ्) ववव्यिङ्
 रवेव्यु-रीवाम् हाव्य रवेव्यु
 वाव् (वाव) वाव्यु-वाव्यु
 विव्ये (वि+वी) वीव्यु वीव्यु
 मव्य् | (मवे) भाव्यु
 भोव्य् |
 पीव्य् | (पीव) पीव्युं पीव्यु
 पीव्य् |
 फव्य् (फव) फव्यु फव भाव्यां

वीव्यु (विव्य) वीव्यु
 वीव्यु (वि+व्य) वीव्यु
 मूरी वुं
 वीव्यु (व+व्य) वीव्यु
 वव्यु
 वव्यु (वव) वव्यु-वोव्यु
 वाव्यु (व+वाव्य) वाव्यु-वाव्यु
 ववव्यु (वि+वा+व्यु) ववव्यु-वीव्यु
 वीव्यु-वीव्यु
 वव्यु (वव) वव्यु-वोव्यु
 वव्यु (व+वाव्य) वव्यु-वाव्यु
 वाव्यु ववव्यु
 वव्यु (व+व्यु) वव्यु
 वव्यु (वव) वव्यु-वव्यु
 वव्यु
 वव्यु (वव) वव्यु वव्यु
 वव्यु

कुंभारु कुंभ वव्य वव्यु
 वव्यु
 वव्यु वव्यु वव्यु वव्यु
 वव्यु वव्यु वव्यु वव्यु
 वव्यु वव्यु वव्यु वव्यु

वव्यु वव्यु वव्यु वव्यु
 वव्यु वव्यु वव्यु वव्यु
 वव्यु वव्यु वव्यु वव्यु
 वव्यु वव्यु वव्यु वव्यु
 वव्यु वव्यु वव्यु वव्यु

સુતાર લાકડાને છોલગે
 અને પછી વ્રહ્મણે
 ગૃહસ્થો, બ્રાહ્મણો અને
 સાધુઓને અન્ન આપશે
 શ્રમણ મહાવીર, કુમારને
 અને મોચીને ધર્મ
 સમજાવશે
 સરેયો મુગંધી વસ્તુને
 વસ્ત્રાણશે
 મોચી મારા માટે પગરખાં
 સીવશે
 કુશલ તરનાગે તલાવને
 પોતાના વે હાથે તરશે
 કામઢીયાના શરીર ઉપર
 કામઢ અને લોવડી
 શોભશે
 ડનાઢાના ઢિવસોમાં કોયલ
 આવા ઉપર કુહ કુહ
 કરશે
 ગુરુ વિદ્યાર્થીઓને તેમનો
 પાઠ સમજાવશે
 તેલી તલને પીલશે અને
 તેલ વેચશે
 સોની સોનાના અને રૂપાના
 ઘરેણા ઘડશે અને તેમને
 નાસશે

મારા દુઃખી જીવનનું
 ઔપવ ધર્મ થશે
 હુ પઢાડના ઢિસરે ચડને
 જોઈશ
 વાદગઓ આવાના ઢાઢમાં
 કૂડશે
 ડનાઢામાં સૂર્યનો પ્રચંડ
 નાપ તપશે
 તલોઢી તલોઢ વેચશે અને
 અમે તલોઢ ઝાઈશુ
 વિદ્યાર્થીઓની વચ્ચે આચાર્યો
 શોભશે
 આ આલો શિયાઢામા ફઢશે
 તમે વે ઢ્યાલુ અને કૃતજ્ઞ
 થગો
 કૃપિઓ કમઢઢથી શોભશે
 જેઓ પોતાના મોગોને
 છોડશે તેઓને લોકો
 ત્યાગી કહેશે
 મારો સોની વરેણાને ઓપશે
 કેટલીક વનસ્પતિઓ ડના-
 ઢામા ફઢશે અને તેમને
 તુ ઝાઈશ
 કણવી સ્વેતરને વારવાર ડોઢશે
 હવે હુ પાન ઝાઈશ, તે
 તેનો પાઠ સમજશે અને
 તમે પાળી પોગો

विद्यादी मिकन् व मया
 गुह उचिदिस्मिह
 गुरुणमतिप लीयो उरुणा
 सद उरु न मुत्रिस्मह
 मिह पि गुहं सीसा खंडं
 पकरनि
 इदीसु पयवने नापमाहु
 मकन् वरं वरं हु मंतकाडे
 रिती रापरिति इम वर
 वाम्परी
 सग्न मादुषो गुहयो
 मपुसासर्ष कज्ञाव
 मत्रिस्सति
 मइ जयेमप सवेत्तप
 वरं रं मिकन् व
 चित्तिस्सह
 सदे जया नंबस्स तरे
 वककाभिस्सति
 मग्नं मग्रे तु बोत्तिस्सति
 तुमे वचिस्सह सो व
 गाहस्सति
 वाचिउत्राया मग्दे गामि
 वामे वाचिउत्रं वयेजामो
 वन्पु व चिकेदिमु

मग्दं म्मेहाय मोई
 ताविस्सामु तरस व
 सत्थानि ववेहिमा
 माहवा फापिवा पाये व
 वपिस्संति
 वइ मग्दे ममवं वा मा-
 हयं वा विमतिस्सामो
 सो सक्कं मूहो विमवि
 न संवुत्तिदिह
 तुमं वत्थ मिथिस्सति वं
 व पदोळं वपिस्स
 वई सोवपिस्सो सुवन्न
 सोदिहामि तस्स व
 वामरण्णं वदिहिमि
 मसी मिकन् विरिपो
 वईदि विसेदि वसेदि वेष
 वपारिया तं रिमि
 ताहपति
 ताहे सो कुम्बणी वमं
 महावीरं मपुस्सवति
 मपति व कुमारव
 सइवी ताव मप्यविध
 प्पु रक्कति
 एवदिस्सिस्सि वमिथि
 मिकंते मिहवावपरे
 वग्गय सोगो वासी

पाठ १३ सो

मविष्यकाळ (चालु)

स्वर्गत घातुना मविष्यकाळना रूपो मान्ता त्रीजा पाठ्याः फक्त
स्वर्गत घातु माट ले विज्ञेय मानिका वतावी छे तेनो उपयोग
करो

अंगोनी समज

विदग्ग्विनानुं	विकरणवाळु
हो	होय
पा	पाय
ने	नेअ

रूपाख्यान (उदाहरण)

१ पु०	होम्सं, होइस्सं, होण्स्सं
" "	पास्स, पाइस्स, पाण्स्सं
" "	नेस्सं, नेइस्सं, नेण्स्सं

केंटलांक अनियमित रूपाख्यानां

करु

मविष्यकाळमा 'करु ने बदले 'का' पण वपराय छे अने तेनां
मया रूपो स्वरंत घातुनी मरखा थाय छे तथा प्रथम पुरुषना एक-
वचनमां ३'काह' रूप थाय छे जेमके,

३ पु० काहिद् २ पु० काहिसि १ पु० काहिमि, काहं वगेरे

१ जूओ पृ० १०६। २ हे० प्रा० व्या० ८।१०११। ३ हे०
प्रा० न्या० ८।३।१००।

दा

'दा' बाहुव्री मणिप्लवङ्ग संज्ञकी वचं क्वी ललाट बाहुव्री
नरकां वाच छे एव प्रथम पुङ्गना एङ्गकलायां। 'दा' क्व वचो
वाच छे कैयते;

१ पु दाहिर	२ पु दाहिसि	१ पु० दाहिमि, दाहं लो
१सोच्छ (सोच) साञ्चु		वेच्छ (वेत्त) वेत्तु-व्यवत्तु
रोच्छ (रोत्त) रीत्तु		अत्तु
मोच्छ (मोच) मुच्छु-मुत्तु		मेच्छ (मेत्त) मेत्तु-मुष्माच्छ
मोच्छ (मोच) मोञ्च वत्तु		केच्छ (केत्त) केत्तु
	मोञ्चु	इच्छ (इत्त) इत्तु इत्तु
बोच्छ (बच) ब्येत्तु-बीञ्चु		मच्छ (मत्त) मत्तु वत्तु

मात्र वा कर्तुञ्च एव बाहुव्री द्वि जादिवान्ता (द्विमि,
द्विमि द्विमो द्विम द्वि वचोरे) अन्वी क्वावत्तं संज्ञकी भाषिणे
'द्वि' निष्पत्ती लोपान्ता छे कैयते:—

मोच्छ + द्विमि = सोच्छिमि मोच्छेमि सोच्छिमि,
सोच्छेमि—वचोरे

वचो, मात्र प्रथम पुङ्गना एङ्गकलायां व द् वचो बाहुव्री वत्तु
लाप्यञ्च क्व एव क्व वचो वाच छे कैयते —

१सोच्छं	वेच्छं	इच्छं
साच्छिञ्चस्ती	वेच्छिञ्चस्ती	इच्छिञ्चस्ती वचोरे
वाचोनी वचो क्वावत्तं	मत्त	बाहुव्री क्वावत्तं छे

१ हे अ वा १११ । २-१ हे अ वा ४११
१ । हे अ वा ४११ ११

रूपाख्यान [उदाहरण]

एकवचन—

- १ पु० सोच्छ संच्छिमि सोच्छिस्सामि
 सोच्छिस्स, सोच्छेमि, सोच्छेस्सामि
 सोच्छेस्सं, सोच्छिहमि, सोच्छिहामि
 सोच्छेहमि, सोच्छेहामि
- २ पु० साच्छिसि, साच्छेसि, साच्छिहिसि सोच्छेहिसि
 साच्छिसे, साच्छेसे, साच्छिहिसे, सोच्छेहिसे
- ३ पु० सोच्छिइ, सोच्छेइ, सोच्छिहिइ, सोच्छेहिइ
 सोच्छिइ, सोच्छेइ, सोच्छिहिइ, सोच्छेहिइ इत्यादि.

आय प्राहृतमा वपराएलां बीजा केटलाक अनियमित रूपो

(भोक्ष्याम) — भोक्षामो

(भविष्यति) — भविस्सइ

(करिष्यति) — करिस्सइ

(चरिष्यति) — चरिस्सइ

(भविष्यामि) — भविस्सामि

(भू-भो+ष्यामि) — होक्खामि

अमु (अद्स्) आ [नरजाति]

१ अह१ } (असौ) अमुणो | (अमी)
 अमू२ }
 असौ३ }

० अमुं (अमुम) अमुणो | (अमून्)
 अमू

१ हे० प्रा० व्या० ८।३।८७ ० हे० प्रा० व्या० ८।२।८८

३ स० 'असौ' रूपता अन्त्य 'औ' नो 'ओ' करवाची आ रूप याय छे

७ अथस्मि^१ }
 इथस्मि } (अथस्मिन्)
 अथस्मि

अथस्मि
 अथस्मि } (अथस्मिन्)

वाच्ये वाच्यं अथु 'थी' प्रमात्तै

अथु (अथस्) वा [नान्यतरवाचि]

१ अथु (अथस्)
 अथु

अथुषि
 अथुहं
 अथुहौ } (अथुषि)

२ " "

" " " "

वाच्ये वाच्यं अथु 'थी' प्रमात्तै

इच्छरांत अने उच्चरांत ध्वन्द्वो (नस्त्रवाचि)

छाद्यहि (छाद्यन्ति) छाद्यन्ति-रथ
 हाच्छान्तो

परद्वैसि (परद्वैसिन्) परद्वैसि
 ऐसे बीजपर

मारामिर्द्विदि नागामिर्द्विदि)

मार-तुल्या-बी दीक्षित रहेनार

द्यु रहेनार तुल्याची करनारी

वाद्यि (व्याधि) व्याधि-रीच

महासद्यिदि (महासद्यिन्) मोधी

-अकल-अद्याप्यन्तो

नक्षस्मिन् (नक्षस्मिन्) नक्षस्मिन्

अथादि (अथादि) अथादि प्रत्य

पवाक्षि (पवाक्षिन्) पवाक्षि
 अथपर

पथु (पथु) अथु-अथुवाच्यो-
 अथपर

तंथु (तंथु) तंथु

महातवस्मिन् (महातवस्मिन्)

मोठी तल्लो

समस्तद्विदि (समस्तद्विदिन्)

अथकी बीजपर-अथपर

आथपर

पथु (पथु) पथु

विद्यु (विद्यु) विद्यु-थ

जंतु (जन्तु) जंतु-प्राणी-जीवजत
 जोगि (योगिन) योगी-जोगी
 केसरि (केसरिन) केसरवाळो
 -याळवाळो-सिह-केसरी मिह
 मंति (मन्त्रिन्) मंत्री-कारभारी
 चक्रवर्ति (चक्रवर्तिन्) चक्र
 फेरवनार-चक्रवर्ति राजा

वसु (वसु) वसु-धन, पवित्र
 मनुष्य
 सभु (शम्भु) शम्भु-सुयनु स्थान
 -महादेव
 संकु (शङ्कु) शङ्कु-खीलो

सामान्य शब्दो (नरजाति)

मग (मार्ग)-माग
 मार (मार) मारनारो-तृष्णा
 दुस्सीस | (दुश्शिष्य) दुष्ट शिष्य-
 दुस्सिस्स | विद्यार्थी
 चवहारिअ (व्यावहारिक)
 वहेवारी-वेपारी
 थेर (स्थविर) स्थिर बुद्धिवाळो-
 पाकट-बयोद सत
 गग (गार्ग्य) गर्गनी पुत्र-ते
 नामनो एक ऋषि
 वेवाह्दिअ (वेवाहिक) वेवाई
 ववहार (व्यवहार) वेवहार
 -वेपार
 कंसआर | (कांस्यकार) रमागे
 कमार
 लेहसालिअ (लेहशालिक, निशा
 लीओ-निशाळ भणवा जनार

सुभिण
 सिमिण } (स्वप्न, स्वप्न-सपनु-
 सुत्रिण } सोणु
 सिविण }
 गणहर | (गणधर) गणने धारण
 गणधर | करनार-समूहनी
 व्यग्रस्था करनार-आचार्य
 अणागम | (अन्+आगम) न
 अनागम | आवनु ते-अनागमन
 कण्ण (कर्ण) कान, कानो
 विराग (विराग) गगधी विरुद्ध
 भाव-वैराग्य
 विपरियास (विपर्यास) विप-
 र्यास-विपरीतता-ध्राति
 सठ (शठ) शठ-लुथो
 अकम्म (अकमन्) कर्म रहित
 -निमठ-पवित्र

अन्यथ

इत्य (इत्यम्) ए प्रकारे
 तु (तु) तो
 इह (इह) अहीं-आमां
 दाणि
 दाणि
 इयाणि
 इयाणि } (इदानीम्) हमणां-
 आजकाल

ईनि | (ईपत्) ईपत्-योद्ध
 ईसि | इशारामात्र
 एअ (एतत्) ए
 उपि
 अवरि
 उवरि
 उवरि } (उपरि) ऊपर

धातुओ

वि+हृद् (वि+हृद्) विहरवु-करवु -

दस् (दश) दमवु-कडवु

प+गच्छ् (प्र+गल्भ) प्रगल्भ-यवु
 वडाइ मारवी

अमराय | (अमराय) अमरनी पेटे
 अमरा | रहेवु-पोतानी जातने
 अमर मानवी

अइ+चाअ (कृति+पात) अति-
 पात करवो-हणवु

वि+सीअ (वि+पीद) विपाद
 पामवो-खेद करवो

कथ् (कथ) कथवु-कहेवु, वखाणवु

फुट्ट् (स्फुट्) स्फुट् थुं-सीलवु -
 फुटी नीकळवु

वि+चित् (वि+चिन्त) चितववु

विघ् (विघ्य) वीघवु

उ+क्कुद् (उत्+कूर्द) उचे कूदवु
 -अदर ऊळळवु

भञ्ज | (भञ्ज) भाजवु-भागवु
 भञ्

अव+सीअ (अव+सीद) अवसाद
 पामवो-खेद थवो

लिप्प् (लिप्य) खरडावु

सं+जम् (स+यम) सजमवु -
 सयम करवो

पडि+कूल् (प्रति+कूल) प्रतिकूल
 थवु-विपरीत थवु

स्र् (स्मर) स्मरण करवु

प+मुच्च् (प्र+मुच्य) प्रमुक्त थवु
 -तदा छुटी जवु

सेव् (सेव्) सेववु

विद्व् (विद्य) विद्यमान होवु

हिस् (हिम्) हिमा करवी-हणवु

उव+इ=उवे (उप+इ) पासे जवु
 -पामवु

वदितो हरबासे नहि भजे
 कोप करये नहि
 भजे बे ए प्रकारे भाषा
 र्थने बारंबार कहीहुं
 ए बिषयी बडाई मारये
 नहि पण न्ययम राखये
 हुं ए साधु कटीय
 साठिय बल्लदोमै साबबये
 भजे बाहनमा जोडये
 तपस्वी योगी व्याधिमोची
 बीरो नहि

माप्य मुनि गणपट एरो
 बनमो कैसरी बनमा हावीने
 तेना माधामा कैरुणे
 मायाय पूर्व भजे तुम्ह
 बनेन धर्म कहेये
 बयाभान जीवित ग्रिह
 छि एम कोव नहि
 भनुमबरो ।
 दुय शिष्यो मजये बरि
 पण निरंतर बर्य
 मारये भजे कुरये

समरी महाबीरे बहा
 पुण्यस्त कल्पिदिह तहा
 तुम्हस्त कल्पिदिह
 धर्म कैचुं
 सुख माचुं
 एगे इमार पुण्यमि एगे
 बिघर भमिपकन
 तुम्ह महत्पर्य ति बोचुं
 त्रिपस्त बयनाई कल्पेदि
 तोचुं
 राज ना पुण्य काई तता
 ए तुम्ह सुचुं
 ए तु दिग । नचुं
 धर्मि म मरनाम। माचुं

बीरो मडो सुख कारि
 रापगिर गच्छ महाबीर
 कैदिस्त
 तुम्हो सबमाहसु
 मरुम्हस्त बयनाये न
 बिचर
 तुमं छि कि पावे पुण्य
 न काती
 लहे उचकुदिदिप, एवधि-
 हसति ए
 तस्त सुह दच्छुं तेन ए सुह
 पातिसन
 बीरे उचपरज इनिमधि न
 कल्पिदिह

जेहि अह विसीएससामि तेहि
 कयावि सुविणे वि न रोच्छं
 सीळभृयो मुण्णि जगे विह-
 रिस्सण
 अह सो सारही विचितेहिइ

ज वोच्छं त सोच्छिसे
 नाऽणागमो मच्चुमुहस्स
 अत्थि
 तवेणं पावाइ मेच्छ
 महासड्ढी अमरायइ

पाठ १४ मो

ऋकारान्त शुब्दो

ऋकारांत नामोनी वे आत छे—केटलाक ऋकारात नाम सव घ-
 सूचक विशेष्यरूप छे. अने केटलाक ऋकारात नाम मात्र विशेषणरूप छे

संबधसूचक विशेष्यरूप—जामातृ, पितृ, भ्रातृ वगेरे

मात्र विशेषणरूप —कर्तृ, दातृ, भर्तृ वगेरे

ऋकारांत—(संबधसूचक विशेष्यरूप)

१ प्रथमा अने द्वितीयाना एकत्रचन सिवाय यधी विभक्तिओमा सत्रवसूचक

विशेष्यरूप ऋकारात नामना अत्य 'ऋ' नो विकल्पे 'उ' थाय छे

(हे० प्रा० व्या० ८।३।४४।) जेमके—

जामातृ = जामातृ, जामाउ

पितृ = पितृ, पिउ

भ्रातृ = भातृ, भाउ.

વિશેષણરૂપ ઞ્ચકારાંત નામના અત્ય 'ઞ' નો ઘઘી વિભક્તિઓમાં 'આર' યાય છે (હે० પ્રા० વ્યા० ૪૫) જેમકે—

દાત્=દાતાર, દાયાર કર્ત્=કર્તાર. મર્ત્=મર્તાર

ઘ્ચ સયોજનના એકવચનમાં આ વિશેષણરૂપ ઞ્ચકારાંત નામોના અત્ય 'ઞ' નો 'અ' વિકલ્પે થાય છે (હે० પ્રા० વ્યા० ૮૩૧ ૩૧) જેમકે—

દાત્=દાય ! દાયાર ! દાયારો ! દાયારા !
 કર્ત્=કર્ત ! કર્તાર ! કર્તારો ! કર્તારા !
 મર્ત્=મર્ત ! મર્તાર ! મર્તારો ! મર્તારા !

ઠ્ઠ વન્ને પ્રકારનુ ઞ્ચકારાંત નામ ઉપર જળાવેલી સાબનિકા આને પ્રથમાથી સપ્તમી સુધીની ઘઘી વિભક્તિઓમાં અકારાંત અને ઞ્ચકારાંત બને છે તેથી તેના અકારાંત અગનાં રૂપારૂપાનોની સાબનિકા 'નૌર' ની પેઠે સમજી લેવી અને ઞ્ચકારાંત અગનાં રૂપારૂપાનોની સાબનિકા 'માણુ' ની પેઠે સમજી લેવી

રૂપારૂપાનો

પિત્, પિઅર (પિત્)

એકવચન

બહુવચન

૧ પિઅરો, પિઆ (પિતા)

પિઅરા (પિતરઃ)

પિઅણો, પિઅવો, પિઅઓ

પિઅર, પિઠ

૨ પિઅર (પિતરમ્)

પિઅરે, પિઅરા, પિઅણો,

પિઠ (પિતૃન્)

३ विभरेण विभरेण
विठणा (विना विठणा?)

विभरेहि, विभरेहि विभरेहि
विठहि, विठहि, विठहि
(विठमि)

४ विभरस्स
विठणो विठस्स
(विठु विठुण ?)

विभरण विभरणं
विठण विठणं (विठुणाम्)

५ विभरणो
विभरण
विभरा

विभरणो विभरण,
विभराहि, विभरेहि
विभराहितो विभरेहितो
विभरासुतो विभरेसुतो

विठणो
विठणो विठण
(विठुता विठु विठुण ?)

विठणो विठण (विठुता)
विठणितो (विठुम्)
विठुसुतो

६ विभरस्स
विठणो विठस्स (विठु)
विठुण ?)

विभरण, विभरणं
विठण, विठणं (विठुणाम्)

७ विभरंस्सि विभरंस्सि
विभरे (विठरि)
विठति विठमि

विभरेसु, विभरेसु

८ विभरं विभ ! (विठ)
विभरो विभरा ! विभर !

विठसु, विठसु (विठुषु)
विठणो ! विठणो विभणो
विठण विठ

दाउ, दायार (दातृ)

- १ दायारो, दाया (दाता) दायारा (दातार) दाउणो
दायत्रो, दायओ, दायउ, दाऊ
- २ दायार (दातारम्) दायारे, दायारा
दाउणो दाऊ (दातृन्)
- ३ दायारेण, दायारेणं
दाउणा, (दात्रा, दातृणा) दायारेहि, दायारेहिं, दायारेहिं
दाऊहि, दाऊहिं, दाऊहिं
(दातृभि.)
- ४ दायारस्स
दाउणो, दाउस्स
(दातुः, दातृण) दायाराण, दायाराणं
दाऊण, दाऊणं (दातृणाम्)
- ५ दायाराओ, दायाराउ
दायारा दायाराओ, दायाराउ
दायाराहि, दायारेहि
दायाराहिंतो, दायारेहिंतो
दायारासुंतो, दायारेसुंतो
- दाऊणो, दाऊओ, दाऊउ दाऊओ, दाऊउ (दातृत)
(दातृत दातु दातृणः) दाउहिंतो, दाऊसुतो, (दातृभ्य)
- ६ दायारस्स
दाउणो, दाउस्स
(दातु दातृण) दायाराण, दायाराणं
दाऊण, दाऊणं, (दातृणाम्)
- ७ दायारसि, दायारम्मि
दायारे (दातरि) दायारेसु, दायारेसु
दाउंसि, दाउम्मि दाऊसु, दाऊसुं (दातृपु)

अकारांत अंग-दायार

१ दायारं	दायाराणि, दायाराइ, दायाराहँ
२ दायारं	दायाराणि, दायाराइ, दायाराहँ
सं० दाय ! दायार !	दायाराणि, दायाराइ, दायाराहँ
घाकी बघा नरजाति प्रमाणे	

उकारांत अंग-दाउ

[यावीः उकारांत अ ग एकवचनमां वपरातु नवी जुओ पाठ
१४ नि० १]

१-२ } दाऊणि, दाऊइ दाऊहँ
सं० } (दातृणि)

अकारांत अंग-सुपिअर (सुपितृ)

१ सुपिअरं	सुपिअराणि, सुपिअराइ, सुपिअराहँ
२ सुपिअरं	सुपिअराणि, सुपिअराइ, सुपिअराहँ
सं० सुपिअरं, सुपिअर !	सुपिअराणि, सुपिअराइ, सुपिअराहँ
सुपिअ !	

उकारांत अंग-सुपिउ (सुपितृ)

१-२ | सुपिऊणि, सुपिऊइ सुपिऊहँ
सं० | (सुपितृणि)

सामान्य शब्दो (नरजाति)

कुक्षिख (कुक्षि) कूख	अग्नि (अग्नि) अग्नि-आग
कुच्छि	रस्मि (रश्मि) राश-लगाम
वाणिअ (वाणिज) वाणिओ	झुणि (ध्वनि) झण-झणझणाट,
धणि (धनिन) धमवाळो-धणी	अवाज-ध्वनि
यहिणीवइ (अग्निनीपति) यनेवी	अच्छि (अर्चिस्) आंच-जाळ

मास (मास) मास-मेसी
 शिद्विठव (शिद्विठ/सीठ) छपर कवन
 कर्नात-कोकिमो महादेवनी केकिमो
 कवड (कवड) कोरो-कोरी
 गडुड | (गड) गवडी
 गडुड | (गड) गवडी
 कड (कड) केड
 कण्ड (कण्ड) कण्डु-सठाल बाडडो
 कण्डपर (कण्ड) कण्डी
 कवड | (कवड) कवडी
 कवड | (कवड) कवडी
 केकर (केकर) केकर केर-केकर
 केड (केड) केटी केड
 कवन (कवन) कवन कवन

सामान्य शब्दाः

कवड (कवड) कवड
 कोकिम (कोकिम) कोकी
 कवड | (कवड) कवड
 कवड | (कवड) कवड
 कवड (कवड) कवड
 कवड (कवड) कवड कवड
 कवड | (कवड) कवड कवड
 कवड (कवड) कवड कवड
 कवड (कवड) कवड कवड
 कवड (कवड) कवड

महाड (महाराष्ट्र) मेटी केड
 महाड केड
 महाड (महाराष्ट्र) महाड
 कवडी-कवडी केड
 मूड (मूड) मूडी
 मोड (मोड) मोडी
 मुरंगम (मुरंगम) मुरंगम-
 मुरंगम-मोडी
 मड (मड) मुरंगम-मुरंगम
 मड (मड) मुरंगम-मुरंगम
 मुरंगम (मुरंगम) मुरंगम केड
 मुरंगम | (मुरंगम)
 मुरंगम | (मुरंगम)
 मुरंगम-मुरंगम केड

(मान्यतराति)

कवड (कवड) कवड-कवड-कवड-
 कवड
 कोकिम (कोकिम) कोकिम-कोकिम
 कोकिम | (कोकिम) कोकिम-
 कोकिम | (कोकिम) कोकिम-
 कोकिम केड
 कवड (कवड) केड
 कवड (कवड) कवड-कवड-कवड
 कवड
 कवड (कवड) कवड
 केड (केड) केड
 केड (केड) केड
 केड (केड) केड

संख्यासूचक विशेषण

पहम (प्रथम) प्रथम-परधम	
विइथ विइज्ज दुइय दुइज्ज	} (द्वितीय) बीजु -दूजु
तइय तइज्ज	
चउत्थ (चतुर्थ) चोथु	
पचम (पञ्चम) पांचमु	
छट्ट (षष्ठ) छट्टु	
सत्तम (सप्तम) सातमु	
अट्ठम (अष्टम) आठ्ठु	
नवम (नवम) नवमु	
दसम (दशम) दशमु	

सवाय (सवाद) सवायु-सवा	
दियइठ्ठ दिवइठ्ठ	} (द्वितीयार्ध) जेमां एक आखु अने बीजु अडधु छे ते-दोढ
अइठ्ठीअ अइठ्ठीइअ अइठ्ठीइज्ज	
अदधुदठ्ठ (अर्धचतुर्थ) जेमां त्रण	
	आस्ता अने चोथु अडधु छे ते-ऊठ-साडात्रण
पाय (पाद) पा-चोधो भाग	
अड्ड अड्डे	} (अर्ध) अडधु
पाऊण (पादोन) पोणु-पोणो भाग	

अन्यय

१अहव अहया	} (अथवा) अथवा
अघस्स (अवश्यम्) अवश्य- अचूक	
अत्थ (अस्तम्) आयमवु-अदर्शन	
एगया (एकदा) एकवार	
कहिं, कहिं (कुत्र) क्या-कहीं	

आम (आम) हा-स्वीकार
अंतो (अतरु) अ दर
इओ (इत) आधी, एधी, वाक्मनो
आरम, आ वाजुधी
केवलं (केवलम्) केवळ-नकरं
तहिं, तहिं (तत्र) स्यां-तहीं

१उपयोग-‘एथ तुम अहवा सो भागच्छट’ अर्थात् ‘अहीं तु अथवा ते आवो’

संख्यासूचक विशेषण

पहम (प्रथम) प्रथम-परथम	} (द्वितीय) वीजु -दूजु
विइय विइज	
दुइय दुइज	
तइय तइज	
चउत्य (चतुर्थ) चोथु	} (तृतीय) त्रीजु
पचम (पञ्चम) पांचमु	
छट्ट (षष्ठ) छट्टु	
सप्तम (सप्तम) सातमु	
अठ्ठम (अष्टम) आठमु	
नवम (नवम) नवमु	
दसम (दशम) दशमु	

सवाय (समाद) सवायु-सवा	} (द्वितीयार्ध) जेमां एक
द्वियड्ड दिवड्ड	
	आखु अने वीजु अडघु छे ते-दोढ
अड्ढीअ अड्ढीअ	} (अर्धतृतीय) जेमा वे
अड्ढीअज्ज	
	आखां अने त्रीजु अडघु छे ते-अढी
अद्घुट्ट (अर्धचतुर्थ) जेमां त्रण	
	आखां अने चोथु अडघु छे ते-ऊठ-साडात्रण
पाय (पाद) पा-चोथो भाग	
अड्ड अड्ड	} (अर्ध) अडघु
पाऊण (पादोन) पोणु-पोणो भाग	

अव्यय

अहव अहवा	} (अथवा) अथवा
अवस्स (अवश्यम्) अवश्य- अचूक	
अत्य (अस्तम्) आयमवु-अदर्शन	
पगया (एकदा) एकवार	
कहि, कहिं (कुत्र) कया-कही	

आम (आम) हा-स्वीकार
अंतो (अतर) अ दर
इओ (इत) आथी, एथी, वाक्यनो आरभ, आ वाजुधी
केवलं (केवलम्) केवळ-नकरं
तहि, तहिं (तत्र) त्या-तही

१उपयोग-‘एत्य तुम अहवा सो आगच्छत’ अर्थात् ‘अहीं तुं अथवा ते आवो’

धातु

कल्पये (कल्पि+इ) कल्पेत् क्तु
 चार कल्पयुं
 पठि+कञ्च् (पठि+कञ्) कप्तु
 -स्वीकारु
 क्सेच् (क्से) क्सेत् क्तो, क्सेत्
 क्तु
 खा+घम् (खा+घम्) खात्तुं
 मर्हि+ङ् (मर्हि+ङ्) मर्हि-
 क्तव मेकत्तु-कृषी क्तु
 एच् (एच्) एचत् क्तवी-कृषु
 परि+घञ् (परि+घञ्) परिक्त्वा
 क्से-कत्त एत्त क्त चार
 क्से क्तु

र्त्सि+प+भाङ्च् (वृत्+प्र+भाङ्+ङ्)
 क्से र्त्से क्तु
 खा+घञ् (खा+घञ्) खात्तव क्तु-
 क्तव क्तु
 परि+दैच् (परि+दैच्) क्से क्तो
 सि+इङ् (सि+इङ्) क्तु-
 सि+घञ् क्तव क्तो
 प+कञ्च् (प+कञ्) पक्तुं-
 क्तु
 सम्+खा+समा+दैच् (सम्+खा
 +रम्) सम्कर्त्तव क्तो-क्तु
 पि+म्बिञ्च् (पि+म्बिञ्) पिर्त्त
 क्तो

तेजोमो ए मयेडो एगेडो डे
 घोडो पोठिवो मरे ऊँड
 घान्प कारो
 ममारा बनेषीमो पुष बरसे
 बरसे चन पामरो
 तमारा माईप पोताना
 ममाईने सबायु मात्तुं
 मडो बरसे माडा चन मासे
 नने दोड दिबने ममे
 भाकतुं

तमारो ममाई दिबसे दिबसे
 मिर्त्त पामे के तेजी तमारो
 कुतुंर चोर पामे के
 पांममे के माडमे दिबसे
 ते मरो
 मुक्ति मरपमो पाट पाम्मो
 ममे पितामे कुपित बहि
 क्सीयुं
 कोपायी मंदर साडाचन के
 ममे शम्पो बोधीयुं
 बापमी मांभमा शीवैड पडसे
 एक्कार सातमे बरसे ते
 दातारे क्तु पय मात्तुं

सुरदूटीभा कोहं न काहिति
 तुम्हे सोरद्वीए घोडप
 वषखाणेह
 सोवण्णिओ दहणसि तंव
 खिवित्था
 मूओ केषलं कजिअं पाहिइ
 दुवारसि कोहल पडिहिइ
 गड्ढो तुरंगमो य दोन्नि
 भायरा संति
 दिणे दिणे तुमं आसं च
 पक्खालिस्स
 तेल्लेण दीवा दीवेहिति
 सो तुज्झ भाया तस्स जा-
 माऊहिं सह गच्छीअ

तस्स पिउणो भाउणो य
 जोव्वण विघट्ठीअ
 मरहदूटीभा लोहं चयति
 सत्तमंसि वरिससि आगमिस्सं
 मम भाउणो भाल विसाल
 मत्थि
 तस्स छट्ठो भायरो न परि-
 व्वयिहिण
 अहं विइज्जे दिणे दीवेहं
 पापहिमि
 मम वहिणीवई एगया धणं
 संपाउणित्था
 पिअ ! मम वयण न सुणि
 हिसि ?

पाठ १५ मो

विषयर्थं अने आज्ञार्थं

प्रत्ययो

एकवचन

बहुवचन

१ पु० १मु
 २ पु० १सु } (स्व)
 हि } (हि)
 इज्जसु २ इज्जहि इज्जे
 ३ पु० १उ } (तु)
 तु }

१मो
 १इ (ध्वम्)
 १न्तु (अन्तु)

पश्चिमोत्तरार्ध विम्बर्षतुं वीरुं नाम धरती के बने जाइवर्षतुं वीरुं नाम पंचमी के अष्टम्यां जाचान् द्वैपत्तये च, एव नाम स्त्रीधरेण के. पश्चिमीय व्याकरणमा विम्बर्षतुं नाम विविचिन् के बने जाइवर्षतुं नाम लोद के

इच्छासूचन, विवि मिमंत्रण आसन्नन जघीर, एवम अर्षण प्र, कष्टुड जगदर बने जघीरि आरुता अर्षेति सुवचना विम्बर्ष बने जाइवर्षता अर्षवोली प्रवोय वाच के ते अर्षेक जर्षवी याहिरी एव प्रवानी के

- १ इच्छासूचन- इ इच्छु तु ते नोक्त करे एता अर्षवी सुवचा ते इच्छासूचनः इच्छामि च सुवच
- २ विधि-वीरुं अर्षण करीः वी अर्षं सिम्बर्ष - ए अर्षणे वीरुं
- ३ मिमंत्रण-अर्षण अर्षा वी प्रवृत्ति न करवार वीरुं मावीरार वाच एवी प्रवणा इवेक एवी कुवड - वी वाच एवमा करो
- ४ आसन्नन अर्षण अर्षा वी प्रवृत्ति करी के न करवी ए इच्छा अर्षण एवी प्रवणाः एव अर्षवोली - अर्षी वीरुं
- ५ अर्षीरुं अर्षण अर्षण- एव पञ्च - अर्षे वीरुं
- ६ अर्षण-एव अर्षण वी वाच वि अर्ष वाचरुण कष्टुड अर्षण अर्षण - इ इ अर्षण वीरुं के अर्षण वीरुं ।
- ७ अर्षण माचनी अर्षण अर्षण अर्षण - अर्षी अर्षण के इ अर्षण वीरुं
- ८ अर्षण-अर्षण अर्षण अर्षण अर्षण - अर्षणे करो

९ अनुज्ञा-निमणुक-‘ भव हि अणुज्ञाओ घड कुणउ ’-‘ तमे निमा-
एला छो, घडाने करो ’

१० अवसर-समय-‘ भवओ अवसरो घड कुणउ ’-‘ तमारो अवसर छे
घडाने करो ’ अर्थात् तमारो काम करवानो समय थई गयो छे एटले
काम करो

११ अधीष्टि-मान साथेनी प्रेरणा-‘ भव पढिओ वय रक्खउ ’-‘ तमे
पढित छो, व्रतने साचवो ’

धातु

वर्ज् (वर्ज्) वर्जवु-तजी देखु
कोव् (कोप्) कोपाववु
सेव् (सेव्) सेववु-घारण करवु
आश्रय लेवो

छिद् (छिनद्) छेदवु-हणवु-मारवु

लभ् (लभ्) लाभवु-मेळववु

भव् (भव्) थवु-होवु

गवेस् (गवेष्) गवेषवु-शोधवु

वि+किद् | (वि+किद्) वेरवु
वि+क्ष् |

वि+प्प+जह् (वि+प्र-जहा) त्याग
करवो-दूर करवुं

कप् (कल्प्) खपवु-उपयोगमा लेखु

हण् (हन्) हणवु

कुव् (कुरु) करवु

पास् | (पश्य) जोवु
पस्स् |

सं+जल् (स+ज्वल्) वळवु-
कोप करवो
उव+भास् (उप-आस्) उपासना
करवी

गच्छ् (गच्छ्) जवु-पामवु

भा (भी) बीवु

जिण् (जि) जीतवु-जय मेळववो

खल् (स्खल्) स्खलित थवु,
दूर थवु

नि+द्घुण् (निद्+घुना) खखेरवु-
दूर करवु

वस् (वस्) वसवु-रहेवु

प+माय् (प्र+माद्य) प्रमाद
करवो-आळस करवी

वि+णस्स् (वि+नदय) वणसी
जवु-नष्ट थवु-वगडवु

आ+लोद् (आ+लुट्य) आळोटवु

१ उपर्युक्त तथा प्रत्ययो समागतां धातुना अकारान्त भेदना भव्य 'अ' नो 'ए' विकल्पे धाप के वेमके—

इस् + अ - इस् + अ + अ = इसेअ इसाअ
 इस् + मो - इस् + अ + मो = इसेमो इसमो
 [अ विकल्पे माटे शुभो पाठ १ नि १]

२ प्रथम पुङ्गना प्रत्ययो समागतां धातुना अकारान्त भेदना भव्य 'अ' नो 'आ' तथा 'इ' विकल्पे धाप के वेमके—

इस् + मु - इस् + अ + मु = इसामु इतिमु, इत्तमु

३ अकारान्त भेदने समागता 'हि' प्रत्ययना प्रायः १ शेष धाप के भवे कर्पाय ए समागता भव्य 'अ' नो 'आ' एव धाप के.

इस् + अ + हि = इसहि गच्छ् + अ + हि = गच्छहि

४ जोरक अ प्रयोगमां बीजा पुङ्गना (एवमचनयो) 'अ' के 'तु' प्रत्यय समागतां पूर्वना 'अ' नो 'आ' एव धाप के

वेमके—सुप् + अ + अ = सुप्ताअ सुप्यअ सुभेअ

रूपात्म्यान

एभ्यश्च

नूरभ्य

१ पु इसमु इसामु इतिमु, इत्तमु इसमो, इसामो इतिमो, इत्तमो

२ पु० इसत्तु इत्तेत्तु, इत्तेत्तत्तु इसादि, इसादि, इत्तेत्तदि इसेत्ते इत्त

इसात्, इत्तेत्

३ पु० इसत् इसेत् इत्तत् इत्तेत्तत् इत्तेत्तत्, इत्तित्

इसत्तु इत्तेत्तु

सर्वे पुङ्गय | इत्तेत्तत्
 सर्वे अचन | इत्तेत्तत्

[उइ उजा माटे शुभो पाठ ३]

हो

१३ म् पाठमा (जुओ पातु १०६) बतान्या प्रमाणे प्रत्येक स्वरांत भातुना विकरणवाळां अने विकरण विनानां अगो वनाववा अने ए तैयार थएला अगो द्वारा प्रस्तुत विध्यर्थ अने आज्ञार्थना रूपो साधी लेवां जेमके — हो (विकरण विना)

१ पु० होमु

होमो

होअ (विकरणवाळु)

१ पु० होअमु

होअमो

होआमु

होआमो

होइमु

होइमो

होएमु

होएमो

२ पु० होअसु,

होअह

होएसु,

होएह

होएजसु,

होआहि

होअहि,

होएज्जहि,

होएज्जे

होअ

पूर्व प्रमाणे 'हो' वगेरे बघां स्वरांत भातुओना अगो वनावी मिष्वर्भ अने आज्ञार्थनां बघां रूपो साधवानां छे

सामान्य शब्दो (नरजाति)

आयरिय (आचार्य) आचार्य-
धर्मगुरु, विभागुरु

पाण (प्राण) प्राण-जीव

पाणि (प्राणिन्) प्राणी

असंजम (असंयम) असंयम

अप्प (आत्मन्) आत्मा-आप-
पोते

चित्त (चित्र) एक सारबितु नाम

बोञ्ज (बज्ज) बीजो

भारय (भारक) भारो

हरिण (हरिण) हरण

दाडिम (दाडिम) दाडम

तिल (तिल) तल

छेअ (छेद) छेदो

बोक्कड (बर्कर) बोक्कडो-बक्करो

गव्भ (गर्भ) गाभो

पायय (पादक) पायो

वंसअ (वशक) वासो-पीठ

नाम्पतरवाति

सावर्द्ध (सम्प) सापञ्चापि
 सासुरय (सम्प) सासुर-
 सासुरालु पर
 सिवाय (सिवाय) साव-सम्प
 सिहाय (सिहाय) सासुरं सम्प
 सट-सम्प
 भंडय (भन्डय) सट
 पुराण (पुराण) पञ्च

सङ्घ (सम्प) सात
 सङ्घट्टय (सङ्घट्टय) सौं-
 सार सङ्घ
 वेण्ट (वेण्ट) वेण-सम्प
 सिट्टय (सिट्टय) सौं
 मोल्लिम (मोल्लिम) सौं
 समिम (समिम) सौं-सम्प
 पय (पय) सौं

विशेष

कण्ड (कण्ड) कण्ड
 पोण्ड (पोण्ड) पोण्ड-पोण्ड
 पण्ड (पण्ड) पोण्ड-पोण्ड
 कण्डरम (कण्डरम) कौरण्ड
 कण्डरस (कण्डरस) कौरण्ड
 मेहाण्ड (मेहाण्ड) मेहाण्ड-मेहाण्ड
 मेहाण्ड
 छाण्ड (छाण्ड) छाण्ड-
 छाण्ड
 जण्ड (जण्ड) जण्ड-जण्ड

रसाण्ड (रसाण्ड) रसाण्ड-
 रसाण्ड
 रण्ड (रण्ड) रण्ड-रण्ड
 कण्ड (कण्ड) कण्ड-कण्ड-सम्प
 कण्ड-कण्ड पण्ड
 कण्ड-कण्ड (कण्ड)
 सिण्ड (सिण्ड) सौं-सम्प
 भण्डियण्ड (भण्डियण्ड) भण्डियण्ड-सम्प
 ठण्डियण्ड (ठण्डियण्ड) ठण्डियण्ड-सम्प
 तण्ड (तण्ड) तण्ड-सम्प

सम्प

पण्ड (पण्ड) पण्ड
 पण्ड (पण्ड) पण्ड-पण्ड
 पण्ड (पण्ड) पण्ड-पण्ड

सण्ड (सण्ड) सण्ड
 सण्ड (सण्ड) सण्ड-सण्ड
 सण्ड (सण्ड) सण्ड-सण्ड

तुं हृडामे न हणजे
 ते पापप्रवृत्तिने न करे
 हे चित्र ! जा अने हरणने
 शोध
 मुनि असंजमने वरें
 तुं चौटामां जा अने दाड
 मने लाव

पोते पोताने शोध, बहार
 न भम
 तेनां बधा शल्यो बळो
 ब्राह्मण ! घोकडानो होम न
 कर पण तलनो होम कर
 सर्व भूतोमां प्रेम करो
 प्राणीना प्राण न हणो
 घोदा उपर पलाण राख

सावज्जं वज्जउ मुणी
 ण कोवउ आयरिय
 न हण पाणिणो पाणे
 संनिहिं न कुणउ माहणो
 संबुडो निदधुणाउ पावस्म
 रज
 सब्व गंथ वलह्व च विप्प
 जहाहि भिक्खू !
 कि नाम होउज त दम्प्रय
 जेणाह पाणा दुक्खं न
 गच्छेज्जा
 गच्छाहि ण तुम चित्ता !

वित्तेण ताणं न लहउ पमत्ते
 उत्तमदुट गवेसउ
 वसामु गुरुकुले निष्ठत्रं
 असज्जम णवर न सेवेज्जा
 भिक्खू न कमवि छिंदेह
 चालस्स चालत्त पस्स
 चालाण मरण असहं भयेज्ज
 सुयं अहिद्विज्जा
 गोयम ! समयं मा पमाउ
 अवि पय धिणस्सउ अन्नपाणं
 न य ण दाहामु तुम नियठा !

पाठ १६ मो

विभ्यर्षे (पाठ)

विभ्यर्षेण क वाच अचरी वा नीने आने हे।

१ पु आमि उआमो

२ पु उआसि उआह
इआसि

३ पु० कए उअ उआ
ए
एए
उअ
उआ

एवंपुएए } उअह
सर्ववचन }

अ हे वा अदिवाका अचरी अचरार्थे एवेम वाच्ये
अच अ'मो ए अने ए वाच हे वेदके:-

इसु

१ पु० इसिउआमि इसिउआमो
इसेउआमि इसेउआमो

२ पु इसिउआसि इसिउआह
इसेउआसि इसेउआह
इसिउअसि
इसेउअसि

૩ પુ૦ હસિજ્જપ
 હસેજ્જપ
 હસે
 હસેય
 હસિજ્જ
 હસેજ્જ
 હસિજ્જા
 હસેજ્જા

હસિજ્જ, હસેજ્જ
 હસિજ્જા, હસેજ્જા

સર્વ પુરુષ } હસિજ્જહ
 સર્વ વચ્ચન } હસેજ્જહ

‘હો’નું વિકરણવાલું ‘હોઁ’ ળગ થાય. તેનાં રૂપો ‘હસ્’ પ્રમાણે જાણવાં અને એ રીતે વિકરણ લગાડેલાં તમામ સ્વરાંત ધાતુનાં રૂપો જાણવાં

વિકરણ વિનાનાં ‘હો’નાં રૂપો આ પ્રમાણે

૧ પુ૦	હોઞ્ઞામિ	હોઞ્ઞામો
૨ પુ૦	હોઞ્ઞાસિ હોઞ્જ્જસિ	હોઞ્જ્જાહ
૩ પુ૦	હોઞ્જ્જળ હોપ હોપ્પ હોઞ્જ હોઞ્જા	હોઞ્જ હોઞ્જા

સર્વપુરુષ } હોઞ્જ્જહ
 સર્વવચ્ચન } હોપ્પ્જ્જહ
 દોઁઞ્જ્જહ | (વિકરણવાલું)

बाल शङ्कणां वसराण्यं वीरां वैश्वर्यं नमिषन्ति कपोः

(कुर्यात्)		कुर्यात्
(कुर्याः)		
(सिद्ध्य्यात्)		सिद्धे
(समिठापयैत्)		समिठाये
(समिमायेत्)		समिमासे
(स्यात्)		{ सिष्या
		{ सिष्ठा
(आच्छिष्यात्)		अच्छे
(आमिष्यात्)		अमिषे
(ह्यात्)		ह्यिया

विनात् एते वीरे क्वापैक्यं वस्योः पंच हीन एव वा चम्प्यं
क्वापैक्यं निष्पन्नं शङ्कणीयो ज्ञेयं च् इति हे

उभ		चम्प्य	—	इत्त कुर्यात्	—	पाईं तुं करे
अधि						

अथा के वस्यन्ता अथवा वातुयो ज्ञेयः

सहृद् (घातु) — 'सहृदामि सो पाई पाडिञ्ज' — नञा
राणु तुं न पाठने मये

समाधे/स सुवं न सुजिगञ्जसि — संमाधना करे तुं तुं
नहीं मये

इ नाये अत्रपात्तच अत्र क्व सप्त् (काल वैना अथवा
अथवा अने)

हाडो अं मजिगञ्जामि	—	वस्यत् के हुं मनुं
वेसा अं गापञ्जसि	—	वेसा के तुं गा

वक्रों, ज्यांरं एव क्रिया र्थीनी क्रियानु कारण होय त्यां पा आ पाठमा कावेना विध्यं प्रत्ययो पा वराय छे -

‘अइ गुरु उवासेय सत्यन्तं गच्छेय’ — ‘लो गुरुनी उपासना करे तो शास्त्रनो छेडो पामे’

धातुओ

उव+णी (उप+नी) पासे लडे जडुं
पह्+ण्यिण् (प्रयर्पग-प्रति+अर्पण)

पाडु सौपडु

पडि+नी (प्रति+नी) पाडु देवु-
पडि+णी सासु देवु-वडले देवु

चड (श्) वरुं-स्वीकारु-वरदान
टवु

साड् (वाप्) वावडुं, ववरावडु

तूर (त्वग्) त्वरा कर्की-शपाटा

वध जडु

सं+टिस् (सम्+टिश्) सडेशो
आपवो-सूचन करवु

उव+डस् (उप+दर्श) देखावडु-
पासे जडेने बतावडु

अणु+जाण् (अनु+जाना) अनुजा
अणु+जाणा आपवी-ममति आपवी

सं+वड् (सम्+वर्ष) सवर्वन
कडु पोपडु-साचवडु

चिणा (चिनु) चगडु-एकडु
कडु

क्रियातिपत्ति

ज्यांरं परस्पर संकेतवाळा ये वाक्योन एक सयुक्त वाक्य वनेल्लं होय अने तेमां ज्ञानी वझे क्रियाओ कोडे मात्र साकेतिक क्रिया लेवी रुधक्य मानती होय त्यांरं क्रियानिपत्तिनो प्रयोग थाय छे क्रियातिपत्ति एवळे क्रियानी अतिपत्ति-असमवितता क्रियानी असमवितताने सूचववा अ क्रियानिपत्तिनो उपयोग थाय छे

प्रत्ययो

सर्वपुल्य | सर्ववचन | —न्तो, माणो, उज्ज, उजा (हे० प्रा० व्या० ८३१

१७१ तथा १८०)

एकवचन

मच्—मर्षतो मर्षमाप्नो
हो—होर्षतो होर्षमाप्नो
होतो होर्षमाप्नो

मच्—मर्षेज्ज, मर्षेज्जा

हो—होर्षेज्ज होर्षेज्जा होर्षेज्ज होर्षेज्जा

बहुवचन

मर्षता मर्षमाप्ना
होर्षता होर्षमाप्ना

[वाचा—वाचीवाचिणी म्नी म्ना तथा माची क्ने पाप्य क्पनी
क्यक्यपाप्य के काना क्यचीक्यचिणी स्त्री तथा क्यिवाचिसीचिणी
बहुवचनी प्रयोग कर्त्तव्यार्थ के नीलाना म्नी कानो क्तं क्ती
के का क्तं स्त्री क्तान्या के से वाच क्तलापी क्यक्यवार्थ के ।]

मुनि पापने ज्ञे
वाचापेने कोपावना तदि
केतपनी वी वाच
भर्षेवा क्यम मादे त्वरा कर
ह्युं तुं धर्म मादे च
वापरे
पुत्र मने तो पंडित पाप
(क्लिवाति)

धर्या रज्जुं हूं से सत्व
बचमने बोडे
समय के हूं प्त मेगुं कर्ष
धावे हूं तु सारा क्यम
मादे संमति वापे
शिष्यने गुस्वी पादे धर्ष का
तने मत मादे सूचन कर्ष

चित्तन ताव न कर्म पमते
वसे गुठकुळे त्रिपथ
उत्तमहू गवैसय
शेवमा ! समर्थ मा पमायय

वाङ्मार्थ मरुषं अत्तर्ष मने
सावज्जं बज्जय मुपी
वीचो होती तथा मीप
पारी बरुषती

न कोवप आयरियं
संनिर्हिं न कुव्विज्जा
संबुडो निद्धुणे पावस्स
मलं

सव्वं गधं कलह च विप्प
जहेय मिप्पसू
रावणो सील रक्खतो तथा
रामो त रक्खंतो

पाठ १७ मो

आकारांत, इकारांत, ईकारांत अने उकारांत
नामो [नारीजाति]

प्राकृतमां आकारांत नामो वे जातना छे -केटलाक आकारांत नामोनु मूळ रूप अकारांत होय छे अन नारीजातिने लीधे तेओ आकारांत वनेला होय छे त्यारे बीजा केटलाक आकारांत नामोनु मूळ रूप तेवु आकारांत नथी होतु पण तेओ बीजी रीते व्याकरणना नियमने लीधे आकारांत थयेला होय छे

आ नीचे ए वझे आकारांत नामोनां रूपो आपेलां छे जेओ मूळथी अकारांत नथी तेमनु सबोधननु एकवचन प्रथमा विभक्ति जेवुं ज थाय छे त्यारे जेओ मूळथी अकारांत छे तेमनु सबोधननु एकवचन करतां तेमना अत्य 'आ'नो विकल्पे 'ए' करवामा आवे छे - (हे० प्रा० व्या० ८।३।११) ए वेय नामोनां रूपोमां बीजो कशो मेद नथी.

जेमके — ननान्दु — नणंदा — हे नणदा !

अप्सरस् — अच्छरसा — हे अच्छरसा !

सरित् — सरिया — हे सरिया !

सरिमा — हे सरिमा !

वाच् — वाया — हे वाया !

}	मूळ अक्षरपंथ	माळ — माळा — हे माळे ! हे माळ्य !
		रम — रमा — हे रमि ! हे रमा !
		कान्त — कान्ता — हे कान्ति ! हे कान्ता !
		रेवत — रेवता — हे रेवते ! हे रेवता !
		मेष — मेषा — हे मेषे ! हे मेषा !

रूपाक्षरानाम

माळा [मूळ अक्षरपंथ]

एकवचन

बहुवचन

- | | |
|--|---|
| १ माळा=माळ्य (माळा) | १माळा+इ=माळाइ
माळा+ओ=माळाओ |
| २ माळा+म्=१मास (माळाम्) | १माळ्य=माळा (माळा)
माळा+इ=माळाइ
माळा+ओ=माळाओ
माळ्य=मासा (मासा) |
| ३ १माळा+अ=माळाअ (माळया)
माळ्य+इ=माळ्याइ
माळा+ए=माळाए | माळा+इ=माळाइ
माळा+ओ=माळाओ
माळ्य+हि=माळ्याहि (माळ्यामि)
माळ्य+हि=माळ्याहि
माळा+हि=माळाहि |
| ४ माळा+अ=माळाअ
माळा+इ=माळाइ
माळा+ए=माळाए (माळाए) | माळा+अ=माळाअ (माळाअम्)
माळा+अ=माळाअ |
| ५ १माळा+अ=माळाअ (माळापा) | |

१ हे अ वा २।३।२ । २ हे अ वा १।३।५। वा

१।३।५ । हे अ वा १।३।५। वचनी विचरिणी अक्षरपंथ

वाचने वाच्ये इ ओ 'ते' अने 'तो' अक्षरी वच बरी अक्षरीय

त्याम वाच्ये वाच्ये इ ओ वाच्ये—वाच्ये वाच्ये वाच्ये वाच्ये

माला+इ=मालाइ

माला+ए=मालाप

माला+हितो=मालाहितो

माला+हितो=मालाहितो

(मालाभ्य)

माला+सुतो=मालासुतो

६ माला+अ=मालाअ

माला+ण=मालाण (मालानाम्)

माला+इ=मालाइ (मालाया)

माला+ण=मालाण

माला+ए=मालाप

७ माला+अ=मालाअ(मालायाम्)

माला+सु=मालासु (मालासु)

माला+इ=मालाइ

माला+सु=मालासु

माला+अ=मालाप

सं० माला=माले ! (हे माले !) माला+उ=मालाउ

माला=माला !

माला+ओ=मालाओ

माला+माला (माला)

वाया (वाक्) [मूल अकारांत नहि]

‘वाया’नां वधां रूपो ‘माला’ जेवां ज करवानां छे विशेषता मात्र संबोधनमां छे ‘हे वाया!’ ए एक ज रूप थाय, पण ‘वाये!’ ‘वाया!’ एवां वे रूपो न थाय

इकारांत

बुद्धि

१ बुद्धी (बुद्धि)

बुद्धि+उ=बुद्धीउ

बुद्धि+ओ=बुद्धीओ (बुद्धय)

बुद्धि+बुद्धा

१ बुद्धिः (बुद्धिम्)	१ बुद्धि+इ=बुद्धीइ बुद्धि+भो=बुद्धीभो बुद्धि+बुद्धी (बुद्धी) बुद्धीहि बुद्धीहि (बुद्धिमि) बुद्धीहि
२ बुद्धीमा बुद्धि+भा=बुद्धीभा (बुद्ध्या) बुद्धीइ बुद्धीए	बुद्धीहि (बुद्धिमि) बुद्धीहि
४ बुद्धीम बुद्धीमा बुद्धीइ (बुद्धये) बुद्धीए (बुद्धये)	बुद्धीए (बुद्धीनाम्) बुद्धीए
५ बुद्धीम बुद्धीभा (बुद्ध्या) बुद्धीइ बुद्धीए (बुद्धे) बुद्धीहितो	बुद्धीहितो (बुद्धिम्या) बुद्धीधृतो
६ बुद्धीम बुद्धीभा (बुद्ध्या) बुद्धीइ बुद्धीए (बुद्धे)	बुद्धीए (बुद्धीनाम्) बुद्धीए
७ बुद्धीम बुद्धीभा (बुद्ध्याम्) बुद्धीइ (बुद्धी) बुद्धीइ	बुद्धीधु (बुद्धिषु) बुद्धीधु
सं बुद्धी बुद्धि (बुद्धे !)	बुद्धीइ बुद्धीभ्यो, बुद्धी (बुद्ध्या)

ईकारांत

नदी

१ नदी (नदी)	नदी+आ=नदीआ १ नदीउ २ नदीओ (नद्य) नदी
२ नदि३ (नदीम्)	नदीआ नदीउ नदीमो नदी (नदीः)
३ नदीअ ४ नदीआ (नद्या) नदीइ नदीए	नदीहि (नदीभि) नदीहिँ नदीहिँ
४ नदीअ नदीआ नदीइ नदीए (नद्ये)	नदीण (नदीनाम्) नदीण
५ नदीअ ५ नदीआ (नद्य) नदीइ नदीए नदीहितो	नदीहितो (नदीभ्य) नदीसुतो

१ हे० प्रा० व्या० ८।३।२८। २ हे० प्रा० व्या० ८।३।२७। ३ हे० प्रा० व्या० ८।३।३६। तथा ८।३।५। ४ हे० प्रा० व्या० ८।३।२९।
५. जुओ पृ० २१६ टिप्पण-४ नदीउ, नदीओ नदित्तो

६ मरीम मरीमा (मघा) मरीर मरीर	मरीम (मरीनाम्) मरीमं
७ मरीम मरीमा (मघाम्) मरीर मरीर	मरीम (मरीमु) मरीमं
सं० मरि ! (मरि !)	मरीमा मरीर मरीमो (मघा) मरी

ठकारांत

पेपु (पेडु)

१ पेपु (पेणु)	पेपुडर पेपुमो (पेपव) पेपु
२ पेपुं (पेडुम्)	पेपुडर पेपुमी पेपु (पेणु)
३ पेपुव पेपुमा (पेम्वा) पेपुह पेपुप	पेपुडे पेपुडे (पेणुमि) पेपुहि

- ४ घेणूअ
घेणूआ
घेणूइ
घेणूण (घेनघे, घेन्च)
घेणूण (घेनघे, घेन्च)
- ५ घेणूअ
घेणूआ (घेन्वा, घेनो)
घेणूइ
घेणूए
१घेणूड
घेणूओ
घेणूत्तो
घेणूहितो
घेणूहितो (घेनुभ्य)
घेणूसुंतो
- ६ घेणूअ
घेणूआ (घेन्वा, घेनो)
घेणूइ
घेणूए
घेणूण (घेनूनाम्)
घेणूणं
- ७ घेणूअ
घेणूआ (घेन्वाम्, घेनौ)
घेणूइ
घेणूए
घेणूसु (घेनुषु)
घेणूसु
- सं० घेणू,^२ घेणु (घेनो^१) घेणूड, घेणूओ (घेनघ)
घेणू

ऊकागत

वहू (वयू)

१ वहू (वधू) (हि० प्रा० व्या० वहुड, वहूओ (वध्व) (हि० प्रा०
८।१।११।) वहू व्या० ८।३।२७।)

२१६ टि० ४ २ हे० प्रा० व्या० ८।३।३८।

१ बहु (बहुम्) हि ऋ षा ॥३३१॥ षा ५)	बहुः बहुमी बहु (हि ऋ षा ॥३३१॥) (बहु)
२ बहुम् (हि ऋ षा ॥३३१॥) बहुना (बहुना) बहुर बहुप	बहुहि (बहुमि) बहुहि बहुरि
३ बहुम् बहुमा बहुर बहुप (बहुपै)	बहुप (बहुताम्) बहुपै
४ बहुम् बहुमा (बहुमाः) बहुर बहुप बहुः बहुमी बहुमी बहुरिती	बहुरितो (बहुम्प) बहुरितो बहुप (बहुताम्) बहुपै
५ बहुम् बहुमा (बहुमा) बहुर बहुप	बहुः (बहुः) बहुः
६ बहुम् बहुमा (बहुमाः) बहुर बहुप	बहुमी बहुः (बहुमाः) बहुः
७ बहुम् बहुमा (बहुताम्) बहुर बहुप	
८ बहु (बहुः) (हि ऋ षा १ १)	बहुमी बहुः (बहुमाः) बहुः

નામનુ અગ અને પ્રત્યયનો અક્ષર એ બને છૂટા પાઠીને જ જણાવેલાં છે અને સાથે એ ઉપરથી સાધિત અર્થાં દરેક રૂપો પણ જુદા જુદાં વતાવેલાં છે

આકારાંત, ઇકારાંત, ઈકારાંત, ઉકારાંત અને ઊકારાંત—નારીજાતિ—નામોનાં અર્થાં રૂપો તદ્દન સરસાં છે, જે ફેર છે તે નહિ જેવો છે એથી મૂળ અગ અને પ્રત્યયોનો વિભાગ—એ પદ્ધતિ એક જ સ્થળે મુકી એ અર્થાં સાધનિકા સમજાવેલી છે

રીર્ષ ઈકારાંત નામોને પ્રથમા અને દ્વિતીયાના બહુવચનમાં એક 'આ' પ્રત્યય નવો લાગે છે તથા આકારાંત સિવાય ઉક્ત અર્થાં નામોને તૃતીયા-થી સપ્તમી સુધીના એકવચનમાં પણ 'આ' પ્રત્યય અધારે લાગે છે—આપેલાં રૂપો જ આ ફેરફાર અતાવી આપે છે

એ ચારે પ્રકારનાં નામોનાં અર્થાં રૂપો તદ્દન સરસાં છે અર્થાં સસ્કૃત સાથેની સરસામણી અતાવવા અને વિશેષ સ્પષ્ટ કરવા તે અરેકનાં સર્વ રૂપો જાણવેલા છે તથા એ રૂપો દ્વારા અપાનાં પ્રચલિત રૂપોની સરસામણીનુ પણ અન અથ એમ છે

- ૧ 'તો' અને 'મ્' પ્રત્યય સિવાયના અર્થાં અર્થાં પ્રત્યયો લાગતાં પૂર્વનો સ્વર રીર્ષ અથ છે 'બુદ્ધીઓ', 'ધેણુઓ'
- ૨ 'મ્' પ્રત્યય લાગતાં પૂર્વનો સ્વર હસ્વ અથ છે: 'નદિ', 'બહુ'
- ૩ ય્યાં મૂળ અગ જ અપરવાનુ છે ય્યાં તેને રીર્ષ કરીને અપરવાનુ છે 'બુદ્ધી', 'ધેણુ'
- ૪ ઇકારાંત ઉકારાંતનુ સવોધનનુ એકવચન વિકલ્પે રીર્ષ અથ છે 'બુદ્ધિ !' 'બુદ્ધી !', 'ધેણુ !' 'ધેણુ'
- ૫ ઈકારાંત ઊકારાંતનુ સવોધનનુ એકવચન હસ્વ અથ છે 'નદિ !' 'બહુ !'

ससा (स्वस) स्यमा-वेन	सपया (सपय) सपय-
१वाया (वाच्) वाचा-वाणी	संपआ सपति
१सरिआ (सरित्) सरिता- सरिया नदी	चदिआ (चन्द्रिका) चांदनी, चट्टिका चांदी-रूपु
१पाडिब्या (प्रतिपदा) पाडिब्या पद्यो तिथि	चांदिमा (चन्द्रिका) चन्द्रमानी चांदनी
२गिरा (गिर) गिरा-वाणी	रच्छा (रथ्या) रथ चाळे तेवी
२पुरा (पुर) पुरी-नगर-नगरी	पहोळी शेरी-शेरी

[याद्री: 'अच्छरसा'ची मांडीने 'सपया' सुधीनां नामो मूळ अकारांत नधी, ण ध्यानमां रायवानु छे]

जुत्ति (युक्ति) जुक्ति-योजना	कित्ति (कीर्ति) कीर्ति-कीरत
रत्ति (रात्रि) रात	सिद्धि (सिद्धि) सिद्धि
माइ (मातृ) मा-माइ	रिद्धि (श्रद्धि) श्रद्धि-रध
भूमि (भूमि) भूमि-भों	संति (शान्ति) शांति
जुवइ (युवति) युवति	कनि (कान्ति) कांति
धूलि (धूलि) धूळ	खति (क्षान्ति) क्षमा
रइ (रति) प्रेम-राग	फति (कान्ति) गांत-इच्छा-होश
मइ (मति) मति	गउ (गो) गाय-गउ
दिहि (धृति) धैय	कच्छु (कच्छु) खाज-नवरज
धिइ	विज्जु (विद्युत्) वीजळी
सिप्पि (शुक्ति) छीप	उज्जु (श्रजु) सरळ
सत्ति (शक्ति) शक्ति	माउ (मातृ) माता
सति (स्मृति) स्मृति-सरत	दहु (दद्रु) घाघर-दराज
दित्ति (दीप्ति) (दीप्ति-तेज	चचु (चप्चु) चाच
पति (पठ्क्ति) पक्ति-पगत-पांत	गाई (गो) गाय
थुइ (स्तुति) स्तुति-थोय	घावी (वावी) वाव

कपली (कपली) केश
 नारी (नारी) नारी-नार
 रणवी (रणवी) रणवी-रेव
 राई (रात्री) रात
 चाई (बात्री चाई-कनरात्मनारी मात्र)
 कुमारी (कुमारी) कुमारी
 तदवी (तदवी) तदवी को
 समवी (समवी) समवी
 साहुवी | (साही) "
 तजुवी (तजुवी) फलवी-को
 हवी | (ही)-ही-हिरा
 बी |

बरिणी (बरिणी) बरेव
 बापावसी | (बापावसी) बापावसी
 बापावसी | -बापावसी का
 पिण्डी (पिण्डी) इपी
 पुडवी (पुडवी) "
 छाडी (छाडी) छाडी
 मिची (मिची) मिच्य-मिची इति
 मरु (मारी) बाह-बावी
 कनेर (कनेर) कनेर
 कनकं (कनकं) कोली
 मछाह | (मछाह) टपनी-
 काह | कान्नी
 बह (बह) बह

तेवी बीम ऊपर मरुत के
 अथे तापी बीम ऊपर
 डेर के
 तेमी साह मने आधिप
 आपो के ताह कस्याव
 पाओ
 पाय मने हापवी पूखनी
 माका बडे होमरो
 कीर्ति मने काववी मिदि
 मारे प्रपल करो

केने विवेकवी समझ मनी
 ते प्यु के
 हे बेव ! तापी कनेरवी
 मांजने सखी व बडे
 तेम ह बेव
 जाके पखो के तेपी बखर
 नहि मने
 पुन मने तो पखित बाप
 [कियारि*]
 बाकरामा बीमजी हमपा
 इवकरो एम ओरीव कर्

अञ्चेह कालो तूरंति राईओ
वरेहि वरं

हे धूआ ! जहेव देवस्स
वट्टिज्जासि तहेव पइणो
वट्टिज्जासि

खमह ज मए अवरद्धं
दीघो होंतो तथा अंधयारो
नस्सतो

चच्च, देहि से संदेसं, मा
रुयह

गच्छहण तुम्हे देवाणुप्पिया !
आहारमिच्छे मियमेसणिज्ज

समणो गिहाइं न कुव्विज्जा
खंति सेवेज्ज पडिय
मिअ कालेण भक्खए
तुम्हे गच्छतो तथा अम्हे
गच्छमाणा

तओ तस्स मा भाहि

उट्ठेह, वच्चामो

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा
पडिवंध करेह

पवहण जुत्तमेव उवणेहि

संदिसतु ण देवाणुप्पिया !
ज अम्हाणं कज्ज

पाठ १८ मो

प्रेरकमेद

प्रेरक प्रत्ययो

अ | (अय) (हे० प्रा० व्या० ८३१४९१)

आव | (आपय)

मूळ घातुने 'अ' 'ए' 'आव' अने 'आवे' प्रत्यय लगाडवाशी तेनु
प्रेरक अग तैयार थाय छे

कर + अ = कार

कर + ए = कारे

कर + आव = कराव

कर + आवे = करावे

લાગે છે અને આ 'અવે' પ્રત્યય લાગતા ઘાતુના ઉપાત્ય 'અ'ના 'આ' થાય છે કડ્ઠ + અવે = કારવે - (કારાપય) - કારવેઈ - (કારાપયતિ)

ઉક્ત રીતે ઘાતુમાત્રમાં પ્રરક અગો સાધી લેવાના છે અને તે રીતે સઘાણનાં પ્રરક અગોને તે તે કાઢના પુરુષવોધક પ્રત્યયો લગાડવાથી તેમનાં દરેક પ્રકારના રૂપાલ્યાનો તૈયાર થાય છે એ રૂપાલ્યાનો સાધવાની યઘી પ્રક્રિયા આગલા પાઠોમા આવી ગઈ છે છતાં ઉદાહરણરૂપે અહીં એક એક રૂપ આપવામાં આવે છે

પ્રરક અગ

રૂપ

વર્તમાનકાઢ

એકવચન

વહુવચન

આમ — આમમિ,
આમામિ
આમેમિ

આમમો, આમમો
આમિમો,
આમેમો

આમે — આમેમિ

આમેમો

આમાવ — આમાવમિ, આમાવામિ
આમાવેમિ

આમાવમો, આમાવામો
આમાવિમો આમાવેમો
ઈત્યાદિ

સર્વપુરુષ | આમેજ્ઞ આમેજ્ઞા
સર્વવચન | આમાવેજ્ઞ આમાવેજ્ઞા

ભૂતકાઢ

આમસી, આમહી, આમહીઞ, આમસુ, આમિસુ, આમિત્ય
આમેસી, આમેહી, આમેહીઞ,
આમાવસી, આમાવહી, આમાવહીઞ, આમાવસુ, આમાવિસુ, આમાવિત્ય
આમાવેસી, આમાવેહી, આમાવેહીઞ

(આ યઘા રૂપો એકવચન અને વહુવચન યજ્ઞેમાં યજ્ઞે પુરુષમા વપરાય છે)

मरिच्यञ्जल एङ्

आम—	आमिस्स	आमेस्सं	
	आमिस्सामि	आमेस्सामि	
	आमिहामि	आमेहामि	
आमे—	आमेस्स	आमेस्सामि,	आमेहामि, आमिहिमि
अमाच—	अमाचिम्मं,	अमाचेम्मं	
	अमाचिस्सामि,	अमाचेस्सामि	
	अमाचिहमि,	अमाचेहमि	
	अमाचिहिमि	अमाचेहिमि	
अमाचै—	अमाचैस्सं	अमाचैस्सामि	
	अमाचैहामि	अमाचैहिमि	
आम—	आमेउअ	आमेउआ	उर्ध्वपुङ्ग
अमाच—	अमाचिउअ	अमाचिउआ	उर्ध्वचन

आदाय

आम—	आममु	आमामु	आमिसु	आमेसु
आमे—	आमेमु	आमेहि,	आमे	
अमाच—	अमाचउ	अमाचनु		
अमाचै—	अमाचउउ	अमाचनु		

दिप्पय

आम—	आमिउआमि	आमेउआमि	
आमे—	आमेउअमि	आमिउअमि	
अमाच—	अमाचिउअइ	अमाचउअइ	
अमाचै—	अमाचउअइ	अमाचिउअइ	
आम—	आमिउअइ	आमेउअइ	उर्ध्वपुङ्ग उर्ध्वचन

क्रियातिपत्ति

- खाम— खामतो, खामेंतो, खामितो।
 खाममाणो, खामेमाणो
 खामे— खामतो, खामितो, खामेमाणो
 खमाच— खमाचतो, खमाचेंतो, खमाचितो
 खमाचमाणो, खमाचैमाणो
 खमाचे— खमाचेंतो, खमाचितो, खमाचैमाणो

आ प्रकारे प्रत्येक प्ररक अगने वधी जातना पुरुषबोधक प्रत्ययो लगादी तेमनां रूपो साधी लेवानां छे

प्रेरक सहायमेद अने वधी जातनां प्रेरक कृदतो वनाववा होय त्यारे पण प्रेरक अगनं ज ते ते सहायमेदी अने कृदतना प्रत्ययो जोधी रूपान्मानो साधवाना छे सहायमेद वगेरेना प्रत्ययोनी समज हवे पछोना पाठोमां आवनारी छे

घातु

उच+दस् (उप+दर्शय) देखाववु -
 पासे जइने बताववु

आ+साद् (आ+सृ-साग्) आमतेम
 अफळाववु -आमतेम लड जवु

अ+फ्र्योइ (आ+क्षोद्) खोत्वु -
 कापवु

उ+ल्लृ (उद्+ल्प्) गोलवु

जाव् (याप) वीताववु -यापन करवु
 आ+भोअ (आ+भोग) घ्यानपूर्वक
 जोवु

परि+नि+ञ्वा (परि+निर्+ञ्वा)
 शात करवु -ओलववु

अग्र (अघे) मूलववु -मूल्य
 करववु

१ हे० प्रा० व्या० ८।३।३२। नारीजातेमां 'खामती', 'खाममाणी' ग्वां रूपो फरवाना छे

कीर्ण (कीर्ण) कीर्ण करी-
रमट रणी

छोड़ छोड़तु

ताव (तव) तवतु - तवतु

ताम-वामतु

किण (कीर्ण) कीर्णतु - कीर्णतु
केतु

का+डा (का+ह) कावर करी

प+कट् (प+कट्) कटतु

स+ए (स+ए) सेतु

पञ्च (पञ्च) पञ्चतु - पञ्चतु

पञ्च (पञ्च) पञ्चतु

पञ्च (पञ्च) पञ्चतु

पञ्च (पञ्च) पञ्चतु

पञ्च (पञ्च) पञ्चतु

पिपुत्र (पिपुत्र) पिपुत्रतु - पिपुत्रतु

मुण (मुण) मुणतु

पिण्ड (पीव पीव)

उण उणतु

माभुण (माभुण) माभुणतु - माभुणतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु - पतु

प+ह (प+ह) पतु - पतु

प+ह (प+ह) पतु - पतु

प+ह (प+ह) पतु - पतु

प+ह (प+ह) पतु - पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

प+ह (प+ह) पतु

ओम्वाल् (उत्+प्वा) प्रावित
करवु
घग्गोल् (वि+उद्+गार-व्युद्गार)
वागोळ्वु
परि+आल् (परि+वार) परिभृत
करवु - वीटवु
पयल् (प्र+सर्) फेल्वु
नी+हर् (निर्+मर्) नीहरवु
नीसरवु
समार (सम्+आ+रच) समारवु
सर् | (पृ) स्रवु - नाश
सर् | करवो

सामान्य शब्दो [नरजाति]

घग्ग (खद्ग) खद्ग-तरवार
उप्पाश् (उत्पाद) उत्पाद-
उत्पात्ति
रस्सि (रदिम) राश-बळदनी
के घोटीनी राश
मुद्ग } (मृद्ग) मृद्ग
मिद्ग }
विचुअ (वृश्चिक) वाछी
भिग (मृक्) मृग-भमरो
मिगार (शृङ्गार) शृङ्गार-शणगार
निव (नृप) नृप-राजा
छप्पश् | (पद्पद) छपगो-
छप्पय | भमरो

गट् (घट) घटवु
जम्भा (जृन्म) यगासु खावु
तुवर् (त्वर) त्वरा करवी
पेच्छ् (प्र+ईक्ष) जोवु
चोपट् - चोपटवु
अहि+लस् | (अभि+लय) अभि
अहि+लव् | लपवु - इच्छा करवी
चट् (चट) चटवु
नि+फ्वाल् | (नि+क्षात्) नीखा-
नि+फ्खार | खु - धोवु
वि+च्छल् (वि+क्षल) वीछळ्वु -
धोवु

सज्ज (पद्ज) पद्ज-एक प्र
कारनी सर्
इसि (श्रपि) शपि
तव (स्तव) स्तव-स्तुति
नेह (स्नेह) स्नेह-नेह
सर (स्मर) स्मर-कामदेव
पाउस (प्रावृप्) पाउस-पावस
उग्मादनी ऋवु
वुत्तत (वृत्तान्त) वृत्तान्त-
समाचार
नत्तुअ | (नपृक) नाती-
नत्तिय | पीत्र
वुट्ट (वृद्ध) वृद्धो-घरदो

सामान्य (सामान्य) सामान्य
 मध्य (मध्य) एक प्रभावी
 शक्ति

केन्द्र (केन्द्र) केन्द्र-समाप्ति
 हरिकेन्द्र (हरिकेन्द्र) हरिकेन्द्र
 रात्रि

(नान्यतराति)

कुञ्ज (कुञ्ज) एक
 सितल (सितल) शीत-एक
 एक भाग
 सामान्य (सामान्य) सामान्य-
 शक्ति
 विद्यय (विद्यय) विद्य-शक्ति
 विद्य-शक्ति

कुञ्जस्य (कुञ्जस्य) कुञ्ज-
 कुञ्ज
 उष्यस्य (उष्यस्य) उष्य-सामान्य
 सामान्य (सामान्य) सामान्य
 सहाय्य (सहाय्य) सहाय्य
 सामान्य (सामान्य) सामान्य-सामान्य
 पुण्य (पुण्य)

[भारीराति]

गोरी (गोरी) गोरी-गोरी
 शक्ति
 शक्ति (शक्ति) शक्ति
 शक्ति (शक्ति) शक्ति
 शक्ति (शक्ति) शक्ति
 शक्ति (शक्ति) शक्ति
 सामान्य (सामान्य) सामान्य-शक्ति

गोरी (गोरी) गोरी-गोरी
 गोरी शक्ति
 रेखा (रेखा) रेखा शक्ति
 रेखा शक्ति
 रेखा शक्ति
 शक्ति (शक्ति) शक्ति-शक्ति
 शक्ति
 शक्ति (शक्ति) शक्ति-शक्ति
 शक्ति

विशेषण

सुख (सुख) सुख-सुख
 सुख (सुख) सुख-सुख
 सुख (सुख) सुख-सुख
 सुख (सुख) सुख

सुख (सुख) सुख-सुख
 सुख (सुख) सुख-सुख
 सुख (सुख) सुख-सुख
 सुख (सुख) सुख

निडूर (निडूर) नठोर

छट्ट (षट्ट) छददु

गुत्त (गुत्त) गुत्त-गोपवेल-सुरक्षित^१

सुत्त (सुत्त) सुतेल्

मुद्द (मुग्ग) मुग्ग

पुल्ल्य खीने चुकावे छे
माताय घालकने पसाळ्वाव्युं
नोकरो छोकरांने रमाहशे
सूतार लाकडाने छोलावत
तो संवाळु घात
राजाय धीने खरीदाव्युं
गोवाळो पशुने पाणी
पीवडावे

भाई वहेनने सासराने घरे
पाठवे छे
माता पुत्रोने माटे वरेणां
घडावशे
ते सारां कायों वडे कीर्तिने
फेलावे छे
शेठ चोमासा पहेलां घरने
समरावगे

सेदुठी सरीरम्मि तेहं
चोप्पडावइ
निवो कुमारं हत्थिम्मि
चडाविहिइ
मिच्चो मिन्नुण वाणं
अल्लिवावसी
इत्थीओ वेज्जस्म नरीर
देक्कवावन्ति
माया पुत्तं मिद्दुत्तं किम्मर
अण्हावेहिइ

नणंदा पुत्ति उंवावती^१
तया पुत्ती न रुवंती
विज्जत्थी अन्नं विज्जत्थिय
विहाणम्मि उद्दुत्तावेइ
गुरु सीसं पणामावइ
महावीरो गोयमं सरावइ
गोयमो लोणे धम्मं सुणावइ

घातुओ पण तेमना कर्मनी अविवक्षानी अपेक्षाए अकर्मक तरीके लेखाय छे ए बन्ने प्रकारना अकर्मक घातुओनो भावेप्रयोग थाय छे

कर्ता, क्रिया द्वारा जेने विशेषणने इच्छे ते कर्म-नानी मोटी बधी क्रियाओनु फळ जे प्रयोग कर्मने ज सूचित करे ते कर्मणिप्रयोग भावे अने कर्मणिप्रयोगनां अगो

भावसूचक अगो

बीह-बीहीअ
बीहिज्ज
उंघ-उंघीअ
उघिज्ज
कह-कहीअ
कहिज्ज

खा - खाईअ
खाइज्ज
लज्ज-लज्जीअ
लज्जिज्ज
बुइ - बुइीअ
बुइिज्ज

बोल्ल-बोलीअ
बोल्लिज्ज
हो - होईअ
होईज्ज

कर्मसूचक अंगो

पा - पाईअ
पाइज्ज
दा- दाईअ
दाइज्ज
झा- झाईय
झाइज्ज
ला- लाईय
लाइज्ज

पढ् - पढीय
पढिज्ज
कह्ढ-कह्ढीअ
कह्ढिज्ज
घह् - घह्डीय
घह्दिज्ज
खा - खाईय
खाइज्ज

कह् - कहीय
कहिज्ज
बोल्ल्-बोलीय
बोल्लिज्ज

ए रीते घातुमात्रनां भाववाची अने कर्मवाची अंगो बनावी लेवानां

हे अने तेव्हा वृत्त अन्वये हे ते कर्मणा पुरवोवक अन्वये अन्वये
तेव्हा अन्वये तेव्हा अन्वये हे:

कर्मप्रधान

माद्यप्रधान

वीहीअह वीहिउअह (वीयते)

वीह्+ईअ+इ-वीही-अह-अह-अह-अह-अह

वीह्+इउअ+इ-वीहि-उअह-उअह-उअह-उअह-उअह

सर्वपुरुष (वीहीपुअह वीहीपुअह)

सर्ववचन (वीहिउअह वीहिउअह)

माद्यप्रधान प्रयोगात् माद्य प्रिया-अ सुख हीन हे. अन्वये हे
द्वितीय वृत्त एसा अन्वये वही हे अन्वये वा तेवी अन्वये अन्वये
अन्वये अन्वये वही अन्वये हे द्वारा हे हे अन्वये वा अन्वये अन्वये
अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये
अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये अन्वये

कर्मप्रधान

मधीअह मधिउअह गये (मयते मय)

मध्+ईअ+इ-मधी-अह-अह-अह-अह-अह

१ मध्+इउअ+इ-मधि-उअह उअह उअह उअह

मधीवति मया (मयाते मया)

मधिउअति

मध्+ईअ+इ-मधी-वति-वति-वति-वति-वति-वति-वति-वति-वति

मध्+इउअ+इ-मधि-उअति, उअति-उअति-उअति-उअति-उअति-उअति-उअति-उअति-उअति

सर्वपुरुष | भणोषज्ज,
सर्ववचन | भणिज्जेज्ज,

पुच्छीयसि तुम (पृच्छथसे त्वम्
पुच्छिज्जसि

पुच्छ्+ईय+सि+पुच्छी-यसि,-येसि,-यसे,-येसे
पुच्छ्+इज्ज+सि-पुच्छि-ज्जसि, ज्जेसि,-ज्जेसे

पुच्छीयामि

पुच्छिज्जामि अह (पृच्छथे अहम्)

पुच्छ्+ईय+मि—पुच्छी-यमि,-यामि,-येमि

पुच्छ्+इज्ज=मि—पुच्छि-ज्जमि-ज्जामि,-ज्जेमि

सर्वपुरुष | पुच्छीयेज्ज, पुच्छीयेज्जा
सर्ववचन | पुच्छिज्जेज्ज, पुच्छिज्जेज्जा

आङ्गार्थ

पुच्छी-यउ,-येउ, पुच्छिज्जउ, ज्जेउ

पुच्छी-यतु-येतु, पुच्छि-ज्जंतु,-ज्जेंतु

विध्यर्थ

पुच्छ्+ईय=पुच्छीयिज्जामि, पुच्छीयेज्जामि
(अह पृच्छथेय)

पुच्छीयिज्जामो, पुच्छीयेज्जामो

(वय पृच्छथेमहि

हस्तन भूतकाल

भण्—भणोअसी, भणोअही, भणोअहीअ,
भणोयइत्या, भणोयइत्य

अथवा

२ प्रेरणासूचक कोइ पण प्रत्यय न लगाही मात्र मूळ धातुना उपान्त्य 'अ'नो 'आ' करवो अने ए 'आ' वाळा अगने उक्त ईअ, ईअ के इज्ज प्रत्यय पूर्व प्रमाणे लगाडवा ए रीते पण प्रेरक भावेप्रयोगनां अने प्रेरक कर्मणिप्रयोगनां रूपो वनावी शकय छे

[यादी आ सिवाय बीजी कोइ रीते प्रेरक भावेप्रयोग के प्रेरक कर्मणिप्रयोगनां अगो बनी शकता नथी]

अंगना रूपाख्यान—

करावीअइ (काराप्यते)

अग—

कर+आवि-करावि+ईअ-करावीअ—करावी-अइ, -अए, असि,
असे इत्यादि

कर—कार+ईअ-कारीअ—कारी-अइ, -अए (कार्यते)

कारी-असि, कारी-असे (कार्यसे)

कर+आवि-करावि-इज्ज-कराविज्ज—करावि-ज्जइ, -ज्जए
(काराप्यते)

कर-कार-इज्ज-कारिज्ज—कारि-ज्जइ-ज्जए (कार्यते)

कारि-ज्जसि, -ज्जसे (कार्यसे)

ए रीते धातुमात्रमा प्रेरकभावे अने प्रेरककर्मणिना अगो तैयार करी सर्वकालना रूपो उक्त साधनिका प्रमाणे साधी जवां जोइए

भविष्यकाल

कराविहिइ, कराविहिए कराविस्सते (कारापयिष्यते)

[जुओ पाठ १२ मो]

कराविहिसि, कराविहिसे (कारापयिष्यसे)

कराविस्सामि, कराविहामि, कराविम्स (कारापयिष्ये)

कारित्तते कारिहिय (कारयिष्यते) इत्थरि

केज्जंअं कम्मिअत्तिं कंयि कंयि केना करारुणे

स्मारुपान

सुखं वाक्—	मा+व+इं वक्	स्वप्नान्—	
इरिस—	१रीष्—	रीच्छ (इच्छते)	रीच्छन् रीच्छन्
		रीसिउञ्जत्, रीसिउञ्जत्	
कम्—	कुप्ञ्—कुप्ञ्वाह (इच्छते)	कुप्ञ्चत् कुप्ञ्चती	कुप्ञ्चन् कुप्ञ्चन्
विष्—	} १विष्णु विष्णुह(वीषते) ३ विष्म-वष्मन्	विष्णाविह, विष्णाविहि	विष्णाविहि
		प्रे=विष्माविह विष्माविहि	
१हम्—	इम्म-इम्मह (इष्पते)	इम्माविह इम्माविहि	
कम्—	कम्म-कम्मप (कम्पते)	कम्माविह कम्माविहि	
पुह—	पुम्म-पुम्मते (पुष्पते)	पुम्माविह, पुम्माविहि	
१सिह—	सिम्म-सिम्मप (सिद्धते)	सिम्माविह, सिम्माविहि	
१वम्—	वुम्म-वुम्मप (वष्पते)	वुम्माविह, वुम्माविहि	
१म्—	वम्म-वम्मप (वप्पते)	वम्माविह वम्माविहि	
१जम्—	जम्म-जम्मप (जप्पते)	जम्माविह जम्माविहि	
१वम्—	वज्ज-वज्जप (वज्जते)	वज्जाविह वज्जाविहि	
१वम्—	वज्ज-वज्जप (वज्जते)	वज्जाविह वज्जाविहि	
१+वम्—	संजम्-संजम्प (संजप्पते)	संजम्माविह	संजम्माविहि

१ हे अ वा १३१५१ टीप क्ने कुच-आ वै नं के ना
 क्ज्जंअं कम्मिअत्तिं कंयि कंयि केना करारुणे १ हे अ
 वा २ २। १३। विष्णु वी षंयिने 'पुष्प' कुप्ञ्चन् कंयि कंयि
 विष्णु कंयि करारुणे कंयि ३ हे अ वा ६। १३५। ४ हे
 अ वा १। १२८। हे अ वा १३५। १ हे अ
 वा ६। १३५। ४ हे अ वा ६। १३५। १

अणु+रुध्-अणुरुज्झ-अणुरुज्झए (अनुरुध्यते) अणुरुज्झाविह्, अणुरुज्झाविहिह्

उव+रुध्-उवरुज्झ-उवरुज्झए (उपरुध्यते) उवरुज्झाविह्, उवरुज्झाविहिह्

१गम्-गम्म-गम्मए (गम्यते) गम्माविह्, गम्माविहिह्

हस्-हस्स-हस्सते (हस्यते) हस्साविह्, हस्साविहिह्

भण्-भण्ण-भण्णते (भण्यते) भण्णाविह्, भण्णाविहिह्

छुप् | -छुप्प-छुप्पते (छुप्यते-स्पृश्यते) छुप्पाविह्

छुव् | छुप्पाविहिह्

रुव्-रुव्व-रुव्वए (रुद्यते) रुवाविह् रुवाविहिह्

लम्-लव्व-लव्वए (लभ्यते) लव्भाविह्, लव्भाविहिह्

कथ्-कथ्य-कथ्यते (कथ्यते) कथाविह्, कथाविहिह्

भुज्-भुज्ज-भुज्जते (भुज्यते) भुज्जाविह्, भुज्जाविहिह्

२हर्-हीर-हीरते (ह्रियते) हीराविह्, हीराविहिह्

तर्-तीर्-तीरते (तीर्यते) तीराविह्, तीराविहिह्

कर्-कीर्-कीरते (क्रियते) कीराविह्, कीराविहिह्

नर्-जीर्-जीरते (जीर्यते) जीराविह्, जीराविहिह्

३अज्-विढप्प-३विढप्पते (अर्ज्यते) विढप्पाविह्, विढप्पाविहिह्

४जाण्- { णज्ज-णज्जते (ज्ञायते) णज्जाविह्, णज्जाविहिह्
णव्व-णव्वते णव्वाविह्, णव्वाविहिह्

५वि+आ+हर्-वाहर्-वाह्रिपते (व्याह्रियते) वाहिप्पाविह्, वाहिप्पाविहिह्

६गह्-घेप्प-घेप्पते (गृह्यते) घेप्पाविह्, घेप्पाविहिह्

१ हे० प्रा० व्या० ८।१।२४९। २ हे० प्रा० व्या० ८।१।२५०।

३ हे० प्रा० व्या० ८।१।२५१। 'विढप्प' ए अ ग 'अज' धातुना अर्थमा वपराय छे पण तेनु मूळ स्वरुप 'अर्जमां नधी 'अर्ज-अज्ज अने 'विढ-

प्प' ए वच्चे कशी समानता जगाती नधी ४ हे० प्रा० व्या० ८।१।

२५२। ५ हे० प्रा० व्या० ८।१।२५३। ६ हे० प्रा० व्या० ८।१।२५६।

- १ छिप्—छिप्य छिप्यते (सूच्यते) छिप्याधिर् छिप्याधिर्हि
 २ छिप्—| छिप्य-सिप्यते (सिच्यते) सिप्याधिर् सिप्याधिर्हि
 विर् (सिच्यते)
 ३ अ+रम्—आहप्य-आहप्यते (आरभ्यते) आहप्याधिर्,
 आहप्याधिर्हि
 ४ छिप्—छिप्य छिप्यते (जीपते) छिप्याधिर् छिप्याधिर्हि
 सुप्—सुप्य-सुप्यते (सुपते) सुप्याधिर् सुप्याधिर्हि
 हुप्—हुप्य-हुप्यते (हुपते) हुप्याधिर् हुप्याधिर्हि
 पुप्—पुप्य-पुप्यते (सूपते) पुप्याधिर् पुप्याधिर्हि
 भुप्—भुप्य-भुप्यते (भूपते) भुप्याधिर् भुप्याधिर्हि
 भुप्—भुप्य-भुप्यते (भूपते) भुप्याधिर्हि भुप्याधिर्हि
 भुप्—भुप्य-भुप्यते (भूपते) भुप्याधिर्हि भुप्याधिर्हि
 भुप्—भुप्य-भुप्यते (भूपते) भुप्याधिर्, भुप्याधिर्हि

स्त्रीसिङ्गी सर्वादि

'अन्त' 'अन्ता' 'ए' 'या' 'यो' 'जा' 'यो' 'या' 'रौ'
 'स्त्र' 'रौ' 'एता' इत्ये 'असु' इत्ये स्त्रीसिङ्गी सर्वादि अन्तोन्तं इत्ये
 'मन्ता' 'न्तो' इत्ये 'सु' 'यो' 'यो' 'यो' 'यो' इत्ये

निवेद्यते वा इत्ये इति :

ती ता | (तद् तु स्त्री ता)
 बी वा

- | | |
|----------------------|-------------------|
| १ सा (सा) | तीमा तीड तीमो ती |
| | ताड तामो ता (ता) |
| २ सं (साम्) | तीमा तीड तीमो ती |
| इ | ताड तामो ता (ताः) |
| ३ तीम तीमा ५ तीई तीप | तीहि तीहि तीहि |
| ताम ताई ताप (तया) | ताहि ताहि ताहि |

४	} से१	सि२
अने		
६	} तास, तिस्सा, तीसे (तस्यै, तस्या)	
	तीअ, तीआ, तीइ, तीए	तेसि (तासाम्)
	ताअ, ताइ, ताए	ताण, ताण (तानाम् १)
७	३ताहिं (तस्याम्)	तासु, तासुं (तासु)
	तोअ, तीआ, तीइ, तीए	
	ताअ ताइ, ताए	
	' णी ' अने ' णा ' नां रूपो पण ' ती ' अने ' ता ' प्रमाणे	
	समजवानां छे	

जी, जा (यत् नुं स्त्री० या)

१	जा (या)	जीआ, जीउ, जीओ, जी जाउ, जाओ, जा (या)
२	जं (याम्)	" " " "
४	} जिस्सा, जीसे (यस्यै, यस्या)	जाण, जाणं (यासाम्) (यानाम् ?)
अने		
६		
	जीअ, जीआ, जीइ, जीए	
	जाअ, जाइ, जाए	
७	२जाहिं (यस्याम्)	जासु (यासु)
	नीअ, जीआ, जीइ, जीए	जासुं
	जाअ, जाइ, जाए	

१ हे० प्रा० व्या० ८।३।६२।६४। २ हे० प्रा० व्या० ८।३।८१।

३ हे० प्रा० व्या० ८।३।६०।

की, का (किल् तुं क्री० का)

१	क्य (क्य)	कीया कीर कीयो, की
२	कं (काम्)	कर कयो क (का)
		" " " "
		" " " "
४	} किस्ता कीसे कास (कस्यै कस्याः)	(कसाम्)
५		कय कये (कयाम् ?)

कीय, कीमा कीइ कीय

कय कइ, कय

७	काहि (कस्याम्)	कीहु कीहु (कयहु)
	कीय कीमा कीइ कीय	काहु, काहु
	कय काइ काय (कयाम् ?)	

इमा इमी (इम् तुं क्री० इमा)

१	इमिमा इमा इमी (इपम्)	इमीका इमीर इमीये
		इमाक इमायो इमा (इमा)
२	इमीम इमीमा इमीइ इमीय	इमीहि, इमीहि इमीहि
	इमाक, इमाइ, इमाय	
	(इमया ! म्मया)	इमाहि, इमाहि इमाहि

४	} १से	सिप (मायाम्)
५		इमीम इमीमा, इमीइ इमीय
६	इमाम इमाइ इमाय	इमीय इमीय
	(मस्य, इमाय !)	इमाय इमाय (इमायाम् ?)

एआ, एई (एतत् तुं स्त्री० एता)

१ एसा, एस, इण, इणमो एईआ, एईउ, एईओ, एई
(एपा) एआउ, एआओ, एआ (एता)

४ अने } से१ १सि (एतासाम्)

६ } एईअ, एईआ एईई, एईए एईण, एईण
एआअ, एआई, एआप एआण, एआण

(एतस्य एतस्या एतायै ?) (एतानाम् ?)

[यादी उक्त रूपोर्मा ईकारांत अने आकारांत अगनां यथा रूपो नधी आपेलां पण ते वर्धाय समजी लेवानां छे.]

अमु (अदस्)

१ २अह, अमू अमूउ, अमूओ, अमू
(अमू)

याकीनां ' धेणु ' वत्

सामान्य शब्दो

केवट (कैवर्त)	केवट-स्वेवट- हाडी हांकनार	कलाव (कलाप)	कउपलो-समूह
जट [जर्त (?)]	जाट जातनो माणस	साव (शाप)	श्राप-सराप
धुत्त (धूत)	धूर्त-धूतारो	सवह (शपथ)	शपथ-सोगन- सम
मुहुत्त (मुहूत)	मुहरत-महुरत	एटहाअ (प्रछाद)	प्रटाद नामनो राजकुमार
सयह (सय)	सयादि	आल्हाअ (आटाद)	आहाद- आनद
गुयह (गुय)	गुयअ-यक्ष, गुय गूट	पज्ज (प्राज्ञ)	प्राज्ञ-टाणो

१ हे० प्रा० व्या० ८।३।८१। २ हे० प्रा० व्या० ८।३।८७, ८८, ८९।

सम्यग् (सम्य) अत्र-अत्र
 अन्तः
 वैश्वानर (वैश्व) अन्तः अन्तः
 अन्तः (अन्तः) अन्तः अन्तः
 अन्तः (अन्तः) अन्तः अन्तः

अन्तः (अन्तः) अन्तः
 अन्तः (अन्तः) अन्तः
 अन्तः (अन्तः) अन्तः
 अन्तः (अन्तः) अन्तः
 अन्तः (अन्तः) अन्तः

अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः

अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः

अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः

अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः
 अन्तः अन्तः अन्तः

पाठ २० मो

व्यंजनांत शब्दो

प्राकृतमा रूपाख्यानने प्रसंगे कोइ शब्द व्यंजनांत समवी शक्तो नथी एथी एनां वधां रूपो पूर्वोक्त स्वरांत शब्दनी पेठे समजवानां छे

‘अत्’ अने ‘अन्’ छेडावाळा नामोना रूपोमां जे विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे

नामने छेडे आवेला वर्तमान कृदन्तना सूचक ‘अत्’ प्रत्ययने (हे० प्रा० व्या० ८।३।१८१।) स्थाने अत तथा मतर्वर्थाय ‘मत्’ प्रत्ययने स्थाने ‘मत’ के ‘वत्’ नो व्यवहार थाय छे (हे० प्रा० व्या० ८।२।१५९।)

अत्—भवत् - भवत
गच्छत् - गच्छंत
नयत् - नयत, नैत
गमिष्यत् - गमिस्संत
भविष्यत् - भविस्संत

मत्—भगवत्— भगवंत
गुणवत् - गुणवंत
धनवत् - धणवत
ज्ञानवत् - { नाणवंत
 { णाणवत
नीतिमत् - { नीइवंत
 { णीइवत
ऋद्धिमत् - रिद्धिमत

‘अत्’ छेडावाळा ए वधां नामोनां रूपो अकारांत नामनी जेवां समजवानां छे -

भगवतो, भगवत, भगवतेण इत्यादि ‘वीर’ प्रमाणे भवतो,
भवत भवतेण इत्यादि ‘सब्ब’ प्रमाणे

‘अत्’ प्रत्ययनां रूपो अनियमित रूपो

समसत्

प्र० द०	समसं	(हे ग्रा म्वा ६११२१५)	(समसात्)
प्र० व०	समसंती		(समसन्तः)
तु० व०	समसया		(समसता)
प० ए०	समसयो		(समसतः)
सं० ए	समसं । समसं । समस ।	(हे ग्रा म्वा ६११२१५)	(हे समसात्)

सम्भू

प्र	प०	सम्भू	(सम्भूत्)
		(हे ग्रा म्वा १७१२१५)	
प्र	व०	सम्भूतो	(सम्भूता)
द्वि	व०	सम्भूतं	(सम्भूतम्)
द्वि०	व०	सम्भूतो	(सम्भूतः)
		सम्भूयो	
तु	प	सम्भूता	(सम्भूता)
		सम्भूया	
व	प	सम्भूतो	(सम्भूतः)
		सम्भूयो	(")
प०	व०	सम्भूयात्	(सम्भूताम्)

अन् डेरतायां क्यत्वं वापीया अन्धो मिथुने 'भात्' (हे-
ग्रा म्वा ६११२१५) वाच्ये-

असत्-अस्यत्	असत्-अस्यत्	असत्-अस्यत्	असत्-अस्यत्
उसत्-उस्यत्	उसत्-उस्यत्	उसत्-उस्यत्	उसत्-उस्यत्
सुसत्-सुस्यत्	सुसत्-सुस्यत्	सुसत्-सुस्यत्	सुसत्-सुस्यत्
मुसत्-मुस्यत्	मुसत्-मुस्यत्	मुसत्-मुस्यत्	मुसत्-मुस्यत्

तक्षन्-	तच्छाण, तच्छ तक्ष्णाण, तक्ष	श्वन्-साण, स
पूषन्-	पूसाण, पूस	सुकर्मन्-सुकम्माण, सुकम्म

ए वधा नामोर्नां रूपो अकारांत नामनी जेम साधी छेवानां छे

अद्धाणो, अद्धाण, अद्धाणेण
अद्धो, अद्ध, अद्धेण

साणो, साणं, साणेण
सो, सं, सेण

रायाणो, रायाणं, रायाणेण
रायो, राय, रायेण

बगरे

छेवाना 'अन्'नो 'आण' न थाय त्यारे ए जातनां नामोना वधा रानां केटलाक रूपो जुदी रीते थाय छे

शय (राजन्)

१	१राया (राजा)	२राइणो, रायाणो३ (राजान)
२	४राइण (राजानम्)	” ” ५रण्णो (राज्ञः)
३	६राइणा, रण्णा (राज्ञा)	७राइँहि' राइँहि, राइँहिँ (राजभिः)
४	८राइणो, रण्णो (राज्ञ)	९राइँण, राइँणं (राज्ञाम्) ९राइँणं
५	८राइणो, रण्णो (राज्ञ)	१०राइत्तो, राइँतो, राइँओ, राइँउ (राजत) राइँहि, राइँहित्तो (राजभ्य)
६	८राइणो, रण्णो (राज्ञ)	९राइँण, राइँणं (राज्ञाम्) ९राइँण

१ हे० प्रा० व्या० ८।३।४९। २ हे० प्रा० व्या० ८।३।५०।५२।
३ हे० प्रा० व्या० ८।३।५०। ४ हे० प्रा० व्या० ८।३।५३। ५ हे०
प्रा० व्या० ८।३।४२। तथा ८।१।३७। आ 'रण्णो' रूप 'राज्ञ' उपरथी
साधवानु छे ६ हे० प्रा० व्या० ८।३।५१।५२ तथा ५५। ७ हे०
प्रा० व्या० ८।३।५४। ८ हे० प्रा० व्या० ८।३।५०।५२। तथा ५५।
९ हे० प्रा० व्या० ८।३।५४। तथा ५३। १० हे० प्रा० व्या० ८।३।५४।

७ १पांसि पांसिमि (पांसि) १पांसु, पांसुं (पांसु)
 सं हे पासा ! (पासा) पांसो, पासाओ (पासाओ)

अप्य (आत्मम्)

- १ १अप्या (आत्मा) अप्याओ (आत्माओ)
- २ १अप्यिषं (आत्मानम्) " "
- ३ १अप्यमिमा अप्यपश्मा अप्येहि, अप्येहि अप्येहि (आत्ममि)
 अप्यया (आत्मना) (आत्ममि)
- ४-६ अप्याओ (आत्मन) अप्यिषं (आत्मानम्)
- ५ अप्याओ (आत्मन) अप्यतो अप्यतो (आत्मन)
 बगेरे

पूसा (पूषन्)—ईद्र, सूर्य

- १ पूसा (पूषा) पूसाओ (पूषाओ)
- २ पूसिष (पूषणम्) " (पूषण)
- ३ पूसया (पूषणा) पूसहि पूसहि पूसहि (पूषणि)
- ४ १ पूसाओ (पूषणः) पूसिष (पूषणम्)
- ५ " " पूसतो पूसतो (पूषण) बगेरे

मघष
 मघष मघषन्

- १ १मघषं मघषा (मघषा) मघषाओ (मघषाना)
 बगेरे पूस 'बी पेडे

साधनिकानी समग्र

अन्वयो

एकवचन

बहुवचन

१

+

ओ

२

इषं

१ हे श वा १३ २ २ ई श वा ११५०

२ हे श वा ४१४५ ४ हे श वा ४१४५ ५ हे

श वा ११४५ ६ हे श वा ४१४५५

३	णा	
४-६	णो	इणं
५	णो	
सं०	+	णो

+ आ निगान छे त्या अर्थात् प्रथमा अने सवोधनना एकवचनमां राय, पूस, मघव वगेरे नामोनो अत्य स्वर दीर्घ थाय छे

राय=राया मघव=मघवा पूस=पूसा,

'ण' प्रत्यय सिवायना 'ण' कारादि प्रत्ययो लागतां पूस वगेरे शब्दोनो अत्य स्वर दीर्घ थाय छे

पूस + णो = पूसाणो राय + णो = रायाणो

अपवाद

प्रथमा अने सवोधन सिवायना 'ण' कारादि प्रत्ययो लागता 'राय'ने बदले 'राइ' अने 'रण्'नो उपयोग थाय छे -

राय + णा + राइणा, रण्णा

राय + णो = राइणो, रण्णो

प्रथमा अने सवोधनना बहुवचननो 'णो' लागता तो 'राय'ने स्थाने एक मात्र 'राइ' वपराय छे

'इण' प्रत्यय लागता 'राय'नो 'य' लोप पामे छे

राय + इण = राइणं (राजानम्)

राय + इणं = राइण (रात्राम्)

[चाई राइ+ण=राइण, राइण ए रूपमा 'इण' प्रत्यय नधी पण पद्यो बहुवचननो 'ण' प्रत्यय छे]

અપ્પ+ઉલ્લ-અપ્પુલ્લં (આત્મનિ ભવમ્) આપુલ્લં-આત્મામાં થપ્લુ
 નયર+ઉલ્લ-નયરુલ્લં (નગરે ભવમ્) નગરમા થપ્લુ

૩ 'તેની જેવું' એવો ભાવ સૂચવવા 'વ્વ' પ્રત્યયનો પ્રયોગ કરવો

મહુર વ્વ પાટલિપુત્તે પાસાયા (મથુરાવત્ પાટલિપુત્રે પ્રાસાદા)

૪ ૨ 'ઇમા' 'ત્ત' અને 'ત્તળ' પ્રત્યય 'પણું'ના ભાવને વતાવે છે:

પીણા+ઇમા-પીણિમા (પીનિમા-પીનત્વમ્) પીનપણુ-પુષ્ટતા

દેવ+ત્ત=દેવત્તં (દેવત્વમ્) દેવપણું

ઘાલ+ત્તળ=ઘાલત્તળ (ઘાલત્વમ્) ઘાલપણું

૫ 'વાર' અર્થને વતાવવા ૩ 'હુત્ત' અને 'હુત્તો' પ્રત્યયનો ઉપયોગ કરવો

પગ+હુત્ત=પગહુત્તં (એકકૃત્વ - એકવારમ્) એક વાર

તિ+હુત્ત=તિહુત્ત (ત્રિકૃત્વ - ત્રિવારમ્) ત્રણ વાર

તિ+હુત્તો=તિહુત્તો (ત્રિકૃત્વ - ") "

તિષ્ણહુત્તો

૬ આલ, ઇ આલુ, ઇત્ત, ડર, ડલ્લ, ઉલ્લ, મળ, મત અને વત એ બધા
 પ્રયયો 'વાલુ' અર્થને સૂચવે છે

આલ- રસ+આલ=રસાલો (રસવાન્) રસાલ-રસાલું

જટા+આલ=જટાલો (જટાવાન્) જટાવાલુ

આલુ- દયા+આલુ=દયાલૂ (દયાલુ) ડયાલુ-દયાવાલું

લજ્ઞા+આલુ=લજ્ઞાલૂ (લજ્ઞાલુ) લાજાલ-લાજવાલુ

ઇત્ત- માન+ઇત્ત=માણિત્તો (માનવાન્) માનવાન

રેહા+રેહર=રેહિરો (રેહાવાન્) રેહાવાન

ગવ્વ+ગેર=ગવ્વિરો (ગર્વવાન્) ગર્વવાન

ઇલ્લ- સોમા=ઇલ્લ=સોમિલ્લો (શોમાવાન્) શોમવાન

ઉલ્લ- સદ્+ઉલ્લ=સદ્દુલ્લો (શબ્દવાન્) શબ્દવાન

૧ હે० પ્રા० વ્યા० ૮૧૨૧૫૦૧ • હે० પ્રા० વ્યા० ૮૧૨૧૫૪૧

૩ હે० પ્રા० વ્યા० ૮૧૨૧૫૮૧ ૪ હે० પ્રા० વ્યા० ૮૧૨૧૫૯૧

मञ्ज	घञ्+मञ्ज=मञ्जमञ्जो	(मञ्जमाञ्)	मञ्जमाञ्
	सोहा+मञ्ज=सोहामञ्जो	(सोहामाञ्)	सोहामञ्जो
	बीहा+मञ्ज=बीहामञ्जी	(मञ्जमाञ्)	बीहामञ्जो
मंत	मी+मंत=मीमंतो	(मीमाञ्)	मीमंत
मंत	मत्ति+मंत=मत्तिमंतो	(मत्तिमाञ्)	मत्तिमंत

७ 'चो' प्रत्यय के लिये विभक्तिवाचक के लिये सूत्र है:

सञ्च+चो=सञ्चचतो	(सञ्चो)	सञ्चो	सञ्च मञ्जरे
क+चो=कचो	(कचो)	कचो	शापी
क+चो=कचो	(कचो)	कचो	शेपी
त+चो=तचो	(तचो)	तचो	तेपी
इ+चो=इचो	(इचो)	इचो	मापी

८ 'दि' 'इ' लिये 'च' प्रत्यय के लिये सूत्र है:

अ+दि=अदि	(अदि)	अदि-या
अ+इ=अइ		" "
अ+च्य=अच्य	(अच्य)	" "
त+दि+तदि	(तदि)	तदि-त्या
त+इ=तइ		" "
क+दि=कदि	(कदि)	कदि-क्या
क+इ=कइ		" "
क+च्य=कच्य	(कच्य)	" "

९ 'ते' लिये 'ए' प्रत्यय के लिये सूत्र है:

१ हे ज्ञा न्या ८।१।१९ । २ हे ज्ञा न्या ८।२।१९।१

३ हे ज्ञा न्या १२।१९।१ । ४ वीरस्य वैश्वम्-वीरस्यैवम् ५ चन्द्रशेखरे
 तिल इत्ये श्रीं चण्डे गीतायुं स्वच्छिन्न श्रीं प्रत्ययकी वदन्ती
 ६ ज्ञान ज्ञानायामा वृत्तेषु च 'ते' प्रत्यय लयाई ली है तो वच
 पूरेण तम वदन्ती स्वच्छिन्न प्रकल्पित है

कडुअ+पल्ल=कडुःखं (कडुकस्य तैलम्-कडुकतैलम्)

कडुबुं तेल

दीव+गल्ल=दीवेल्ल (दीपस्य तैलम्-दीपतैलम्) दीवेल दीवानु तेल

परड+पल्ल=परडेल्ल (परण्डस्य तैलम्-परण्डतैलम्)

परडेल परडानु तेल

धूप+पल्ल=धूपेल्ल (धूपस्य तैलम्-धूपतैलम्) धूपेल-

धूपयुक्त तेल

१० १स्वार्थने म्चववा 'अ' 'इल्ल' अने 'उल्ल' प्रत्ययानो व्यवहार
विकल्पे थाय छे

चंद्र+अ=चंद्रओ चद्रो (चन्द्रक) चांदो

पल्लव+इल्ल=पल्लविल्लो, पल्लवो (पल्लवक) पालवडो-

पालव, छेडो

हत्थ+उल्ल=हत्थुल्लो, हत्थो (हस्तक) हाथो, हाथलो

११ फेटलांक अनिर्यामत तद्धितो

१एक+सि=रकसि

एक+सिअ=एकसिअं

एक+इआ=एकइआ

(एकदा) एक वखत

३भ्र+मया भुमया

भ्र+मया भमया

(भ्र) भवा

१सण+अ=सणअ (शनै) धीमे धोमे

५उवरि+ल्ल=अवरिल्लो (उपरितन) ऊपरु-उःरु

६ज+ग्नित्त=जेत्तअ

ज+ग्नित्त=जेत्तिल

ज+पद्द=जेद्दह

(यावत्) जेटुं

१ हे० प्रा० व्या० ८०११६८ २ हे० प्रा० व्या० ८१०१६९

३ हे० प्रा० व्या० ८१०१७० ४ हे० प्रा० व्या० ८१२१६८ ५ हे०

प्रा० व्या० ८१०१६६ ६ हे० प्रा० व्या० ८१०१५७

त+पत्तिञ्+तेत्तिञ्	}	(तावत्) तेवत्
त+पत्तिञ् तेत्तिञ्		
त+पद्+ह=तेद्	}	(चियत्) वैटुं
क+पत्तिञ्=केत्तिञ्		
क+पत्तिञ्=केत्तिञ्	}	(एनावत्) एटुं
क वद्+ह=केद्		
पत्+पत्तिञ्=पत्तिञ्	}	(इवत्)
पत्+पत्तिञ्=पत्तिञ्		
पत्+पद्+ह=पद्		

पर+कृञ् = पारकृञ् (पारकीयम्) पारयु

राय कृञ्=रायकृञ् (रायकीयम्) रायकुं-रात्रुं
 रभग्+कृञ्=रभग्कृञ् (रभग्कीयम्) रभग्कुं-रभग्त्रुं
 तुम्ह+कृञ्=तुम्हकृञ् (तुम्हकीयम्) तुम्हकुं-तुम्हत्रुं
 इवग्+कृञ्=इवग्कृञ् (इवग्कीयम्) इवग्कुं-इवग्त्रुं
 पद्+कृञ्=पद्कृञ् (पद्कीयम्) पद्कुं-पद्त्रुं

केट्प्रकार वैकल्पिक रूपो

अवृत्त-कृञ्=अवृत्तकृञ् (अवृत्तकीयम्) अवृत्तकुं-अवृत्तत्रुं
 पद्-कृञ्=पद्कृञ् (पद्कीयम्) पद्कुं-पद्त्रुं
 अमाकृ+भय=अमाकृञ् (अमाकृञ्) अमाकृञ् अमाकृञ् अमाकृञ्
 इय+भयिञ्

विहस+भ सिञ्=वीहसिञ् (वीहसिञ्) विहसिञ् विहसिञ्
 मसावावाञ् मसावावाञ् मसावावाञ्
 वीहसिञ्-वीहसिञ् वीहसिञ् (वीहसिञ्) वीहसिञ्
 विहसिञ् विहसिञ्
 पत्त म पत्तम पत्त (पत्तम्) पत्तुं

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९

પીત+લ=પીતલં, પીતલં, પીતલં. પીત્રં (પીતમ્) પીત્રું

અન્ધ+લ=અંધલો (અન્ધ) આંધલો

તદ્વિતાત-શબ્દો

ઘણિ (ઘનિન) ઘની-ઘનવાલો
 અત્યિઞ (આર્યિક) અર્યં
 સચ્ચી-અચન લગતુ
 આરિસ (આપ) ઋપિએ વહેલુ
 મર્દ્ય (મરીય) મારુ
 કોસેય (કૌશેય કૌશેય-કૌશેટા
 માથી વનલુ-રેશમી વસ્ત્ર
 દૈદ્રિલુ (અધસ્તન) દેટલુ
 જયા (યદા) જ્યારે
 ઇષ્ણયા (અન્યદા) અન્ય સમયે
 તપસ્વિસ (તર્પાસ્વન્) તપસ્વી
 મનસ્વિ (મનસ્વિન્) યુદ્ધિમાન્
 ક્ષાણીણ (કાનીન) કન્યાનો
 પુત્ર-વ્યાસ શ્રદ્ધિ
 ઘમ્મય (વાહ્મય) વાહ્મય-શાસ્ત્ર

પિત્રામહ (પિતામહ) ઘાપનો
 ઘાપ
 ઉપરિલ્લ (ઉપરિતન) ઊપલુ -
 ઉપરતુ
 કયા (કદા) કયારે
 સવ્વયા (સર્વદા) સર્વ વચ્ચે
 રાજ્ણ (રાજન્ય) રાજપુત્ર
 અત્યિઞ (આસ્તિક) આસ્તિક
 મિક્ષ (મેક્ષ) મીસ
 નત્યિઞ (નાસ્તિક) નાસ્તિક-પાપ
 નાહિઞ (નાહિક) પુણ્યને ન માનનાર
 પીણયા (પીનતા) પુષ્ટપણુ
 માયામહ (માતામહ) માનો ઘાપ
 સવ્વહા (સર્વથા) સર્વ પ્રકારે
 તયા (તદા) ત્યારે

પ્રજાના ટુ રુચી ટુ સ્ત્રી રાજા-
 વહે એકવાર જમાય છે
 ત્યાં પારમા વાલ્કો વહે
 રોવાય છે
 ઘરેલુ વસ્તુ આલો વહે
 દેસાય છે
 મનિવહે મધ = ટાનુ નથી
 તે મન વચ્ચન અને વાગ
 વડ કીદને હળતો નયો

કર્મવહે જીવ વ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય
 વૈશ્ય અને શૂદ્ર થાય છે
 મારાવહે રાવાય છે અને
 તાર વડ હસાય છે
 ગુરુવહે શિષ્યને ગ્રથ
 મળાવાય છે
 મીલવહે પર્વતો વલ્લવાય છે
 મહાવીરવહે સમભાવ સ શ્રે
 ધર્મ કહેવાય છે

ગામગાતુ-ગઠગ્રાહ (ગુઠકાયતે) ગુઠની જેમ રહે છે ગુઠ્ઠી
 ગઠગ્રાહજે ગો ઢાઢ કરે છે
 અમગ્રાહ (અમગાયતે) અમરગત્ આચરે છે. પોતાની
 અમગ્રાહ જાતને અમર મમજે છે.
 તમાહ (તમાયતે) તમ-અવારા-જેતુ છે.
 તમ ગ્રહ
 ધૂમગ્રાહ (ધૂમાયતે) ધૂમને ઉદ્દમે છે-ધૂમને કાઢે છે.
 ધૂમગ્રાહ
 સુહાહ (સુહાયતે) સુહાય છે-ગમે છે
 સુહાઅહ
 સહાહ (શઢાયતે) સાદે છે-સાદ કરે છે
 સહાઅહ



નામગાતુનાં ટક્ત સક્ત્ત સ્ત્રોમાં જે 'ય' દેવાય છે, તેનો પ્રાકૃત-
 સ્ત્રોમા વચ્ચે લાપ થાય છે ૧ એક નિયમ માત્ર નામગાતુ પૂતો છે ૧



કૃદત

હેત્વર્થ કૃદત

મૂઢ ઘાતુને 'તુ' અને 'ત્ત' ૨ પ્રયય લગાઢનાથી તેતુ હેત્વર્થ-
 કૃદત ઘન છે

૧ હ૦ પ્રા૦ વ્યા૦ ૮૧૩૧૩૮ ૨. હેત્વય કૃદત કરવા સાસ
 વૈટિક સક્ત્ત મા ત્વે ' પ્રયયનો ટપયોગ થાલો છે પ્રાકૃતનો 'ત્ત'
 અને વૈટિક 'ત્વે' ૧ ઘણે ત્દન સમાન પ્રત્યયો છે ત્ત' પ્રત્યયવાઢ્ય
 સ્ત્રા આપ્પ્રાકૃ-માં વિશેષ મઢે છે

हं अने एए अणव स्वकृतं पूर्ण्य 'अ'ना ए के ए वाव हे.१

तुं-

घष् + तुं - { मषितुं, मषितुं } (मषितुम्) घजषा माटे
 { मषिषु मषिषु }

हो + तुं - { होतु, होरु } (मषितुम्) यथा मटे
 { होषु होषु }

प्रेरक हेत्वय कृन्त

[मूठ वातुनु अणव अणव अणव माटे सुधे पाठ १८ नी]

मष् मषावि+तु | मषावि+तु | (मषापावेतुम्) मषावि+तु माटे
 मषादिषु

क्षप्—

कट् चर—कटिचप कटिचप (कजवे कर्तुम्) कट्या मटे

गम् चर—गमिचप, गमिचप (गमिषु गमिषु) गमम कषा
 मटे अणव माटे

भाहृ+चर—भाहृचप भाहृचप (भाहृषु भाहृषु)
 भाहार कषा माटे

हृत्+जप—हृत्जप हृत्जप (हृत्जु—हृत्जु) हृत्जु माटे

१ हे ३ म्वा ॥ १ ॥ अणवअणव वातुने एहे 'अ'

नाणे उ अणव वातुन उहे अ विचये मला उ ए अणवअणव—
 अणव उ

मष् + तुं - मष् + तुं - मषितुं मषितुं
 हो + तुं - हो + तुं - होतुं होतुं
 हो + तुं - हो + तुं - होषु होषु

[' आहारित्तए 'ने बदले ' आहारित्तए ' ण वपराय छे अने

'दत्त+त्तएमां 'अइ' उमेगयो छे]

हो+त्तए-होइत्तए, होएत्तए (भवितवे-भवितुम्) थवा माटे

हो+त्तर-होत्तर (भवितवे-भवितुम्) थवा माटे

सुस्सूप+त्तए-सुस्सुहित्तए, सुस्सुसेत्तए (शुश्रूषितवे-

शुश्रूषितुम्) शुश्रूषा करवा माटे

चंक्रम+त्तए-चक्रमित्तए | (चक्रमितवे-चक्रमितुम्) चक्रमण

चक्रमेतए |

करवा माटे

भण्-भणावि+त्तए-भणावित्तए-(भणापयितवे-भणापयितुम्)

भणाववा माटे

अनियमित हेत्वर्थं कृदन्त

कइ + तु- { कानु, (कर्तुम्) करवा माटे
काउ
कइउ, कइउउ

गोह + तु घेत (ग्रही-म्) ग्रहण करवा माटे

दरिस् + तु-ददु (द्रादु) देखवा माटे-जोवा माटे

भुज् + तु भानु (भोजुम्) खाग माटे, भोगववा माटे

मुच् + तुं-मोचु (मोचु) छुटाग माटे-छुटा थवा माटे

रुद् + तुं रोचु (रोदितुम्) रोगा माटे

वच् + तु-वोत्त (वस्तुम्) बोल्वा माटे

लह् + तु-लहु (लधुम्) लेवा माटे

रुध् + तु-रोहु (रोद्धुम्) रोध करवा माटे-रोक्वा माटे

दुष्ट + तु -

दोई		(दोहृम्) सुमना माटे पुत्र बदल
दोई		माटे

संबंधक मूलकृत्य

मूलक कृत्ये १६. तु तुमान् अ इत्य इत्यन वाव अने वाप (एम वाक अर्थोभाषी पने ते इत्) अथवा अथवायी एव अथवाक मूलकृत्ये अने अ.

तु अने अथवाक्या वा अथवा अथवाक्य पूर्णा 'अथो' 'इ' अने 'इ' निघन्ते वाव अने

तु तुमान् अने इत्यन अथवाक्ये अ अथवाक्ये अने अथवाक्ये अने तुम् तुम् तुमान् तुमान् इत्याम् इत्याम्

तु—

इत् + तु -

इमितुं		(इतिषा) इतीमे
इमितुं		

 हो+अ+तु-

होइतुं		(मूषा) धामे
होइतुं		

 हो + तु - होतुं होतुं (मूषा) धामे

तुप—

इत् + तुप

इमितुप		(इतिषा) इतीमे
इमितुप		

 हो+अ+तुप -

होइतुप		(मूषा) धामे
होइतुप		

 हो + तुप

होइतुप		(मूषा) धामे
होइतुप		

तुआण—

हस्+तुआण—	हस्मितुआण, हस्मेतुआण हस्निरुआण, हस्सेउआण	(हसित्वा) हसीने
हो+अ+तुआण—	होइतुआण, होइतुआण होइउआण, होइउआण	(भूत्वा) थईने
हो+तुआण—	होतुआण, होउआण	(भूत्वा) थईने

अ—

हस्+अ—	हसिअ, हसेअ	(हसित्वा) हसीने
हो+अ+अ—	होइअ, होइअ	(भूत्वा) थईने
हो+अ—	होअ	(भूत्वा) थईने

इत्ता—

हस्+इत्ता—	हसित्ता, हसेत्ता	(हसित्वा) हसीने
------------	------------------	-----------------

इत्ताण—

हस्+इत्ताण—	हसित्ताण, हसेत्ताण	(हसित्वा) "
-------------	--------------------	-------------

आय—

गह+आय—	गहाय	(गृहीत्वा) ग्रहण करीने
--------	------	------------------------

आए—

आय+आए—	आयाए	(आदाय) "
सपेठ+आए—	सपेठार	(पेठार) खूब विचारीने

['आय' अत 'आए' प्रत्ययनो रपयोग जन आगमानी भाषामा मळी आवे छे]

ए अ प्रनाणे सुस्मितु, सुस्मितुण, हस्मितुआण, सुस्मिअ, सुस्मित्त, सुस्मित्ताण [शुभ्रत्वा-शुभ्रपा करीन] वगरे रूपो समभवानी छे

- वद उपरधी वदित्तु वदित्तु१ (वदित्वा) बदीने
 वद , कट्टु, कट्टु (कृत्वा) करीने
 ['वदित्तु' अत कट्टु मा तुनो अनुस्वार लोपाय पण छे]
 आयाय (आदाय) ग्रहण करीने
 गच्चा, गत्ता (गत्वा) जईने
 किच्चा, किच्चाण (कृत्वा) करीने
 नच्चा | (क्षात्वा) जाणीने
 नच्चाण |
 नत्ता (नत्वा) नमीने
 घुञ्जा (बुद्ध्या) बुझीने जाणीने
 भोञ्चा (भुक्त्वा) भोगधीने, खाईने
 मत्ता मच्चा (मत्वा) मानीने
 घदित्ता (वदित्वा) वादीने
 विप्रजहाय | विप्रजहाय ? | त्याग करीने
 विप्रहाय |
 सोञ्चा (श्रत्वा) साभळीने
 सुत्ता (सुप्त्या) सुईने
 आहृञ्च (आहृन्त्य) आहार करीने-पछाडीने
 साहृदु (सहृन्त्य संहर करीने, लई जईने, बलात्कार करीने)
 हत्ता (हत्वा) हणीने
 आहृदु (आहृन्त्य) आहार करीने
 परिघ्नाय (परिघ्नाय) बराबर समजीने
 चिच्चा, चेच्चा, चइत्ता (त्यक्त्वा) त्याग करीने
 निहाय (निहाय) स्थापाने, प्रवर्तवीने
 पिहाय (पिहाय) ढाकीने
 परिचञ्ज (परित्यज्य) परित्याग करीने

अमिमूय (अमिमूय) अमिमय कपीो
 पत्रिबुद्ध (पत्रिबुद्ध) अममयीनि

इकारान्ता सेवही नीचने । का वहां अन्विमित कपीो तापत्रिभ्यः
 सामे क्कारान्तां छस्रुत कये ह्राण न समयी इकार एव के का ह्राण
 वीथं क्कार व अन्विमित को के सेवही एव कापत्रिभ्यः का कपीो
 पैडे न के माटे ए वहां कपी नही उवाच्यं

पाठ २२ मो
 विध्यर्ष कुद्मत्

कुद्म वस्तुमे उवा कपीय के अन्विम्य अवन क्कारान्तापी निवर्ष
 कुद्म के के

'क'पी पूजा 'क'पी 'इ' के 'इ' वाच के

सुद्ध—

इत्+तव्य— { इतिगण्य इसेगण्य | (इतिगण्यम्)
 इतिगण्य इसेगण्य | इतका वैशु इतकु
 आईप

हो+तव्य— { होइगण्य होइगण्य } (मविगण्यम्) पाग
 होइगण्य होइगण्य } पागव धनु जोईप
 होइगण्य होइगण्य

का+तव्य - कातव्यं कातव्य (कातव्यम्) कातका योग्य
 कातव्य आईप

चिद्व + तव्य { चिद्विगण्य चिद्विगण्य } (चिद्व्यम्)
 चिद्विगण्य चिद्विगण्य } चिद्वु कापा
 चिद्वु चिद्वु
 चिद्वु आईप

अणीअ, अणिञ—

हस्+अणीअ— | हसणीअ हसणीय (हसनीयम्) हसवा
हस्+अणिञ— | हसणिञ जेतु, हसतु जोईए

प्रेरक विध्यर्थ कृदंत

हसावि+तव— { हसावितव्य
हसानिअव्य
हसावियव्य } (हसाग्यितव्यम्) हसा
ववा जेतु, हसाग्तु जोईए

हसावि+अणीअ— | हसावणीअ, हसावणीय | (हसापनीयम्)
हसावि+अणिञ— | हसावणिञ

ए अ प्रमाणे वयणीयं वयणिञ्ज, करणीय करणिञ्ज सुस्-
सितव्, चक्रमितव्, सुस्सुसणिञ्ज, सुस्सुसणीय वगरे रूपो समबो
देवानां छे.

अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

कज्जं (कार्यम्) करवा योग्य
किञ्च (कृत्यम्) कृत्य
गोञ्ज (ग्राह्यम्) ग्रहण करवा
योग्य
गुञ्जं (गुह्यम्) छूपाववा योग्य,
गुजु
घज्ज (वच्यम्) वजंवा योग्य
घज्ज (वद्यम्) बोलवा योग्य
अवज्ज (अवद्यम्) नहि बोलवा
योग्य-पाप
घन्त्र (तान्यम्) चोळवा योग्य
घफक (वाष्यम्) कहेवा योग्य-
वाक्य

जन्न (जन्यम्) जणवा योग्य
मिच्चो (मृत्य) पाळवा योग्य-
मृत्य-नोकर
भज्जा (भार्या) भरण पोषण
योग्य-भारजा
अज्जो (अर्य 'अर्य-वैश्य, स्वामी
अज्जो (आर्य) आय
पचन्न पाच्यम्) पचवा-गाववा योग्य-
भव्य (भव्यम्) यवा योग्य-ठीरु
घेतव्य (प्रतीतव्यम्) ग्रहण
रग्या जेतु
वोन्नव्य (उत्तव्यम्) रडेवा जेतुं
रोत्तव्य (सदितव्यम्) रोतु-रुदन,
रोवा जेतु

होअत,	होअंतं,	होइंत	(भवत्)	थतुं
होत	हुत			
होअती,	होअती,	होअती	(भवन्ती)	थती
होअना,	होअता,	होइता	(भवन्ती)	,,
होती,	होना			
हुती,	हुता			

माण-

भण्=माण-	भणमाणो,	भणेमाणो	(भणमान)	भणतो
	भणमाण,	भणेमाण	(भणमानम्)	भणतुं
	भणमाणी	भणेमाणी	(भणमाना)	भणती
	भणमाणा,	भणमाणा		

हो=अ=माण-	होअमाणो,	होअमाणो	(भवमान)	थतो
	होमाणो			
	होअमाणं	होअमाणं	(भवमानम्)	थतुं
		होमाण		
	होअमाणी	होअमाणी	(भवमाना)	थती
	होअमाणा,	होअमाणा		
	होमाणी,	होमाणा		

ई-

भण् + ई-	भणई,	भणेई	(भणन्ती)	भणती
हो + अ-ई	हो-ई,	होअई	(भवन्ती)	थती
	हई			

ए ज प्रमाणे वर्तते प्रेक्क अग, मादु भावे अग सादु वर्मणि
 अग अने प्रेक्क भावे तथा वर्मणि अगने पग टक्क व्रणे प्रत्यमो लगा-
 उवाधी तेमना वर्तमान कृदतो वने छे

कर्त्तरि प्रेरक कर्त्तमान कुरन्त—

करादि+अ+न्त—करावतो करावतो (करापरम्) करावतो
 कर + अन्— करावतो करावतो (करपर) "
 करादि+अ+माअ-करावमावो करा मन्वा(कराप्यमाअः) "
 कर + माअ— करमावो करमावो (करमाअ) "

सादु मावे वतमान कुरन्त—

मन् इञ्ज+न्त—मन्विञ्जते	} मन्वमानम्) मन्वावृ- मन्ववामां वावृ
+ " +माअ-मन्विञ्जमाव	
मन् ईञ्ज+न्त—मन्वीञ्जते	
" + +माअ मन्वीममाव	

सादु कर्मणि वतमान कुरन्त—

मन्वीञ्जते मन्विञ्जते गोष्णे (मन्वमाना मन्व) मन्वातो ईप
 मन्वीममावो मन्विञ्जमावो मन्विञ्जते गोष्णे (मन्वमाना मन्वो) मन्वो
 मन्विञ्जते मन्वीञ्जते गाहा (मन्वमाना गाहा मन्वातो पावा
 मन्विञ्जमावो, मन्वीममावो पंतो (मन्वमाना पन्वि)) पन्वि
 मन्विञ्जते, मन्वीञ्जते

प्रेरक भावे

मन्वादिञ्जते (मन्वाप्यमानम्) मन्वावावृ—
 मन्वाववामां वावृ
 मन्वावीमते वनेरे

प्रेरक कर्मणि—

मन्वा उच्यते मुञ्चो (मन्वाप्यमान इति))
 मन्वावावो मुञ्च
 मन्वादिञ्जमावो
 मन्वावीमता

મળાવીશ્રમાણો

મળાવિજ્ઞતી સાહુળી (મળાવ્યમાના સ્વાધી)

મળાવિજ્ઞમાણા મળાગતી સાધ્વી

મળાવીશ્રંતી

મળાવીશ્રમાણા

મળાવિજ્ઞઈ

મળાવીશ્રઈ ક્ષત્યાદિ

૧ જ પ્રમાણે—

સુસ્સૂમંતો (શુશ્રૂપન્) ચક્રમતો (ચક્રમન્)

સુસ્સૂવમાણો (શુશ્રૂવમાણઃ) ચક્રમમાણો (ચક્રમમાણ)

સુસ્સૂવિજ્ઞતો	(શુશ્રૂવમાણ)	ચક્રમિજ્ઞતો	(ચક્રમમાણ)
સુસ્સૂવિજ્ઞમાણો		ચક્રમિજ્ઞમાણો	
સુસ્સૂમીશ્રતો		ચક્રમીશ્રતો	
સુસ્સૂમીશ્રમાણો		ચક્રમીશ્રમાણો	

આ ધર્મા રૂપો જ્ઞાણી લેવા

પાઠ ૨૪ મો

સંખ્યાવાચક શબ્દો

વિશેષતા

જે શબ્દો દ્વારા સંખ્યાનો વૈધિ ધાય તે શબ્દો સંખ્યાવાચક કહેવાય
 એવા શબ્દો અકારાંત પણ હાય છે અને આકારાંત, ઇઠારાંત અને ઉકારાંત
 પણ હોય છે આવા શબ્દો વિશેષગણ્ય હોવાથી એમનું નિયત લિંગ નથી
 હોતું પણ એવા શબ્દો વિશેષ્યનાં લિંગ અને વચન કે વિભાજકને અનુસરે
 છે જે શબ્દો અકારાંત ઇકારાંત અને ઉઠારાંત છે તેમનાં રૂપો આગળ
 જણાવેલી રીત પ્રમાણે સમજાવ્યાં છે, તેમાં જે છાસ વિશેષતા છે તે આ
 પ્રમાણે છે

एक 'ही' वांछिते बहुवचन (अकारण) प्रयोग संवत्सारात्क
 सप्तमेरे लीला बहुवचन्यां १२५ बने न् इत्ये न् अकारण वा (अकारण) बने हे।

एव + न् इ-उभयन्	एव + न् इ उभयन् ।
उभय-एव-उभयएव	उभय+एव उभयएव ।
ति + न् इ ति	ति + न् इ ति ।
तु + न् इ तु	तु + न् इ तु ।
कति+एव-कतिएव	कति+एव कतिएव ।

इकक एकक एव एव (एक)

एव अकारण प्रयोगी कसे 'अन' की लीला संवत्सारात्क के लीला
 लीला अकारण लीला बने लुगुगुगुगुगु कसे लुगुगुगुगुगु अकारण लीला
 अकारण लीला

अकारण लीला बहुवचन्यां हे वा अकारण एव अकारण
 लीला लीला

एव+एव-एव । बनेरे (लुगुगुगु ११८ नियम २ ली)
 एव एव (उभय)

वा अकारण लीला बहुवचन्यां वाव हे लीला हे लीला 'अन' की
 लीला अकारण लीला

- ए— एवे
- ली— एवे एवा
- त— एवेहि एवेहि, एवेहि ।
- अ—
- ल— } उभयन् उभयन् ।
- उ— }
- द— एवमेव एवमेव उभयन्

वाचीयं इति आच्छ क्वादेशा रिञिं इत्यस्य बहुवचनं इति
 कैव शब्दां (द्विती पाठ ११६)

अउ (अतुइ) इति द्विगमा इति

प — { अत्तारो, (अत्तार) अत्तरो (अत्तु(र)), अत्त रि
 पी — { (अत्तरि)

उ० — अत्तहि, अत्तहि अत्तहि
 अत्तहि अत्तहि, अत्तहि

अ० — } अत्तत्त अत्तत्त।
 तथा
 उ० — }

वाचीयं इति अतु 'पी' कैव इत्यस्य (द्विती पाठ ११७)

एव (एवइ) इति द्विगमा इति

अ० — } एव
 पी० — }

अ० — एवेहि, एवेहि, एवेहि
 एवेहि, एवेहि, एवेहि

अ० — } एवत्त, एवत्त
 तथा
 उ० — }

वाचीयं इति 'पी' 'अ' बहुवचनं इति कैवं के (द्विती पाठ ११८)

वा एते एव 'पी' एते पीने आदेशा एवाव इत्येव इति
 इत्येव कैवमां के।

છ (પદ) છ	તેરસ	} (ત્રયોદશ) તેર
સત્ત (સત્તન્) સાત	તેરહ	
ચઠ્ઠ (અષ્ટન્) આઠ	ચોદસ	} (ચતુર્દશ) ચૌદ
નવ (નવન્) નવ	ચોદહ	
દહ	ચૌદસ	
દસ } (દશન્) દશ	ચૌદહ	
પંચારહ	પગ્ગારસ	} (પચ્ચદશ) પંદર અથવા પંચર
પગ્ગારહ	પગ્ગારહ	
પંચારસ	સોલસ	} (ષોડશ) સોઢ
દુગ્ગાલસ	સોલહ	
વારસ	સત્તરસ	} (સત્તદશ) સત્તર
વારહ	સત્તરહ	
	અઢારરા	} (અષ્ટાદશ) અઢાર
	અઢારહ	

કડ (કતિ) કેટલા

પ૦ —	} કડે, કડળો ઘરોરે
વી૦ —	
ચ૦ —	} કડળહ, કડળહ
તયા	
છ૦ —	

પાકીનાં રૂપો 'રિસિ'નાં વહુવચનાંત રૂપો જેવાં છે

નીચે જણાવેલા જે શબ્દો આકારાંત છે તેનાં રૂપો 'માલા'ની જેવાં ધાય છે અને જે શબ્દો ફકારાંત છે તેનાં રૂપો 'બુદ્ધિ'ની જેવાં ધાય છે
(જુઓ પાનુ ૨૧૬ તથા ૨૧૭)

પચ્ચૂળવીસા (એકોનવિંશતિ)	} (એકવિંશતિ) એકવીંશ
સોગળીશ	
વીસા (વિંશતિ) વીંશ	
	} (એકવિંશતિ) એકવીંશ
પગ્ગવીસા	
ફકરવીસા	
	} (એકવિંશતિ) એકવીંશ
ફકરવીસા	

बाधीसा (हर्षिण्डि) बन्धी
 तैधीसा (बन्धिण्डि) बेधी
 १बाडधीसा | (बन्धिण्डि)
 बोधीसा | बोधी
 पयधीसा (बन्धिण्डि) बन्धी
 उयीसा (बन्धिण्डि) उधी
 सत्तधीसा (बन्धिण्डि) सत्त
 नीय

बन्धीसा } (बन्धिण्डि)
 बन्धीसा } बन्धी
 बन्धीसा }
 बन्धीसा (बन्धिण्डि)
 नीयबन्धी

तीसा (बिण्ड) ती
 पुगीसा } (बन्धिण्डि)
 बन्धीसा } बन्धी
 बन्धीसा }

बन्धीसा (बन्धिण्डि) बन्धी
 तैलीसा | (बन्धिण्डि) तैली
 तिधीसा |
 बन्धीसा | (बन्धिण्डि) बन्धी
 बोधीसा | (बन्धिण्डि) बोधी
 पयधीसा (बन्धिण्डि) पयधी
 उधीसा (बन्धिण्डि) उधी
 सत्तधीसा (बन्धिण्डि) सत्त
 नीय

बन्धीसा | (बन्धिण्डि) बन्धी
 बन्धीसा | ती
 बन्धीसा (बन्धिण्डि) बन्धी
 बन्धीसा | (बन्धिण्डि) बन्धी
 बन्धीसा | बन्धी
 बन्धीसा } (बन्धिण्डि)
 बन्धीसा } बन्धी
 बन्धीसा }
 बन्धीसा (बन्धिण्डि)
 बन्धीसा } (बन्धिण्डि)
 बन्धीसा } बन्धी
 बन्धीसा }
 बन्धीसा (बन्धिण्डि) बन्धी
 बन्धीसा } (बन्धिण्डि)
 बन्धीसा } बन्धी
 बन्धीसा }
 बन्धीसा (बन्धिण्डि) बन्धी
 बन्धीसा } (बन्धिण्डि)
 बन्धीसा } बन्धी
 बन्धीसा }
 बन्धीसा (बन्धिण्डि) बन्धी
 बन्धीसा } (बन्धिण्डि)
 बन्धीसा } बन्धी
 बन्धीसा }

१. ॐ उम्बु प्रसा विमिषां बन्धीषे लु वाव ऐः
 * बन्धी वि विमिषा

एगूणपणनासा	(एकोनपञ्चाशत्)	ओगणपचास
पणगाम्ना	(पञ्चाशत्)	पचास
एगपणगाम्ना	} (एकगञ्चाशत्)	एकावन
इक्कपणगाम्ना		
एक्कपणगाम्ना		
एगावणणा		
वावणणा	(द्विपञ्चाशत्)	वावन
दुवणणासा		
तेवणणा	(त्रिपञ्चाशत्)	त्रान
निवणणासा		
चोवणणा	(चतुष्पञ्चाशत्)	चोवन
चउवणणासा		
पणपणणा	} (पञ्चपञ्चाशत्)	पचावन
पणपणणासा		
पचावणणा		
छपणणा	(षट्पञ्चाशत्)	छप्पन
छपणणासा		
सत्तावणणा	(सप्तपञ्चाशत्)	सत्तावन
सत्तपणणासा		
अट्ठावणणा	} (अष्टपञ्चाशत्)	अट्ठावन
अडवणणा		
अट्टवणणासा		
एगूणसट्ठि	(एकोनपाठि)	आंगण माठ
सट्ठि	(पाठि)	साठ
एगसट्ठि	} (एकपाठि)	एकपठ
इगसट्ठि		

वासट्ठि	} (द्वाषष्टि)	वासठ
त्रिमट्ठि		
तेसट्ठि	(त्रिषष्टि)	त्रेसठ
चउसट्ठि	} (चतुषष्टि)	चोसठ
चोसट्ठि		
पणसट्ठि	(पञ्चषष्टि)	पांसठ
छासट्ठि	(षट्षष्टि)	छासठ
सत्तसट्ठि	(सप्तषष्टि)	सडनठ
अडसट्ठि	} (अष्टषष्टि)	अडसठ
अट्टसट्ठि		
एगूणसत्तरि	(एकोनसप्तति)	ओगणोशित्तेर
सत्तरि	(सप्तति)	शित्तेर
एगसत्तरि	} (एकसप्तति)	एकौत्तेर
इक्कसत्तरि		
इक्करुत्तरि		
वा (त्रि) सत्तरि	} (द्विसप्तति)	वहौत्तेर
चावत्तरि		
तिसत्तरि	(त्रिसप्तति)	तीत्तेर
चोसत्तरि	(चतुस्सप्तति)	चुमोत्तेर
चउसत्तरि		
पणसत्तरि	(पञ्चसप्तति)	पंचोत्तेर
पणसत्तरि		
छसत्तरि	(षट्सप्तति)	छोत्तेर
सत्तसत्तरि	(सप्तसप्तति)	सत्तोत्तेर

मड्डमपरि | (मड्डमपरि)
 मड्डपरि | (मड्डमपरि)
 पर्युवासीइ (पर्युवासीइ)
 भीमभ्याएओ कववा
 मन्व्याएओ
 मसीइ (मसीइ) एओ
 एगासीइ (एगासीइ) एओ
 बासीइ (बासीइ) बाओ
 नेसीइ | (नेसीइ) बाओ
 तासीइ | (तासीइ) बाओ
 बाउरसीइ | (बाउरसीइ) बाओ
 कोरसीइ | (कोरसीइ) बाओ
 एषसीइ | (एषसीइ) बाओ
 एषसीइ | (एषसीइ) बाओ
 छासीइ (छासीइ) छाओ
 सत्तासीइ (सत्तासीइ)
 कवाओ
 मरठसीइ (मरठसीइ)
 मरठओ
 मवासीइ (मवासीइ) मवाओ
 एगुवमवाइ (एगुवमवाइ)
 मवाओ मवुयां एक वम
 मरइ | (मरइ) मवु
 एवइ | (एवइ) मवु
 एगुवमवाइ | (एगुवमवाइ) मवु
 एगुवइ | (एगुवइ) मवु
 बाएवइ (बाएवइ) बाओ

तेमवाइ (तेमवाइ) एओ कववा
 मवु
 एउववाइ | (एउववाइ)
 बाओ
 एववावाइ | (एववावाइ)
 एवओ
 एववावाइ (एववावाइ) एओ
 सत्त (सत्त) एववाइ (एववावाइ)
 एवओ
 मरठमवाइ | (मरठमवाइ)
 मरठओ
 ए(न) कववाइ (ए(न) कववाइ) मवु
 एगुवमवाइ (एगुवमवाइ) एओ
 एक वम
 मव (मव) एओ
 एवमवाइ (एवमवाइ) मवओ
 निमवाइ (निमवाइ) मवओ
 वे सवाइ (वे सवाइ) मवओ
 निमिवा सवाइ (निमिवा सवाइ)
 मवओ
 एववाइ सवाइ (एववाइ सवाइ)
 मवओ एववाइ
 एवववाइ (एवववाइ) एओ
 ए सववाइ (ए सववाइ)
 वे एओ
 निमिवा सववाइ (निमिवा सववाइ)
 मवओ एओ
 एववाइ सववाइ (एववाइ सववाइ)
 मवओ एओ

દહસહસસ (દશસહસ્ર) દસ
હજાર

અયુમ્ | (અયુત) દસ હજાર
અયુન |

લક્ષ્મ લક્ષ) લાચ

દસ લક્ષ | (દશ લક્ષ)

દહ લક્ષ | દસ લાચ

પહ્ય
પહન } (પ્રયુત) દસ લાચ
પયુમ્ }

કોડિ (કોટિ) કરોડ, કોઢ

કોડાકોડિ (કોટીકોટિ)

કરોડ ને કરોડે ગુણો વેટલા

ઉપર જગાવેલા વધા શબ્દો સંધાગ્ન રીતે એકવચનમા વપરાય છે તેને વાપરવાની વે રીત આ પ્રમાણે છે

‘વીશ માણમો’, એમ કહેવું હોય ત્યારે ‘વીસ મણુસ્મા’ અથવા ‘વીસા મણુસ્માણ મર્ધાત્’ ‘વેશ માણમા’ અથવા ‘માણસોની વીશ સરખા’ એ રીતે એનો વે જાતનો પ્રયોગ થાય છે

ઘટ્ટી જ્યારે ઉપર જગાવેલા સરખાવાચક શબ્દો એક વીશ અથવા એક પચાસ એમ પોતપોતાની એક સરખા સૂચવતા હોય ત્યારે તે એકવચનમાં આવે છે અને ઘણા વીશ, ઘણા પચાસ, ઘણા નેહુ આમ પોતપોતાની અનેકતા વતાવતા હોય ત્યારે વહુવચનમા પણ આવે છે

તે આચાર્યને છપ્પન શિષ્યો

છે પણ તેમા એક કે

વે જ મારા છે

છદ્ર સોઠ કઠ્ઠામોવડે

શોમે છે

પૂર્વે પુરુષો વોતેર કલા

શોસના હના અને ત્રાઓ

સોસન કલા ત્રાઓની વી

દમણા શ્રાવક અને સાધુ

વાર અંગાને મળે છે

બ્રાહ્મણોવડ ચંદ ધિધાઓ

શોસાય છે

મહિનામા ત્રોશ દિવસ

હોય છે

પાચ માણસોનાં પરમેશ્વર

વલે છે

तेषु गुरुने पश्चर मञ्जो
 पूछग
 तमे अठ्यातेर वाछ्याने

धन मातु
 मे मध्याणु मुनिधारे पंरन
 वतु

पंचवट्टे यवायं पदम ययं
 (घनम्) पसंसिद्धर
 कचाते असाया बुक्क्याइ
 इति
 इम वासा विसाप पडनि
 वाएर इत्थीमो अण्णाइ
 विकज्जाएति
 अरुठारम जवा उहीसाइतो
 कोरेइतो म बीदेति

धनस्त कोडीर वि म
 संतोमो इयं
 नस्त वरे पोषपाय सत्तप
 हीसइ
 सयेण बुमयं विहडिआ
 पगो इं नरिप मे कोषि
 सग्गे सतु त्रिणमया
 सग्गे सुडियो रोतु
 सग्गे मराइ पामंतु
 म इयेत्या को वि बुडिमो

पाठ २५ मो

मुतच्छन्त

गुरु वातुन 'त' के 'अ' प्रकब लय्यवासी ततु मूण्णवय वने के
 ए वन प्रकबो काण्णत पूर्वा अ'नी १'५' नाम के.

गम् + अ + त—गमितो | (मत्ता) ययेसो
 गम् + अ + अ—गमितो

भाष—

गमिते गमितं (गतम्) गतु-गते

कर्मणि—

गमितो गामो | (गतो ग्राम) जवापलुं गाम
गमिओ गामो

प्रेरक—

करायितो (कारापित) | करावापलो-करावेलो
कारिओ (कारित)

अनियमित भूतकृदन्त^१

गयं (गतम्) गयेल, जयु.

मयं (मतम्) मानेल, मानयु.
मत

कडं (कृतम्) करेल, करयु

हड (हृतम्) हरेल, हरयु

मड (मृतम्) मरेल, मरयु

जिअ (जिनम्) जितेल, जितयु

तप्त (तप्तम्) तपेल, तपयु

कय (कृतम्) करेल, करयु

ददठ (दृष्टम्) दीह-देखेल, देखेल

मिलाण | (म्लानम्) म्लान
मिलान | यएल-करमाएल,
म्लान ययु

अकखाय (आख्यातम्) कहेल,
कहेयु

निहिय (निहितम्) निहित-
स्थापेल, स्थापयु

१ आ कृदतो अने वीजां कृदतो पण जे विभाचवाळा जणावेलं
छे ते उपरधी तेमना मूळ शब्दो विद्यार्थीओए जाते शोधी लेवा लेमके —

विभक्तिवाळु-

गय

मड

ददठ

पायगो

देहओ

दसिरो

वज्ज

भिघो

हत्तेतव्व

मूळ शब्द-

गय

मड

ददठ

पायग

देहअ

दभिर

कज

भिघ

दत्तेतव्व वगेरे

तेजे शुभे पप्रत प्रभो
 पूष्या
 तमे अठयोत्तरे आठयोने

धन मायु
 में अष्टाशु शुभिभोने वंदन
 कर्तु

पंचमई वषाभ पद्म वर्ष
 (प्रथम्) पर्ससिखर
 अत्तारो असाया शुक्रभाइ
 इति

धनस्त कोडीर वि म
 संतोसो इवे
 तस्त परे पोरथयाम मत्तरी
 हीसइ

इम वासा विसाए पद्धति
 वारइ इत्थीको असाइ
 निककार्यति

सयेष शुभरं विहम्बिइ
 एगो ई अन्धि मे कोवि
 सन्ने सन्तु निरामया
 सन्ने सुदिणो शोतु
 सन्ने महार् पांसु
 म इश्या को वि कुदिभो

अष्टारस अथा अतीसादितो
 कोर्यदितो म बीइति

पाठ २५ मो

मृतकृदन्त

मृत वाक्ये 'त' के 'अ' अक्षर अक्षरवासी हेतु भूकृतं वने के
 ए वने अक्षरों कापत्र पूर्वा 'अ'नी 'इ' वाच के

गम् + अ + त - तमिभो | (मठा) मयेसो
 गम् + अ + अ - अमिभो

माव—

तमिभे तमिभं (गतम्) अतु-गति

कर्मणि—

गमितो गामो | (गतो ग्राम) जवापलुं गाम्
गमिओ गामो

प्रेरक—

करायितो (कारापित) | करावापलो-करावेलो
कारिओ (कारित.)

अनियमित भूतकृदन्त^१

गयं (गतम्) गयेल, जयु,
मयं (मतम्) मानेल, मानवु,
मत
कडं (कृतम्) करेल, करवु
हड (हृतम्) हरेल, हरवु
मडं (मृतम्) मरेल, मरवु
जिअ (जिनम्) जितेल, जितवु
तत्त (तप्तम्) तपेल, तपवु
कय (कृन्म्) करेल, करवु

दद्द (दृष्टम्) वीह-देखेलं, देखवुं
मिल्लाण | (म्लानम्) म्लान
मिल्लान | थएल-करमाएल,
म्लान थवु
अक्खाय (आख्यातम्) कहेलं,
कहेवु
निहिय (निहितम्) निहित-
स्थापेल, स्थापवु

१ आ वृदतो अने वीजां कृदतो पण जे विभाज्वाळा जगावेल
छे ते उपरधी तेमना मूळ शब्दो विद्यार्थीओए जाते शोधी लेवा उमेने —

विभक्तिशालु-

गय
मड
दद्द
पायगो
लेहओ
हसिरो
कज्ज
भिच्चो
हसेतव्व

मूळ शब्द-

गय
मड
दद्द
पायग
लेहअ
हभिर
कज्ज
भिच्च
हसेतव्व वगेरे

घापच (भाङ्गम्) भाङ्ग
 बीड भाङ्ग
 संख्यं (संख्यम्) संख्या,
 संख्येड
 भाङ्गदठ (भाङ्गद्वय) भाङ्गद्वय
 बीड भाङ्गद्वय
 विजदठ (विजद्वय) विजद्वय, विजद्वय
 पणदठ (पणद्वय) पणद्वय, पणद्वय
 मदठ (मद्वय) मद्वय, मदीय
 दय (द्वय) द्वयेड दयाद्वय दयद्वय
 जायं (जायम्) जायद्वय जायद्वय
 जायद्वय
 गिमायं | (गिमायम्) गिमायं गिमायं
 गिसायं | गिमायं गिमायं

पद्विभ्रं (पद्विभ्रम्) पद्विभ्रं
 पद्विभ्रं पद्विभ्रं
 द्विभ्रं (द्विभ्रम्) द्विभ्रं, द्विभ्रं
 विद्विभ्रं (विद्विभ्रम्) विद्विभ्रं, विद्विभ्रं
 पद्विभ्रं | (पद्विभ्रम्) पद्विभ्रं
 पद्विभ्रं पद्विभ्रं
 पद्विभ्रं (पद्विभ्रम्) पद्विभ्रं
 सवद्वय (सवद्वयम्) सवद्वय
 द्विसिद्वय (द्विसिद्वयम्) द्विसिद्वय, द्विसिद्वय
 द्विसिद्वय
 सुयं (सुयम्) सुयेड सुयद्वय
 सुयं (सुयम्) सुयेड सुयद्वय
 संसद्वय (संसद्वयम्) संसद्वय, संसद्वय
 संसद्वय (संसद्वयम्) संसद्वय, संसद्वय

उदाहरणार्थं मेरुषी मीरुषीयं जायं द्वयेड द्वीयै तावद्विभ्रं
 वर्धद्विभ्रं निद्वयै द्वीयै तावद्विभ्रं द्वीयै द्वीयै द्वीयै

भविष्य कृदन्त

मूळ कर्तुं इत्यत इस्मात् कर्ते इत्यै प्रत्यय म्वाङ्गादी द्वे
 भविष्यकृतं वत द्वे

- करिस्मंतो (करिष्यन्) करतो द्वीयै
- करिस्समाधो (करिष्यमाधा) ,,
- करिस्सम्यो (करिष्यम्यो) करती द्वीयै
- करिस्सम्यो
- करादिस्वमाधो (करापदिष्यमाधा)
- करादिसंतो (करापदिष्यन्) करतो द्वीयै
 इत्यादि

कर्तृदर्शक कृदन्त

मूळ धातुने 'इर' प्रत्यय लगाडवायी तेनु कर्तृदर्शक कृदन्त बने छे

हस+इर-हसिगे (हसनशील) हसनारो

नच+इर-नचिरो (नम्र-नमनशील) नमनारो

हसिरा, हसिरी (हसनशीला) हसनारी

नचिरा, नचिरा वगैरे, (नम्रा-नमनशीला) नमनारी

अनिश्चित कर्तृदर्शक कृदन्तो

पायगो | (पाचक) पाक करनार-रांधनार
पायओ |

नायगो | (नायक) नायक-नेता-दोरनार
नायओ |

नेआ | नेता " " "
नेता |

विज्ज (विद्वान्) विद्वान्

कर्त्ता (कर्ता) कर्ता-करनार

विकर्त्ता (विकर्ता) विकार करनार

वक्ता (वक्ता) वक्ता-बोलनार

हंता (हन्ता) हणनार

छेत्ता (छेत्ता) छेडनार

मेत्ता (मेत्ता) मेडनार

कुम्भारो (कुम्भकार) कुम्भ करनार-कुम्भार

कम्मगरो (कर्मकर) कर्म-काम-करनार-कामगरो

भारडरो (भारहर) भार लड जनार

थणघणो (स्तनघय) घावनार बालक

परंतपो (परंतप) इत्येव तपायमात्र प्रतापी
 सेइयो (सेइका) सखमार वयोरे

केटसांक मन्थयो

अगो (अगे) आगे-आच्छ
 अकट्टु (अकृष्ण) अदि वटीने
 अईइ { (अईक) अटीन-विटीन
 अतीप }

आगामो (अगमः) आच्छकी
 असो { (असः) आगी-एगी
 असो }

अथममथये (अथोऽथम्)
 अथोअथ एक वीमथे

आथ्य (आत्थ्) आथम्यु
 अथ्यु (अत्थु) आथी
 अथा (अथा) अथव
 अथ (अ-अथ) अथेव-अथीन
 अथ्यहा (अथ्यहा) अथे अदि ठे
 अथतर (अथ्यत्थम्) अथर अथा,
 अथ

अथुवा { (अथवा) अथवा
 अथुव }

अथुमा (अथुग) अथ्य
 अथव अथी) अथव
 अथिगी (अथिन) अथे अथु
 अथी अथव
 अथे अथव) अथु अथेव अथु
 अथर्य (अथर्यम्) अथर

अमई (अमई) अमेअर
 अलि } (अलि) अर
 अरति }
 अरति }

अइता (अथअथ्) अथे
 आहथ (आहथ) अथअथ्
 इयो { (इठः) आ अथ,
 इतो } अथर्य
 इइता(अथवा)अथ अथी ठे-अथवा
 (अलि (अथ) अथे

अथरसुथे अथाथ) अथी
 अथ अथी
 अगथा (अथवा) अथवा-अथ
 अथे
 अगीततो (अथअथ) अथ अथी
 अथ (अथ) अथी

अथ (अथम्) अथे
 अथ { (अथम्) अथे अथी ठे
 अथे }

आथमो (अथमः) अथे अथी
 अथे

अथथिरे (अथथिथम्) अथवा
 अथव अथव अथी

अथथिरेव (अथथिरेव)
 अथव अथव अथे

मूरख माणस लपलप करे छे
 राजा हसीने लोकोने नमयो
 हुं पापोने रोकवा माटे
 उतावळो थयो
 महावीरने जोवा माटे लोको
 वढे दोडाय छे
 भोगो भोगवो भोगधीने
 तेभोवढे खेद पमाय छे
 तत्त्वने जाणीने, विद्वान
 वढे मुक्त थवाय छे

प्रह्लाद कुमार प्रजाना दु खोने
 समजीने तेनो सेवक थयो
 जगतमा वधु हमवा जेवुं
 देखाय छे अने रोगा जेवु
 पण देखाय छे
 पुण्य एकठु करवा योग्य छे
 अने पाप वाळया योग्य छे
 ते भणतो भणतो उधे छे
 भणतो पाठ तेनावढे सम-
 लाय छे

सज्जणो सत्यवयणं सोच्चा
 सहदह
 मणूसा पुण्णं किच्च देवा
 ह्वेति
 पाव परिच्चज्ज साह्वहिं सब्ब
 कीरइ
 इंदो महावीर वदित्ता थुणइ
 अग्रस्सं चात्तव्यं वयनि
 महाणुभावा

दद्वृत्तव पासंति देविस्सरा
 नरा
 नविरो वालो पिपर पणमइ
 पायगेण ईसिं अन्न पयिच्चइ
 पगया एव मए सुगं ज
 महावीरेण एव कहिअ
 पयाण पालणेण पाव विणट्ठ
 पुण्णं च जाय

नाम [नरजाति]

अकर्म (अकर्मन्) कर्म रहित
निर्मल-पवित्र

अक (अक) सूर्य, आम्बानु
झाड-आकडो

अग्नि (अग्नि) अग्नि, आग

अच्चि (अच्चिस्) आच, जाळ

अच्छ (अक्ष) आस-हास

अनागम { (अन्+आगम) न

अनागम { आवयुते, अनागमत

अणायर { (अन्यतर) अनेक

अणायर { -बीजो कोई

अप्प (आत्मन्) आत्मा-आप
पोते

अण्ण (अन्य) अन्य, बीजु

अप्पाण (आत्मन्) आत्मा-आप
पोते

अभोगि { (अभोगिन्) अभोगी-

अभोगि { भोगोने नहि भोगवनार

अमु (अदस्) ए

अमुणि (अमुनि) मुनि नहि ते-
चढवढ करनार

अम्ह (अस्मद्) हुं

अय (अयस्) अयस-लोडु

अरय (अरक्) आरो-पैटानो

अरिहंत (अरिह्+अन्त) वीतरान देव

अलाह { (अलाभ) अलाभ-
अलाभ } अप्राप्ति

अवर (अपर) अवर-बीजु

असमण (अभ्रमण) भ्रमण नहि ते

असजम (असयम) असयम

अहर (अधर) नीचु, बीजु

अंक (अङ्क) अक-खोळो

अंतर (अन्तर) अतरजु

अंध { (अन्ध) आंधळो

अंधळ {

अंध (आम्न) आंधो

अंधकाल { (आम्नकाल)

अंधगाल { आंधागळो

अंधमउड (आम्नमुकुट) अवोडो

आहच्च (आदित्य) आदित्य-सूय

आयरिय (आचार्य) आचार्य-
धर्मगुरु, विद्यागुरु

आरिय (आर्य) आर्य-सज्जन

आस (अश्व) अश्व-घोडो

आसाढ (आपाढ) अपाढ मास

आसंक (आशङ्क) आचको

आल्हाम (आहाद) आहाद-
आनद

आहार (आधार) आधार

आहार (आहार) आहार-खावानु

कंसवार } (कांस्यकार)
 कसार } कसारो
 काग } (काक) कागडो
 काक }
 काम (काम) काम-तृष्णा-इच्छा
 काय (काय) काया-काय-शरीर
 काल (काल) काल-समय
 कावड्डिय (कापर्दिक) कावड्डियु
 कोडो-कोडी
 कासव (काश्यप) काश्यप गोत्रनो
 ऋषि-ऋषभदेव
 कांवलिय (काम्बलिक) कामळोयो,
 कावळीओने वेचनार वा
 ओढनार
 किण्हसार (कृष्णसार) काली-
 यार मृग
 किलेस (कलेश) कलेश
 किसानु (कृशानु) अग्नि
 कुक्खि, कुच्छि (कुक्षि) कूख
 कुडुम्बि (कुडुम्बिन्) कणवी
 कुठार (कुठार) कुठार-कुहाडो
 कुठारय (कुठारक) कुहाडो
 कुहालय (कुहालक) कोदाळो
 कुमारवर (कुमारवर) उत्तम
 कुमार
 कुलवड्ड (कुलपति) कुलनो पति-
 धाचार्य

कुंथु (कुन्थु) कथवो-एक नानो
 जीवडो
 कुंभार (कुम्भकार) कुमार
 केवट्ट (कैवर्त) कैवर्त-केवट-होडी
 हांकनार
 केसरि (केसरिन्) केसरावाळो-
 याळवाळो-सिंह-केसरी सिंह
 कोइल } (कोकिल) कोकिल-
 कोकिल } कोयल
 कोड (कोड) गोद-खोळो
 कोणय (कोणक) खूणो
 कोल } (कोड) खोळो
 कोड }
 कोलिक } (कौलिक) कोळी-
 कोलिअ } एक जात
 कोववर (कोपपर) कोपमा तत्पर
 कोपी-कोधी
 कोस (कोश) कोह-पाणी काड-
 वानो, कोश-खवानो
 कोसिय (कौशिक) कौशिक
 गोत्रवाळो इन्द्र अथवा
 चडकौशिक सर्प
 कोइ (कोध) कोध
 कोहदंसि (कोधदर्शिन्) कोधने
 जोनार-कोधी
 खग्ग (खड्ग) खड्ग-खाडु-तलवार
 खत्तिय (क्षत्रिय) क्षत्रिय

कस्यार } (कस्यकार) कसार }
 काग } (काक) कागडो }
 काक }
 काम (काम) काम-तृष्णा-इच्छा
 काय (काय) काया-काय-शरीर
 काल (काल) काल-समय
 कावडिय (कापर्दिक) कावडियु
 कोडो-कोडी
 कासव (काश्यप) काश्यप गोत्रनो
 ऋषि-ऋषभदेव
 कांवलिय (काम्बलिक) कामळीयो,
 कावळीओने वेचनार वा
 ओटनार
 किण्हसार (कृष्णसार) काळी-
 यार मृग
 किलेस (कलेश) कलेश
 किसानु (कृशानु) क्षत्रि
 कुक्कि, कुच्छि (कुक्षि) कूच
 कुटुम्बि (कुटुम्बिन्) कण्ठी
 कुठार (कुठार) कुठार-कुहाडो
 कुठारय (कुठारक) कुहाडो
 कुहालय (कुहाल्क) कोदाळो
 कुमारवर (कुमारवर) उत्तम
 कुमार
 कुलवड (कुलपति) कुलनो पति-
 भाचार्य

कुंथु (कुन्थु) क्यवो-एक नानो
 जीवडो
 कुंभार (कुम्भकार) कुभार
 केवट्ट (कवर्त) कवर्त-केवट्ट-होडी
 हाकनार
 केसरि (केसरिन्) केसरावाळो-
 याळवाळो-सिंह-केसरी सिंह
 कोडल } (कोकिल) कोकिल-
 कोकिल } कोयल
 कोड (कोड) गोद-खोडो
 कोणय (कोणक) खणो
 कोल } (कोड) खोळो
 कोड }
 कोलिक } (कौलिक) कोळी-
 कोलिय } एक जात
 कोववर (कोपपर) कोपमा तत्पर
 कोपी-कोधी
 कोस (कोश) कोह-पाणी काढ-
 वानो, कोश-खजानो
 कोसिय (कौशिक) कौशिक
 गोत्रवाळो इन्द्र अथवा
 चण्डकौशिक मर्ष
 कोड (कोव) कोव
 कोददंसि (कोवर्दागन) कोवने
 जोनार-कोधी
 खग (खट्ग) खड्ग-खाडु-नलवार
 खत्तिय (धत्त्रिय) धत्त्रिय

चित्तियार (चित्रकार) चितारो

छगलय (छाग) छालु-वकर

छत्त (छात्र)-विद्यार्थी

छप्पथ } (पदपद) छपगो
छप्पय } -भमरो

छाइल्ल } (छायल्ल) छायाळ-
छायालु } छायावाल्ल

छावय (शावक) छैयो-छोकरो

छुहागुड (सुधागुड) छागोळ-
चुतो भने गोल्लनु मिश्रण

छेथ (छेद) छेडो

ज (यद्) जे

जट्ट (जर्त) जाट जातनो माणस

जडालु (जटाल) जटालु-
जटावाल्ल

जणय (जनक) जनक-पिता

जणहु (जहनु) ते नामनो सगरपुत्र

जम्म (जन्मन्) जन्म

जर (ज्वर) ज्वर-ताव

जरढ्य (जरठक) घरडो-जरडो

जंतु (जन्तु) जतु-प्राणी-जीववत्

जंबु (जम्बु) जांबु, जावुनु झाड

जामाउय (जामातृक) जमाड

जायतेय (जाततेजस्) जेमा तेज
छे ते अग्नि

जिण (जित) जय पावनार,
वीतराग

जीव (जीव) जीव

जीवाउ(जीवातु) जीवननु औषध

जेट्ट (ज्येष्ठ) मोटो-जेठ

जोक्षिम (ज्योतिषिक) जोशी

जोगि (योगिन) योगी-जोगी

झुणि (ध्वनि) झणझणाट-भवाज
ध्वनि

डंड (दण्ड) दड, डडो, डाडियो

डस (दश) डख

णक्क नाक

णातसुत } (ज्ञातसुत) ज्ञातवशनो
णायसुय } पुत्र-महावीर

णिलाडवट्ट (ललाटपट्ट) निलवट

पहाविम } (स्नापित) नवरावनारो-
नाविम } नावी-हजाम

त } (तद्) ते
ण }

तलाय (तडाग) तलाव

तरच्छ(तरक्ष) तरस नामनु जनावर

तरु (तरु) तरु-ट्टु-झाड

तव (तपस्) तप-तपश्चर्या

तव (स्तव) स्तव-स्तुति

तवस्सि (तपस्विन्) तपस्वी

तस (त्रस) त्रस प्राणी-गति
करी शके तेवां प्राणी

तंतु (तन्तु) तातगो

तंधोलिम (ताम्बूलिक) तंधोली

नरवह (नरपति) नरोनो पति-
नरपति-नरपत-रान

नह (नख) नख

नह (नभस्) नभ-आकाश

नहर (नखर) नहोर

नानपुत्त } (जातपुत्र) ज्ञात-
णातपुत्त } वशनो पुत्र-महावीर
नायपुत्त }

नास (न्यास) न्यास-यापण

नास (नाश) नाश

निव (नृप) नृप-राजा

निवु (निम्बु) लीवु

नेह (स्नेह) स्नेह-नेह

नेहालु (स्नेहाळु) नेहाल-
स्नेहाळ-स्नेहवाळो

पह (पति) पति-स्वामी-धणी
-मालिक

पक्ख (पक्ष) पक्ष-पखवाढीयु,
पख-पाख, तरफदारी

पक्खि (पक्षिन्) पखी-पाखवाळु

पच्छाताव (पश्चात्ताप) पस्तावो

पज्ज (प्राज्ञ) प्राज्ञ-डाह्यो

पज्जुण्ण } (प्रयुन्न) प्रयुन्न नामनो
पज्जुन्न } कृष्णनो पुत्र

पडह (पटह) पढो-ढोल

पण्हअ (प्रस्नव) पानो-पोतानु
वालक जोइने माताने दूध
आवे ते

पण्ह (प्रश्न) प्रश्न

पण्हुअ (प्रस्तुत) पानो

पमाद (प्रमाद) प्रमाद-असाव-
घानता-आळस

पल्हाअ (प्रहाद) प्रहाद कुमार

पवासि (प्रवासिन्) प्रवास करनार

पवंच (प्रपन्न) प्रपच

पव्वय (पर्वत) पर्वत

पशु (पशु) पशु

पहु (प्रभु) प्रभावशाळी-समय

पंथ (पन्थ) पंथ-मार्ग

पाउस (प्रावृत्) प उस-पावस
वरसादनी ऋतु

पाघूणय } (प्राघूर्णक) प्राहुणो-
पाहूणय } अतिथि

पाण (प्राण) प्राण-जीव

पाणि (प्राणिन्) प्राणी

पाणि (पाणि) पाणी-हाथ

पाय (पाद) पा-चोथो भाग

पाय (पाद) पाद-पग-पायो

पायय (पादक) पायो

पावाहु (प्रवासिन्) प्रवासी

पास (पाश) पाश-फांसो, पाशलो
-फासलो

पासाय (प्रासाद) प्रासाद-महेल

पिलोस (प्लोष) दाह

पीलु (पीळ) पीळु झार

मग्ग (मार्ग) माग-मारग
 मग्गु (मद्गु) एक प्रकारनी
 माछली
 मच्चु } (मृत्यु) मोत-मरण-मीच
 मिच्चु }
 मढ (मठ) मठी-मठ-सन्यासियो-
 नु र्हेटाण
 मणि (मणि) मणि
 मयगळ (मदकळ) मंगल-मद
 धरतो हाथी
 मयंक (मृगाङ्क) मृगना निशान-
 वाळो चन्द्र
 मरहट्ट (महाराष्ट्र) मोगे देश-
 महाराष्ट्र देश
 मरहट्टय (महाराष्ट्रीय) महा
 राष्ट्रनो वतनी-मराठी लोक
 मसय (मगक) मच्छर
 महण्णव (महार्णव) महेरामण-
 ममुद्र
 महाप्पमाय (महाप्रसाद) मोटा
 प्रमादवाळो-मुप्रसन्न-कृपाळु
 महातवस्सि (महातपस्विन्)
 मोटो तपस्वी
 महादोम (महादोष) महादोष
 मोटो दोष
 महावीर (महावीर) महावीर
 देव

महासद्धि (महाश्रद्धिन्) मोटी
 अचल श्रद्धावाळो
 महासव (महासव) मोटो आश्रव-
 पापोनो मोटो मार्ग
 महिसि { महा+ऋषि } व्यास वगेरे
 { महर्षि } महर्षि
 मंजार (मार्जार) मणजर-
 किलाहो
 मंति (मन्त्रिन्) मन्त्री-कारभारी
 मंतु (मन्तु) अपराध-शोक
 माघव (मा+घव) लक्ष्मीपति-
 माघव-कृष्ण
 मार (मार) मारनारो-तृष्णा
 मारामिसंकि (मारामिशद्धिन्)
 मार-तृष्णा-यी शक्तिन रहेनार
 दूर रहेनार-तृष्णायो डरनारो
 मालिअ (मालिक) माली-माळा
 वेचनार
 मास (मास) महीनो-मास
 मिलिच्छ (स्तेच्छ) स्तेच्छ
 मुङ्ग } (मृद्ग) मृद्ग
 मिङ्ग }
 मुग्गरय (मुद्गरक) मगदळ-
 मोगरी
 मुणि (मुनि) मुनि-मनन करनार-
 नौन राखनार-सत

मुद्रा (मिर्) मुद्र-बद्ध-
बोधे समय

मूत्र } (मूत्र) मूत्रो
मूत्र }
मूत्र }

मूसय { (मूस) मूस-
मूसय } उदर

मिण (मेण) मीना

मिणमण (मेण+मण-मेण+मण)
मिणमण मण

मिह (मिह) मे-मेह-मिह

मिहादि (मिहादि) मिहादि-
पुमिण

मोक्ष (मोक्ष) मोक्ष-मोक्ष

मोक्षिण (मोक्षिण) मोक्षिण-
मोक्षिण

मोर } (मोर) मोर-मोर
मोर }

मोह (मोह) मोह-मोह

मोहपदास (मोहपदास) त
मोहपदास मोहपदास

मोहपदास (मोहपदास) मोहपदास

मुद्रा } (मुद्रा) मुद्रा
मुद्रा }

मुद्रास्य (मुद्रास्य) मुद्रास्य
-स्य मुद्रास्य

मुद्रास्य (मुद्रास्य) मुद्रास्य

एकपाठ (एकपाठ) एकपाठ
एकपाठ एकपाठ

एक (एक) एक

एकपाठ } (एकपाठ) एकपाठ-
एकपाठ }

एकिस (एकिस) एक-एकिस
के बोधनी एक

एक (एक) एक-एक

एकपिसि (एकपिसि) एकपिसि

एकिस (एकिस) एकिस

एकिस } (एकिस) एक
एकिस }

एक (एक) एक-एक

एक } (एक) एक-एक
एक }

एकसाधिस (एकसाधिस)
एकसाधिसो-एकसाधिसो

एकसाधिस (एकसाधिस) एकसाधिस-
एकसाधिस

एकसाधिस (एकसाधिस) एकसाधिस

एकसाधिस (एकसाधिस) एकसाधिस

एकसाधिस (एकसाधिस) एकसाधिस

एकसाधिस (एकसाधिस) एकसाधिस

वणप्फइ } (वनस्पति) वनस्पति
 वणस्सइ }
 वद्धमाण (वर्धमान) वर्धमान-
 महावीर
 वम्मह (मन्मथ) मनने मथनार
 कामदेव
 वरदंसि (वरदर्शिन) उत्तम
 रीते जोनार
 ववहार (व्यवहार) वेवहार-वेपार
 ववहारि (व्यवहारिक) वहे-
 वारी-वेपारी
 वसभ (वृषभ) वरख राशी
 वसह (,) वृषभ-वळद
 वसु (वसु) पवित्र मनुष्य वसु-
 घन
 वसअ (वशक) वासो-पीठ
 वाउ } (वायु) वायु-वा
 वायु }
 वाणिअ (वाणिज) वाणीओ
 वाणिज्जार (वाणिज्यकार वण
 जारो-वणज करनारो-वेपारी
 वाहि (व्याधि) व्याधि रोग
 विज्जस्थि (विद्यार्थिन) विद्यानो
 अर्थो-विद्यार्थी
 विडवि (विटपिन्) वीड-झाड
 विण्ह (विष्णु) विष्णु

विप्परियास (विपर्यास) विप-
 र्यास-विपरीतता-भ्रान्ति
 विराग (विराग) रागथी विरुद्ध
 भाव-वैराग्य
 विवाहकाल (विवाहकाल)
 विवाडो-लग्नसरा
 विहु (विधु) विधु-चन्द्र
 विंचुअ (वृश्चिक) वींछी
 विळिअ (,) ,
 वीस (विश्व) विश्व-वधु
 वुडु (वृद्ध) वूडो-घरडो
 वुत्तंत (वृत्तान्त) वृत्तान्त-समाचार
 वेय (वेद) ऋग्वेद वगेरे वेद
 वेवाहिअ (वैवाहिक) वेवाई
 वेस (वेष) वेप-भेख
 वेसाह (वैशाख) वैशाख मास
 वोज्झ (वण) वोजो
 वोज्झअ वोजो
 स, सुव (स्व) पोतानु
 स (श्वन्) श्वान-कूतरौ
 सउणि (शकुनि) शकुनि-पक्षी
 सज्ज (पड्ज) षड्ज-एक प्रका-
 रनो सर
 सठ (शठ) शठ-दुच्चो
 सह (शब्द)-साद-अवाज
 सप्प (सर्प) साप
 सम (सम) मधु

सुमय (सुमय) सुदि मये धय
 सुभार संसुध
 सुमसईदि (सुमसईदि)
 सुभे सुभार

सुगुर } (सुगुर) सुगुर-
 सुगुर } सुगुर

सुवमु (सुवमु) सुव सुभार-
 सुव ते सुभारो सुगुर

सुव (सुव) सुव सुभारो सुव
 सुव सुभार ते

सुव (सुव) सुव-सुभार

सुवह (सुवह) सुव-सुभार-सुव

सुव (सुव) सुव-सुव-सुव

सुवह (सुवह) सुवह-सुव
 सुभार

सुवह (सुवह) सुव सुभार

सुवह (सुवह) सुव सुभारो
 सुव सुव-सुवह

सुव (सुव) सुव-सुव

सुव (सुव) सुव

सुव (सुव) सुव-सुव

सुव (सुव) सुव

सुव (सुव) सुव-सुव सुव-
 सुव

सुव (सुव) सुव-सुव

सुव (सुव) सुव-सुव

सुव (सुव) सुव-सुव
 सुव-सुव सुव सुव

सुव (सुव) सुव

सुव (सुव) सुव-सुव

सुव (सुव) सुव-सुव

सुव (सुव) सुव-सुव
 सुव सुव सुव

सुव (सुव) सुव-सुव
 सुव सुव

सुव (सुव) सुव

सुव (सुव) सुव

सुव (सुव) सुव, सुव,

सुव-सुव सुव सुव
 सुव

सुव (सुव) सुव

सुव (सुव) सुव-सुव

सुव (सुव) सुव

सुव (सुव) सुव

सुव (सुव) सुव

सुव (सुव) सुव

सुव (सुव) सुव-सुव

सुव (सुव) सुव-सुव

सुव (सुव) सुव

सीस } (शिष्य) शिष्य-
सिस्स } विद्यार्थी

सीह } (सिंह) सिंह
सिघ }

सुत्तहार (सूत्रधार) सुतार

सुमिण }
सिमिण } (स्वप्न) सपनु-
सुविण } सोणु
सिविण }

सुरद्व (सुराष्ट्र) सोरठ देश

सुरद्वय { सुराष्ट्रीय }
सोरद्वीय { सौराष्ट्रीय }

सोरठनो-वतनी-सोरठी लोक

सूकर (शूकर) शूकर-भूड

सेट्टि (श्रेष्टिन्) श्रेष्टी-शेठ-चेष्टी

सोवाग (श्वपाक) चांडाळ

सोमिच्चि (सौमित्रि) सुमित्रानो
पुत्र-लक्ष्मण

सोरहिअ (सौरभिक) सरैयो-
सुरभि-सुगधी-तेल वगेरेने

वेचनार
सोवण्णिय (सौवर्णिक) सोनी-
सोनु घडनार

हत्थ (हस्त) हाथ

हत्थि (हस्तिन्) हाथी

हर (हर) हर-महादेव

हरिअंद (हरिश्चन्द्र) हरिचद राजा

हरिपसवल (हरिकेशवल) मूळ
चडाळ कुळमा जन्मेलो एक
जैन मुनि

हरिण (हरिण) हरण

हरिताळ (हरिताळ) हरताळ

हरिस (हर्य) हरख-हर्य

हव्यवाह (हव्यवाह) हव्यवाह-
अग्नि

हेमंत (हेमन्त) हेमन्त ऋतु-
शियाळो

नाम [नारीजाति]

अच्छरसा (अप्सरस) अप्सरा

अज्जू (भार्या) सासू-भाजी

अलसी (अतसी) अळशी

अलाऊ } (अलावू) तुवडी-
लाऊ } उलआ

अंगुलि (अङ्गुलि) आगळी

आणा (आज्ञा) आज्ञा-आण

आपत्ति (आपत्ति) ओपट्टी

आसिसा (आशिष्) आशिष

इत्थी } (स्त्री) स्त्री-तिरिया
थी }

उज्जु (ऋजु) सरळ

वहु (दहु) घाघर-दादर
 दित्ति (दीप्ति) दीप्ति-तेज
 दाढा (दण्ड्रा) दाढ
 दिसा (दिशा) दिशा-दश
 दिद्दि } (धृति) धैर्य
 धिद्द }
 देवराणी (देवराणी) देराणी
 घत्ती (घात्री) घात्री
 घाई (घात्री) घाई-धवरावनारी
 भाता
 धुधा (दुहिता) धीकरी
 धूलि (धूलि) धूल
 नणदा (ननान्द) नणद
 नारी (नारी) नारी-नार
 नावा (नौका) नाव
 निसा (निशा) निशा-रात्री
 पण्णा (प्रज्ञा) प्रज्ञा
 पतीति (प्रतीति) पतीज-विश्वास
 परिहावणिया (परिघापनिका)
 पहेरामणी
 पंति (पक्ति) पक्ति-पगत-पात
 पाडिषमा } (प्रतिपदा)
 पाडिषया } पडवो तिधि
 पिउच्छा } (पितृष्वसा)
 पिउसिया } पिनानी वहेन-
 फई
 पिच्छी (पृथ्वी) पृथ्वी

पुच्छा (पृच्छा) प्रश्न-पूछ
 पुरा (पुर) पुरी-नगर-नगरी
 पुहवी (पृथ्वी) पृथ्वी
 पेडिया (पेटिका) पेटि
 वच्चरी (वर्वरी) वावरी-माथानी
 वावरी
 वहिणी (भगिनी) वहेन
 वारिया (द्वारिका) वारी
 वाहा (वाहु) वाहु-हाथ-वाय
 भइणी } (भगिनी) वहेन
 भगिणी }
 भाउजा (भातृजाया) भोजाय
 भीइया } (भीतिका) भीक
 भीइका }
 भूमि (भूमि) भूमि-भों
 मइ (मति) मति
 मक्खिया } (मक्षिका) माखी
 मच्छिया } -माछी
 मज्जाया (मर्यादा) माजा-
 मलाजो
 मट्टिया (मृत्तिका) माटी
 महिसी (महिपी) भेंश
 मंजुसा (मञ्जुषा) मज्जह-पेटि
 माथरा } (मातृ) देवी-माता
 मायरा }
 माया (मातृ) माता-जननी
 माइ (मातृ) ना-माई
 गाउ (मातृ) माता

सवत्तिका (सपत्नीका) शोक्य
 ससा (स्वय) स्वसा-वेन
 संज्ञा (मध्या) सांज
 सति (शान्ति) शांति
 संदंशिमा (सदेशिका) सांडवी
 संपया } (सपदा) सपदा-
 सपमा } सपति
 सपदा }
 साडी (शाटी) साठी

सामा (श्यामा) युवति स्त्री
 साहुवी } (साध्वी) साध्वी
 साहुणी }
 सिद्धि (सिद्धि) सिद्धि
 सिष्पी (शुक्ल) छीप
 सूइ (सूचि) सोम
 सुण्हा } (सुषा) सुषा-
 ण्हुसा } पुत्रवद्ध
 हलदा, हलिदा (हरिद्रा) हळदर

नाम [नान्यतरजाति]

अक्षि } (अक्षि) आक्ष
 अच्छ }
 अच्चम्भुय (अत्यदम्भुन) अचवो
 अच्छेर (आश्रय) आश्रय-अचरज
 अजिण (अजिन) अजिन-चामडु
 अट्टगुगय (अष्टगुणक) आटगणु
 अट्टि (अस्थि) हट्टी-हाडकु-ह ड
 अत्थ (अत्त) अत्त फक्कवानु हथीयार
 अद्ध अध) अद्धु [चाण वगेरे
 अभयप्पयाण (अभयप्रदान)
 अभयदन-प्राणीओ निर्भय रहे
 -वने-तेवो प्ररुत्ते
 अमिय (अमृत) अमी-अमृत
 अरविइ (अरविन्द) अरविन्द-
 उत्तम वमळ

असाय } (असात) शाता
 असात } नहि-सुख नहि ते
 अहिजाण (अभिज्ञान) एघाण
 अगण (अज्ञन) आंगणु
 अंडय (अण्डक) इडु
 अंसु (अश्रु) आसु
 आउय (आयुष्क) आयुष्य-जोदगी
 आभरण (आभरण) आभरण-
 घरेणु
 आमलय (आमलक) आमलु-
 आंचलु
 उच्चंचलय (उच्चंचलक)
 उच्छांठलो
 उच्छंसलय (उच्छंसलक)
 उच्छुल्ल

घउन्दट्टय (चतुर्नर्मक) चौट्ट
 चार रस्ता
 घक (चक) चक-चरपो
 घम्म (चर्मन्) चम-चामड
 घडालिम (चाण्डालिक) चडा-
 लनो स्वभाव-क्रोध
 चंशण (चन्दन) चन्दननु क्ष'ठ
 के लाकडु
 चारित्त (चारित्र) सच्चारित्र-
 सद्वर्त्तन
 चुच्छ (तुच्छ) तुच्छ-जूज
 चेइम (चैत्य) चिता उपर चणेल्ल
 स्मारक-चिह्न-ओटाओ, छत्री
 पगलां, वृक्ष कुड, मूर्ति वगेरे
 चेण्ह (चिह्न) चेत-च'ळा
 चेल (चेल) चेल-वन्न
 छगुणय (पद्मगुणक) छगण
 छट्टय (पष्टक) छट्टु
 छणपय } (क्षणपद) हिंसा-
 छणपय } हिंसानु स्थान
 छत्त (छत्र) छत्र-छत्री
 छिह्य (छिद्रक) छौड
 छीअ (धुत) छौंक
 जउ (जतु) जतु-लास
 जल (जल) जल-पाणी
 छाण (यान) यान-वाहन
 जाणु (जानु) जानु-गोठग
 जिमिय (जेमित) जमेळ

जीवण (जीवन) जीवन-जीदगी
 जुग (युग) घौसर
 जुझ } (युद्ध) युद्ध-लडाई
 जुद्ध }
 जुम्म } (युग्म) युग्म-जोडु
 जुगग } -जोडी
 जोवणय (यौवनक) जीवन-यौवन
 निलाट (ललाट) निलाट-
 ललाट
 णयर }
 णगर } (नगर) नगर-शहेर
 नगर }
 नयर }
 णिवर } (नीम) नेवु-
 निव्वर } छापरानु नेवु
 तग्ग तन्नुक-तागटो-प्रागटो
 तण (तृण) तरणु-घास
 तव (ताम्र) तांनु
 तवोळ (ताम्बूल) तवोळ-
 नागरवेलनु पान
 ताण (त्राण) रक्षण-शरण-
 आशरो
 तालु (तल्ल) ताल्लु
 तिगुणय } (त्रिगुणक) त्रमणु
 तिउणय }
 तिमिर (तिमिर) तम्मर-अधारां
 तिलय (तिलक) टीडु
 तेल (तैल) तेल

पल्लण (पर्याण) पलाण
 पवहण (प्रवहण) वाहन-वहाण
 पंजर (पञ्जर) पांजर
 पाणीय } (पानीय) फणी-
 पाणीय } पीवानु
 पाटलियुत्त (पाटलीपुत्र) /
 पाटलिपुत्र-पटना शहर
 पायत्ताण (पादत्राण) पाद-
 त्राण-जोडा
 पाव (पाप) पाप
 पावग (पावक) पाप
 पावरणय (प्रवरणक) उपरण
 पास (पार्श्व) पासु-पडसु
 पासग (दर्शक-पश्यक) द्रष्टा,
 समजनारो-विचारक
 पिच्छ (पिच्छ) पीछु
 पित्त (पित्त) पित्त
 पुच्छ (पुच्छ) पूछडु-पूछ
 पुट्टय (पृष्ठक) पूठु
 पुप्फ पुष्प) पुप्प-फूल
 फल (फल) फळ
 फंदण (सन्दन) पादवु-फर-
 कवु-थोडु थोडु हलवु
 घग्घचेर (ब्रह्मचर्य) ब्रह्मचर्य-
 सदाचारवाळी वृत्ते-
 ब्रह्ममां परायण रहेवु ते
 घयर (वदर) वोर-वैर

धार } (द्वार) वार-वारण
 दुगार }
 विज्ज (द्वितीय) वीजु
 विगुणय, विउणय (द्विगुणक)
 घमणु
 विंदु (विन्दु) मीडु
 विवय (विम्बक) विव-प्रति-
 विव-वीवु
 वीध (वीज) वी-वीज
 भय (भय) भय-भो
 भयव्वाउलय (भयव्वाकुलक)
 वेवाक्को
 भायण } (भाजन) भाजन-
 भाण } भाणु-पात्र
 भारहवास (भारतवर्ष) भारत-
 देश-हिन्दुस्तान
 भाल (भाल) भाल-कपाळ-
 ललाट
 भोयज (भोजन) भोजन-
 जमण
 मच्चुमुद्ध (मत्स्यमुख) मत्स्यु
 मुख-भोतनु मोडु
 मत्थय (मस्तक) मायु
 मयणफल } (मदनफल)
 मयणहल } नौढोळ
 मरण (नरण) मरण-भोत

वित्त } (वेत्र) नेतर-नेतरनी
वेत्त } सोटी-वेत

विज्ञान } (विज्ञान) विज्ञान
विष्णाण }

विस (विष) विख, वख

वीरिय (वीर्य) वीय-वळ-
शक्ति

वेर (वैर) वेर-वैर

सगडय (शकटक) छकढो-
शकट

सद्य (सत्य) सत्य-सात्तु

सत्तगुणय (सप्तगुणक) सातगणु

सत्थ (शस्त्र) शस्त्र-हणवानु
हणीयार-तरवार वगेरे

सत्थ (शास्त्र) शास्त्र

सत्थिल्ल } (सक्थिय) स;थळ
सत्थि }

सयढ (शकट) छकढो-गाडुं
-शकट

सरण (शरण) शरण-भाशरो

सल्ल (शल्य) साल शल्य

साय } (सात) शाता- मुख
सात }

सावज्ज (सावय) पापप्रवृत्ति

सावत्तक } (सापत्न्यक)
सावत्तय } सावकुं

सासुराय (श्वशुरक) सासरु,
सासरानु घर

सित्थ (सिषय) सीथ-अनाजनो
कण

सिग (शृङ्ग) शिगडु-शिगु

सीथ (शीत) शीत-टाढ

सील (शीळ) शील-सदाचार

सीस (शीर्ष) शीश-माथु

सुक्ख (सौख्य) सुख

सुत्त (सूत्र) सूत्र-सूतर,
सूत्ररूप टुकु वाक्य

सुवण्ण (सुवर्ण) सोनु

सोअ } (श्रोत्र) श्रोत्र-कान-
सोत्त } सामळवानु साघन

सोरम (सौरभ) सोढम

हियय (हृदय) ह्यु

हुअ (हुत) होम

विशेषण

अक्खाय (आख्यात) क्हेळुं
-क्हेवु

अवेलय } (अवेलक) ऐलक-
अपलय } कपडा विनानु

अज्जणण } (अद्यतन) आजनु-
अज्जतण } तजु

अज्ज (अय) अर्य-वैश्य-स्वामी

अज्ज (आर्य) आर्य

वित्त } (वेत्र) नेतर-नेतरनी
वेत्त } सोटी-वेत

विघ्नाण } (विज्ञान) विज्ञान
विण्णाण }

द्विस (विष) विख, वख

धीरिय (वीर्य) वीय-वळ-
शाक्ति

धेर (वेर) वेर-वेर

सगडय (शकटक) छकडो-
शकट

सध (सत्य) सत्य-सानु

सत्तगुणय (समगुणक) सातगणु

सत्य (शस्त्र) शस्त्र-हणवानु
हथीयार-तरवार वगेरे

सत्य (शास्त्र) शास्त्र

सत्थिल्ल } (सक्थिय) स,थळ
सत्थि }

सयड (शकट) छकडो-गाड्डे
-शकट

सरण (शरण) शरण-आशरो

सल्ल (शल्य) साल शल्य

साय } (घात) घाता- मुछ
सात }

सावळ (सावध) पापप्रवृत्ति

सावत्तक } (सापत्न्यक)
सावत्तय } सावळुं

सासुत्थ (श्वशुरक) सासरु,
सासरानु घर

सित्थ (सिक्थ) सीथ-अनाजनो
कण

सिंग (शृङ्ग) शिंगटु-शिंगु

सीय (शीत) शीत-टाड

सीळ (शीळ) शील-सदाचार

सीस (शार्प) शीश-माथु

सुद्ध (सौख्य) सुख

सुत्त (सूत्र) सूत्र-सूतर,

सूत्ररूप टुकु वाक्य

सुवण्ण (सुवर्ण) सोनु

सोअ } (श्रोत्र) श्रोत्र-कान-
सोत्त } सांमळवानु साघन

ओरभ (सौरभ) सोटम

दियय (हृदय) ह्यु

हुअ (हुत) होम

विशेषण

अफखाय (आख्यात) कहेळ
-कहेवु

अवेलय } (अचेत्क) ऐत्क-
अपलय } कपडा वितानु

अज्जगण } (अद्यतन) आजनु-
अज्जतण } तजु

अज्ज (अय) धर्य-दंडय-स्वामी

अज्ज (आर्य) आर्य

किञ्च (कृत्य) कृत्य
 किलिङ्ग (क्लिष्ट क्लेशवाङ्मुक्लिष्ट
 किलिन्न (फलन) गीलु-भीनु
 भीजाएल
 किलित्त (वल्लभ) कल्लभ
 कुमल (कुशल) कुशल-चतुर
 केरिप (कीट्या) केवु
 कोसेय (कौशेय) कौशेय-
 रेशमी-वन्न
 खलपु (खलपु) खल्लु साफ
 करनार
 गद्विप (गृद्ध) अतिशय लाल्चु
 गय (गत) गएल जवु
 गामणि (ग्रामणी) गामनो नेता
 गिन्नाण } (ग्लान) ग्लान थएल,
 गिलान } ग्लान थवु
 गुप्त (गुप्त) गोपवेल्-सुरक्षित-
 गुप्त
 गुरु (गुरु) गुरु-भारे नोट
 गुल्ज (गुण) रूपवना योग्य,
 गुं
 घट्ट (घृष्ट) घसेल, चुवाळ
 करेलु वाटेलु
 घेटव्य (प्रहीतव्य) ग्रहण
 करवा लेवु
 चउत्थ } (चतुर्थ) चौथु
 चतुत्थ }

चउरंस } (चतुरस्र) चौरस
 चउरस्म }
 चड (चण्ड) प्रचड-क्रोधी
 चारु (चारु) सारु-सुन्दर
 छट्ट (पष्ट) छट्ट
 जन्न (जन्य) जणवा योग्य
 जाय (जात) जाएल, थएल,
 जणवु
 जिथ (जित) जीतेलु-जीतवु
 जिद्दिय (जितेन्द्रिय) इन्द्रियो
 उपर जय मेळवनार
 जुगुच्छ (जुगुप्त) जुगुप्ता
 करनार, घृणा कानार
 जुन्न (जीर्ण) जीण, जूनु, जळी
 -जरी-गएल
 जोइम } (योजित) जोडेलु
 जोइय }
 टड्ड (स्तब्ध) टाडो, टण्डो,
 स्तब्ध, जड, थभी गएल
 ठिय (स्थित) स्थित-स्थान
 डड्डमाण (दट्टमान) दाक्षतु-
 वळतु
 तदय } (तृतीय) त्रीनु
 तदज }
 तत्त (तप्त) तपेट
 तथस्सि (तपस्विन्) तपस्वी
 तंस (त्र्यस्र) त्रानु-त्रिकोण
 तिण्ण (तीर्ण) तरी गएल

प्रमत्त (प्रमत्त) प्रमत्त-प्रमादी
 प्ररूषित (प्ररूपित) प्ररूपेष्ठ,
 जगवेष्ठ, प्ररूपवु

पंचम (पञ्चम) पाचमु

पंडित (पण्डित) पंडित-भणेलो,
 पंडित } पडथो पोरुपडित

पंत (प्रान्त) अन्तनु, छेवटनु,
 वापरता वधेष्ठ

पिआउय (प्रियायुष्क) आयु-
 प्यने प्रिय समजनार

पियामह (पितामह) वापनो
 वाप

पिय (प्रिय) प्रिय-वहाल्ल

पिहिय (पिहित) ढाकेष्ठ

पीण (पीन) पुष्ट

पुष्ट (पुष्ट) पुष्ट

पुष्ट (पुष्ट) पूजाएल्ल

पुणज (पूर्ण) पूग-भरेलो-

संपत्तिवाळो

पुणज (पुण्य) पवित्र कान

पुराण { पुराण } पुराण,

पुराअण { पुरातन } जुनु

पोरु (प्रोन) परोष्ठु-परोवेष्ठ

घरुल्ल (वाय) वहाएनु, वहा-

रनो देस्ताव

यद्ध (वद्ध) वद्ध-वाधेलो-

वधाएल्ल

घहु (बहु) बहु-घहु

विश्य }
 विश्ज } (द्वितीय) बीजु
 दुश्य }
 दुश्ज } -दुष्ट

वुद्ध (बुद्ध) बोधवाळो-ज्ञानी

भव (भव्य) थवा योग्य-ठीक

मिच्च (मृत्य) पाळवा योग्य-

मृत्य-नोकर

भुत्त (भुक्त) भुक्त-भोग्वेष्ठ

भोत्तव्व (भोक्तव्य) भोजन

करवा जेवु, भोगववा जेवु

मईय (मदीय) मारु

मट्ट (मृष्ट) माजेष्ठ, शुद्ध

मड-मय (मृत) मृत-मरेष्ठ

मणसि (मनस्विन्) बुद्धिमान्

मय (मत) मानेष्ठ मानवु-मत

महग्घ (महाघ) मोवु

मह्हिय } (महर्विक) मोटो

महिहिय } ऋद्धवाळु-घनाढ्य

मायामह (मातमह) मानो वाप

मिड (मृदु) मृदु-दोमळ नरम मड

मिळाण } (म्लान) म्लान

मिलान } थवेठु करमाएल्ल

म्लान थवु

मित्त (मुक्त) मुक्त-छुट्ट

मुद्ध (मुष) मुष

मूढ (मूढ) मूढ-मोहवाळो-

अमण-अज्ञानी

सुगंधि (सुगन्धिन्) सुगंधी वस्तु
 सुजह (सु+हान) सहेलाईथी
 तजी शकाय ते
 सुत्त (सुप्त) सूतेल
 सुत्त (सूक्त) सूक्त-सारी उक्ति
 सुभाषित
 सुय (श्रुत) सामकेलु, सामळवु
 सुदि (सुखिन्) सुखी

सुहुम } (सूक्ष्म) सूक्ष्म-
 सुखुम } नावु.
 सेठ्ठ (श्रेष्ठ) श्रेष्ठ-उत्तम
 हव (हत्) हणयेलु-हणेळ
 हय (हत्) हरेळ हरवु
 हतव्व (हन्तव्य) हणवा योग्य
 हुत (हुत्) होमेळ हवन करयेळ
 हेट्टिल्ल (अधस्तन) हेटळ

संख्यावाचक शब्दो

अट्ट (अष्टन्) आठ
 अट्टचत्तालिसा } (अष्टचत्वारिंशत्)
 अडपाला } अडताळाश
 अट्टणवइ } (अष्टनवति) अठणु
 अडणवइ }
 अट्टाणवइ }
 अट्टीसा } (अष्टत्रिंशत्)
 अडतीसा } आडतीश
 अट्टसट्टि } (अष्टपष्टे)
 अडसट्टि } अडसठ
 अट्टसत्तरि } (अष्टमत्तति)
 अडसत्तरि } अठ्यातेर
 अट्टारस } (अष्टादश)
 अट्टारह } अट्टार

अट्टावन्ना } (अष्टम्विंशत्)
 अडगन्ना } अट्टावन
 अट्टणणासा }
 अट्टवीसा } (अष्टत्रिंशति)
 अडवीसा } अठ्यावीश
 अट्टासीइ (अष्टाशीति) अठ्याशी
 अयुत्त, अयुअ (अयुत्त)
 दश हचार
 असीइ (अशीति) अेशी
 एकवीसा } (एकत्रिंशति)
 पगवीसा } एकवेश
 पकवीसा }
 पगाह } (एकादश)
 पआह } अगिआर
 पआरस }

चउधीसा } (चतुर्विंशति) चोवीश
चोवीसा }

चउसट्टि } (चतुष्पष्टि) चोसठ
चोसट्टि }

चउचत्तालिसा } (चतुश्चत्वा
चोआलिसा } रिशत्)
चोआला } चुमालीश-
चउआला } चुआळीश

चत्तारि सयाइं (चत्वारि
शतानि) चारसैं

चत्तालीसा (चत्वारिंशत्)
चाळीश

चोवण्णा } (चतुष्पञ्चाशत्)
चउपण्णासा } चोमन

चोसत्तरि } (चतुस्सप्तति)
चोइत्तरि } चूमोतेर
चउसत्तरि }
चउइत्तरि }

छ (पट्) छ

छचत्तालिसा } (पट्चत्वांशत्)
छाशाला } छेताळेश

छण्णवइ (पण्णवति) छन्नु

छत्तीसा (पट्प्रिंशत्) छत्रीश

छप्पण्णा } (पट्पञ्चशत्)
छपण्णासा } छप्पन

छब्धीसा (पट्विंशति) छब्धीश

छसत्तरि } (पट्सप्तति)
छइत्तरि } छोतेर

छासट्टि (पट्षष्टि) छासठ

छासीइ (पडशीति) छाशी

णवणवइ } (नवनवति)
नवणवइ } नव्वाणु

ति (त्रि) त्रण

तिचत्तालिसा } (त्रिचत्वारि-
तेआलिसा } शत्)
तेआला } तेंताळीश

तिण्णि सयाइं (त्रीणि
शतानि) त्रणसैं

तिसत्तरि } (त्रिसप्तति)
तिइत्तरि } तेंतेर

तिसय (त्रिशत्) त्रणसो

तीसा (त्रिशत्) त्रीश

तेणवइ (त्रिनवति) त्राणु

तेतीसा } (त्रयविंशत्)
तितीसा } तेंत्रीश

तेरस } (त्रयोदश)
तेरइ } तेर

तेषण्णा } (त्रिपञ्चाशत्)
तिपण्णासा } त्रैपन

तेवीसा (त्रयोविंशति) तेवीश

तेसट्टि (त्रिपष्टि) त्रसठ

वेचत्तालिसा } वेयाला } दुचत्तालिसा }	(द्विचत्वारिंशत्) वेताळीश
वे सयाइं (द्वे शते) षसो	
लक्षत्र (लक्ष) लाख	
वीसा (विंशति) वीश	
सट्टि (पष्टि) साठ	
सत्त (सप्तन्) सात	
सत्तचत्तालिसा } सगयाला }	(सप्तचत्वा- रिंशत्) सूढताळीश
सत्तणवड्ड } सत्ताणवड्ड }	(सप्तनवति) सत्ताणु
सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्)	साढत्रोश

सत्तरस } सत्तरह }	(सप्तदश) सत्तर
सत्तरि } हत्तरि }	(सप्तति) षीतेर
सत्तहट्टि (सप्तपष्टि) सढसठ	
सत्तसत्तरि } सत्तहत्तरि }	(सप्तसप्तति) सत्योतेर
सत्तावन्ना } सत्तपण्णासा }	(सप्तपञ्चाशत्) सत्तावन
सत्तावीसा (सप्तविंशति)	सत्यावीश
सत्तासीइ (सप्ताशीति) सत्याशी	
सय (शत) सो	
सहस्स (सहस्र) हजार	
सोलस } सोलह }	(पद्+दश-षोडश) सोळ

अन्यय

अओ } अतो }	(अत) आथी-एथी
अईव } अतीव }	(अतीव) अतीव- विशेष
अकट्टु (अकृत्वा) नहीं करीने	
अगगओ (अग्रत) आगलयो	
अग्गे (अग्रे) आघे-आगळ	
अज्जत्तयं } अज्जप्प }	(अध्यात्म) आमाने लगनु-अदरनु

अत्थु (अस्तु) थाओ	
अण (अन्) निपेघ, विपरीत	
अणंतरं (अनन्तरम्) अतर	विना, तुरत
अणमणं (अन्योऽन्यम्)	अन्योन्य-एकजीजाने
अणया (अन्यदा) अन्य समये	
अणहा (अन्यथा) तेम नाहि ते	
अत्थ (अस्तम्) आथमनु-अदर्शन	

कहि } (कुत्र) क्यां, कहीं
 कहि }
 कालओ (कालत) काळे
 करीने-बखते
 किं (किम्) शु, शा माटे
 कुत्तो } (कुन) क्याशी,
 कुओ } शायी, कई वाजुथी
 केवच्चिरं (कियच्चिरम्) केटला
 लांवा समय सुधी
 केवच्चिरेण (कियच्चिरेण)
 केटला लांवा समय सुधी
 केवलं (केवलम्) केवल,
 फक्त, मात्र
 खलु (खलु) निश्चय
 खिप्प (क्षिप्रम्) खेप-जल्दी
 खु }
 खी } (खलु) निश्चय
 हु }
 च } (च) अने
 य }
 चिरं (चिरम्) चिर-लांवा
 काळ सुधी
 जया (यदा) ज्यारे
 जहा } (यथा) जेम
 जह }
 जहासुत्तं (यथासूत्रम्) सूत्रमा
 -शास्त्रमा कथा प्रमाणे
 जहि (यत्र) ज्या, जहाँ

जं (यत्) जे-के
 जाव } (यावत्) जो, ज्यां
 जा } सुधी
 जेण (येन) जे तरफ
 तओ, तत्तो (तत्) तेथी,
 त्यार पळी
 तथा } (तथा) तेम
 तह }
 तहि } (तत्र) त्यां, तहीं
 तहि }
 ताव } (तावत्) तो
 ता } त्यासुधी
 तु (तु) तो
 तेण (तेन) ते तरफ
 दाणि }
 दाणि } (इदानीम्) हमणा
 ध्याणि } आजकाल
 इयाणि }
 दुहु (दुष्ट) दुष्ट रीते
 धुवं (ध्रुवम्) ध्रुव-चोक्षस
 न (न) न
 नमो } (नम) नमस्कार
 नमो }
 णवर नर्यु-वेवळ
 णाणा (नाना) अनेक प्रकारनु
 निच्चं } (नित्यम्) नित्य
 निच्चं }
 नो (नो) नहीं

परो (परो) प्रकृत्यादे-अतः-
इत्थे

पुत्र } (पुत्रा) पुत्र पुत्र
पुत्रा } इत्येवम्
इत्थे

वसुधामो (वसुधामो) वसुधामो
इत्थे

वह्निमा } (वह्नि) वह्नि
वह्निया } इत्थे

वह्निया (वह्नि) वह्नि
मन्त्रो (मन्त्रो) मन्त्रो-इत्थे-
इत्थे

मन्त्रा } (मन्त्र) मन्त्र-
मन्त्रो } इत्थे-इत्थे इत्थे

मा (मा) मा-इत्थे

मुनि } (मुनि) मुनि-
मुनि } इत्थे-इत्थे
मुनि } इत्थे-इत्थे
मुनि } इत्थे-इत्थे

व } (व) व, वत्ता इ
वा } इत्थे

विद्या } (विद्य) विद्य
विद्या } इत्थे

इ० दि० (इत्थे इत्थे)
इत्थे

सह (सह) सह
सह (सह) सह-इत्थे-
इत्थे

सततं } (सतत) सतत-
सततं } इत्थे

सत्ता (सत्ता) सत्ता-इत्थे

सम्पत्तो } (सम्पत्) सम्पत्-
सम्पत्तो } इत्थे, इत्थे
सम्पत्तो } इत्थे

सम्पत्त्य (सम्पत्) सम्पत्
इत्थे इत्थे

सम्पत्ता (सम्पत्) सम्पत् इत्थे

सम्पत्ता (सम्पत्) सम्पत् इत्थे

सह (सह) सह-इत्थे
सहि (सहि) सह-इत्थे

सह (सह) सह इत्थे

सु० दि० (सुत्थे इत्थे)
इत्थे

वातु

सह+वाय (सहि+वाय) सह-
इत्थे इत्थे-इत्थे

स-सहोइ वा+सोइ
इत्थे-इत्थे

सह (सह) सह-इत्थे
इत्थे

सह (सह) सह-इत्थे

सह+सहो (सहि+सहो) सह-
इत्थे इत्थे-इत्थे

सह+सहो (सहि+सहो) सह-
इत्थे इत्थे-इत्थे

अणु + तप् (अनु+तप्य)
अनुताप करवो-पश्चात्ताप
करवो

अणु + भव् (अनु+भव)
अनुभववु-भोगववु

अणु+सास् (अनु+शास्)
शिक्षण आपवु-समजाववु

अण्ह (अश्ना) अशन करवु-
जमवु-खावु

अप्पु } (अर्प) आपवु
ओप्पु }
अब्भुत्त् (अवमृथ) अबोत्तवु-
आमहवु-नहावु

अभि+जाण् (अभि+जाना)
अहिजाणवु-अंधाणवु-ओळखवु

अभि+नि+क्त्तम् अभि-निप्
+क्त्तम्) हमेगने माटे
घेत्थी नीक्कळवु-
सन्यास लेखो

अभि+प्पत्थ } (अभि+प्र+अर्थ)
अभि+पत्थ } पार्थना करवी

अमराय् } (अमराय) अम
अमरा } रनी पेठे रहेवु-
पोतानी जातने
अमर मानवी

अरिह् (अर्ह) पूजवु, योग्य थवु
अल्लिव् आलवु

अव+मन्न् (अप+मन्य) अप-
मानवु-अपमान करवु
अव+सीअ (अव+सीद) अवसाद
पामवो-खूचवु

अहि+ट्ट (अधि+स्था-तिष्ठ)
अधिष्ठान मेळववु-
उपरी थवु

अहि+लंख् } (अभि+लष)
अहि+लंघ् } अभिलषवु-इच्छा
करवी

आ+गम् (आ+गम्) आववु
आढव् (आ+रम्) आरमवुं-
शरू करवु

आ+ढा (आ+ट्ट) आदर करवो
आ+ने (आ+नी) आणवु-लाववु
आ+घा (आ+ख्या) आख्यान
करवु-कहेवु

आ+भोअ (आ+भोग) ध्यान-
पूर्वक जोवु

आ+यय् (आ+दय) आदान
करवुं-प्रहण करवु

आ+रोव् (आ+रोप) आरोपवु
आ+लोट्ट (आ+लुट्टथ) आळोट्टवु

आ+सार (आ+च-नार) आम
तेम अफळाववु-आमतेम
लई जनु

इच्छ् (इच्छ) इच्छवु

क+कड् (क+कड्) कंके कडु

क+ड् (क+ड्) कडु

क+डी (क+डी) कडु

क+डुम् (क+डुम्) कडुम्

क+डिह् (क+डिह्) कडिह्

कडु-कडुमां कडुमां कडु

क+डी (क+डी) कडु डी

कडु

क+डिह् (क+डिह्) कडिह्

कडु-कडु कडु कडु

क+डिह् (क+डिह्) कडिह्

कडु, कडुमां कडुमां

क+डिह् (क+डिह्) कडिह् कडु-कडु

कडु - कडु

कडु (कडु) कडुमां कडुमां

कडुमां

क+गाम् (क+गाम्) कडु-कडु

कडुमां कडुमां-कडुमां-

कडुमां-कडुमां

क+गाम् (क+गाम्) कडु-कडु

कडुमां कडुमां

क+गाम् (क+गाम्) कडु-कडु

कडुमां

क+गाम् (क+गाम्) कडु-कडु

कडु कडु कडु

कडुमां कडुमां-कडुमां

कडुमां

कडु (कडु) कडु-कडु

कडु (कडु) कडुमां-कडुमां

कडु

कडु (कडु) कडुमां-कडुमां

कडुमां कडुमां

कडु (कडु) कडुमां-कडुमां

कडु (कडु) कडुमां

कडु (कडु) कडुमां

कडु (कडु) कडुमां-कडुमां

कडुमां

कडु (कडु) कडुमां

कडु (कडु) कडुमां-कडुमां

कडु (कडु) कडुमां कडुमां

कडु (कडु) कडुमां-कडुमां

कडुमां कडुमां

कडु (कडु) कडुमां-कडुमां

कडु (कडु) कडुमां कडुमां

कडुमां कडुमां

कडु (कडु) कडुमां

कडु (कडु) कडुमां कडुमां

कडु (कडु) कडुमां-कडुमां

कडुमां कडुमां

कडु (कडु) कडुमां-कडुमां

कडुमां कडुमां

कडु (कडु) कडुमां-कडुमां

कडुमां कडुमां

रुम् (धुम्) खोभु-ओ-
भु-खळभळु-शोभ
धो-गभरावु

गच्छ (गच्छ) जवु पामवु

गज्ज (गर्ज) गाजवु

गह (घट) घडवु

गरिह (गह) गरहवु-निदवु

गवेस् (गवेप) गवेपवु-शोधवु

गंद् (ग्रन्थ) गठवु-गूथवु

गा (गा) गावु

गिज्ज (गृथ्य) गृद्ध यवु-

ललचावु

मिळा (म्ला) म्लान यवु-

क्षीण यवु

गोण्ड (गृह्णा) ग्रहण करवु

घट्ट (घट) घडवु, वनाववु

घरिस् (घप) घमवु

चट्ट (चट्ट) चटवु

चय् (त्यज) तजवु

चय् (शक्) शमवु

चर् (चर) चरवु-चालवु

चल् (चल) चालवु

चव् (वच्) कहेवु

चिश्च्छ (चिक्त्तिम्) चिक्त्तिता

करवी-रपचार करवो

चिण् (चिनु) चणवु-एकट्ट

करवु

चिणा (चिनु) चणवुं-एकट्ट करवुं

चित् (चिन्त) चितववु

चुक्क (च्युतक) चूकनु-भट्ट थवु

चोपड् चोपडवु

छज्ज (सज्ज) छाजवु, शोभवु

छाय } (छाद) छावु-

छाथ } ढाकवु

छिद् (छिनद्) छेदवु-हणवु,

मारवु

छेच्छ (छेत्स्य) छेदवु

छोल्ल छोल्लवु

जग्ग् (जाग्) जागवु

जम्मा (जृम्म) वगासु स्वावु

जम्म् (जन्मन्) जन्मवु

जव् (जप्) जपवु-जाप करवो

जहा (जहा) छोटवु-त्याग

करवो

जप् (जल्प) कहेवु

जा (या) जावु जवु

जागर् (जागर्) जागवु

जाण् (जाना) जाणवु

जाय् (जाय) जावु-जन्म यवो

रपन्न थवु

जाय् (याच) जाचवु-याचना

करवी-मागवु

जाव् (याप) वीतावु-यापन

करवु

त्रिण (त्रि) त्रिणु-त्र
वेकत्रो

वीह (विह) वाह्यु

वुगुह (वुग) वुगु-वुह
वुगु

वुंम् (वुं) वुंम् वुंम्-
वुंम् वुंम् वुंम्

वूर (वर) वरुं

वाम् (वैम्) वामु

वाम (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

वाम् (वै) (वै) वाम-
वाम (वै) वाम-

नम } (नम्) नमवु
नव् }

नस्र् } (नस्य) नाश थवो
नास्र् }

नि+क्षाल् } (नि+क्षाल)
नि+क्षत्रार् } निखारवु-धोवु

नि+द्घुण (निर् + धुना) खखे-
रवु-द्वर करवु

नि+प्पज्ज् (निर+पथ) नीपजवु

नि+मंत्र् (नि+मन्त्र) निमत्रण
करवु, नोतरवु

निद् } (निन्द) निदवु-
निन्द् } निन्दा करवो

नी+हर् (निर्+सर्) नीहरवु-
नीसरवु

ने } (नी) ल्ह जवु-दोरवु
णे }

प+क्षाल् (प्र+क्षाल)
पखालवु-धोवु

प+गल्भ् (प्र+गल्भ) प्रगल्भ
थवु-बडाई मारवो

पञ्च+प्पिण् (प्रत्यर्पण - प्रति +
अर्पण) पाछु सोंपवु

पज्जर् (प्र + उत् + चर् -
प्रोघर) कहेवु

प+ट्टव् (प्र+स्थाप) पाठवु

पड (पत्) पडवु

पडि+कूल (प्रति+कूल) प्रतिकूल
थवु-विपरीत थवु

पडि+नी (प्रति + नी) पाछु
देवु-सामु देवु-बदले
देवु

पडि+वज्ज् (प्रति+पथ)
पामवु-स्वीकारवु

पढ् (पठ) पाठ करवो-पढवु

प+णाम् (प्र + णाम) आपवु-
सेवामां रजु करवु

प+घ्नव् (प्रज्ञापय) जणावु

प+माय् (प्र + माय) प्रमाद
करवो

प+मुच्च् (प्र+मुच्य) प्रमुक्त थवु-
तहन छूटी जवु

प+यल्ल् (प्र+सर्) फेंकवु

परि+आल् (परि+वार) परिघ्न
करवु वोंटवु

परि+क्कम् (परि + क्रम्) परि-
क्रमण करवु-परकमवु

-प्रदक्षिणा करवो
परि+ञ्चय् (परि + त्यज) परि-

त्याग करवो
परि+तप्प् (परि+तप्य) परि-

ताप पानवो-दु खी थवु

परि+देव् (परि+देव) खेद करवो

भास् (भाष) भाखवु-भाषण करवु
 भिन्व (भिनद्) भेदवु-कटका करवा
 मेच्छ (मेत्स्य) भेदवु-टुकडा करवा
 भोच्छ (भोक्ष्य) भोजन करवु
 -भोगवु

मज्ज (मद्य) मद करवो,
 माचवु, खुश थवु

मन्न् (मन्य) मानवु

मरिस् (मर्श) विमासवु-
 विचारवु

मरिस् (मर्ष) सहवु, क्षमा
 राखवी

मिला (म्ला) म्लान थवु-
 करमावु

मुज्झ (मुह्य) मुझावु, मूळ
 थवु-मोह पामवो

मुण्ण (मन्) जाणवु

मुंच् (मुञ्च) मुक्वु

मेलव् (मेलय) मेळववु, मेळ-
 ववु एकमेक करवु

मोच्छ (भोक्ष्य) मुकावु-छुट
 थवु

रक्ख् (रक्ष) रक्षवु राखवु
 साचववु, रक्षण करवु

रीय् (रीय, नीकळवु)

रुव् (रुद) रोवु

रुस् } (रुष्य) रुसवु, रोप
 रुस् } करवो

रोच्छ (रोत्स्य) रोवु

लभ् (लभ्) लाभवु, मेळववु

लव् (लप) लव, वोलवु

लह् (लभ) लेवु, मेळववु

लिप्प् (लिप्य) लेपावु, खरडावु

लिह् (लिख) लखवु

लुट् (लुठ्य) लोटवु-आळोटवु

लुण्ण (लुना) लणवु-कापवु

वक्खाण् (वि+भा+ख्यात)
 विस्तारथी कहेवु,
 वक्खाण करवा

वग्गोल् (वि+उद्+गार-व्युद्गार)
 वागोळवु

वच्च् (वज) फरता रहेवु

वज्ज् (वर्ज) वर्जवु छोटवु

वज्जर (वि+उत्+चर-व्युच्चर)कहेवुं

वह् (वर्ध) वडवु

वण्ण (वन) वणवु भात पाडीने
 वुवण

वर् (वृ) वरवु स्वीकारवु,
 वरदान लेवु

वरिस् (वर्ष) वरसवु

वलग्ग (वि+लग्न) वळ्गावु-चडवु

वस् (वस) वसवु-रहेवु

वह् (वह्) वहेवु-वावु

वंद् (वन्द) वादवु-नमवु

वा (वा) वावु

वाद् (वा) वक्तु-वाक्यत्वं
वि+किद् } (वि+कि) वेत्तु
वि+इद् }

वि-ह (वि+ही) वेत्तु-वेद्यु

वि+हर (वि+वर) विचरतु-चरतु

वि+वित (वि+वित्) विजितुं

-विजेय विजितुं

विच्युत् (वि+च्यु) वीच्युत्-

वीचुं

विज्य (विज) विजयाम वेत्तु

विज्य (विज) वीच्युं

वि+पस्तु (वि+पस्) कपी

क्यु-वाह क्युं कपयतु

वि प्यद् (वि+इद्) वीचरतु

वि+प्य+हद् (वि+प्र+ह्य))

क्येय क्येयं ह्य क्यु

वि+राज (वि+राज) विजितुं

वि+राज् } -वीच्युं

वि मीव वि वेद विचर

वासी-वेद करणे

विहद् । वि+ह्य वगणतु

विघट् । -ह्य कर्मणे

विह वि-ह्य विजितुं-चरतु

विध कच वीचतु

वीचर त् च्यु वीचरतु

वीच्युत् क्येय वेत्तु क्युमवाचतु

क्यु

वेद् (वे) वीच्युं

वेद् (वे) विचरतुं-चरतुं-चरतुं

वोच्यु (वच) वीच्युं-वीच्युं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
वाचरतु चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

व्यमा+वद् (व्य+वा+व))
व्यरतुं-व्युं चरतुं

सिज्ज (सिच) सीजवु चीकणु थवु,
स्वेद-परसेवावाळा यवु

सिज्झ (सिघ्य) सीझवु-सिद्ध थवु

सिलाह (श्राघ) सराहवु-वखाणवु

सिध्व् (सिघ्य) सीववु

सिद्द (सृह) सृहा करवी

सिच् (सिघ्य) सीचवु

सुण् } (शृणु) सुणवु-
हण् } सामळवु

सुमर (स्मर) स्मरण करवु

सुइ } (पूद्) सुइवु नाश
सूर् } करवी

सुस् } (शुष्य) शोपवु-
सुस्स् } सुकावु

सेव् (सेव) सेववु-आश्रय
लेवो

सोच्छ (श्रोष्य) सामळवु

सोह् शोध) शोधवु-सोवु,
शुद्ध करवु

सोह् (शुभ) सोहवु-शोभवु

हण (हन्) हणवु-मारवु

हरिस् (हर्ष) हरखवु

हस् (हस) हसवु

हिस् (हिस) हिंसा करवी-
हणवु

हा (हा) हीण थवु-तजवु

हो (भू) होवु थवु

देश्य शब्दो

[नरजाति]

अग्निम-आगोभो

अग्घाड-अघेडानु झाड

अहिह्ल } — ईश्वर-मालिक-
अहेह्ल } अल्लाह

आमोड-वाळनो जूडो-अवोडो

उडिद्-अडद

उड्ड-ओड-ओड जातनो मनुष्य

ओहरिस } — ओरसियो
ओघरिस }

ककिंड-काकीडो

कच्छर-कचरो

कडइअ-कडीओ-घर चणनार

कडप्प-कडपलो-जत्यो

काहार-क+आ+हार-कहार-
पाणी भरनारो

कुकुल-कुशजा-अनाजना फोफा

काइल-कोयला

कोथल-कोथळो

[नारीजाति]

अभालि-एलि-अकाळे वादळा
थवा

अम्मा-मा-अम्मा

अवालुया-अवालु-दातना पेढा

उत्थळा-उथलो

उवी-पाकेला घउनी डुडो

उत्तरिविडि-ऊतरेढ-वासणनी
माढ

उत्थळपत्थळा-ऊथलपाथळ

ओज्जरी-होजरी

ओप्पा-ओप

ओसरिया-ओशरी

ओसा-ओस-झाकळ

कट्टारी-कटार

कत्ता-पासा-जुगार रमवानी
भाघळी कोडी

कक्षोणी } -क्षोणी
कुक्षिणी }

खडकी-खडकी

खड्वा-खाडो

खणुसा-खणस-इच्छा

खली-खोळ

गडयडी-गडगडाटो (मेघनी)

गड्डी-गाढी

गंडीरी-गंडेरी-शेरडीनी कातळी

गाई-गाय

गायरी-गागर

गोली-गोळी

चवेडी-चपटी वगाडवी

चिरिद्विटी } -चणोठी
चिणोटी }

चुचुंदरिया-छछुदर

चोटी-चोटली

छली-छाल

छवडी-चामडी

छासी-छाश

छेंडी-नानी केडी-छोंडो-छोंडु

जाडी-झाडी

जोवारी-जुवार-जार

झडी-वरसादनी झडो

झंटी-झटीया-माथाना विखरा-
येला वाळ

झोलिका-झोळी

डाली-डाळ-झाडनी डाळ

ढंकणी-ढाकणी

ढेंका-ढिकवो

णत्था } -नाथ-वळदनी नाथ,
नत्था } नाकनी नथडी

णदरी } -नेरणी
नहरी }

जिदुषी-बीरु, कस्तु कत
 कस्तु
 पीसपिमा बीररु
 तजा-कच-कच-कच
 इमरी कत
 पककटा-कक-कक-कक
 कककक
 पनी-कनी
 पकुमा-ककु
 परका-कककु
 पाकिरु-कक-ककु ककनी
 कककनी कक के कक
 पूषी-कूषी
 कस्तु-कक
 कूफा } ककको
 कूफा }

ककरी-ककरी
 ककक-कक-ककक
 ककरी-ककरी-ककरी
 ककका-कक
 ककका ककरी
 ककनी }-कनी
 ककनी }
 कक-कक-कक
 ककरी-कक-ककनी
 कक-कक-कक
 कककका-कककक-कक-
 कककक-कककक ककक
 कक-ककरी
 ककरी-कक कनी
 ककरी-ककनी
 कक-कक

[नान्यतरवाचि]

ककक-ककक-ककक
 ककक-ककक
 ककक-ककक
 कक-कक
 ककक-ककक
 ककक-ककक
 ककक-ककक
 ककक-ककक

ककक-ककक
 ककक-ककक
 ककक-ककक
 कक कक
 कक-कक-कक
 कक-कक
 कक-कक
 ककक-ककक

वग्घर-घाघरो
 चंग-चगु-सारु
 छिक्क-छीक
 छिल्लर-पाणोनु खावोचियु
 जेमणय-जमणु
 झुङ्ग-झुङ्ग
 टिक्क-टिक्की-टील्ल
 तग्ग-तागडो
 तुंद-पेट-दुद
 पट्ट-पादर
 पट्टर-पाघरु
 परिद्वण-पहेरण
 पगुरण-पागरण-पाथरवा-ओढ-
 वाना साधन
 पिजिय-पीजिल्ल
 पोच्च-पोचु

पोट्ट-पेट
 वरुथ-वरु-कलमनु वरु
 रंदुअ-रादवु
 रूम-रु-कपास
 लक्कुड-लाकडु
 लाहण-लाणुं
 घहल-वादळ
 वंग-वेंगण-वांगी
 विहाण-वहाणु-सवारनो समय
 संखलय-शंखलु
 संपडिय-सांपडेल
 सिंदुरय-छिदरु-दोरडी
 सुंधिय-सुधेल
 सोल्ल-मांसना सोळा
 हड्ड-हाडकु
 हल्लिअ-हालेल-चालेल

अर्धमागधी प्राकृतनु साहित्य

अर्धमागधी प्राकृतनु साहित्य अस्तिशय विपुल छे तेमां तले ह्यन भाषार विधिविधान—कर्मकांड, म्येष्टिच, गमित चस्तु कौने क्यस्त अनेक मयो छे संक्षेपमां कहुं तो ए साहित्य करोद्ये छेकेसां एचारु छे तेमांकी क्धी बोद्यक मयोतो नामनिर्देश करु छे

आगम ग्रंथो

अंग सूत्रो	प्रहापवा	सूटक सूत्र
आचारभंग	अंबुलीप्रवृत्ति	अन्यसूत्र
सूत्रकृतभंग	अंशप्रवृत्ति	अतीतकल्प
स्थानभंग	सूर्वप्रवृत्ति	पतिजीतकल्प
समवायभंग	निरपत्तवृत्ति	आइअतीतकल्प
मगवती मक्खा	बोरे पांच ॥	पाक्षिकसूत्र
व्याख्याप्रवृत्ति	छेद सूत्रो	कृषिमापित
भंग	मिञ्जीव	बोरे
इतिथमैकपाभंग	बृहत्कल्प	पयथा सूत्र
उपासकप्रपाभंग	प्यबहार	बहुःपरब
भंतकुरुवशाभंग	इणपुठ	आहुःप्रत्याख्या
अमुत्तपीपपाक्षिक	महामिठीप	मत्तपिछा
भंग	पंचकल्प (अमाच)	संस्तारक
प्रसम्भाकरभंग	सूठ सूत्रो	तंतुअरीचरिच
विपाकभंग	आत्तकल्प	अंशवैकल्प
उपांग सूत्रो	इरावैकाक्षिक	वैशंप्रसाव
ओपपाक्षिक उपांग	इतराभ्ययन	पविविद्या
एतमसूत्रीय	नरि	महाप्रत्याख्या
अतीतअतीतवि	अमुपोपहार	वीरकथ
गम		

आ उपरात आगमग्रन्थो ऊपरनी व्याख्याओ, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि अने अवचूर्णि वगैरे साहित्य अर्धमागधी प्राकृतमा रचायेल्लं छे

बीजा ग्रंथो

तत्त्वज्ञानं	पंचास्तिकाय	गोम्मटसार वगैरे
सम्मद्वयपरण	धवला	आचार
धम्मसंगहणि	महाधवला	पंचाशक
विशेषावश्यक	महाबंध वगैरे	षोडशक
भाषारहस्य	कम्मपयडि	पंचसूत्र
नवतत्त्व	पंचसंग्रह	प्रवचनसारोद्धार
जीवविचार	पंचवस्तु	आचारविधि
प्रवचनसार	प्राचीन कर्मग्रंथ	गुरुतत्त्व-निर्णय
कर्मशास्त्र	नव्य ”	वगैरे
समयसार	सत्तरि	

१९-५९-१२१

कृपा-चरित्र-उपदेश

अपरेशमाया	सुनकुमारचरित्र
परमात्मप्रकाश	सीताचरित्र
कुमारपाण्डुचरित्र	पद्मचरित्र
कुशकपमाया	कृपात्मकोश
जंबूस्वामिचरित्र	कृपाचक्र
पृथ्वीचंद्रचरित्र	हरिगणेश
मत्प्रेक्षुचरित्र	समराजचक्र
महापुरुषचरित्र	बोबीश तीर्थकरोना
विश्वामंथकैवलिचरित्र	एकना पुरा
बसुदेवद्विष्टि	चरित्रो

करुण-काम-वास्तु-ज्योतिष-निमित्त-स्वप्न

मने विज्ञानना प्रथो

सूर्यपञ्चमि	महाप्रपञ्च
चंद्रमञ्चमि	तीर्थकल्प
ज्योतिषचक्रविचार	महाकर्मकल्प
विपीठिकविचार	मयजवाक
संगविद्या	वास्तुविचार
	स्वप्नविचार बगैरे

